PRKASHAN SAMACHAR 1928 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112144

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

५ जनवरी, १९५८ अंक ५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

र्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुचाने वाला मासिक

14-1-58

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

हिन्दी कथा-साहित्य को अनुपम देन

श्री उदयराज सिंह की नवीनतम कला-कृति

भूदानी सोनिया

"लेखक ने सफलतापूर्वक यह दिखाया है कि सन् '४२ की स्वराज्य-क्रान्ति की परिसमाप्ति १५ अगस्त की सफलता में नहीं हो चुकी थी बल्कि उसका सहज विकास भूदान आरोहण में हुआ है। भूदानी सोनिया ने कला के माध्यम से सेवा बनाम सत्ता का प्रश्न मार्मिक ढंग से उठाया है और राष्ट्र-जीवन के इस गम्भीर तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि असली उन्नति नैतिक विकास में है न कि आर्थिक समृद्धि में !"

(भूमिका से) —श्री जयप्रकाश नारायण

मूल्य ४) रुपये पृष्ठ-संख्या २७५

अशोक प्रेस : : पटना-६

लेखक की इच्छा का आदर कर इस पुस्तक से प्राप्त कुल आय भूदान-यज्ञ को निवेदित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार नवीन उपन्यास

१. धरती और धन : ले० श्री गुरुदत्त — मू० ६)

धरती, धन, पूँजी इनका परस्पर सम्बन्ध एवं प्रयोग; इनका विश्लेषणात्मक विवेचन— इस पृष्ठभूमि पर अनुपम तथा अन्यतम उपन्यास।

२. पत्रलता : ले० श्री गुरुदत्त — मू० ७)

सातवीं शताब्दी के इतिहास की पृष्ठभूमि पर अत्यन्त ही रोचक रचना।

३. दासता के नए रूप : ले० श्री गुरुदत्त — मू० ६)

सन् १९४७ से १९५२ तक के भारत के इतिहास की पृष्ठभूमि पर विश्लेषणात्मक कृति।

४. खरे-खोटे : ले० श्री आरिगपूडि — मू० ५)

दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी-उपन्यासकार की चरित्र-चित्रण-प्रधान सर्वोत्कृष्ट कृति।

हमारे प्रकाशन

श्री आरिगपूडि

१. भूले-भटके (उपन्यास) — मू० ३)
२. खरे-खोटे ,, — ,, ५)

श्रीमती शान्ति सिहल

३. अलका (कविता-संग्रह) — मू० २॥)

श्री गुरुदत्त

४. विकृत छाया — मू० ४॥)
५. भावुकता का मूल्य — ,, ६)
६. बहती रेता — ,, ५)
७. विश्वासघात — ,, ५॥)
८. विडम्बना — मू० ६)
९. देश की हत्या — ,, ५॥)
१०. वाम मार्ग — ,, ७)
११. विलोम गति — ,, ५)
१२. गुण्ठन — ,, ५)
१३. मानव — ,, ५)
१४. आवरण — ,, ५)
१५. कला — ,, ५)
१६. दासता के नए रूप — ,, ६)
१७. अन्तिम यात्रा — ,, १)
१८. पत्रलता — ,, ७)

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली–१

सूचना—पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष सुविधाएँ दी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112144
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112144

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ५ :

सम्पादक : ओम प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

भारत-सरकार के केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय द्वारा नियोजित "एडवाइज़री कमेटी फॉर लाइब्रेरीज़" आजकल देश के विभिन्न नगरों का दौरा कर रही है। युनिवर्सिटियों एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रमुख पुस्तकाध्यक्षों से मिलने तथा उनके विचार जानने के अतिरिक्त इस कमेटी के सदस्य सभी बड़े-बड़े पुस्तकालयों का निरीक्षण भी कर रहे हैं। इस कमेटी की स्थापना के मुख्य उद्देश्य हैं पुस्तकालयों की विभिन्न किस्मों के संगठनों की छानबीन, पुस्तकालयों तथा समाज-शिक्षा के विभिन्न माध्यमों में परस्पर सम्पर्क का पर्यवेक्षण, पुस्तकाध्यक्षों की शिक्षा तथा उनके वेतन आदि की परिस्थितियों के बारे में जान-पहचान तथा सुझाव, उन शासकीय तथा अर्थ-सम्बन्धी युक्तियों और उपायों की खोज जो भविष्य में देश की पुस्तकालय-व्यवस्था के लिए आवश्यक होंगे। कमेटी का नियोजन सरकार की लोक-कल्याण की दृष्टि का तथा शिक्षा-मन्त्रालय के उत्तरदायित्व-बोध का साक्षी है।

"एडवाइज़री कमेटी फॉर लाइब्रेरीज़" की ओर से जो प्रश्नावली प्रचारित की गई है, वह उपरिलिखित सब समस्याओं को ध्यान में रखकर बनाई गई है। लेकिन खेद का विषय है कि उसमें पुस्तकालयों की उपयोगिता से सम्बद्ध दो अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के प्रति सजगता दृष्टिगोचर नहीं होती। वे प्रश्न हैं : (१) पुस्तकालयों में किस प्रकार की पुस्तकें रखी जायें, तथा (२) इन पुस्तकों को खरीदने का ढंग क्या हो ?

प्रत्येक पुस्तकाध्यक्ष के सामने पुस्तकों के उचित चुनाव की समस्या प्रतिदिन प्रस्तुत होती है। देश के किसी भी भाषा के प्रकाशकों द्वारा सूची-वितरण इस पटुता तथा नियमितता से नहीं होता कि पुस्तकाध्यक्षों का काम आसान हो सके; न देश में किसी भी भाषा के पुस्तकों की विषयानुसार संग्रहीत सूची-सन्दर्भ ही प्राप्य हैं। वैसे जिन प्रकाशकों ने इस ओर प्रबन्ध और प्रयास भी किया है, पुस्तकाध्यक्षों का ध्यान विशेष रूप से उधर आकर्षित भी नहीं हुआ है। परिणामतः स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा जो भी पुस्तकें पुस्तकाध्यक्षों के सामने रख दी जाती हैं, प्रायः और अधिकांश में वही खरीद ली जाती हैं, पुस्तक-विक्रेता की दिलचस्पी स्पष्ट ही उन्हीं पुस्तकों की ओर ध्यान आकृष्ट करने की होती है जिस पर उसे अपेक्षया अधिक मुनाफा मिलता है।

आज देश के अधिकांश पुस्तकालय सरकारी अनुदान के बल पर चल रहे हैं। सरकार का कर्तव्य केवल अनुदान दे देने से समाप्त नहीं हो जाता, उसे बढ़कर यह भी देखना चाहिए, इसके लिए किसी-न-किसी प्रकार के यन्त्र की अवश्य ही आवश्यकता है, कि उसके अनुदान से उत्कृष्ट साहित्य ही पुस्तकालयों द्वारा खरीदा जाय।

इसी से मिलता-जुलता दूसरा प्रश्न पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकें खरीदने का है। आज पुस्तकों के लिए टेंडर माँगने की प्रथा काफी प्रचलित हो गई है। टेंडर भी कैसे ? खरीदार को मकान चाहिए, मकान दे सकने वाले मकानों की दरें भेजें ! हास्यास्पद होगा ऐसा टेण्डर, जिसमें न तो लिखा हो कि मकान कच्ची मिट्टी के हों अथवा पक्की ईंटों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखरे फूल

इस पुस्तक में लेखक

कैप्टन डॉ० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण'

एम० ए०, पी-एच० डी०

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महाराजा कॉलेज, जयपुर के समाज और साहित्य के सम्बन्ध में अपने अनुभव और दृष्टिकोण पर आधारित बारह निबन्ध संग्रहीत हैं।

छपाई सुन्दर तथा आवरण आकर्षक है।

मूल्य : ३) रुपये

भक्ति दर्शन

उपरोक्त लेखक की २७५ पृष्ठों की यह पुस्तक रामानुजाचार्य विशिष्टाद्वैत पर आधारित है। इसे लेखक नें विशेष परिश्रम से तैयार किया है।

मूल्य : ६॥) रुपये

प्रकाशक :

कृष्णा ब्रदर्स,

कचहरी रोड, अजमेर।

के, इकमंजिले हों अथवा सात मंजिल के, इनमें गारे से चिनाई की हो अथवा सीमेंट की, नीवें ३ इंच गहरी हों अथवा ३ फुट की, शहर के चालू व्यापारी हिस्से में स्थित हो अथवा शहर से दो मील दूर? पुस्तकों के लिए इसी प्रकार, बिना किसी प्रकार की सूची निकाले, बिना उनके मूल्य अथवा लेखक अथवा संस्करण का उल्लेख किये, टेण्डर माँगे जाते हैं। उनके मूल्य किस हिसाब से रखे गए हैं, उनके लेखकों को रायल्टी दी जाती है या नहीं, उनमें कैसे कागज़ का प्रयोग हुआ है, छपाई-सफाई-गेट-अप कैसा है, कुछ नहीं देखा जाता—केवल 'पुस्तकें' माँगी जाती हैं—जैसे सब प्रकार की पुस्तकें एक इकाई में समा सकती हों!

पुस्तकालयों द्वारा, चाहे वे स्थानीय पुस्तकालय हों अथवा शासकीय, केन्द्रीय पुस्तकालय, टेण्डर माँगकर पुस्तकें खरीदने की पद्धति के भारी दुष्परिणाम हो रहे हैं। यदि इस बात की छानबीन की जाय तो पता चलेगा कि किस प्रकार अनुदान की भारी रकमें सत्साहित्य पर व्यय न की जाकर घटिया किस्म की चालू पुस्तकों की खरीद में झोंस दी गई हैं! लेकिन प्रत्येक वस्तु को सस्ती-से-सस्ती मण्डी में खरीदने के सरकारी नियम का उल्लंघन नहीं किया गया। पुस्तकाध्यक्षों को भी क्या यह बात बतानी पड़ेगी कि श्रेष्ठ साहित्य सस्ती मण्डी में नहीं खरीदा जा सकता। या तो अच्छी पुस्तक ली जा सकती है अथवा कमीशन! इस बात का निर्णय पुस्तकालयों का है कि वे किस ओर टोटे में रहें—कमीशन के अथवा पुस्तकों के?

पुस्तकाध्यक्ष शायद इस बात में अधिक अपराधी नहीं हैं—अपराधी हैं शासन-यन्त्र के वह जड़ अधिकारी जो समस्या को समझे-बूझे बिना इस प्रकार के नियमों को प्रचलित करते हैं कि मन्दिर तो बन खड़ा होता है, लेकिन उसमें प्राणवती मूर्ति की स्थापना नहीं हो पाती। पुस्तकालयों का संगठन कीजिए, पुस्तकाध्यक्षों को अच्छे वेतन दीजिए, इसमें सभी का समर्थन मिलेगा। लेकिन उनके लिए अच्छी पुस्तकें जुटाने के प्रश्न पर भी किंचित् ध्यान दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

अमेरिका के एक सुप्रसिद्ध प्रकाशक श्री एल्फ्रेड ए० नॉफ़ का एक लेख दिसम्बर '५७ के "एटलांटिक मन्थली" में छपा है। श्री नॉफ़ अपने देश के पुस्तक-विक्रेताओं, लेखकों, आलोचकों तथा प्रकाशकों के कार्यकलाप से सन्तुष्ट नहीं हैं। पुस्तक-विक्रेताओं के बारे में उन्होंने लिखा है कि वे पुस्तकों के प्रसार का विशेष प्रयास नहीं करते; पुस्तकों को दुकान में सजा देने से ही उनकी बिक्री नहीं होने लगती। उनसे कहीं अधिक प्रयास तो वहाँ की बुक-क्लब्स की ओर से हो रहा है। अनबिकी पुस्तकों को वापस ले लेने के प्रकाशकीय नियमों के कारण पुस्तक-विक्रेताओं की ओर से पुस्तकों का प्रचार-प्रसार करने की कोशिशें और भी कम हो गई हैं।

पुस्तकों के समीक्षकों के सम्बन्ध में श्री नॉफ़ कहते हैं कि उनकी आलोचनाएँ पुस्तकों की अधिक बिक्री में सहायक नहीं हो रहीं। पुराने आलोचक अपने शब्दों में इतना उत्साह भर दिया करते थे कि पाठक-वर्ग में एकाएक कोई पुस्तक लोकप्रिय हो जाती थी और बिकने लगती थी। पत्र-पत्रिकाओं से सम्बद्ध 'न्यूयॉर्क टाइम्स' के आलोचक श्री ऑर्विल प्रेस्काट ही अब ऐसे व्यक्ति हैं जो अपनी आलोचनाओं से पाठकों को किसी पुस्तक को खरीदने पर मजबूर कर सकते हैं। "यदि ऐसे एक दर्जन आलोचक हों तो सभी सम्बन्धित लोगों को अत्यन्त लाभ हो।"

लेखकों के विषय में श्री नॉफ़ का कहना है कि एक समय था जब कि प्रकाशकीय कार्यालयों के सम्पादकों द्वारा उपन्यासकारों को लम्बे-चौड़े पत्राचार द्वारा सुझाव और नसीहतें देने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी।" आज का लेखक विश्वसनीय नहीं रहा। "हम रायल्टी पर काफी अग्रिम रकमें दे देते हैं, उन उपन्यासों पर जो कभी सम्पूर्ण ही नहीं किये जाते।" फिर, लेखकों में व्यर्थ का दम्भ उभरता जा रहा है। "यदि आप डेयरी के व्यापार में हों तो आप दूध को बढ़िया और घटिया कहकर दो किस्मों में बाँट सकते हैं, लेकिन आज के लेखक उस कद्र तक दम्भी हैं जिस कद्र कि गौएँ नहीं होतीं।"

आज का औसत प्रकाशक भी "अधिकतर निरर्थक, सारहीन और नितान्त अयोग्य साहित्य को प्रकाशित कर रहा है।" श्री नॉफ़ को खेद है कि प्रकाशक ऐसे नये लेखकों से अनुबन्ध कर लेते हैं और फिर उनकी कृतियाँ छाप देते हैं जो छपनी नहीं चाहिए थीं। "स्तर इतना गिर चुका है कि अब हम किसी लेखक से यह नहीं कह सकते कि आपकी पुस्तक इतनी खराब है कि हम उसे प्रकाशित नहीं करेंगे।" लेखकों के लिए आज प्रकाशकों की कमी नहीं है। प्रकाशक पुस्तकों का विज्ञापन भी अत्यधिक हवाई शब्दावली में करने लगे हैं जो प्रायः धोखाधड़ी से कम नहीं होती।

अन्त में इस लेख में श्री नॉफ ने पाठकों के बारे में दो शब्द कहे हैं; श्री वाल्ट ह्विटमैन का उन्होंने उद्धरण दिया जिन्होंने कहा था—"महान् कवि तभी होंगे जब कि उन्हें महान् श्रोता-समूह मिले।" महान् पाठक पुस्तकों को कम-से-कम खरीदना तो अवश्य ही चाहेंगे। "तो लोग व्यक्तिगत इस्तेमाल की कोई भी चीज़ जो खरीदी जा सकती हो, उधार माँगने में झिझकेंगे, उन्हें उधार माँगकर पुस्तकें पढ़ने में किंचिन्मात्र भी संकोच नहीं होता।"

अन्त में, श्री नॉफ़ के अनुसार "पाठकों की सामान्य रुचि उन लोगों की रुचि से अपेक्षया अधिक परिष्कृत है जो उसे सन्तुष्ट करने के माध्यम जुटाने में लगे हैं।"

* * *

नवम्बर '५७ के अन्त तक अमेरीका में ११,८८१ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वहाँ के पाठक यदि रोजाना ३० पुस्तकें पढ़ते तो ही सब पुस्तकें पढ़ सकते थे।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५६ में अमेरिका में ७ अरब ७५ करोड़ रुपयों की पुस्तकों की बिक्री हुई।

* * *

"सदर्न लैंग्वेजिस बुक ट्रस्ट" मद्रास-३१, ने घोषणा की है कि वह दक्षिण भारत की चार भाषाओं—तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़—तथा अंग्रेजी के लिखित बालोपयोगी मौलिक कृतियों पर ७-७ सौ के आठ पुरस्कार देंगे। इस रकम में से ३५० रुपये रायल्टी पर अग्रिम राशि के समान समझी जायगी। पांडुलिपियाँ १२ से १५, ९ से १२, ६ से ९ तथा ३ से ६ वर्ष के बच्चों के लिए लिखी जानी चाहिएँ। कृतियों का १५ फ़रवरी, १९५८ तक बुक-ट्रस्ट के पास पहुँच जाना आवश्यक है।

* * *

"सदर्न लैंग्वेजिस बुक ट्रस्ट" की ओर से मद्रास में आगामी फरवरी पहली तथा दूसरी तारीख को पुस्तक-आवरणों की प्रदर्शनी हो रही है। ट्रस्ट ने अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ से देश-विदेशों से प्राप्त आवरण प्राप्त कर लिये हैं।

इस प्रदर्शनी के साथ ही पुस्तक-व्यवसाय के सम्बन्ध में गोष्ठी भी आयोजित होगी जिसमें निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार-विनिमय होगा : पुस्तकों में उपयुक्त होने वाला कागज, कम्पोजिंग, पांडुलिपियों का सम्पादन, प्रूफ़-रीडिंग, पुस्तकों का उत्पादन, छपाई की आधुनिकतम तरीके और उनका प्रयोग, प्रकाशन-आयोजन, बालोपयोगी प्रकाशन, भविष्य की सम्भावनाएँ।

* * *

समुद्र फेन

रमासिंह के गीत, सैटायर और नये प्रतीकों का काव्य-संग्रह

मूल्य ३)

उदयन प्रकाशन, सिंहलाज,
हस्नगंज, लखनऊ।

अमेरीका की प्रसिद्ध संस्था फोर्ड फाउंडेशन ने "कांग्रेस फॉर कल्चरल फ्रीडम" को २५ लाख रुपयों का अनुदान देने की घोषणा की है ताकि यह "कांग्रेस" अपनी शिक्षा-सम्बन्धी सक्रियताओं में वृद्धि कर सके।

* * *

हमारे देश ने १९५६ में अमेरीका से ५५ लाख रुपयों की पुस्तकों का आयात किया जब कि १९५५ में केवल २९ लाख २० हजार रुपयों की पुस्तकें ही आई थीं। अमेरिका ने १९५६ में हिन्दुस्तान में प्रकाशित केवल ३ लाख ५५ हजार की पुस्तकें मंगवाईं जब कि १९५५ में १ लाख ५५ हजार रुपयों की पुस्तकों का आयात किया था।

* * *

१९५५-५६ के वर्ष में इंग्लैण्ड के कुल पुस्तकालयों से पठनार्थ ३९ करोड़ ८७ लाख ३० हजार पुस्तकें ली गईं जब कि १९५४-५५ के वर्ष में ३६ करोड़ ८३ लाख पुस्तकें ली गईं थीं।

* * *

देश में पुस्तकों की सबसे अधिक बिक्री दिल्ली में होती है; १९५६ में अनुमानतः २० लाख रुपयों की पुस्तकें दिल्ली में खपीं।

* * *

१९५६ में सब विदेशों से मिलाकर लगभग १ करोड़ रुपयों की पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का देश में आयात हुआ, जिसमें से बम्बई और कलकत्ता में ३०-३० प्रतिशत तथा मद्रास एवं दिल्ली में २०-२० प्रतिशत बिकीं।

* * *

अक्तूबर '५७ तक इस वर्ष के पहले दस महीनों में इंग्लैण्ड में १७,०९९ पुस्तकें छप चुकी हैं, पिछले वर्ष इसी अवधि से १,३६७ अधिक। इनमें से ४,७५५ पुरानी पुस्तकों के नये संस्करण हैं, ३,२७२ उपन्यास। बच्चों के लिए विशेषतया १,७०६ पुस्तकें प्रकाशित की गईं; इनमें वैज्ञानिक पुस्तकों की पिछले कुछ वर्षों की प्रवृत्ति को छोड़कर परम्परागत कथा-कहानियों का भाग अधिक था। धर्म-सम्बन्धी पुस्तकों का प्रकाशन अधिक हुआ।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी मास के नवीन प्रकाशन

डा० रांगेय राघव द्वारा अनूदित

: शेक्सपियर के चार अन्य नाटक :

हैमलेट

सम्राट् लियर

एक सपना

तूफान

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

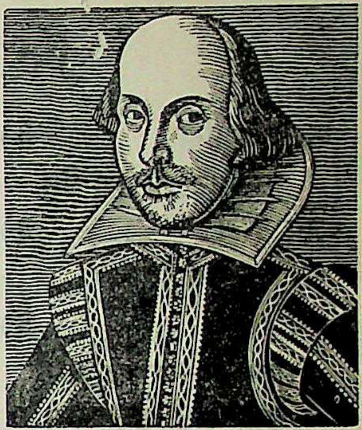

महाकवि दण्डी कृत

दशकुमार चरित

अनुवादक : डॉ० रांगेय राघव

मूल्य तीन रुपये

: किशोरोपयोगी चार अनमोल सचित्र पुस्तकें :

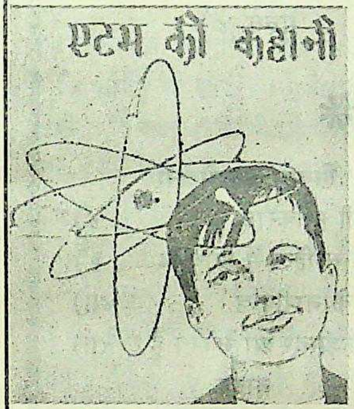

एटम की कहानी

मू० ले० जॉन लिवेलैन : अनु० विराज एम० ए०

मूल्य एक रुपया

मेरी गुड़िया कुछ तो बोल

(बालोपयोगी सरस मनोरंजक कविताएँ)

ले० धर्मपाल शास्त्री

मूल्य बारह आने

महापुरुषों की झाँकियाँ

ले० आचार्य चतुरसेन शास्त्री

मूल्य बारह आने

गुरु गोविन्दसिंह

ले० प्राणनाथ वानप्रस्थी

मूल्य आठ आने

अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से सभी पुस्तकें खरीदें

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५७ के नवीन आकर्षण

काल के पंख ३)
श्री आनन्दप्रकाश जैन

जय दोल ३)
श्री अज्ञेय

नये चित्र ३)
सम्पादक—सत्येन्द्र शरत्

कुछ मोती कुछ सीप
श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय
मूल्य २॥)

नये बादल २॥)
श्री मोहन राकेश

तीसरा नेत्र २॥)
श्री आनन्दप्रकाश जैन

रक्त राग ३)
श्री देवेशदास आई० सी० एस०

संस्कारों की राह २॥)
श्री राधाकृष्णप्रसाद एम० ए०

माटी हो गई सोना २)
श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

शरत् की सूक्तियाँ २)
श्री रामप्रकाश जैन

तरकश के तीर ३)
श्रीकृष्ण एम० ए०

बाजे पायलिया के घुँघरू
श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'
मूल्य ४)

✻ अन्य सुरुचिपूर्ण प्रकाशन ✻

कहानियां

संघर्ष के बाद	३)
गहरे पानी पैठ [द्वि० सं०]	२॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल	२)
पहला कहानीकार	२॥)
खेल-खिलौने	२)
अतीत के कंपन [द्वि० सं०]	३)
जिन खोजा तिन पाइयाँ [,,]	२॥)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य]	६)
मिलन-यामिनी	४)
धूप के धान	३)
मेरे बापू	२॥)
पंच-प्रदीप	२)

राजनीति

एशिया की राजनीति	६)

ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष	६)

उर्दू-शायरी

शेरो-शायरी [द्वि० सं०]	८)
शेरो-सुखन [पाँचों भाग]	२०)

संस्मरण, रेखाचित्र

हमारे आराध्य	३)
संस्मरण	३)
रेखा-चित्र	४)
जैन-जागरण के अग्रदूत	५)

ऐतिहासिक

खण्डहरों का वैभव	६)
खोज की पगडण्डियाँ	४)
चौलुक्य कुमारपाल	४)
कालिदास का भारत [१-२]	८)
हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन [१-२]	५)

उपन्यास, सूक्तियां

मुक्ति-दूत	५)
ज्ञानगंगा	६)

निबन्ध, आलोचना

जिन्दगी मुसकराई	४)
संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद	३)
शरत् के नारीपात्र	४॥)
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?	२॥)

नाटक

रजतरश्मि	२॥)
रेडियो-नाट्य-शिल्प	२॥)
पचपन का फेर	३)
और खाई बढ़ती गई	२॥)

विविध

द्विवेदी-पत्रावली	२॥)
ध्वनि और संगीत	४)
हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान	१)
भारतीय विचार-धारा	२)
वैदिक साहित्य	६)
अध्यात्म-पदावली	४॥)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-सरकार द्वारा अनुसमर्थित

युनिवर्सल कापीराइट कन्वेन्शन

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रणाधिकार के सम्बन्ध में युनेस्को द्वारा एक "सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय" स्वीकृत की गई है। भारत-सरकार ने भी इस अभिसमय (कन्वेन्शन) को अंगीकृत कर लिया है और हमारा देश उसका एक सदस्य बन गया है। २१ जनवरी, १६५८ से यह कन्वेन्शन हमारे देश में प्रभावशील हो जायगा। भारत सरकार के सूचना विभाग ने इस सम्बन्ध में जो प्रेस-विज्ञप्ति प्रचारित की है, उसे प्रकाशक-बन्धुओं के लाभार्थ यहाँ छापा जा रहा है।

सर्व-साधारण जनता के सूचनार्थ यह ज्ञापित किया जाता है कि भारत सरकार ने 'सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय' (युनिवर्सल कापीराइट कन्वेन्शन) और उसके पहले तथा दूसरे मूल-लेखों (प्रोटोकॉल) का अनुसमर्थन कर दिया है और अभिसमय के तीसरे मूल-लेखों को अधिकारांगीकृत कर लिया है (यानी मान लिया है।)

अभिसमय अनुसमर्थन-पत्र युनेस्को में २१ अक्तूबर १६५७ को दे दिया गया था; और भारत में यह विधि २१ जनवरी १६५८ से प्रचलित और प्रभावशील हो जायगी।

साहित्य और कला की कृतियों के संरक्षण के विषय में तो भारत १८८७ ई० से ही बर्न अभिसमय (बर्न कन्वेन्शन) का सदस्य था।

यूरोप, एशिया और अमरीका के कई देश इस अभिसमय में सम्मिलित थे, लेकिन संयुक्तराज्य अमरीका और कतिपय अन्य अमरीकी देश बर्न कन्वेन्शन के सदस्य नहीं थे। इसका कारण यह था कि उन देशों में प्रचलित मुद्रणाधिकार पद्धति का बर्न कन्वेन्शन के कई महत्त्वपूर्ण उपबन्धों से मेल नहीं बैठता था।

इसलिए होता यह था बर्न कन्वेंशन को मानने वाले देश मुद्रणाधिकार के मामले में जहाँ एक-दूसरे से सम्बद्ध थे, वहीं उन्हें बर्न कन्वेंशन के बाहर के देशों के साथ अलग-अलग समझौते (करार) भी करने पड़ते थे।

निश्चय ही यह स्थिति असन्तोषजनक थी, इसलिए मुद्रणाधिकार की विविध पद्धतियों वाले विभिन्न देशों को अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रणाधिकार के सम्बन्ध में एक जैसे प्रबन्ध के अन्तर्गत लाने के प्रयत्न वर्षों से किये जा रहे थे।

इस प्रयोजन के लिए युनेस्को के तत्त्वावधान में एक अन्तः-सरकारी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में भारत-सहित लगभग पचास देशों की सरकारों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस सम्मेलन ने एक विधि स्वीकार की, जो 'सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय' कहलाई; इस विधि के साथ तीन मूल-लेख (प्रोटोकॉल) भी हैं—ये मूल-लेख अभिसमय का अनुसमर्थन अथवा अधिकारांगीकरण करने वाले देशों के मध्य मुद्रणाधिकार सम्बन्धों का विनियमन करते हैं।

सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार

लेकिन सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय किसी भी प्रकार बर्न कन्वेंशन का अतिक्रमण नहीं करता। वस्तुतः बर्न कन्वेंशन अपने प्रभाव-क्षेत्र के देशों के मध्य मुद्रणाधिकार सम्बन्धों का बराबर विनियमन करता रहेगा (सत्रहवीं धारा और उससे अनुयोजित घोषणा के अनुसार)।

सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार विधि तो केवल बर्न कन्वेंशन के प्रभाव क्षेत्र वाले और प्रभाव-क्षेत्र से बाहर वाले देशों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का काम करती है; यह केवल दोनों प्रकार के देशों के मध्य एक सेतु की तरह है। सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय का अनुसमर्थन करने वाले बर्न प्रभावी देशों को बर्न प्रभाव-क्षेत्र से बाहर के उन देशों के साथ, जिन्होंने सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन
लखनऊ वि० वि० द्वारा स्वीकृत पी-एच० डी० थीसिस

सूर की भाषा

(ले० डॉ० प्रेमनारायण टंडन, पी-एच० डो०)

१५ नवम्बर १९५७ को प्रकाशित हो गई।

पृष्ठ-संख्या सवा छः सौ। रायल अठपेजी साइज।

मूल्य—बीस रुपये। डाक-व्यय ढाई रुपया

विषय-सूची

१. व्रजभाषा और सूर की भाषा के अध्ययन का इतिहास।
२. व्रजभाषा–उसका विकास और सूर का भाषा-ज्ञान।
३. सूर की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन।
४. सूर की भाषा का व्याकरणिक अध्ययन।
५. सूर की भाषा का व्यावहारिक और शास्त्रीय अध्ययन।
६. सांस्कृतिक दृष्टि से सूर की भाषा का महत्त्व।
७. उपसंहार–समकालीन और परवर्ती व्रजभाषा कवियों से सूर की भाषा की तुलना एवं अध्ययन का सारांश।

परिशिष्ट—
१. सूर-काव्य में प्रयुक्त शब्दों की संख्या।
२. सूर-साहित्य और उसकी सम्पादन-समस्या।
३. नामानुक्रमणिका।

उपर्युक्त विषय-सूची से इस श्रेष्ठ ग्रंथ की महत्ता स्पष्ट हो जाती है। अधिक परिचय के लिए आठ पृष्ठों में प्रकाशित विस्तृत विषय-सूची मंगाकर देखिए।

पता :
हिन्दी-साहित्य-भंडार,
गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

अनुसमर्थन किया है, अलग से कोई प्रबन्ध नहीं करना पड़ेगा; इस प्रकार के दोनों देशों के मध्य मुद्रणाधिकार सम्बन्ध सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय के उपबन्धों द्वारा विनियमित होते रहेंगे। उसी तरह बर्न प्रभाव-क्षेत्र के बाहर के उन देशों को भी जिन्होंने सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय पर हस्ताक्षर कर दिये हैं इस विधि के अन्तर्गत उन बर्न प्रभावी देशों में, जो सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार विधि के सदस्य हैं, बिना किसी विशिष्ट प्रबन्ध के संरक्षण का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

मूल (बुनियादी) सिद्धान्त

मूल सिद्धान्त, जो सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय में अंगीकार किया गया, 'राष्ट्रीय व्यवहार' का है। अभिसमय की दूसरी धारा में इस सिद्धान्त को निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है :

"१. किसी भी अनुबन्धकर्ता राज्य के नागरिकों का प्रकाशित कृतियों और उस राज्य में प्रथम बार प्रकाशित होने वाली कृतियों को हर दूसरे अनुबन्धकर्ता राज्य में वही संरक्षण प्राप्त होगा जो वह दूसरा राज्य अपने देशवासियों की पहली बार प्रकाशित कृतियों को प्रदान करता है।

"२. प्रत्येक अनुबन्धकर्ता राज्य के निवासियों की अप्रकाशित कृतियों को भी हर दूसरे अनुबन्धकर्ता राज्य में वही संरक्षण प्राप्त होगा जो वह दूसरा राज्य अपने निवासियों की अप्रकाशित कृतियों को प्रदान करता है।"

इस धारा के अनुसार भारतीय कृतियों और भारतीय नागरिकों की कृतियों को बर्न प्रभाव-क्षेत्र से बाहर के परन्तु सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय का पालन करने वाले हर देश में वही संरक्षण मिलेगा जो उस देश-विशेष के नागरिक को अपनी प्रकाशित कृतियों पर प्राप्त है।

बहुत-से देशों को अपने घरेलू विधान (कानून) के अन्तर्गत अपने ही देश में मुद्रणाधिकार प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष प्रकार का उपचारिकताओं की (यथा पंजीकरण, प्रतियों का निक्षिप्तिकरण, सूचना आदि) पालन करना पड़ता है।

सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय में इस प्रकार की औपचारिकताओं की अनिवार्यता का निवारण कर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है, उसके स्थान पर यह व्यवस्था की गई है कि यदि पुस्तक की समस्त प्रतियों पर, किसी प्रमुख स्थान पर मुद्रणाधिकार के स्वामी के नाम और प्रथम प्रकाशन के वर्ष के साथ (C) (एक वृत्त में अंग्रेजी का C अक्षर) इस प्रकार का चिह्न लगा रहे तो सभी औपचारिकताओं का पालन हुआ माना जायगा (धारा तीसरी)। इस सुविधा से भारत को बर्न प्रभाव-क्षेत्र से बाहर के सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय वाले देशों के कानूनों में निर्धारित औपचारिकताओं का पालन नहीं करना पड़ेगा, वरन् उपर्युक्त चिह्न के कारण मुद्रणाधिकार अनायास ही प्राप्त हो जाया करेगा।

सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय में कतिपय प्रतिबन्धों (शर्तों) के साथ प्रकाशित रचनाओं के भाषान्तर की अनुमति की व्यवस्था भी है (पाँचवीं धारा)।

अभी तक बर्न प्रभाव-क्षेत्र से बाहर के निम्नलिखित देशों ने सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय का अनुसमर्थन किया है—

अंडोरा, अर्जेण्टाइन गणतन्त्र, कम्भोज, चिली, कोस्टारिका, क्यूबा, इक्वेडर, जर्मन फेडरल रिपब्लिक, ग्वातेमाला, हाइती, आयरलैण्ड, लाओस, लाइबेरिया, मेक्सिको, निकारागुआ, एल सालवेडोर का गणतन्त्र, होण्डुरास का गणतन्त्र, सैन मैरिनो का गणतन्त्र, उरुगे, और संयुक्त राज्य अमरीका।

यह आवश्यक है कि मुद्रणाधिकार के भारतीय विधान (कानून) में सार्वलौकिक मुद्रणाधिकार अभिसमय की शर्तों को सम्पादित करने की क्षमता हो। भारतीय संसद ने "मुद्रणाधिकार-विधेयक १९५७" हाल ही में पारित किया है। २० जनवरी, १९५८ से पूर्व इस अधिनियम को प्रभावशील करने और इसकी उपधारा ४० और ४१ के अन्तर्गत उपयुक्त आदेश निकालकर इसको उपरिलिखित प्रयोजन के लिए सक्षम बनाने का कार्य प्रस्तावित किया जाता है।

हंस प्रकाशन

★हंस प्रकाशन के हंस प्रकाशन★

कमीशन में अतिरिक्त छूट

हमारे कुछ प्रकाशनों पर २५% और कुछ पर ३३⅓% कमीशन दर है। सभी व्यापारियों की सुविधा का खयाल करते हुए जनवरी १९५८ से अपने प्रकाशनों पर निम्नांकित तालिका के अनुसार अतिरिक्त कमीशन देने की व्यवस्था कर रहे हैं :

वर्ष में १०००) और उससे ऊपर का माल उठाने पर	१%
,, २०००) ,, ,, ,, ,,	२%
,, ३०००) ,, ,, ,, ,,	३%
,, ४०००) ,, ,, ,, ,,	४%
,, ५०००) ,, ,, ,, ,,	५%
,, ६०००) ,, ,, ,, ,,	६¼%

६¼% हमारा अन्तिम कमीशन दर है।

अतिरिक्त कमीशन का हिसाब वर्ष के अन्त में होगा। वर्ष का आरम्भ व्यापारी के प्रथम आर्डर के महीने से समझा जायेगा।

रु० २००) के नेट आर्डर पर रेल भाड़ा तथा पैकिंग व्यय हम देंगे।

हंस प्रकाशन
इलाहाबाद

★प्रेमचन्द साहित्य के प्रमुख प्रकाशक—हंस प्रकाशन★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और प्रकाशक के बीच सम्बन्ध

श्री सूर्यनारायण व्यास

लेखक और प्रकाशक के बीच स्नेह-सम्बन्ध होना परमावश्यक है, परन्तु स्वार्थ को लेकर कुछ सन्देह रहना स्वाभाविक है। इस सन्देह की खाई को पाटने का एक पवित्र प्रयास किया जाय तो उत्तम होगा और यह लेखक एवं प्रकाशक के पारस्परिक प्रयास से ही सम्भाव्य हो सकता है।

प्रायः प्रतिभाशील और स्वाभिमानी साहित्यकारों की स्थिति—जिनकी आय का अन्य साधन न हो—कठिन होती है। इस दिशा में हिन्दी के तेजस्वी कवि निराला और यशस्वी-लेखक शिवपूजन का उदाहरण प्रत्यक्ष है। इनकी बीमारी के समय सहायता के लिए पर्याप्त प्रचार हुआ। शासन एवं समृद्ध मित्रों से सहयोग के लिए अनुरोध भी किया गया। निरालाजी की मनःस्थिति के कारण उनकी इस विषय में क्या प्रतिक्रिया हुई होगी यह जानने का अवसर नहीं मिला। परन्तु शिवपूजनजी जैसे शील-सात्विक पुरुषों को यह प्रचार कहाँ तक प्रिय लगा होगा? जिस व्यक्ति ने एकान्त-साधना में जीवन व्यतीत किया हो, स्वाभिमान से कठिनाई के कष्टों को भी सह लिया हो, पर किसी के आगे हाथ पसारना तो ठीक अपनी जबान से कष्ट-कथा को प्रकट तक नहीं किया होगा। उन्हें विवश स्थिति में इस प्रचार ने कितना कष्ट पहुँचाया होगा, कहना कठिन है। पर यह किसी निराला, या शिवजी का ही प्रश्न नहीं, अनेक प्रतिभा-पुत्रों की प्रतिष्ठा और परिस्थिति का सवाल है, जो आए दिन समक्ष आती है। कुछ लोगों के प्रशंसक और प्रेमी प्रचार तक पहुँच रख सकते हैं, किन्तु अनेकों के कष्ट किसी के कान तक पहुँच नहीं पाते, और पीड़ा पनपती रहती है। ऐसी स्थिति में मुझे एक मार्ग दिखाई देता है जो दोनों की प्रतिष्ठा और मान-रक्षा-पूर्वक पूर्ण हो सकता है। इसमें किसी को कानों-कान भी खबर न लगे, और सहारा सुलभ हो जाए, इससे न तो प्रचार ही हो, न स्वाभिमान को ठेस ही लग सकेगी।

यह कार्य है एक संस्था की स्थापना करना, जो पाँच या दस प्रकाशक मित्र परस्पर मिलकर स्थापित कर सकते हैं। उस संस्था का कार्य यह हो कि प्रमुख साहित्यिकों की स्थिति का सद्भावनापूर्वक पता लगावे और उनकी सुविधा के साधन जुटाए। यह भी सहयोग-भावना से सरल सम्भाव्य हो सकेगा, जैसे जिन लेखकों की कृतियाँ प्रकाशकों के पास प्रकाशित होते ही हाथों-हाथ निकल जाती हों—और यह प्रत्येक प्रकाशक अवश्य जानता भी है—और जिनकी आय के अन्य साधन भी हैं, उनकी भी एक सूची बनाई जावे। जिस समय किसी साहित्यिक की कठिनाई या असुविधा की सूचना प्राप्त हो और वह प्रत्यक्ष ज्ञान से साफ़ हो, तब इन ख्यातिलब्ध लेखकों की नवीन, या प्राचीन प्रचलित पुस्तकों का एक संस्करण यह संस्था प्रकाशित करने के लिए लेखक से प्राप्त कर ले, अथवा प्रकाशित पुस्तक की एक वर्ष की बिक्री से उसकी आय को इस संस्था के लिए प्राप्त कर ले, इस प्रकार कम-से-कम ६ लेखकों की ६ कृतियाँ प्राप्त कर उनका प्रकाशन कर आय की वस्तु से प्रकाशन-व्यय पृथक् कर आय के ३ भागों को लेखक की सहायता के लिए वितरित कर दें, तथा एक भाग को रक्षित-कोष में स्थापित कर दें। यह कोष तुरन्त आवश्यकता में अग्रिम सहायता के लिए उपयोगी बनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५७ के अभिनव प्रकाशन

उपन्यास

भोर की किरणें	: अरुण, एम० ए०	२.२५
काली लड़की	: रजनी पनिकर	३.००
बहके-कदम	: रामकृष्ण शर्मा	२.२५
इन्सानियत फिर भी जीवित है	: करुणेन्द्र	३.००
बीते-दिन	: कृष्णमोहन राजवंशी	१.००
पांच बेंत	: देवदत विद्यार्थी भारती विद्यार्थी	५.००
दो सेर धान	: तकषी शिवशंकर पिल्ले	२.००
सौन्दर्य की रेखाएँ	: आस्कर वाइल्ड	५.००
पाप की गली	: डोरिन मैनरस	३.००
हमराही	: मारजौरी किनन रौलिंग्स	२.००

नाटक : एकांकी

समुद्रगुप्त	: वैकुण्ठनाथ दुग्गल	२.००
हीर-रांझा : संगीत-नाटक	: शीला भाटिया	२.००
कला के लिए	: भा० वि० वरेरकर	१.५०
कोरी करामात	: भा० वि० वरेरकर	२.००
बहू-बेटी	: श्रीकृष्ण	०.७५
अभिज्ञान शाकुन्तल	: इन्दुशेखर	३.००
उधार का पति	: बनमाला भवालकर	१.५०
आनन्द का राजपथ	: सीताचरण दीक्षित	२.२५
मनु तथा अन्य एकांकी	: लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००

काव्य

प्राण-गीत	: नीरज	३.००
बादल बरस गयो	: नीरज	३.००
दमयन्ती : महाकाव्य	: ताराचन्द हारीत	८.००
चन्देरी का जौहर: खण्ड-काव्य	: आनन्द मिश्र	२.००
दस्ते-सबा	: फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़'	२.००

साहित्य, आलोचना, निबन्ध

अध्ययन और आस्वाद	: गुलाबराय	७.५०
वन्दे वाणी विनायकौ	: रामवृक्ष बेनीपुरी	३.००
मुहावरे और कहावतें	: बालमुकुन्द अर्श मलसियानी	५.००
आधुनिक हिन्दी-साहित्य	: विजयेन्द्र स्नातक : सुमन	२.००
पत्र-लेखन कला	: बनारसीदास चतुर्वेदी	०.७५

भ्रमण

यूरोप के स्कैच : सचित्र	: रामकुमार	६.००

इतिहास : राजनीति

राष्ट्रपति और राष्ट्रपति-भवन : सचित्र	: वाल्मीकि चौधरी	६.००
मुग़ल साम्राज्य की जीवन-सन्ध्या : सचित्र	: राजेश्वरप्रसाद ना० सिंह	६.००
ग्रेट-ब्रिटेन का संविधान	: योगेन्द्र मल्लिक	४.००
क्रान्तिवाद	: विश्वनाथ राय	५.००

विज्ञान

सरल रेडियो-विज्ञान : सचित्र	: रमेशचन्द्र विजय	५.००
सैन्ट्रीफ्यूगल पम्प्स : सचित्र	: रामेश्वरदयाल	३.००

गृहस्थोपयोगी

पारिवारिक समस्यायें: सचित्र	: सावित्रीदेवी वर्मा	७.५०

आत्म-कथा

मेरे प्रभु, कैसा प्रभात	: मेरियन एण्डरसन	२.००

सचित्र लोक-कथा-माला

इस ग्रन्थ-माला में अब तक अनेक पुस्तकें छप चुकी हैं। पूरी सूची के लिए लिखिए।

सभी प्रमुख पुस्तक-विक्रेताओं से लीजिए

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद परिषद, काशी एवं आराधना प्रकाशन

वाराणसी के इन महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता के पास प्रत्येक पुस्तकालय में होना आवश्यक है।

प्रसाद काव्य-कोश : श्री जयशंकर प्रसाद की समस्त काव्य-रचनाओं में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द का सन्दर्भसहित अर्थ-कोश, जिसे श्री सुधाकर पाण्डेय ने अद्वितीय श्रम और विद्वत्ता से तैयार किया है। क्राउन ८-पेजी आकार के ४०८ पृष्ठ, पक्की जिल्द। मूल्य १६) मात्र। हिन्दी-कविता के पाठकों तथा विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से संग्रहणीय।

ग़ालिब की कविता : ग़ालिब की समस्त उर्दू-कविताओं का अर्थ और टिप्पणीसहित संकलन तथा उनके जीवन और साहित्य का श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ द्वारा विवेचन। पृष्ठ-संख्या ४७६, मूल्य १०) मात्र।

हिन्दी-साहित्य और साहित्यकार : श्री सुधाकर पाण्डेय द्वारा लिखित हिन्दी-साहित्य के इस सुबोध इतिहास की जितनी प्रतियाँ बिक चुकी हैं, शायद ही इतने कम समय में किसी अन्य पुस्तक की बिक्री हों। कुछ अरसे से यह पुस्तक अप्राप्य थी। मूल्य १ रुपया २५ नये पैसे मात्र।

सुचिताच : 'बहती गंगा' के लेखक श्री शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र' (रुद्र काशिकेय) का नवीन उपन्यास, जिसमें प्रेम के सब रूपों का दक्ष और रोचक निरूपण किया गया है। एकदम पठनीय प्रयास। पृष्ठ-संख्या २१६, मूल्य ४·५० रुपये मात्र।

साहित्य : श्री शंकर देव अवतरे कृत साहित्य का शास्त्रीय समाधान, पृष्ठ-संख्या ३१७, मूल्य ७) मात्र।

सिकन्दर का आक्रमण और पश्चिमोत्तर भारत : श्री बलराम श्रीवास्तव द्वारा चतुर्थ शती ईसवी पूर्व भारत की भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक। पृष्ठ-संख्या १५२, मूल्य ३) मात्र।

मार्क्सवाद और साहित्य : श्री महेशचन्द्र राय द्वारा साहित्य के प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण का वैज्ञानिक विवेचन। पृष्ठ-संख्या २४५, मूल्य ४ रुपये ५० नये पैसे मात्र।

★

प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता

आ रा ध ना प्र का श न

६४।४४ गोला दीनानाथ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगा और उसकी पूर्ति उस कार्य के लिए लेखकों से प्राप्त नवीन कृति के प्रकाशक की आय से होती रहेगी। इस प्रकार किसी भी साहित्यिक की सहायता के लिए ६ साहित्यिकों की नवीन या प्रचलित रचना का एक-एक संस्करण किया जाए। ऐसे साहित्यिकों की भी एक सूची रहे। जब भी आवश्यक हो २० या २४ साहित्यिकों में से ६ की रचना बारी-बारी से ली जाय।

परन्तु प्रकाशन, प्रचार विक्रय-कार्य प्रकाशकों की संस्था करे। उसके लेखक-प्रकाशक दोनों ही सदस्य रहें। आय-व्यय का विवरण सहायतार्थ पुस्तक-प्रदाता, और प्रकाशक जाँचकर उचित व्यवस्था देखते रहें।

इस प्रकार की संस्था से जहाँ लेखक की सहायता, सुविधा सम्भव होगी, वहाँ प्रकाशक और लेखक में आपसी सौमनस्य भी स्थापित होगा। महान् बात यह होगी कि एक स्वाभिमानी लेखक को एक साहित्यिक का उसकी रचना द्वारा ही सहयोग प्राप्त होगा। उसे इस परस्पर सहकार से सुख भी मिलेगा प्रतिष्ठा को ठेस भी नहीं लगेगी। प्रकाशक और लेखक में निकट स्नेह-भाव भी स्थापित होगा। अवश्य ही आरम्भ में यह सीमित सहायता का मार्ग होगा, पर यह क्रम चल गया तो एक स्थायी कोष भी स्थापित हो सकेगा। उसके द्वारा स्वतन्त्र प्रकाशन भी किया जा सकेगा, जो नियमित रूप से आय का, सहायता का साधन सुलभ हो जायगा। इसमें प्रकाशक का भी कोई दान-प्रसंग नहीं आता है, न लेखक को हा धन देना पड़ेगा। उसकी एक कृति सहायता में प्राप्त होगी, उसका प्रकाशन होगा, प्रचार होगा, केवल एक संस्करण का लाभांश ही अपने सहवर्गीय साहित्यिक को सुलभ होगा। इसमें लेखक के साथ प्रकाशक को भी विशेष व्यय, या श्रम, अथवा दान देने का कारण नहीं आता। वह साधारण प्रकाशन की तरह ही यह प्रकाशन भी करेगा केवल इस प्रकाशन का आय-व्यय पृथक् रखेगा, और लाभांश लेखकों के सहयोग से असमर्थ साहित्यिक को उसकी कठिनाई के काल में प्रस्तुत कर देगा। ५-७ प्रकाशक संयुक्त होकर सद्भावना-सहित यह कार्य करते हैं तो एक प्रकाशक पर भार भी न होगा और यह क्रम चक्र की तरह सरलता से चलता रहेगा और लेखकों की सहायता की संस्था का कार्य करने लगेगा। इसमें धनिक या शासन के समक्ष हाथ पसारने की ज़रूरत नहीं होगी। लेखक-प्रकाशक-संघ ही—जो एक-दूसरे से सम्बन्धित ही है—अधिक स्नेह-सूत्र में आबद्ध हो जायँगे; आपसी सन्देह भी हटेगा।

हमने बहुत वर्ष पूर्व इस प्रकार एक प्रयोग किया था। उसमें 'पृथ्वीराज की आँखें' (रामकुमार वर्मा) तथा आवारा-नाटक (उग्रजी) का प्रकाशित किया था। उसमें हमें माखनलालजी चतुर्वेदी, हरीभाऊ उपाध्याय, नवीनजी, महादेवी वर्मा ने भी अपनी कृति देना स्वीकार किया था, परन्तु ये लोग बाद में कृति दे न सके, और प्रकाशक एवं प्रचार के साधन सीमित होने के कारण हमें कठिनाई हुई। तथापि सस्ता-साहित्य-मण्डल ने पुस्तक प्रचारित कर लाभांश लेखक के परिवार को पहुँचाया था। किन्तु यह कार्य यदि प्रमुख प्रकाशकों के प्रतिनिधि हाथ में ले लेते हैं तो अवश्य ही सरल-सफल भी हो सकेगा और परस्पर सौन्दर्य स्थापित करने में बहुत सहायक होगा। आशा है प्रकाशक इस पर विचार करेंगे।

सरकारी कर्मचारियों के लिए उपयोगी

कार्यालय-क्रियाविधि

(Office-Procedure)

सरकारी कार्यालयों की क्रियाविधि का सरल और प्रामाणिक हिन्दी में वर्णन। भारत सरकार की प्राज्ञ परीक्षा के लिए सहायक पुस्तक। कीमत एक रुपया।

प्रशासन-शब्दावली

(Administrative Terms in Hindi)

प्रशासन में काम आने वाले पारिभाषिक शब्दों के लिए हिन्दी के प्रामाणिक पर्यायवाची शब्द। भारत सरकार की प्राज्ञ तथा प्रवीण परीक्षाओं के लिए परम उपयोगी पुस्तक। कीमत डेढ़ रुपया।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

नई सड़क, दिल्ली।

112144

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्रीय ग्रन्थों की खपत की कठिनाई

श्री एलन एंगॉफ़

श्री एंगॉफ़ चार वर्ष तक न्यूयॉर्क युनिवर्सिटी प्रेस के मुख्य सम्पादक रहे, उससे पहले कुछ अन्य प्रकाशकों के सम्पादन-विभाग में काम करते थे। आजकल वे मौंटक्लेयर की पब्लिक लायब्रेरी से सम्बद्ध हैं।

प्रतिवर्ष कितनी ही अच्छी पुस्तकों की प्रकाशनेच्छुक पाण्डुलिपियाँ दर-दर भटकती हैं। ये पाण्डुलिपियाँ उत्कृष्टतम कोटि की होती हैं तथा प्रायः उस विषय के अनेक प्रकाण्ड विद्वान उनके प्रकाशन की विशेष सिफारिश करते हैं। लेकिन प्रकाशक ऐसी पाण्डुलिपियों को स्वीकार नहीं कर पाते, क्योंकि उनके पाठकों की अनुमानित संख्या बहुत कम होती है जिसके कारण उन्हें प्रकाशित करने पर घाटा हो सकता है। प्रकाशक उनकी २५० या १२४० या १५०० और कभी-कभी इससे कुछ अधिक प्रतियों से ज्यादा बेच पाने की उम्मीद नहीं कर सकता। इन संख्याओं का अर्थ यह होगा कि देश के किसी भी प्रकाशक, यहाँ तक कि यूनिवर्सिटी प्रेसों को भी, प्रत्येक पुस्तक पर १०,००० रुपये या इससे अधिक का घाटा उठाना पड़ेगा। हाँ, यूनिवर्सिटी प्रेसों को भी, जिन्हें व्यावसायिक प्रकाशकों की अपेक्षा लागत निकालने के लिए लगभग आधी संख्या में, अर्थात् लगभग ३००० प्रतियों तक ही, बेचना रहता है। इसका परिणाम यह होता है कुछ अत्यन्त उत्कृष्ट कृतियाँ सदैव के लिए अप्रकाशित ही रह जाती हैं।

आज के युग में, जब कि लेखक को इतने अधिक सुअवसर उपलब्ध हैं, यह एक भयावह और प्रायः अविश्वसनीय-सी बात है। लेकिन अधिकांश सम्पादकों की दृष्टि से ऐसी पाण्डुलिपियाँ प्रतिमास गुजरती हैं। इनमें महत्त्वपूर्ण जीवन-चरित्र, ऐतिहासिक अध्ययन, साहित्यिक-समालोचनाएँ, प्रायः महान् व्यक्तियों, ऐतिहासिक आन्दोलनों तथा घटनाओं से सम्बन्धित नवीन सामग्री पर आधारित मौलिक व्याख्याएँ आदि सम्मिलित हैं। जहाँ तक नई कविता का सम्बन्ध है, इसका अधिकांश बिलकु निकृष्ट और प्रकाशित करने के अयोग्य है, लेकिन अत्यन उत्कृष्ट कविताओं में से भी अधिकांश केवल इसलि प्रकाशित नहीं हो पातीं कि उनके प्रकाशन से प्रकाशक क कुछ घाटा उठाना पड़ता।

बहुत से प्रेसों को प्रकाशन में उनके अनुभाग से अधि घाटा सहना पड़ता है—और कुछ आश्चर्यजनक रूप महत्त्वपूर्ण तथा अत्यन्त प्रशंसित पुस्तकों में भी घाट उठाना पड़ जाता है। उदाहरण के लिए १५ वर्षों अनुसन्धान-कार्य के फलस्वरूप राबर्ट सूपर द्वारा लिख गई महत्त्वपूर्ण जीवन की तीन वर्षों में न्यूयॉर्क यूनिवर्सिट प्रेस द्वारा केवल ६६७ प्रतियाँ ही बेची जा सकीं प्रकाशन के लिए उक्त पुस्तक पाकर उसे प्रसन्नता हुई थ लेकिन अपनी लागत निकालने के लिए उसे दो हज़ा प्रतियाँ अभी और बेचनी हैं और उसमें अभी दस से पन्द्र वर्ष लगेंगे। सर्जी बर्टेन्सन तथा जे लींडा की पुस्तक रै मैनिनॉफ़ का प्रकाशन १९५६ में हुआ था और उसक केवल १६०३ प्रतियाँ बिक सकी हैं और अगले दो व के पहले उसकी लागत नहीं निकल सकेगी। पिछले सा प्रकाशित लुई कोनिग की पुस्तक 'ट्रूमेन एडमिनिस्ट्रेशन' यहाँ और इंगलैण्ड में १२५० प्रतियाँ बिकी हैं। १५० और प्रतियों के बिक जाने के बाद ही उसे व्यावसायि दृष्टि से एक प्रकाशन-योग्य कृति कहा जा सकेगा। न्यूयॉ यूनिवर्सिटी-प्रेस तथा अन्य यूनिवर्सिटी-प्रेसों के पास इस त की अनेक पुस्तकें हैं और आगे भी वे ऐसी पुस्तकों प्रकाशन करते जायँगे, चाहे व्यावसायिक दृष्टि से उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन में लाभ की सम्भावनाएँ न हों। लेकिन धीरे-धीरे ऐसे प्रेसों को एक-न-एक दिन ऐसी स्थिति में पड़ना ही होगा जब उन्हें अन्य सभी दृष्टियों से प्रकाशन के योग्य होने पर भी केवल न बिक सकने के दोष के कारण कुछ पाण्डुलिपियों को लौटाने के लिए विवश होना पड़ेगा। इसमें सन्देह नहीं कि अल्पजीवी उपन्यासों तथा समसामयिक राजनीतिक नेताओं या उद्योगपतियों की जीवनियों के प्रकाशन की मूल योग्यता उनकी विक्रय-शक्ति ही है। लेकिन एडमन बर्क का कथन है कि क्या किसी पाण्डुलिपि की विक्रय-क्षमता इतनी महत्त्वपूर्ण है चाहे वह ऐसी पाण्डुलिपि हो जिसमें गहन अन्वेषण-कार्य का प्रतिनिधित्व किया गया हो, नवीन तथ्यों का अन्वेषण एवं अध्ययन किया गया हो, या वह ऐसी महत्त्वपूर्ण पाण्डुलिपि हो जो पूर्व-हिटलर जर्मनी के सम्बन्ध में लिखी गई हो? हाँ, वास्तविकता यही है और ऐसा ही प्रत्येक प्रकाशन में किया जाता है।

इस वर्ष मॉडर्न लेंग्वेजिज एसोसिएशन ने रिचर्ड एम० चैंडबॉर्न की पाण्डुलिपि 'अर्नेस्ट रेनान एण्ड द आर्ट आफ़ द फ्रेन्च एस्से' को साहित्य के क्षेत्र में शिल्प की दृष्टि से शास्त्रीय ग्रन्थ मानकर प्रथम पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की है। इस पर लेखक को ५००० रुपयों का पुरस्कार मिला है और कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस उसकी पुस्तक प्रकाशित करेगा। लेकिन एक वर्ष पूर्व येल के प्रो० हेनरी पियरे तथा न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी के मॉरिस बॉडिन की अनुस्वीकृति होते हुए भी बिना लेखक से अनुधन लिये इस पुस्तक का प्रकाशन येल यूनिवर्सिटी प्रेस को असम्भव-सा लगा था।

धनी प्राध्यापक तथा विद्वान् और ऐसे लोग जो प्रकाशन के लिए काफी कर्ज ले सकते हैं, अनधुन देकर यूनिवर्सिटी प्रेसों से, तथा ऐसे प्रेसों से जो गौरव-रक्षक (वैनिटी) प्रेस कहलाते हैं, अपनी कृति प्रकाशित करवा सकते हैं। यूनिवर्सिटी प्रेस अनुधन वाली पाण्डुलिपियों का भी वह उच्च स्तर चाहते हैं जो बिना अनुधन वाली पाण्डुलिपियों का होता है। गौरव-रक्षक (वैनिटी) प्रेस बड़े ढुल-मुल होते हैं और प्रायः बहुत से हीन कोटि के शास्त्रीय ग्रन्थों का प्रकाशन करते हैं। अधिकांश विद्वान् दोनों में से किसी भी प्रकार की संस्थाओं द्वारा अपनी कृति का

हमारे नए आलोचनात्मक ग्रन्थ

जो किसी भी पुस्तकालय की शान हैं

काव्यादर्श (दण्डीकृत) टीकाकार रणवीरसिंह एम० ए०

सिद्धान्तालोचन (आलोचना के सिद्धान्त)
धर्मचन्द सन्त तथा बलदेव कृष्ण

भाषा का इतिहास (भाषा-विज्ञान)
पं० भगवद्दत्त

आधुनिक साहित्य परिचय
ओमप्रकाश शर्मा एम० ए०

हमारे अन्य प्रमुख आलोचनात्मक ग्रन्थ

भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका : डॉ० नगेन्द्र १०)
सूर-मीमांसा : डॉ० व्रजेश्वर वर्मा ४)
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य :
डॉ० प्रतिपालसिंह ८॥)
हिन्दी-गद्य का आविर्भाव और विकास :
धर्मचन्द सन्त २।)
हिन्दी-साहित्य की कहानी : प्रभाकर माचवे २।)
प्रेमचन्द और उनका गोदान : बलदेवकृष्ण ५।)
महादेवी की काव्य-साधना : सत्यपाल चुघ २॥)
काव्य सम्प्रदाय और वाद : अशोककुमारसिंह ४॥)

इन ग्रन्थों को अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से माँग कीजिए या हमें लिखिए।

ओरिएण्टल बुक डिपो,
नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन करवाने का व्यय-वहन करने की क्षमता नहीं रखते, परिणामस्वरूप अमरीका में कुछ अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के विचार तथा अनुसन्धान राष्ट्र तथा विश्व के लोगों तक पहुँचने के पहले ही विस्मृति के गर्त में समा जाते हैं। यह अमरीका के बौद्धिक जीवन में सम्भवतः एक अकल्पनीय लज्जास्पद तथा अनावश्यक क्षति है।

इस भयानक क्षति के परिमाण को कम करने के लिए प्रयास किये गए हैं और किये भी जा रहे हैं। थोड़े दिन हुए फ़ोर्ड फ़ाउन्डेशन ने अधिकारिक यूनिवर्सिटी प्रेसों को "साहित्य तथा सामाजिक शास्त्रों के शास्त्रीय ग्रन्थों के प्रकाशन में योग देने के लिए" एक उपयुक्त धन-राशि प्रदान करने की घोषणा की है. आगे यह स्पष्ट कर दिया है कि "फाउन्डेशन द्वारा दिये जाने वाले अनुदान का उद्देश्य यूनिवर्सिटी प्रेसों को चलाते रहने या प्रेसों को पहले से ही मिलने वाले सामान्य या विशेष अनुदानों का स्थान ग्रहण करना नहीं है।" इसमें सन्देह नहीं कि इससे कुछ ऐसी अत्यन्त उत्कृष्ट कृतियों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा जिनके प्रकाशित होने की कोई आशा नहीं थी। बॉलिन्जेन फाउन्डेशन कई वर्षों से कुछ थोड़ी-सी शास्त्रीय कृतियों का प्रकाशन सम्भव करता आ रहा है। अप्रकाशित कवियों के सम्बन्ध में येल यूनिवर्सिटी-प्रेस-प्रतियोगिता की स्थापना की गई है जिसके फलस्वरूप प्रतिवर्ष कम-से-कम एक ऐसी कविता पुस्तक का प्रकाशन सम्भव हो सका है जो अन्यथा न हो पाता! इसी तरह कुछ अन्य पारितोषिक तथा पुरस्कार हैं लेकिन ये सभी मिलकर भी प्रथम कोटि की पाण्डुलिपियों का एक विशाल भण्डार अछूता ही छोड़

लायब्रेरियों में रखने योग्य हमारे अभिनव प्रकाशन

१.	हिन्दी साहित्य में हास्य रस (थीसिस) :	डॉ० बरसानेलाल चतुर्वेदी एम० ए०, पी-एच० डी०	७॥)
२.	महादेवी और उनका 'आधुनिक कवि' :	प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त एम० ए०	७=)
३.	कबीर एक विवेचन :	डॉ० सरनामसिंह शर्मा 'अरुण' एम० ए०, पी-एच० डी०	१०)
४.	सरल भाषा विज्ञान :	डॉ० मनमोहन गौतम एम० ए०, पी-एच० डी०	५।।।)
५.	प्रबन्ध प्रदीप :	प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०	५)
६.	हिन्दी साहित्य का इतिहास :	,,	२॥)
७.	हिन्दी निबन्धमाला :	,,	२॥)
८.	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा का इतिहास :	,,	२॥)
९.	साहित्यालोचन-सिद्धान्त :	डॉ० मनमोहन गौतम एम० ए०, पी-एच० डी०	२)
१०.	प्राचीन कवि और काव्य :	,,	३)
११.	हिन्दी के गौरव ग्रन्थ :	,,	३)
१२.	हिन्दी साहित्य का इतिहास :	,,	३)
१३.	हिन्दी-गद्य-साहित्य :	प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त एम० ए०	२॥)
१४.	नाटक की रूपरेखा :	प्रो० दशरथ झा	३)
१५.	रघुवंशम् तेरहवाँ सर्ग सटीक :	प्रो० इन्द्रकुमार विद्यार्थी	१)
१६.	हितोपदेश—मित्रलाभ सटीक :	प्रो० आदित्येश्वर कौशिक	१॥)
१७.	अशोक बाल हिन्दी कोष :	,,	३।।।)
१८.	वंश-वल्लरी (सामाजिक उपन्यास) :	उर्मिला कुमारी एम० ए०	३।।।)
१९.	साहित्यरत्न निबन्धमाला :	प्रो० भारतभूषण 'सरोज' एम० ए०	४॥)

हमारे अन्य प्रकाशनों के लिए भी लिखिए। हमारा बड़ा सूचीपत्र निःशुल्क मँगाइये।

हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देते हैं।

व्यावसायिक प्रकाशक, जिन्होंने हमेशा ही अल्प विक्रय शक्ति वाली कुछ शास्त्रीय कृतियों का प्रकाशन किया है, आगे चलकर भी रोजी देने वाली पुस्तकों—लोकप्रिय उपन्यासों, बुक क्लब के संकलनों, भड़कीले जीवन-चरित्रों तथा निकट अतीत के सहज पाठ्य इतिहासों—की बिक्री यदि अनुमति देगी तो वे अधिकाधिक ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करेंगे और इसके लिए सभी विद्वान् उनके कृतज्ञ होंगे। यूनिवर्सिटी प्रेसों ने पिछले वर्ष १२०२ पुस्तकों का प्रकाशन किया और अगले कुछ वर्षों में भी यूनिवर्सिटी तथा प्रकाशन-व्यवसाय दोनों में सौतेली सन्तान की-सी स्थिति रखने पर भी कुछ और पुस्तकों का प्रकाशन करेंगे। लेकिन इस पर भी देश का प्रत्येक अच्छा प्रकाशक तथा सम्पादक कुछ ऐसी उत्तम पाण्डुलिपियों को न भूल पायेगा जिन्हें हमारे विद्वानों ने प्रायः बिना रायल्टी के और कभी-कभी लागत के घाटे को पूरा करने के लिए अपने विभागों से मिलने वाले अल्प वेतन में से बचाये गए धन को देकर भी उनसे प्रकाशित करवाना चाहा था। उन सम्पादकों से पूछिए जो प्रतिवर्ष अमरीका की आधुनिक भाषा, राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान तथा अन्य विषयों की परिषदों तथा समितियों के अधिवेशनों में भाग लेते हैं। वे आपको बतायेंगे कि प्रकाशन क्षेत्र में उनके वे अनुभव अत्यन्त हृदयद्रावक हैं क्योंकि वे उन अनेक स्त्री-पुरुषों की कहानी कहते हैं जो आज भी बिना किसी भौतिक उपलब्धि की आशा के चुपचाप ज्ञानार्जन के कार्य में लगे हैं और जिन्हें अपनी कृति के प्रकाशित होने का जरा भी ख्याल नहीं है। लेकिन सम्पादक जब उल्लास-वर्द्धक सभाओं में भाग लेकर तथा विद्वानों से बातचीत करके अस्थायी रूप से स्फूर्ति युक्त होकर लौटता है तो शीघ्र ही उसे निराश होना पड़ता है क्योंकि उसका सेल्स मैनेजर बताता है कि विद्वत्तापूर्ण कृतियाँ कैसे लाभदायक नहीं हैं और उनके प्रकाशन से केवल लाभ नहीं होता, या लागत नहीं निकलती या थोड़ा घाटा उठाना पड़ता है बल्कि लगातार भारी हानि सहन करनी पड़ती है।

हमारी स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष में भारी रियायत

हमारी कम्पनी के प्रकाशन-कार्य आरम्भ किये पचास वर्ष पूरे हो गए। हमारे यहाँ की पहली पुस्तक "स्वास्थ्यरक्षा" (तन्दुरुस्ती का बीमा) थी, किन्तु आगे चलकर, हमने प्रमुखता आयुर्वेद-ग्रन्थों को दी, और उनकी माँग भी खूब हुई और हो रही है। हमारे यहाँ से प्रकाशित भर्तृहरि के तीनों शतकों की सचित्र टीकाएँ भी कम लोकप्रिय नहीं हुई। लगभग १२ सौ पृष्ठों और सौ के करीब चित्रों से अलंकृत ये शतकत्रय सत्साहित्य-प्रेमियों के कण्ठहार हैं।

ग्राहकों को रियायत

अपने प्रकाशन की स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष में, कागज और छपाई की महँगाई होते हुए भी, हम पुस्तक-प्रेमियों को कुछ विशेष छूट दे रहे हैं और यह छूट ३१ मार्च १९५८ ई० तक के लिए सीमित है। इस रियायत की दरों के लिए विक्रेता हमसे पत्र-व्यवहार करें। हमने ऐसा प्रबन्ध किया है कि रियायती दर पर पुस्तकें बेचने के बाद भी, विक्रेता को कम-से-कम १० प्रतिशत की बचत हो।

आपसे अनुरोध है कि आप हमारे इस शुभ अनुष्ठान में सहयोग दें और अपने आर्डर शीघ्र भेजकर हमें अनुगृहीत करें; क्योंकि, सम्भव है, विलम्ब होने से कतिपय पुस्तकों के स्टॉक समाप्त हो जाने पर, कुछ समय के लिए आपके आदेश-पालन में कठिनाई उत्पन्न हो जाए।

आयुर्वेद-ग्रन्थों के भारत-विख्यात प्रकाशक :

हरिदास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि०, मथुरा (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

नये कापीराइट ऐक्ट पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर ८ अगस्त '५७ को हो चुके हैं। १९५२ में हुई इण्टरनेशनल कापीराइट कॉन्फ्रेन्स (जेनेवा) के निर्णयों पर भारत अपनी सहमति व्यक्त कर चुका था और देश में नये कापीराइट के कानून के बन जाने के बाद २४ अक्तूबर '५७ को हिन्दुस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट कन्वेन्शन की पूर्ण स्वीकृति 'यूनेस्को' के पास जमा कर दी गई। इसके परिणामस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट के नियम २४ जनवरी '५८ से हमारे देश में लागू समझे जायँगे।

एक विशेष नियम के अनुसार २४ जनवरी, '५८ के बाद से कापीराइट का अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षण पाने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक पुस्तक के आरम्भ में एक चक्र के अन्दर अंग्रेजी का C अक्षर छपे, उसके आगे उस व्यक्ति या संस्था का नाम हो जिसके पास कापीराइट है, तथा पुस्तक के प्रथम प्रकाशन की तारीख दी गई हो।

* * *

नई दिल्ली में भारत-सरकार के केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय ने दिसम्बर के प्रथम व दूसरे सप्ताह में हिन्दी में उपलब्ध वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य की प्रदर्शनी आयोजित की। प्रदर्शनी में लगभग १००० पुस्तकें रखी गईं और उसके छः मुख्य विभाग थे : (१) भौतिक विज्ञान, जिसके अन्तर्गत गणित, भौतिकी, रसायन, प्राणि शास्त्र, वनस्पति-विज्ञान, आयुर्वेद, आरोग्य-शास्त्र आदि विज्ञानों की पुस्तकें रखी गईं; (२) सामाजिक-विज्ञान में अर्थ-शास्त्र, नीति-शास्त्र, समाज-शास्त्र, शिक्षा-शास्त्र, मानव-विज्ञान, मनोविज्ञान, कानून आदि विषयों की पुस्तकें प्रदर्शित हुईं। (३) सामान्य तथा सरल-विज्ञान, (४) तकनीकी पुस्तकें, (५) ललित-कला, (६) वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाएँ। प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति ने ५ दिसम्बर '५७ को किया।

* * *

जनवरी '५८ से हिन्दी के प्रसिद्ध प्रगतिशील आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा के सम्पादन तथा श्री राजनाथ शर्मा एवं श्री विश्वम्भर नाथ उपाध्याय के सहसम्पादन में **समालोचक** नाम से एक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ हो रहा है। पत्र का प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, हस्पताल रोड, आगरा से होगा। वार्षिक मूल्य ५) है, एक प्रति का ।।) तथा विशेषांक का २)। समीक्षा के लिए प्रकाशकों को पुस्तकों की २-२ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

* * *

मैसूर स्टेट पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स एसोसिएशन, बंगलोर के मन्त्री महोदय ने भारत-सरकार केन्द्रीय वित्त विभाग से पत्र द्वारा बिक्री के आधार पर भेजी गई पुस्तकों पर केन्द्रीय बिक्री-कर की स्थिति जाननी चाही थी। उत्तर में सरकार की ओर से लिखा गया कि "यदि पुस्तकें बिक्री और वापसी के आधार पर भेजी जाती हैं तो कोई 'बिक्री' हुई हो, ऐसा नहीं कहा जा सकता और केन्द्रीय बिक्री-कर नहीं वसूला जा सकता। इस हालत में डिक्लेरेशन फ़ॉर्म (फ़ॉर्म 'सी') को भेजने की आवश्यकता नहीं है। जब बिक्री हो जाय तो एजेन्ट को बिकी हुई पुस्तकों के मूल्य पर बिक्री-कर अदा करना होगा।"

* * *

जम्मू व कश्मीर राज्य में स्कूली पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है और अब वहाँ के डायरेक्टर आफ़ एजुकेशन श्री डी० एम० मुख्तार के अनुसार पुस्तकों का संशोधन हो रहा है, क्योंकि उनकी सामग्री पुरानी पड़ चुकी है।

* * *

हिन्दुस्तान में पुस्तकों के हल्के-से-हल्के पैकेट पर ८ नये पैसे की पोस्टेज लगती है जबकि हज़ारों मील दूर जाने वाली पुस्तकों के पैकेटों पर ७ नये पैसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-भवन के प्रमुख प्रकाशन

उपन्यास, कहानी

केलाबाड़ी (नित्यानन्द वात्स्यायन) १।)
सुबह के भूले (इलाचन्द्र जोशी) ५)
मुक्तिपथ ,, ५।)
मूक तपस्वी (कंचनलता सब्बरवाल) ४)
युग सन्देश (पृथ्वीनाथ शर्मा) ३।।।)
उदय अस्त ,, २।)

नाटक तथा एकांकी संग्रह

प्रकाशस्तम्भ (हरिकृष्ण प्रेमी) १।।)
रक्षाबंधन ,, १।)
प्रतिशोध ,, १।।।)
शिवासाधना ,, २)
आहुति ,, १)
बन्धन ,, १।)
दशाश्वमेध (लक्ष्मीनारायण मिश्र) १।=)
वत्सराज ,, १।।)
प्रताप प्रतिज्ञा (जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द) १।)
अपराधी (पृथ्वीनाथ शर्मा) ।।।)
साध ,, ।।।)
दुबिधा ,, ।।।)
कर्मपथ (दयानाथ झा) २)
आदित्यसेनगुप्त (कंचनलता) १।।)
विक्रमादित्य (उदयशंकर भट्ट) १=)
सरस एकांकी नाटक (रामकुमार वर्मा) १।।)
आठ एकांकी नाटक ,, २)

भारतीय इतिहास

भारतीय कृषि का क ख (जयचन्द्र विद्यालंकार) ७)
इतिहास प्रवेश ,, ११)
लघु इतिहास प्रवेश ,, ५)
भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न ,, १)
पुरखों का चरित (तीन भाग) ,, २), १।।), १।।)
हमारा राजस्थान (पृथ्वीसिंह विद्यालंकार) ६)

साहित्यिक ग्रन्थ

भारत की भाषाएं और भाषा संबंधी समस्याएं (सुनीतिकुमार चटर्जी) ३)
हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास (रामबहोरी शुक्ल तथा भगीरथ मिश्र) ८)
हिन्दी-गद्य-साहित्य का इतिहास (जगन्नाथप्रसाद शर्मा) २।।)
प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन (नन्ददुलारे वाजपेयी) २=)
हिन्दी कलाकार (इन्द्रनाथ मदान) ५।।)
शरच्चन्द्र चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान) २।।)
जयशंकरप्रसाद चिन्तन व कला (इन्द्रनाथ मदान) ६।)
साहित्य मीमांसा (सूर्यकान्त) ४)
साहित्य समालोचना (रामकुमार वर्मा) १।।।)
हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास (सोमनाथ गुप्त) ५)
तुलसी (रामबहोरी शुक्ल) ३)
काव्य-प्रदीप (रामबहोरी शुक्ल) ३।)
आलोचना प्रवेश (प्यारेलाल शर्मा) ३।।।)
प्रबन्ध प्रभाकर (गुलाबराय) ५।)
सामयिक निबन्ध (इन्द्र एम० ए०) २।)
कालेज निबन्ध (रोशनलाल सिंहल) ४।।)
खड़ी बोली के गौरव-ग्रन्थ (विश्वम्भर मानव) २।।)
पदमावत का ऐतिहासिक आधार (इन्द्रचन्द्र नारंग) १)
पदमावत-सार (इन्द्रचन्द्र नारंग) ५)
गुञ्जन का अनुशीलन (बलदेवप्रसाद शुक्ल) ३)
भूषण ग्रन्थावली सटीक (देवचन्द्र) ५)
श्री गांधीचरितमानस (विद्याधर महाजन) ५।।=)

विविध

जेल में तीस बरस (त्रैलोक्यनाथ चक्रवर्ती) ४)
शिल्पमाला (विद्याधरी जौहरी) २ भाग ६), ४)
बदलते दृश्य (राजवल्लभ ओझा) ६)
गृह विज्ञान (कंचनलता सब्बरवाल) ६)

हिन्दी-भवन जालन्धर और इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ महत्त्वपूर्ण नये प्रकाशन

राहुल साहित्य

ऋग्वेदिक आर्य : मू० ८) । ऋग्वेद पर आधारित एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन ।

वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली : मू० ७।।) । भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में (१९३० में) अपने जीवन की आहुति देने वाले एक गढ़वाली सैनिक की अमर गाथा ।

बाईसवीं सदी : मू० १।) । मानव-संस्कृति के भावी सोपान की सम्भाव्य परिकल्पना ।

कहानियाँ—नाटक

बुझते दीप : मू० २।।) । श्रीमती विमला रैना की कहानियों का प्रथम प्रकाशित संग्रह ।

आदान-प्रदान : मू० २।।) । सुप्रसिद्ध कथाकार श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत व्यक्ति और समाज के जागरण की उत्कृष्ट कहानियाँ ।

चील का घोंसला : मू० २।।) । श्री राजेन्द्रलाल हाँडा के उन्नीस रेखाचित्रों का संग्रह ।

राजधानी के अंचल से : मू० २।।) । सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा व्यंग्य-लेखक श्री हाँडा द्वारा प्रस्तुत दिल्ली के जीवन की कुछ रोचक झाँकियाँ ।

उजाला : मू० १।।।) । श्री कृष्णबहादुर चन्द्रा द्वारा ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया तीन अंकों का सम्पूर्ण नाटक ।

सरहद : मू० २) । श्री के० बी० चन्द्रा का एक सहज अभिनेय सामाजिक नाटक ।

उपन्यास

सूनी घाटी का सूरज : मू० ३) । श्रीलाल शुक्ल द्वारा नई शैली में लिखा गया एक संस्मरणात्मक लघु उपन्यास ।

प्रभावती : मू० ३) । महाकवि निराला द्वारा लिखा गया प्रेमप्रधान ऐतिहासिक उपन्यास ।

चीवर : मू० ५) । हर्षकालीन भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि पर डॉ० रांगेय राघव का सशक्त उपन्यास ।

लोकप्रिय विज्ञान माला

संसार के सर्प : मू० ४) । ले० जगपति चतुर्वेदी ।

पशु जीवन का मानवीय रूप : मू० २) । ले० डॉ० प्रसाद ।

धरती माता : मू० २) । ले० श्री सूरज ।

चन्द्रलोक की यात्रा : मू० २।।) । ले० रमेशचन्द्र वर्मा ।

सचित्र बाल साहित्य

भारत के नगर : मू० १।) । ले० बच्चन श्रीवास्तव ।

रंग-बिरंगी मछलियाँ : मू० १) । ले० कैलाशचन्द्र ।

चाँद की यात्रा और राकेट : मू० ।।।) । ले० हरीश अग्रवाल ।

दो नाटक : मू० १) । ले० बालकराम नागर ।

बर्मा की लोक-कथाएँ : मू० १।।) । ले० रमेशचन्द्र 'प्रेम' ।

कुछ विशिष्ट पुस्तकें

भारत में फलोत्पादन : मू० ८) । ले० जयरामसिंह । प्रस्तुत विषय का एक प्रामाणिक ग्रन्थ ।

भारतीय अर्थशास्त्र : एक परिचय : मू० ५) । ले० श्री अमरनारायण अग्रवाल । नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया भारतीय अर्थ-व्यवस्था का यथातथ्य अध्ययन ।

भारतीय शिक्षा का इतिहास : मू० ८।।) । ले० श्री सूर तथा दुबे । ब्रिटिशकालीन भारतीय शिक्षा-पद्धति का विस्तृत विश्लेषण ।

कौटिलीय अर्थशास्त्र : मू० ७) । ले० देवदत्त शास्त्री । अर्थशास्त्र के प्रथम आचार्य विष्णुगुप्त कौटिल्य के सिद्धान्तों का विस्तृत विश्लेषण ।

किरातार्जुनीय महाकाव्य : मू० ७) । अनु० श्री रामप्रताप त्रिपाठी । महाकवि भारवि की अमर कृति का सटिप्पण रूपान्तर ।

प्रकाशक :

किताब महल

५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद • २३५, हार्नबी रोड, बम्बई • २८, फैज़ बाज़ार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब युविर्सिटी की सेनेट ने सिंडिकेट के इस सुझाव को अस्वीकृत कर दिया कि प्रकाशकों द्वारा मेट्रिक्युलेशन की परीक्षा के लिए सबमिट की गई हिन्दी-अंग्रेजी तथा पंजाबी की पुस्तकों पर १९६० की परीक्षाओं के लिए विचार किया जाय। युनिवर्सिटी इससे पहले निर्णय ले चुकी है कि इन विषयों की पाठ्य-पुस्तकों का सम्पादन तथा प्रकाशन वे स्वयं करेगी। युनिवर्सिटी के गत वाइस-चाँसलर दीवान आनन्द-कुमार ने कहा कि उनके तथा सेनेट के अन्य सदस्यों के पास कई-एक प्रकाशक दबाव डालने पहुँचे थे; उन्होंने प्रकाशकों से कहा कि कृपा करके अब युनिवर्सिटी में भ्रष्टाचार फैलाना बन्द कर दीजिए।

* * *

दक्षिण भारत के अध्यापक-संघ (साउथ इण्डिया टीचर्स यूनियन) की कार्यकारिणी ने एक प्रस्ताव द्वारा पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के निर्णय की भत्सर्ना की है।

* * *

गत मास केरल राज्य के कोट्टायम नगर में समस्त केरल साहित्य परिषद् के उत्सव पर एक पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी को ३२,००० व्यक्तियों ने देखा। प्रदर्शनी पहले ४ दिनों के लिए खोली गई थी लेकिन जनता के आग्रह पर इसे एक सप्ताह तक चलाया गया।

* * *

प्रयाग के दैनिक पत्र 'लीडर' के प्रतिनिधि से एक भेंट के दौरान में आचार्य श्री हजारी प्रसादजी द्विवेदी ने पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति के प्रति अपने असन्तोष और विरोध को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस दिशा में सही कदम यह होगा कि पाठ्य-पुस्तकों को प्रकाशित करने का उत्तरदायित्व युनिवर्सिटियों, स्वाधीन संगठनों (ट्रस्टों) तथा साहित्यिक संघों पर डाला जाय।

* * *

मैसूर के वित्त-मन्त्री श्री टी० मरिअप्पा ने २६ नवम्बर '५७ को बंगलोर में मैसूर-राज्य के पब्लिशर्स एण्ड बुक्सेलर्स एसोसिएशन के सामने भाषण देते हुए कहा कि राज्य की विधान-सभा के अगले अधिवेशन में पुस्तकों की बिक्री को सेल्स-टैक्स से बरी करने का संशोधन पेश किया जायगा।

केरल राज्य की सरकार की एक घोषणा के अनुसार जो कमेटियाँ पाठ्य-पुस्तकों के संशोधन के लिए बनाई गई हैं, कम्यूनिस्टों को उनमें नहीं रखा गया है ताकि सरकार पर यह अभियोग न लगाया जा सके कि वह राज्य की शिक्षा को एक विशेष दिशा में मोड़ देना चाहते हैं। प्रमुख शिक्षाविदों एवं साहित्यिकों को ही इन कमेटियों की सदस्यता प्रदान की गई है।

* * *

भारत-सरकार द्वारा संस्थापित साहित्य अकादेमी ने बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा प्रकाशित तथा दिवगत आचार्य नरेन्द्रदेव द्वारा लिखित **बौद्धधर्म दर्शन** पर ५००० रुपये का पुरस्कार देने का निश्चय किया गया है। अन्य भाषाओं की निम्नलिखित पुस्तकों पर इसी राशि के पुरस्कार देने की घोषणा हुई है :

बँगला : सागर थेके फेरे (कविता) : श्री प्रेमेन्द्र मित्र
मलयालम : चेम्मीं (उपन्यास) श्री शंकर पिल्लै

विराज-साहित्य पढ़िये

असिधारा : राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण करने वाली ओजस्वी कथाएँ। कीमत तीन रुपये।

वसन्त के फूल : सरस, दार्शनिक रुबाइयाँ। दुरंगी कलापूर्ण छपाई। कीमत चार रुपये।

वनराज के राज में : शिकार तथा वन-भ्रमण की रोमांचकारी पुस्तक। कीमत चार रुपये।

तिरंगा झंडा : चार राष्ट्रीय एकांकी। कीमत सवा रुपया।

साहसी जीवन : साहसी वीरों की कथाएँ। कीमत सवा रुपया।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हिन्दी के सभी मूर्धन्य समालोचकों की दृष्टि में श्री सत्य प्रकाश संगर एक प्रतिभासम्पन्न कुशल कलाकार हैं। आधुनिक उपन्यासकारों तथा कहानी-लेखकों में आपने एक विशिष्ट स्थान बना लिया है। अभिव्यक्ति में प्रवाह, धारणा में मौलिकता, तथा शैली और कथोपकथन में प्रवीणता के कारण श्री संगर की गणना हिन्दी के कुछ प्रमुख लेखकों में अनायास ही आ जाती है।"

—*हिन्दुस्तान टाइम्स*

हिन्दी-संसार के सुप्रसिद्ध लेखक

डॉ० सत्यप्रकाश संगर

की

मौलिक एवम् अनुपम कृतियाँ

उपन्यास

१. कली मुसकराई **२. घर की आन**
३. चाँद रानी

कहानी-संग्रह

४. अवगुण्ठन **५. कितना ऊँचा कितना नीचा**
६. नया मार्ग **७. लम्बे दिन जलती रातें**
८. अफ्रीका का आदमी

प्रकाशक : **विजय प्रकाशन,**
१३६/१ कालेज कलोनी, भूपाल

मुख्य वितरक : **राजकमल प्रकाशन,**
दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना, मद्रास

तेलुगु : श्री कृष्णुनी जीवितचरित (रामकृष्ण परमहंस का जीवन-चरित्र), स्वामी चिरंतनानन्द।

ऊपरिलिखित चार पुस्तकें १९५४ से ५६ तक की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ मानी गईं।

* * *

मॉस्को के फ़ॉरेन लैंग्वेजिज़ पब्लिशिंग हाऊस ने भारत के कुछ प्रमुख कहानी-लेखकों की कहानियों का प्रकाशन हाल ही में किया था। इस संग्रह में सर्वश्री उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णुप्रभाकर, सुदर्शन, माणिक बैनर्जी आदि की कहानियाँ थीं। संस्करण की बिक्री हाथोंहाथ हो गई।

'अर्थशास्त्र' (चाणक्य) तथा 'पंचतन्त्र' का प्रकाशन शीघ्र ही होगा, तथा बाल गंगाधर तिलक के लेखों का एक संग्रह भी प्रकाशित किया जा रहा है।

* * *

"सदर्न लैंग्वेजिज़ बुकट्रस्ट," मद्रास ने पुस्तकों में न्यूज़प्रिंट बरतने के बारे में एक पत्र भारत सरकार को लिखा था। उत्तर में अपने १३ नवम्बर '५७ के पत्र में श्री एम० सी० मिश्र, अण्डर-सेक्रेटरी टु दी गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया ने, लिखा :

"विषय···पुस्तकों के प्रकाशन में न्यूज़प्रिंट का प्रयोग।

"मुझे आदेश हुआ है कि मैं १९ सितम्बर '५७ के शिक्षा-मन्त्रालय को सम्बोधित आपके पत्रांक ३१८५ का हवाला देते हुए आपको लिखूँ कि न्यूज़प्रिंट के वितरण अथवा प्रयोग पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। न्यूज़प्रिंट के किसी भी विक्रेता से इसे खरीदा जा सकता है।

"सुझाव है कि आप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किसी न्यूज़प्रिंट-विक्रेता से सम्पर्क स्थापित करें अथवा सीधा नेपा न्यूज़प्रिंट मिल्ज़ को लिखें।"

* * *

दिसम्बर की १५, १६ तथा १७ तारीख को इलाहाबाद में हिन्दी के प्रायः सभी ही तरुण लेखकों—कवियों, आलोचकों, नाटककारों, कहानीकारों, उपन्यासकारों—का सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता से सम्पन्न हुआ। उत्सव की समाप्ति पर प्रकाशकों की ओर से राजकमल प्रकाशन ने अभ्यागत लेखकों के सम्मान में चायपान का आयोजन किया।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक बनाम पुस्तक-विक्रेता

दीनानाथ मल्होत्रा

आशा है कि इस महत्त्वपूर्ण विषय पर लेखक के विचार प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा ध्यान से पढ़े जायँगे ।

प्रकाशन-व्यवसाय के संगठन व विस्तार के लिए दो व्यक्ति उत्तरदायी हैं—प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता। वैसे तो लेखक, मुद्रक, प्रूफ-रीडर व जिल्दसाज़ के सहयोग के बिना पुस्तक का उत्पादन नहीं हो सकता, परन्तु इसके संगठन और विस्तार के लिए तो ये दो ही काम करते हैं। बहुत अंशों में दोनों का कार्य एक-दूसरे का पूरक है, क्योंकि दोनों पुस्तकों की अधिकाधिक बिक्री करना चाहते हैं। दोनों एक-दूसरे के सहयोगी हैं। प्रकाशक पुस्तकों का विज्ञापन करता है, उनकी समालोचना करवाता है और पुस्तक-विक्रेताओं के पास बिक्री के लिए पुस्तकें भेजता है। इसके बाद असली बिक्री का काम पुस्तक-विक्रेता करता है। वह अपनी दुकान पर आए ग्राहकों को नई पुस्तकों के गुण बताकर उन्हें खरीदने की प्रेरणा करता है, अपने नगर के लाइब्रेरियनों को जाकर बताता है कि नई पुस्तकें आई हैं, वे आकर देखें। या स्वयं ही हर लाइब्रेरी के अनुरूप पुस्तकें ले जाकर उन्हें दिखा देता है। अपनी दुकान के बारे में भी विज्ञापन करता है कि यहाँ हर प्रकार की पुस्तकें मिलती हैं। इस प्रकार की दुकान की प्रसिद्धि करने से सभी पुस्तकों की बिक्री को प्रोत्साहन मिलता है। अतएव इन दोनों के योग से पुस्तकों की बिक्री होती है।

परन्तु समस्या तब खड़ी होती है, जब प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता को सहयोग देने की बजाय उसका प्रतिद्वन्द्वी बन जाता है; वह सोचता है कि मैं पुस्तकें स्वयं सीधे ही ग्राहक को या लाइब्रेरियों को बेच लूँ; पुस्तक-विक्रेता को जो अधिक कमीशन देना है, वह बचाकर, लाइब्रेरी को ही सीधा अधिक कमीशन देकर किसी भी प्रकार अपना व्यवसाय बढ़ा लूँ। प्रकाशक की इस मनोवृत्ति के कई-एक कारण हो सकते हैं। पहला तो यह कि वह दूसरे प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेताओं के मुकाबिले में अपनी पुस्तकें बेचने के लिए अधिकाधिक प्रयत्न करना व अधिकाधिक कमीशन चाहता है। लाइब्रेरियन या सरकारी खरीद करने वाले अफसर टेण्डर द्वारा अधिक-से-अधिक कमीशन की माँग करते हैं। वे पुस्तकों का चुनाव नहीं करते बल्कि कमीशन के माप-दण्ड से सस्ती पुस्तकें खरीदना चाहते हैं। इस होड़ में पुस्तक-विक्रेता तो पूरा नहीं उतर पाता, क्योंकि पुस्तक-व्यवसाय ने अभी तक इस कमीशन के सम्बन्ध में कोई पक्का नियन्त्रण नहीं किया। पुस्तक विक्रेता तो प्रकाशक से प्राप्त कमीशन में से ही अधिकाधिक दे सकता है। उधर प्रकाशक स्वयं मैदान में उतर आता है और पुस्तकों का आर्डर प्राप्त करने के लिए व्यापाराना कमीशन, अथवा कई बार उससे भी अधिक कमीशन देकर आर्डर ले लेता है। इस व्यवहार से पुस्तक-विक्रेता के हृदय पर जो आघात होता है उसे कोई पुस्तक-विक्रेता ही समझ सकता है। जिस आर्डर की प्रतीक्षा और यत्न में पुस्तक-विक्रेता ने इतना समय बिताया, वही जब उसका सहयोगी प्रकाशक छीनकर ले जाता है तो पुस्तक-विक्रेता को कई बार तो इस व्यवसाय से ही विरक्ति होने लगती है।

पुस्तक-विक्रेता का एतराज़ इस बात पर उतना अधिक नहीं कि वह आर्डर प्रकाशक क्यों ले गया क्योंकि हमारे देश के बहुत-से प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता भी तो हैं। वे भी अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें मँगवाकर उनकी बिक्री करते हैं। थोड़ा-बहुत खर्च इसी प्रकार से निकालते हैं। असली एतराज़ इस बात का है कि प्रकाशक पुतस्क-विक्रय के सभी नियमों को तोड़कर लाइब्रेरियों या सरकारी खरीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में व्यापाराना कमीशन अथवा उससे भी अधिक दे देता है। इस प्रकार मुकाबिला बराबरी का नहीं रहता। जब प्रकाशक पुस्तक-विक्रेता का काम करता है तो उसे पुस्तक-विक्रेताओं के नियमों का पालन भी करना चाहिए। आदर्श स्थिति तो यही है कि प्रकाशक पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम द्वारा ही सारी बिक्री करें; प्रकाशक केवल प्रकाशक हों और पुस्तक-विक्रेता निरे पुस्तक विक्रेता। दोनों धन्धे अलग-अलग संस्थाओं को ही करने चाहिएँ। प्रकाशक अपनी सारी शक्ति प्रकाशन के कार्य में ही लगाएँ और पुस्तक-विक्रेता सारी व्यवसाय-कुशलता पुस्तक-विक्रय के कार्य में लगाएँ।

लेकिन यह स्थिति आज तो नहीं है। प्रकाशक को भी पुस्तक-विक्रेता का काम करना पड़ता है। बहुत से बड़े-बड़े नगरों में तो पुस्तक-विक्रेता ही नहीं है। वहाँ की माँग पूरी करने के लिए प्रकाशक को लाइब्रेरियों व ग्राहकों से सीधा सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त जहाँ पुस्तक-विक्रेता हैं भी उनमें से कई-एक ऐसे ढीले-ढाले व साधनहीन हैं कि यदि उस क्षेत्र में अपनी पुस्तकों की बिक्री के लिए प्रकाशक केवल इन पुस्तक-विक्रेताओं के ही सहारे बैठा रहे तो उसका काम न हो। ऐसे पुस्तक-विक्रेता भी हैं जो अपने शहर के पुस्तकालयों तक नियमित रूप से नहीं पहुँचते, न ही अपनी दुकानों को ऐसा आकर्षक बनाते हैं कि वहाँ आकर पुस्तकें खरीदने का उत्साह ग्राहकों में पैदा हो। परन्तु इस सारे सिलसिले में एक विषाक्त-चक्र भी है। प्रकाशक पुस्तक-विक्रेताओं पर निर्भर भी नहीं रहते और पुस्तक-विक्रेता पनपते नहीं और अधिक उत्साह से उद्यम नहीं करते। अन्ततोगत्वा प्रकाशकों को स्वयं ही अपने साधनों द्वारा बिक्री का संगठन करना पड़ता है। लेकिन इस विषाक्त-चक्र को तोड़ने का काम प्रकाशकों को ही करना होगा, क्योंकि दोनों में से अधिक सबल व साधन-युक्त प्रकाशक ही हैं और प्रकाशकों के व्यवसाय का भविष्य भी इसी में निहित है कि वे हर नगर में अच्छे-अच्छे पुस्तक-विक्रेताओं को खड़ा करने और पनपने में सहायता दें।

इसके लिए पहली आवश्यक बात यह है कि प्रकाशक अपने पुस्तक-विक्रय-विभाग को बिलकुल अलग से रखें। पुस्तक-विक्रय विभाग को पुस्तक-विक्रेता संघ का सदस्य बनाएँ और पुस्तक-विक्रेताओं के नियमों पर चलें। प्रकाशन-विभाग प्रकाशन का लाभ ले और पुस्तक-विक्रय विभाग पुस्तकों की बिक्री के लाभ पर चले। क्योंकि वे स्वयं ही कुछ पुस्तकों के प्रकाशक हैं इसलिए उन पुस्तकों पर लाइब्रेरियों अथवा सरकारों को व्यापाराना अथवा उससे भी अधिक कमीशन न दें। वही नियम अपने बिक्री-विभाग पर लागू करें जो वे दूसरे पुस्तक-विक्रेताओं द्वारा आशा करते हैं।

दूसरी बात यह है कि प्रकाशक हर शहर व क्षेत्र की बिक्री वहाँ के स्थानीय पुस्तक-विक्रेता द्वारा ही करवाए। यदि कोई बड़े आर्डर किसी क्षेत्र से प्राप्त करे तो उनको वहाँ के स्थानीय पुस्तक-विक्रेता द्वारा भेजे। यदि उस क्षेत्र में कोई व्यापार की वृद्धि करनी हो तो स्वयं भी प्रयत्न करे और वहाँ विक्रेता को भी सूचना देकर प्रेरित करे कि वह भी उन यत्नों में सहायक हो। कभी-कभी पूर्णतया अपने यत्न से प्राप्त किये आर्डर वहाँ के पुस्तक-विक्रेता को देने से भविष्य में बहुत लाभ रहेगा। पुस्तक-विक्रेता उन यत्नों से प्रेरित होकर स्वयं भी यत्न करेगा और उस प्रकाशक की पुस्तकों की अधिकाधिक बिक्री करेगा। इस थोड़े से त्याग से प्रकाशकों को भविष्य में बहुत लाभ होगा। प्रकाशक का दृष्टिकोण सर्वदा पुस्तक-विक्रेता से सहयोग का होना चाहिए। पुस्तक-विक्रेता सशक्त हो जायगा तो सारा पुस्तक-व्यवसाय चमक उठेगा।

अधिकाधिक सुविधाएँ मिलने के बाद पुस्तक-विक्रेता का भी यह कर्तव्य है कि वह अपने कार्य को सुचारू रूप से चलाए। यदि प्रकाशक-संघ कमीशन-सम्बन्धी कोई नियम बनाए तो वह उनका पालन करे। पुस्तक-विक्रेता यदि कमीशन सम्बन्धी कोई नियम नहीं अपनाते, तो वे कभी भी सफल नहीं हो सकते। उन्हें अपने नियम अपने पर कड़ाई से लागू करने चाहिए।

मैं समझता हूँ कि प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता यदि अपने-अपने धर्म का ठीक पालन करें तो यह व्यवसाय प्रतिष्ठित व लाभप्रद बन सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह मा रे प्र का श न

नया प्रकाशन—'भारत के संत-महात्मा'—ले० रामलाल : भारत के ११४ संत-महात्माओं के जीवन-चरित्र और उपदेश का अपूर्व अमृतकलश १०.००

• उपन्यास

बावन पत्ते : कृष्णचन्द्र ५.५०
नगर-सुन्दरी : 'धूमकेतु', अनु० कि० र० टंडन ४·२५
महामात्य चाणक्य : धूमकेतु ४·५०
चौलादेवी : 'धूमकेतु', अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन ५·५०
राज संन्यासी : धूमकेतु, अनु० श्यामू संन्यासी ५·५०
भगवान् बुद्ध की आत्मकथा : परदेशी ४·००
बीरबल : रामचन्द्र ठाकुर ४·५०
मीराँ प्रेम दिवानी : रामचन्द्र ठाकुर ५·००
नर्तकी : उमाकान्त ५·५०
सर्व मंगला : मामा वरेरकर, ३·००
नया रास्ता : रतीलाल त्रिवेदी, अनु० दर्शन ३·७५
तूफ़ान : जॉर्ज स्टुअर्ट, अनु० परदेशी २·००
काला.पानी : ईश्वर पेटलीकर, अनु० विभुदेव ३·००
प्रलय : रमणलाल देसाई, अनु० मगनलाल जैन ५·५०

• कहानी-संग्रह

नगीने : पं० सुदर्शन ३·००
पनघट : ,, ३·५०
पुष्प-लता : ,, २·५०
दीपाली : ,, २·५०
सुदर्शन-सुधा : ,, ४·००
विद्रोही आत्माएँ : खलील जीब्रान, सुदर्शन २·७५
पाप का पुण्य : रावी १·७५
शेषदान : वीरेन्द्रकुमार जैन २·७५
मेरी श्रेष्ठ कहानी : (लब्धप्रतिष्ठ कथाकारों की श्रेष्ठ कहानियों का संग्रह) ४·००
श्रेष्ठ हास्य-कथाएँ : (हास्य एवं व्यंग्य से परिपूर्ण कथाओं का संग्रह) ४·००
स्वप्नों का टुकड़ा : कुलभूषण २·५०

: नाटक

अजना : पं० सुदर्शन २·५०
सिकंदर : पं० सुदर्शन १·७५
भाग्यचक्र : ,, ,, १·५०

• किशोर साहित्यमाला

सुलेमान का खज़ाना : कुलभूषण १·५०
दबी आग : (उपन्यास) रमणलाल देसाई १·७५
दरियालाल : आचार्य गुणवन्तराय २·००
अब्राहम लिंकन : एमील लड्वीग २·००
फूलमाला भाग १ : पं० सुदर्शन १·५०
,, ,, २ : ,, ,, १·६२
खटपटलाल : पं० सुदर्शन १·५०
लाल पन्ने : आनन्दप्रकाश जैन १·७५
मेरी जीवन कहानी : कु० हेलन केलर २·००
अँगूठी का मुक़दमा : पं० सुदर्शन १·२५
महापुरुषों की कहानियाँ : आचार्य विभुदेव २·००
बेन्जामिन फ्रेंकलिन : (द्विरंगी चित्रों में) २·५०
अमर सुहागिन : झवेरचन्द मेघाणी, अनु० वीरेन्द्रकुमार जैन १·५०
सुनहरी नदी का राजा : जॉन रस्कीन, अनु० आ० विभुदेव ०·७५
काशीनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ०·७५
उद्धार : ,, ,, ०·७५
दिव्यचक्षु : (संक्षिप्त) रमणलाल देसाई २·००
पहली अविराम उड़ान : चार्ल्स० ए० लिंडबर्ग, २·००
अणुशक्ति : गोर्डन इवान्स १·५०
हेनरी फोर्ड : (सचित्र जीवनी) अनु० परदेशी २·००
मेवाड़ का अरुणोदय : (सचित्र) २·००

• बाल-साहित्य

रसभरी कहानियाँ भा० १-२ : पं० सुदर्शन १·००
महाकाव्यों की बालकथाएँ : विद्यालंकार ०·७५
भारत के महापुरुष : १·००
फूलवती : पं० सुदर्शन १·००
सिंहासन बत्तीसी : द्विरंगी चित्रकथा ०·७५

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लि०-बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ उत्कृष्ट एवं नवीन प्रकाशन

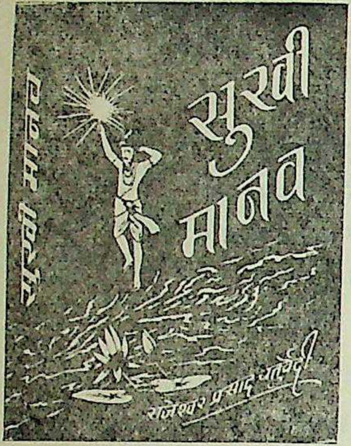

पृष्ठ १२८,
मू० २.००

इस पुस्तक में लेखक ने विज्ञान, दर्शन और धर्म, तीनों के समन्वय द्वारा जीवन की समस्याओं को बहुत ही सुबोध एवं सरस शैली में सुलझाया है। बिलकुल नवीन प्रकाशन है।

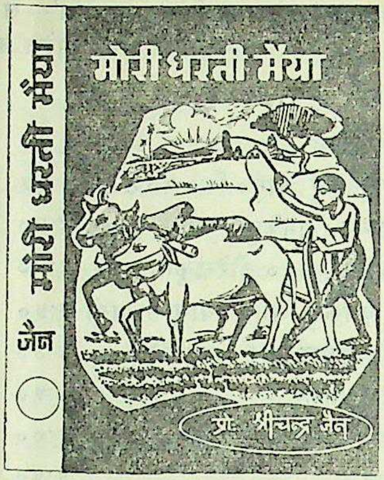

पृष्ठ २०८,
मू० २.५०

धरिणी और उसके पुत्र किसान की जीवन-गाथा, ग्रामोद - प्रमोद, लोक-संगीत का ही इसमें विवेचन किया है। पुस्तक हर पुस्तकालय के लिए आवश्यक है।

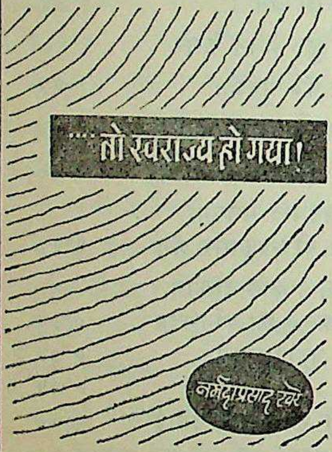

पृष्ठ १३०,
मू० १.५०

पन्द्रह मौलिक कहानियों का यह संग्रह पठनीय है। इस संग्रह में ऐसी ही कहानियों को रखा गया है जिनमें सरल कहानी के उपयुक्त सभी आदर्शों को निभाया है।

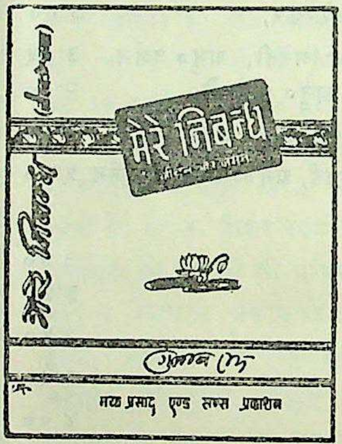

पृष्ठ २३३,
मू० ५.००

"...इस पुस्तक के पढ़ने से मैं अपने रोग को कुछ समय तक भुला सका। ......Charles Lamb और Robert Lynd के Essays में जो मज़ा मिलता है, इससे अधिक मज़ा आपके निबन्धों में है।"

—स्व० डॉ० अमरनाथ झा

लेखक—डॉ० सत्येन्द्र

इस नाटक में हमारे अतीत के वीरोचित गौरव का आकलन नाटककार ने किया है। नाटक का प्रणयन जगदेव और जयसिंह के त्याग, तपस्या और बलिदान की ऐतिहासिक कहानी पर आधारित है।

मू० २.००

चतुर्थ परिवर्धित संस्करण

"...इसमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर अब तक के प्रमुख निबन्धकारों की कृतियों के उदाहरण देकर समीक्षा की गई है।"

—हिन्दुस्तान

मू० २.५०

ग या प्र सा द ए ण्ड सं स,

आगरा : कानपुर : जयपुर : गवालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

भारत-सरकार की संगीत नाटक अकादमी ने देश में रंगमञ्च को विकसित करने, भारतीय भाषाओं में नाटकों की रचना तथा उनके प्रदर्शन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से सर्वश्रेष्ठ नाटक तथा सर्वश्रेष्ठ नाट्य-प्रदर्शन के लिए प्रतिवर्ष दो पुरस्कार देने का निश्चय किया है। प्रतिवर्ष विभिन्न भारतीय भाषाओं के सर्वश्रेष्ठ नाटक के लेखक को २५०० रुपये नकद, एक स्वर्ण-शृंखला तथा एक शाल पुरस्कार दिए जायँगे।

प्रथम वर्ष में हिन्दी तथा तमिल नाटकों के रचयिताओं को पुरस्कार दिए जायँगे। ये नाटक जनवरी '५७ से पहले तथा जनवरी '५६ के बाद रचित न होने चाहिएँ। नाटक की छ प्रतियाँ, प्रकाशित अथवा हस्तलिखित, सेक्रेटरी, संगीत नाटक अकादमी, ७९, रीगल बिल्डिंग्स, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली के पास २८ फरवरी '५८ तक पहुँच जानी चाहिए। इन प्रतियों के ऊपर "सर्वश्रेष्ठ नाटक प्रतियोगिता के लिए" अंकित होना चाहिए। नाटक में आज के ही जीवन के किसी पक्ष का चित्रण हो तो अच्छा है परन्तु उसका मौलिक होना आवश्यक है। पुरस्कृत नाटकों के प्रदर्शन तथा अनुवाद का अधिकार आकादमी के पास रहेगा और चुनाव का अन्तिम निर्णय भी।

प्रतिवर्ष विभिन्न भाषाओं के सर्वश्रेष्ठ नाट्य-प्रदर्शन पर भी २५०० रुपये का नकद पुरस्कार दिया जायगा; पुरस्कृत मण्डली को २५०० अलग से प्रदर्शन-व्यय के रूप में भी दिये जायँगे। इस वर्ष हिन्दी तथा तमिल के नाट्य-प्रदर्शनों में चुनाव होगा। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले नाटकों की ६-६ प्रतियाँ २८ फरवरी '५८ तक उपरलिखित पते पर पहुँच जानी चाहिए।

* * *

नवीन लेखक-संघ : किनारी बाज़ार, आगरा के संयोजक महोदय सूचित करते हैं कि प्रतिवर्ष उनकी ओर से लेखकों की उत्कृष्ट प्रथम कृतियों पर **हरिशंकर स्वर्ण पदक** प्रदान किया जाया करेगा। कृति कहानी-संग्रह, उपन्यास, नाटक, निबन्ध अथवा काव्य-ग्रन्थ कुछ भी हो सकती है। सन् १९५८ का स्वर्ण-पदक कहानी-संग्रह पर प्रदान किया जायगा। पुरस्कारार्थ प्रत्येक पुस्तक की तीन-तीन प्रतियाँ संयोजक के पास २५ फरवरी, १९५८ तक आ जानी चाहिए। निर्णय की घोषणा जुलाई तक हो जायगी।

* * *

श्री सुरेन्द्र कुमार 'अंचल,' डिस्ट्रिक्ट जेल के पास, उदयपुर लिखते हैं कि उनके पास स्वरचित मौलिक कहानियों के एक संग्रह की पाण्डुलिपि तैयार है—नाम है **उमंग की गुलाल**। एक कविता-संग्रह : **पिघलते बादल**। उक्त पुस्तकों को प्रकाशित करने की इच्छा करने वाले प्रकाशक लेखक से पत्र-व्यवहार करें।

* * *

पयागपुर (बहराइच) के इण्टर कालेज के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष श्री दानबहादुर पाठक एम० ए० के पास लगभग ३०० पृष्ठों का **पूजा और प्यार** नाम के उपन्यास की पाण्डुलिपि तैयार है; इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कृतियाँ भी; **अभिषप्त** (उपन्यास), **जायसी** (प्रश्नोत्तर के रूप में एम० ए० के विद्यार्थियों के लिए), **साधना**, (काव्य-संग्रह), **प्रेरणा** (काव्य-संग्रह, द्वितीय संस्करण के लिए), **वीर राजकुमार** (नाटक), **सूरदास** (प्रश्नोत्तर के रूप में एम० ए० के विद्यार्थियों के लिए)। **साधना** तथा **प्रेरणा** की भूमिकाएँ क्रमशः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं बच्चन तथा श्री सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखी गई हैं। प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री नरेन्द्र 'विधु'। ४-६५ बैजनाथपारा, रामपुर (म० प्र०) लिखते हैं; "लगभग २०० पृष्ठों का मेरा एक गीत-संग्रह **शरद् यामिनी** प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है। जो प्रकाशक चाहें, मुझसे पत्र-व्यवहार करें।"

* * *

श्री शेखर गुप्त आचार्य, चेतना साप्ताहिक, बदायूँ (उ० प्र०): "मेरे पास छपने के लिए ४-५ कविता-संग्रह तथा एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२ कहानियों का संग्रह है; सर्वप्रथम एक कविता-संग्रह छपने के लिए देना चाहता हूँ। प्रकाशक महोदय बातचीत कर लें।"

* * *

कुमारी लीला अवस्थी, आकाशवाणी, नागपुर सूचित करती हैं कि उनके पास तीन पाण्डुलिपियाँ—आँसू की क्यारी (कहानी-संग्रह), दो राहें (सामाजिक उपन्यास), बिखरे काँटे (सामाजिक उपन्यास), प्रकाशनार्थ तैयार हैं। इनके लिए प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री रामावतार चोरसिया 'अनन्त', सर्वोदय साहित्य-संघ, सण्डीला (उ० प्र०) सूचित करते हैं कि उनके पास दो ऐतिहासिक कथा-संग्रह, को ऐतिहासिक उपन्यास, मौलिक कहानी-संग्रह, तथा एक लघु उपन्यास प्रकाशनार्थ तैयार हैं। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक उपरोक्त पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

अन्तरप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद के जोधपुर-स्थित केन्द्रीय कार्यालय के साहित्य-विभाग की ओर से प्रसारित विज्ञप्ति में राजस्थानी भाषा के लेखकों, कवियों, कहानीकारों आदि सभी वर्गों के साहित्यकारों से अनुरोध किया जाता है कि वे राजस्थानी भाषा में पाण्डुलिपि या प्रकाशित अपनी पुस्तकों की दो-दो प्रतियाँ ३० जनवरी '५८ तक भिजवाकर अनुगृहीत करें। इस वर्ष के आरम्भ में पुरस्कार देने की व्यवस्था करने के साथ बार-बार पत्रों और व्यक्तिगत सूत्रों दोनों ही के माध्यम से ऐसा अनुरोध किया था परन्तु प्रत्युत्तर में परिणाम अत्यन्त निराशाजनक रहा है। कुछ पुस्तकें प्राप्त हैं जो सुरक्षित हैं। उन पुस्तकों के साथ ३० जनवरी '५८ तक प्राप्त पुस्तकें भी सम्मिलित कर निर्णायक समिति के पास भेज दी जायँगी। पुस्तकों का प्रकाशन-काल ५५-५६ और ५७ में ही होना चाहिए। पुस्तक राजस्थानी भाषा ही में हो, चाहे विषय कुछ भी हो। यह तिथि अन्तिम रूप से बढ़ाई गई है। प्रथम पुरस्कार में सम्मानार्थ १५१) रु० और दूसरा पुरस्कार में सम्मानार्थ ५१ रु० प्रदान किये जायँगे। पुस्तकें निम्न पते पर भेजी जायँ—प्रो० गणपति चन्द्र भण्डारी, संयोजक राजस्थानी साहित्य निर्णायक समिति, केन्द्रीय कुमार साहित्य परिषद, जोधपुर।

Books On Buddhism

Books Available on every Aspect & Theme of Buddhism in Hindi, English, Bengali, Pali and Singhalese.

•

Handsome Rebate To Agents And Booksellers.

For Agency and Purchase, write to

•

Maha Bodhi Book Agency,

Sarnath, VARANASI.

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं हैं

तो आज ही ३) तीन रुपये मनीआर्डर से भेजकर एक वर्ष के लिए ग्राहक बनें।

पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

प्रबन्ध विभाग, **प्रकाशन समाचार**

राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०

८ फैज़ बाज़ार, दिल्ली।

प्रकाशक !

हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में पुस्तकों के मुद्रण की सुन्दर व्यवस्था। मुद्रण दर अत्यन्त न्यून। सम्पर्क स्थापित करें।

लक्ष्मी नारायण भँवर

५०१८, तान्त्या टोपे नगर, भोपाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

सुचिताक्ष : रुद्र काशिकेय, प्रकाशक : **आराधना प्रकाशन, वाराणसी।** डि० क्रा० १६ पेजी, पृष्ठ-संख्या २१६, सजिल्द मूल्य ४) ५० नये पैसे।

"बहती गंगा" के लेखक श्री शिवप्रसाद मिश्र रुद्र का दूसरा उपन्यास जिसमें प्रेम की समस्त परिभाषाओं और पहलुओं को विभिन्न मनः स्थिति के व्यक्तियों के जीवन-व्यवहार तथा प्रतिक्रियाओं द्वारा व्यक्त किया गया है। एक लोकप्रिय विषय पर यह हल्का-फुल्का उपन्यास पाठकों को निश्चय ही दिलचस्प लगेगा।

* * *

धरती और धन : श्री गुरुदत्त का नवीनतम उपन्यास है। श्री गुरुदत्त हिन्दी-कथा-साहित्य के पाठकों के लिए अब नये नहीं रहे हैं। उनके उपन्यासों में विचार-तत्त्व की जो प्रधानता आरम्भ से ही थी उसने इधर और प्रौढ़ता प्राप्त की है। **धरती और धन** उपन्यास उसी परम्परा में एक नया प्रयास है। धरती और धन दोनों पूँजी के रूप में प्रयुक्त होते हैं; लाभ के धन को पूँजी में बदलकर पूँजी की वृद्धि की जा सकती है और उसके उचित प्रयोग से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इस सरल-से विषय की मनोरंजक विवेचना इस कृति में की गई है। पृष्ठ-संख्या ३८४, छपाई सुन्दर, मूल्य ६) तथा प्रकाशक : **भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली।**

* * *

संस्कारों की राह : ले० राधाकृष्ण प्रसाद, प्रकाशक **भारतीय ज्ञानपीठ, काशी**; पृ० सं० १६६, मूल्य ढाई रुपये। संस्कारों की राह एक लघु उपन्यास है। निम्न-मध्य-वर्ग और मध्यवर्ग के संस्कारों की कथा को लेखक ने अपने परिचित पात्रों के सहारे, सरल तथा सीधे-सादे शब्दों में प्रस्तुत किया है। सुधीर, शीला, प्रमिला के चरित्र को लेखक ने बड़ी कुशलता से अंकित किया है। प्रत्येक उपन्यास-प्रेमी को प्रिय लगेगा, यह लघु उपन्यास।

* * *

चुम्बक और चाँटा : ले० राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह, एम० ए० प्रकाशक : **श्री राजराजेश्वरी-साहित्य-मन्दिर, सूर्यपुरा, शाहाबाद (बिहार)**; पृ० सं० ३३३, मूल्य पांच रुपये। छपाई-सफाई तथा आवरण—साधारण।

'जानी-सुनी-देखी' की शृंखला में संस्मरणात्मक साहित्य के पिछले पाँच मोती पिरोए जा चुके हैं। 'चुम्बन और चाँटा।' उसी की छठी लड़ी है। उपनिषद् की मूल निष्ठा उपन्यास की रंगीन उत्कण्ठा में सजकर एक अनूठा आकर्षण पा गई है। राजा साहब की भाषा-शैली बेजोड़ मानी जाती है। इस नवीनतम उपन्यास ने हिन्दी-साहित्य को एक नया संकेत दिया है।

* * *

महामात्य चाणक्य : ले० श्री धूमकेतु; प्रकाशक **वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-२**; पृ० सं० २७६, मूल्य ४.५०।

ऐतिहासिक उपन्यासों की माँग हिन्दी में बराबर बनी रही है। श्री धूमकेतु का यह उपन्यास इस दिशा में एक मौलिक प्रयत्न है—अत्यन्त रोचक, कलात्मक और आकर्षक। महामात्य चाणक्य के जीवन के समान ही विचित्र, यह कृति प्राचीन भारत के गौरव, वैभव, विलास और शौर्य की चिर-नवीन झाँकी प्रस्तुत करती है। छपाई-सफाई तथा आवरण उत्कृष्ट।

* * *

लोहे के पंख : ले० हिमांशु श्रीवास्तव; प्रकाशक **ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना-४**; पृ० सं० ४४४ और मूल्य सवा सात रुपये।

प्रस्तुत उपन्यास का कथा-क्षेत्र लेखक के बाल्यकाल से ही परिचित है और इसके नायक का जीवन कुछ वर्षों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए मिल-मजदूर के रूप में गुजरता है। लेखक स्वयं मिल-मजदूरों के साथ अपने जीवन के सात वर्ष गुजार चुके हैं। लेखक ने अपने वक्तव्य में कहा है—'काल की कसौटी ही कला की आयु निश्चित करती है।' आशा है, काल की कसौटी, लोहे के पंख की कला की आयु को निश्चित करेगी। क्योंकि लेखक के कथनानुसार किसी रचना का निर्णय न तो कलाकार कर सकता है और न कोई आलोचक।

* * *

गुलाब के दो फूल : रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन, अनु० महावीर अधिकारी, प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली**, । डि० क्रा० १६ पेजी, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २९४, मूल्य ५)।

रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन के एक प्रसिद्ध उपन्यास: "द ब्लैक ऐरो, ए टेल ऑफ द्व रोजिज" का इस सफल अनुवाद में शौर्य और आकांक्षा से परिपूर्ण एक युवक की जगप्रसिद्ध कहानी कही गई है जिसके साथ-साथ कवि ने रोमांस तथा सुकुमार प्रेम का अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया है।

* * *

आरोग्य-मन्दिर प्रकाशन

१.	रोगों की नयी चिकित्सा : ले० लूई कूने	२-०-०
२.	कशमीर में पन्द्रह दिन : ले० विट्ठलदास मोदी	१-०-०
३.	बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग : स० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
४.	सर्दी जुकाम खाँसी : डॉ० रैस्मस अलसाकर, एम० डी०	०-१२-०
५.	उपवास से लाभ : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
६.	जीने की कला : ले० विट्ठलदास मोदी	१-४-०
७.	प्राकृतिक जीवन की ओर : ले० ऐडोल्फ जस्ट	२-८-०
८.	उठो ! : ले० स्वामी कृष्णानन्द	१-०-०
९.	रोगों की सरल चिकित्सा : ले० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
१०.	स्वास्थ्य कैसे पाया ? : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
११.	आदर्श आहार : ले० डॉ० ऐस० सी० दास	१-०-०

●

मिलने का पता :

व्यवस्थापक : "आरोग्य"

पो० आरोग्य-मन्दिर, गोरखपुर

भूदानी सोनिया : श्री उदयराजसिंह का नवप्रकाशित उपन्यास है जिसमें लेखक ने १९४२ की जनक्रान्ति तथा उसके बाद के भारतीय जनजीवन की बदली हुई झाँकी प्रस्तुत की है। लेखक ने कथा क्रम को बिना विशृङ्खलित किये यह दिखाने का सफल प्रयास किया है कि स्वराज्य के बाद किस प्रकार देश का राजनीतिक जीवन बदला, सेवाव्रत छोड़कर सत्ता की दौड़ आरम्भ हुई, चारों ओर निराशा का अन्धकार छा गया और अन्त में भूदान की आलोकमय ज्योति प्रकट हुई। वर्णन की स्वाभाविकता, चरित्र-चित्रण की मार्मिकता तथा भाषा की प्रवाहमयता देखते हुए उपन्यास के लोकप्रिय होने में कोई सन्देह नहीं है। इसका प्रकाशन हुआ है **अशोक प्रेस, पटना-६** से और मूल्य है ६) रु०।

* * *

दास्तान-ए-नसरुद्दीन : लियोनिद सोलोवयेव, अनु० कृष्णकुमार, प्रकाशक **पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा०) लि०, नई दिल्ली**। डिमाई, सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २१५, मूल्य ५)।

रूस के एक प्रसिद्ध लेखक सोलोवयेव के इस उपन्यास में एक ऐसे चरित्र की कहानी कही गई है जिसके "ख्यालात की दुनिया ऐसी थी जहाँ इन्सान भाई-भाई की तरह रहें, जहाँ लालच, दगा और गुस्से का नाम न हो, जहाँ सब एक-दूसरे की वक्त पर मदद करें...", और जिसे "आवारा, बागी, फूट व फसाद फैलाने वाला" समझा जाता था, लेकिन जो "गरीब बाशिन्दों—भिश्तियों, कुम्हारों, तांबागरों, लुहारों वगैरा—का सच्चा दोस्त" था। कहानी कहने का ढंग किस्सागोई का है और अत्यन्त दिलचस्प। अनुवाद चुस्त, मुहावरेदार और रवानीभरी भाषा में बहुत सफलता से हुआ है।

* * *

बूँद और समुद्र : प्रकाशक : **किताब महल, इलाहाबाद,** पृष्ठ-संख्या ६०६। मूल्य १२)। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अमृतलाल नागर का बृहद् उपन्यास है। इस उपन्यास की हिन्दी में काफी चर्चा है। कुछ आलोचकों का विचार है कि उपन्यास की घटनाओं का यदि इतने विस्तार से वर्णन न किया गया होता और नागरजी यदि यथातथ्य चित्रण की प्रवृत्ति पर थोड़ा संयम कर सकते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

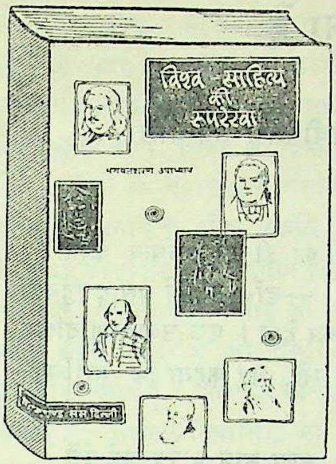

एक उपयोगी संदर्भ ग्रन्थ

विश्व साहित्य की रूपरेखा

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

मूल्य बारह रुपये

कुछ सम्मतियाँ

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

"विश्व-साहित्य की रूपरेखा हमारे ज्ञान-क्षितिज को विस्तीर्ण करता है और विश्व के महान् साहित्यिक अरण्य में दूर-दूर तक देखने की नई शक्ति प्रदान करता है। इतने बहुसंख्यक साहित्यों का परिचय एकत्र पाकर अतीव हर्ष होता है। आपकी भाषा शैली ओज और प्रवाह से धन्य है। विश्व मानव के लिए यह पाठ्य-पुस्तक होने योग्य है। मुझे विदित नहीं कि किसी अन्य भाषा में इस प्रकार का संग्राहक प्रयत्न किया गया है या नहीं।"

'जागृति' अम्बाला

"इस ग्रन्थ की रचना कोई सरल कार्य नहीं था। यह तो लेखक के सुदीर्घ स्वाध्याय, प्रभूत परिश्रम चिरकाल तक विभिन्न संदर्भ ग्रन्थों और ज्ञान कोषों के सतत संदोहन का परिणाम है।···हिन्दी लेखकों का इस ग्रन्थ से अपूर्व ज्ञानवर्द्धन होगा और उन्हें पता चलेगा कि उनके समानधर्मी विदेशी साहित्यकारों ने किन-किन परिस्थितियों में कैसी-कैसी कृतियों का सृजन किया। पुस्तक लाइब्रेरियों, छात्रों, अध्यापकों और विशेषकर हिन्दी लेखकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।"

'ज्वाला' जयपुर

"इस विशाल ग्रन्थ में अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, चीनी, संस्कृत आदि विश्व की प्रमुख भाषाओं के साहित्यों का सांगोपांग विवरण दिया हुआ है। इस विवरण में अनेक विशिष्ट लेखकों का कृतित्त्व जीवन-परिचय, उनकी रचनाएँ तथा उन रचनाओं के गुण-दोषों का भी उल्लेख किया गया है।···हिन्दी के लेखकों को इस ग्रन्थ से प्रेरणा प्राप्त होगी। प्रकाशकों को भी अनुवाद योग्य कृतियों के चयन में अमूल्य सहायता मिलेगी।"

अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से खरीदिये

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके बिना आपका पुस्तकालय सूना है

उपन्यास साहित्य :

हिन्दी के यशस्वी उपन्यासकार श्री अनूपलाल मंडल का नवीनतम उपन्यास

केन्द्र और परिधि

"मुख्य रूप से यह उपन्यास विचार-प्रधान है। इसमें पात्र प्रवृत्तियों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। ...रचना बहुत ही सुन्दर है'।'

—*डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी*

इस उपन्यास की प्रत्येक पं आपको मोह लेगी, सोचने को विवश कर देगी। एक उदाहरण देखिए "विमल, दुनिया कहती है कि मरीचिका मरु में है, पर कोई मरु के मारे मन से पूछे, वह कहेगा कि मरीचिका श्री वृक्षों की इन कतारों में है।"

४०० पृष्ठ **नयनाभिराम मुद्रण** **आकर्षक आवरण** **मूल्य मात्र ६·२५ नये पैसे**

बाल साहित्य :

महान् विचारक महात्मा भगवानदीन रचित

१. सलोना सच	:	प्रथम पुष्प	:	६२ नये पैसे
२. सलोना सच	:	द्वितीय पुष्प	:	६२ नये पैसे
३. प्यारा प्रेम	:			७५ नये पैसे

पुस्तकें खुली आँखों और खुले दिमाग से लिखी गई हैं। देश के नव-निर्माण में, चरित्र-निर्माण में, ऐसे बाल-साहित्य की महती आवश्यकता है।

सत्य, अहिंसा और प्रेम के सन्देश, बाल हृदय को सहज ग्रहण करा सकने वाले विशिष्ट बाल-साहित्य कथा-शैली में।

" 'प्यारा प्रेम' और 'सलोना सच' दोनों कृतियाँ हिन्दी के लिए विशेष महत्त्व रखती हैं।"

—*राहुल सांकृत्यायन*

"अहिंसा और प्रेम के प्रचार पर जितना कागज और धन खर्च किया गया है, उसका २५वाँ हिस्सा भी अगर इस तरह के बाल-साहित्य पर खर्च किया गया होता, तो अहिंसा और प्रेम का प्रचार अधिक सार्थक होता।"

—*'भारत', इलाहाबाद*

"लेखक ने बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से बच्चों की भावनाओं के अनुकूल कहानियाँ लिखी हैं। ऐसी कहानियाँ बच्चों के स्वस्थ विकास में सहायक होती हैं।"

—*'आज', काशी*

आकर्षक मुद्रण **मोटा कागज** **चित्रों से भरपूर**

निबन्ध-साहित्य

निबन्ध पराग

आधुनिकतम विषयों पर प्रो० वासव-रचित अपूर्व निबन्ध-संग्रह। विद्वानों और पत्रों द्वारा बहु-प्रशंसित। विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी।

मूल्य ३·२५ नये पैसे

पराग प्रकाशन, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह उपन्यास निःसन्देह हिन्दी में शीर्ष स्थान पाने का अधिकारी बन जाता, क्योंकि नागर जी की वर्णन-शैली में अपूर्व चमत्कार है, और लखनऊ की संकरी गलियों और मुहल्लों में बसने वाली निम्न-मध्यवर्गीय लोगों की जिन्दगी को उन्होंने इतने निकट से देखा है कि उनके अन्तरंग चित्र खींचने में नागरजी ने कमाल दिखाया है। चित्रों को सजीव बनाने के लिए उन्होंने बोलचाल की 'अवधी' के शब्दों का सर्वत्र सुन्दर प्रयोग किया है। 'आजाद कथा' के लेखक रतननाथ सरशार की तरह इस उपन्यास की रचना करके नागर ने भी एक 'सांस्कृतिक इतिहासकार' का कार्य किया है। लखनऊ का सांस्कृतिक वैशिष्ट्य सर्वविदित है—लखनऊ-निवासियों का तकल्लुफ, बोलने का लहजा, उनकी अदाएँ, क्रोध और प्रेम के आयोग में भी शिष्टाचार की सीमाओं का उल्लंघन न करना, यह सब अब किंवदन्तियों का विषय बन गया है। नागरजी ने इस विपुल सामग्री को कथाओं की संश्लिष्ट मंजूषा में रखकर उपन्यास का ढाँचा खड़ा किया है। उपन्यास में ताई, महीपाल, सज्जन, वनकन्या आदि अनेक सजीव पात्रों से पाठक का साक्षात्कार होता है। नागरजी ने विवाह-प्रथा के पीछे छिपे अनाचार, व्यभिचार और कुण्ठा का निरावरण करके सामाजिक रूढ़ियों पर प्रहार किया है। हिन्दुस्तान एक ऐसी विशाल बन्द हवेली की तरह है जिसमें बेशुमार रत्न, मणियाँ और कंकड़-पत्थर और कूड़ा-कचरा सब साथ मिलकर चारों ओर छितरा पड़ा है। इस हवेली को नये सिरे से आबाद करने वाले समाज के ऊपर लाजिमी तौर पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वह रत्न-मणियों को कूड़े से निकालकर सहेज ले। कहीं ऐसा न हो कि कूड़े-कचरे के साथ हमारे घर की बेशुमार दौलत भी घूरे पर चली जाय। साथ ही ऐसा भी न हो कि मणियाँ बीनने के कठिन कार्य से आलस्य करते हुए हम अपने घर में फैले कूड़े-कचरे की सड़ांध में ही बैठे घुटते रहें। इस विचार-तत्त्व को पाठक तक सबल ढंग से प्रेषित करने में नागरजी सफल हुए हैं।

* * *

कविता

ग़ालिब की कविता : प्रकाशक : प्रसाद परिषद, काशी, पृष्ठ संख्या ४७६। मूल्य १०)। उर्दू-भाषा और भारत के महान् कवि ग़ालिब की लोकप्रियता उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। 'बूँद में समुद्र' की उक्ति दरअसल उनकी कविता पर ही लागू होती है। ग़ालिब के प्रत्येक शेर और ग़ज़ल में मनुष्य की गहनतम भावनाओं की इतनी गहरी, भावमय और उदात्त अभिव्यक्ति है, जैसी अन्यत्र दुर्लभ है। दर्शन और सौन्दर्य का ऐसा अभूतपूर्ण संयोग विश्व के किसी भी कवि की कविता में कम ही मिलता है। ग़ालिब की कविता से हिन्दी-पाठक भी सुपरिचित हैं, क्योंकि दुःख, विरह और वेदना के घनीभूत क्षणों की तीव्र अनुभूतियों को जैसे ग़ालिब के शेर सहज अभिव्यक्ति देकर वाणी दे देते हैं। ऐसे मौकों पर किसने ग़ालिब के शेर नहीं गुनगुनाये हैं? उनसे राहत और ताकत नहीं हासिल की है?

आग और पानी

सामाजिक यथार्थवाद के चित्रकार

श्री तेजबहादुर चौधरी

का

लघु उपन्यास

मूल्य : दो रुपये पच्चीस नये पैसे

★

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि०

की सभी शाखाओं से प्राप्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन दुर्भाग्य से ग़ालिब का सम्पूर्ण दीवान, जिसे वे स्वयं मरने से पहले मुरत्तब (संकलित) कर गये थे, अभी तक हिन्दी में प्राप्य नहीं था। ग़ालिब के दीवान में से चुन-चुनकर उनकी सरल-सुबोध ग़ज़लों के छोटे-छोटे संकलन अब तक प्रकाशित होते रहे हैं, लेकिन ग़ालिब के दीवान में से चुनने का प्रश्न ही नहीं उठता। उसका हर शेर और ग़ज़ल अपने-आपमें अनूठा है। यह जरूर है कि अधिक दार्शनिक विचार-तत्व से बोझिल ग़ज़लें अधिक फारसी-निष्ठ भाषा के कारण हिन्दी पाठकों के लिए दुरूह हैं। सौभाग्य से श्रीकृष्ण प्रसाद गौड़ ने प्रस्तुत संकलन में न केवल ग़ालिब के सम्पूर्ण दीवान को हिन्दी-पाठकों के लिए सुलभ बना दिया है, बल्कि प्रत्येक शेर की टीका तथा टिप्पणी और कठिन फारसी शब्दों का अर्थ देकर ग़ालिब की सभी कविताओं का भावार्थ भी सर्वग्राह्य बना दिया है। इसके अतिरिक्त गौड़जी ने भूमिका में ग़ालिब के जीवन, कला, शैली आदि का सुन्दर विवेचन जोड़कर प्रस्तुत संकलन को सर्वांगीण बना दिया है। इस कार्य के लिए गौड़जी हिन्दी पाठकों की कृतज्ञता के पात्र हैं।

* * *

विपंची : नवयुवक गीतकार श्री भूलेश्वर 'पन्थी' के अनुभूति-प्रधान सरस-सजल गीतों का संग्रह है। इसमें कवि के कुल ३५ गीत संकलित हैं जिनमें से अधिकांश में लय और गति ही नहीं बल्कि छन्दों की मर्यादा का भी निर्वाह किया गया है। भाषा की प्रवाहमयता, अनुभूति की गहराई तथा सहज स्पन्दन की झलक लगभग प्रत्येक गीत में मिल जाती है। इसके आवरण-पृष्ठ तथा छपाई-सफाई सभी में सुरुचि का आभास है। इसका प्राप्ति-स्थान है **लहर प्रकाशन, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-१** तथा मूल्य है १ रुपया ५० नये पैसे।

* * *

नाटक

तरकश के तीर : ले० श्रीकृष्ण, प्रकाशक **भारतीय ज्ञानपीठ काशी**; पृ० सं० २०३, मूल्य तीन रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक लेखक का पहला एकांकी संग्रह है। इस संग्रह में चौदह एकांकी संकलित हैं। ये सभी एकांकी

राजस्थान सरकार द्वारा स्वीकृत पुस्तक विक्रेता

हरेक पुस्तकालय के लिए उपयोगी प्रकाशन

हृदयनाथ :	र० व० देसाई	६)
हम क्यों रुकें ? :	,,	२॥)
पराया :	रवीन्द्रनाथ टैगौर	२॥)
ठकुरानी बहू का बाजार :	,,	२)
चुटकियाँ :	जी० पी० श्रीवास्तव	२॥)
भय्या अकिल बहादुर :	,,	२॥)
बौछार :	,,	३)
लक्कड़बघ्घा :	,,	१॥)
भक्तिन :	,,	१॥)
उड़नखटोला :	,,	१॥)
भावना :	कमलापति प्रधान	२)
माँ (संक्षिप्त) :	मैक्सिम गोर्की	१॥)
गरम चाय :	हास्य रस की कहानियाँ	१॥)
आइसक्रीम :	,,	१॥)
मसूरीवाली :	बेढब बनारसी	१॥)
बनारसी एक्का :	,,	१॥)
मखमली जूती :	मोहनलाल गुप्त 'भैयाजी बनारसी'	२)
चिरकुमारी सभा :	,,	२।)
रहस्यमय कंकाल :		१)
नया कदम :	लघु उपन्यास	॥=)
बाल मनोरंजन :	बाल साहित्य	॥)
बच्चों की सरकार :	,,	१)
कथा कुञ्ज (दो भाग) :	,,	॥)
साहसी राजकुमार :	,,	।=)
जंगली बेर :	,,	।=)
बीरबल का जवाब :	,,	।=)
हँसो हँसाओ :	,,	।=)

भारतीय प्रकाशन मण्डल

नन्दनसाहू लेन, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं, अधिकांश रेडियो टेकनीक में रूपान्तरित होकर प्रसारित हो चुके हैं तथा अनेक नगरों में मंच पर सफलतापूर्वक खेले भी जा चुके हैं। प्रत्येक एकांकी का वातावरण सरल और सुबोध है। प्रत्येक नाटक-प्रेमी पाठक इस संग्रह का आदर करेंगे। छपाई-सफाई तथा आवरण उत्तम।

* * *

कुरुक्षेत्र : ले० अवधभूषण मिश्र, प्रकाशक **जवाहर पुस्तकालय, मथुरा (यू०पी)**; पृ० सं० ८०; मूल्य १।) रु०।

प्रस्तुत नाटक दो अंकों में कुरुक्षेत्र की विनाश-लीला को रूपायित करता है। अश्वत्थामा द्वारा पांडवों के पुत्रों का वध नाटक के अन्तिम दृश्य में उपस्थित करके लेखक ने रंगमंच के उपयुक्त वातावरण की सृष्टि की है।

* * *

रोमियो जूलियट : शेक्सपियर : अनु० डॉ० रांगेय राघव, प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली,** ड० क्रा० १६ पेजी, पृष्ठ-संख्या १३४, मूल्य २)।

डॉ० रांगेय राघव ने नाट्य-साहित्य शिरोमणि शेक्सपियर के अनेक नाटकों का सुलभ अनुवाद किया है। प्रेम-सम्बन्धी दुखान्त नाटक "रोमियो जूलियट" का यह अनुवाद भी उसी माला में से है।

इस अनुवाद-माला की सब पुस्तकें, जिसे प्रकाशक ने **हिन्दी शेक्सपीयर** के नाम से पुकारा है, सभी पुस्तकालयों में रखने योग्य हैं।

* * *

तिल का ताड़ : (मच एडो एबाउट नथिंग) तथा **बारहवीं रात,** (ट्वेल्फ्थ नाइट) भी डॉ० रांगेय राघव द्वारा अनूदित शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटकों में से हैं।

* * *

सिकन्दर : हिन्दी के विख्यात कथाकार श्री सुदर्शन का लोक-प्रिय नाटक है जिसके सन् १९४७ से अब तक सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। भारत-सरकार ने इस कृति पर श्री सुदर्शन को दो हजार रुपये का पुरस्कार भी प्रदान किया है। यह नाटक मूल रूप से पहले फिल्म के लिए लिखा गया था। यही कारण है कि इसमें छोटे-छोटे अनेक दृश्यों का समावेश करना पड़ा है जो आधुनिक रंगमंच की

हमारा उत्कृष्ट साहित्यिक प्रकाशन

भारतीय काव्य-शास्त्र की परम्परा : डॉ० नगेन्द्र १६.००
विचार और विश्लेषण : ,, ५.५०
विचार और अनुभूति : ,, ४.५०
विचार और विवेचन : ,, ४.५०
रीति-काव्य की भूमिका : ,, ५.५०
देव और उनकी कविता : ,, ६.५०
सियारामशरण गुप्त : ,, ५.५०
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ : ,, ४.००
राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य : डॉ० विजयेन्द्र स्नातक १८.००
समीक्षात्मक निबन्ध : ,, ५.५०
कविता में प्रकृति-चित्रण : डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ४.००
हिन्दी साहित्य रत्नाकर : डॉ० विमलकुमार जैन ५.००
हिन्दी के अर्वाचीन रत्न : ,, ७.००
जैनेन्द्र और उनके उपन्यास : रघुनाथशरण झालानी ५.००
धूलि धूसरित मणियाँ : दमयन्ती एम० ए०, सीता बी० ए०, लीला प्रभाकर १५.००

हमारे कथा साहित्य, बाल साहित्य तथा समाज विकास साहित्य के लिए विस्तृत सूचीपत्र मँगाइये !

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुविधाओं का ध्यान रखते हुए एक दोष माना जा सकता है। वैसे चरित्र-चित्रण, नाटकीयता, कथोपकथन की सहज गतिशीलता की दृष्टि से यह नाटक अत्यन्त उच्चकोटि का बन पड़ा है। इसका प्रकशन हुआ है **बोरा एण्ड कं० प्रा० लि०, बम्बई-२** और मूल्य है १·७५ नये पैसे।

* * *

मुद्राराक्षस : विशाखदत्त : अनु० डॉ० रांगेय राघव, प्रकाशक **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।** ड० क्रा० १६-पेजी, पृष्ठ-संख्या १३६, मूल्य २)।

मौर्यकालीन भारतीय राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण करने वाले महत्त्वपूर्ण संस्कृत-नाटक का सफल अनुवाद।

* * *

कहानी

कस्बे का आदमी : कमलेश्वर का नवीनतम कहानी-संग्रह। इस में बारह कहानियाँ संग्रहीत हैं जो कस्बे के अछूते चित्र प्रस्तुत करती हैं। नये कथानकों और नये चरित्रों को प्रस्तुत करने में जिस जागरूक और सामाजिक अन्तर्दृष्टि का परिचय इन कहानियों में मिलता है, वह आज के बदलते हुए समाज में सहसा दिखाई नहीं पड़ती। लेखक ने बड़ी कुशलता से उन यथार्थों को अपनी कहानियों में मूर्त किया है। कमलेश्वर की ये कहानियाँ हिन्दी की नई कहानियों का समर्थ प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रकाशक : **राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि०, दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना, मद्रास।** मूल्य ३) मात्र।

* * *

सप्त किरण में प्रो० राजेन्द्रप्रसाद कमठान की सात मनोवैज्ञानिक कहानियाँ संग्रहीत हैं। मनोवैज्ञानिकता के प्रति अतिजागरूकता के कारण ही इन कहानियों में साहित्यिकता कम सैद्धान्तिकता अधिक आ गई है। आशा है आगे चलकर लेखक कुछ अधिक अच्छी कहानियाँ हिन्दी-साहित्य को दे सकेगा। इसका प्रकाशन हुआ है **किताब घर, कानपुर** से और मूल्य है ५० नये पैसे।

* * *

जयदोल : अज्ञेय, प्रकाशक **भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी।** ड० क्रा० १६ पेजी, पृष्ठ-संख्या १९२, मूल्य ३)।

अज्ञेय की १२ कहानियों के संग्रह का दूसरा संस्करण। कहानियाँ मुख्यतया विचार और दर्शन-प्रधान हैं, यद्यपि लेखक ने पुस्तक के पहले संस्करण की भूमिका में कहानियों में दर्शन की गुञ्जाइश से इन्कार किया है। फलतः कहानियों की गति बाहरी फ़लसफ़े के बोझ के कारण काफ़ी मन्द पड़ गई है।

* * *

आलोचना, निबन्ध

सूर की भाषा : डॉ० प्रेमनारायण टण्टन, प्रकाशक : **हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ।** रायल आकार, सजिल्द, पृष्ठ संख्या ६२४, मूल्य २०)।

प्रस्तुत ग्रन्थ लेखक का लखनऊ विश्वविद्यालय की पी०एच०डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत प्रबन्ध है। किसी विशिष्ट कवि की भाषा का इतना विषद अध्ययन हिन्दी में अभी तक नहीं हुआ है, यह अध्ययन सात अध्यायों में विभाजित है : (१) ब्रजभाषा और सूर की भाषा के अध्ययन का इतिहास, (२) ब्रजभाषा-विकास और सूर का भाषा-ज्ञान, (३) सूर की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, (४) सूर की भाषा का व्याकरणिक अध्ययन, (५) सूर की भाषा का व्यावहारिक और शास्त्रीय पक्ष, (६) सांस्कृतिक दृष्टि से सूर की भाषा का महत्त्व, तथा (७) उपसंहार में समकालीन और परवर्ती ब्रजभाषा-कवियों से सूर की भाषा की तुलना एवं अध्ययन का सारांश दिया गया है। परिशिष्ट में सूर-काव्य में प्रयुक्त शब्दों की संख्या और सूर-काव्य के सम्पादन की समस्या पर विचार किया गया है।

प्रत्येक पुस्तकालय तथा सूर-साहित्य के विद्यार्थी द्वारा संग्रहणीय ग्रन्थ।

* * *

प्रसाद-काव्य कोश : सुधाकर पाण्डेय; प्रकाशक : **आराधना प्रकाशन, वाराणसी।** क्राऊन ८-पेजी, आकार, सजिल्द, पृष्ठ संख्या ४०८, मूल्य १६ रुपये।

श्री जयशंकर प्रसाद की समस्त काव्यवृत्तियों के प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिये स्थायी साहित्य

हमारा अनुरोध है कि पुस्तकालय निम्नलिखित प्रत्येक पुस्तक मँगावें। जो पुस्तक वह अस्वीकृत करेंगे वह हम वापस ले लेंगे।

उपन्यास, एकांकी, कहानी

चतुरसेन—वैशाली की नगर-वधू [दो भाग] १२·००
गोल्डस्मिथ—अनोखी तृप्ति ४·२५
पर्लबक—जनानी ड्योढ़ी ७·५०
पर्लबक—यशपाल—मृगतृष्णा ५·७५
रस्तोगी—ठंढी आग २·७५
रस्तोगी—दरारें ४·२५
मनोजबसु—दीवाने २·५०
अलैक्जेंडर ड्यूमा—वह कौन थी ? ३·७५
मार्कण्डेय—यशपाल—चलनी में अमृत ४·५०
एमिली ब्रौंटे—प्रतिशोध [Wuthering Heights] ७·५०
वैलेंटाइन विलियम्स—चिड़िया की तिग्गी २·७५
सर आर्थर कॉनन डायल—शिकारी कुत्ता ४·००
स्टीवेन्सन—डॉक्टर जैकिल और मिस्टर हाइड २·००
वर्मा—मोहब्बत, मनोविज्ञान और मूँछ दाढ़ी ३·५०
रस्तोगी—क़सम क़ुरान की ३·००
मेहरोत्रा—धरती और धुआँ २·५०
श्रीशचन्द्र देव—महाभारत की कथा ३·००

इतिहास

सरदेसाई—मराठों का इतिहास ६·००
मुकर्जी—योरोप का इतिहास [१५००-१६५०] ५·७५
मुकर्जी—आधुनिक योरोप का वृहत् इतिहास (१७८६-१६३६) ५·५०
मुकर्जी—भारत का इतिहास
—प्राचीन काल २·५०
—मध्य काल २·५०
—आधुनिक काल २·५०
Bhargava—India in the Vedic Age 22·50

दर्शन तथा आत्मोन्नति

विवेकानन्द—कर्मयोग २·००
विवेकानन्द—भक्ति और वेदान्त (out of print) २·५०
विवेकानन्द—भक्ति योग (out of print) २·५०
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्—भारत की अन्तरात्मा ३·७५
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्—स्वतंत्रता और संस्कृति ३·७५
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्—भारत और चीन ५·२५

मनोविज्ञान

वुडवर्थ-मार्क्विस—मनोविज्ञान १२·५०
गिन्सबर्ग—समाज का मनोविज्ञान ५·००

राजनीतिशास्त्र

आशीर्वादम्—राजनीतिशास्त्र १२·५०
Asirvatham—Political Theory 14·00

शिक्षा

रायबर्न—शिक्षालय संगठन ४·५०
रायबर्न—अध्यापन के सिद्धान्त ५·००
जीवनायकम—शिक्षा शास्त्र ६·००
जीवनायकम—मनोविज्ञान और शिक्षा ५·००

समालोचना

दीक्षित—तुलसीदास और उनके ग्रन्थ ५·००

पाकविज्ञान

श्रीमती वृन्देश्वरी—सरस भोजन कैसे बनायें ३·७५

यौनविज्ञान

दत्त—नर-नारी ४·५०
Vatsyayana—Kama Sutra 7·00

स्वास्थ्य

डॉक्टर सुमित्रा भार्गव—स्वास्थ्य के लिए क्या खायें २·००
महात्मा गांधी—स्वास्थ्य प्रदर्शक [out of print] ·७५

विज्ञान

डे—अकार्बनिक रसायन [दो भाग] ६·५०
हरिभगवान्—दैनिक जीवन में विज्ञान ४·००
त्यागी—विज्ञान के नये चरण [in press] ५·००

वाणिज्य

मिश्र—व्यापार एवं उसकी व्यवस्था भाग १ ७·५०
मिश्र—व्यापार एवं उसकी व्यवस्था भाग २ ५·००

पुस्तकालय और पुस्तक-विक्रेता विस्तृत सूचीपत्र मंगायें।

दि अपर इंडिया पब्लिशिंग हाउस लि०, अमीनुद्दौला पार्क, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्द का सन्दर्भ, अर्थ एवं व्याख्या। यह कोश लेखक के चिरकालीन अध्यवसाय तथा पाण्डित्य का साक्षी है। प्रसाद की काव्य-रचनाओं के विद्यार्थियों के लिए अतीव उपादेय तथा संग्रहणीय।

* * *

साहित्य : ले० शंकरदेव अवतरे; प्रकाशक **शंकरदेव अवतरे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी**; इस संस्करण के पूर्ण क्रेता-आराधना प्रकाशन, गोला दीनानाथ, वाराणसी; पृ० सं० ३१७, मूल्य ६) रुपये।

प्रस्तुत पुस्तक में साहित्य के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों की नवीन स्थापना और नवीन शैली द्वारा समझाने का सत्प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में साहित्य के कुछ ज्वलन्त प्रश्न उठाये गए हैं और उसका समाधान शास्त्रीय पद्धति से किया गया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इस ग्रन्थ के बारे में लिखा है—उनके विचार सुलझे हुए हैं और विचार्य विषय को सहजग्राह्य करने की क्षमता भी उनमें है। मुझे आशा है कि हिन्दी का सहृदय पाठक इस रचना से आनन्द और सन्तोष प्राप्त करेगा।

* * *

हिन्दी का सर्वाधिक विवादग्रस्त
उपन्यास

घेरे के बाहर

(लेखक द्वारका प्रसाद)
दूसरा संस्करण छपकर तैयार है।

★

अपने पुस्तक-विक्रेता से प्राप्त करें।

प्राप्ति-स्थान

राजकमल प्रकाशन,

दिल्ली, प्रयाग, बम्बई।

भाषा का इतिहास : ले० भगवद्दत्त, प्रकाशक **ओरिएण्टल बुकडिपो, नई सड़क, दिल्ली**; पृ० सं० ३०७; मूल्य पाँच रुपया।

इस ग्रन्थ में जर्मन-लेखकों का भाषा-विद्या-विषयक मिथ्याभिमान परीक्षित किया गया है और उसका खोखलापन दरशाया गया है। उन्होंने भारतीय ऋषियों के ज्ञान पर जो लाञ्छन लगाए थे और आधुनिक अल्पज्ञ पक्षपाती लेखकों को प्रच्छन्न रूप से ऋषि पदवी से अलंकृत कवि का जो यत्न किया था, उस सबकी निस्सारता उद्घाटित की गई है। इस तुलनात्मक अध्ययन से छात्रों का ज्ञान बहुत परिमार्जित हो जायगा—ऐसी आशा है।

* * *

संक्षिप्त सूरसागर : में डॉ० प्रेमनारायण टंडन ने महाकवि सूरदास के कई सहस्र पदों में से केवल १८०१ उत्कृष्ट पदों का सुसम्पादित संकलन प्रस्तुत किया है। पदों की प्रामाणिकता तथा पाठनिर्धारण के लिए विद्वान् सम्पादक ने सूर की कृतियों के समस्त प्रकाशित संस्करणों तथा हस्तलिखित पोथियों का सहारा लिया है। डॉ० टण्डन ने भक्त-शिरोमणि ब्रजभाषा-कवि सूरदास के काव्य तथा भाषा का गहन अध्ययन किया है अतः इस ग्रन्थ के आरम्भ में सूर-काव्य की सम्पादन-समस्या पर जो भूमिका दी गई है उससे यह ग्रन्थ और भी महत्त्वपूर्ण बन गया है। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ** से और मूल्य है ६) रु०।

* * *

गोस्वामी तुलसीदास, : एक आलोचना में श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा 'मधुप' ने संक्षेप में तुलसी की जीवनी, उनके काव्य, उनकी भाषा, जीवन-दर्शन तथा भक्ति-सम्बन्धी मान्यताओं का गहन अध्ययन तथा विश्लेषण प्रस्तुत किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **साहित्य भण्डार, लखनऊ** से और मूल्य है २।।) रु०।

* * *

आधुनिक साहित्य : में श्री प्रतापनारायण टंडन के १८ लेख संकलित हैं। इनमें से लेखक के कथनानुसार चार-पाँच लेख सैद्धान्तिक समीक्षा-सम्बन्धी है, शेष सभी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से व्यावहारिक आलोचना से सम्बन्धित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, यद्यपि इन लेखों को बहुत संकोचपूर्वक ही प्रौढ़ आलोचनात्मक निबन्धों की संज्ञा दी जा सकती है। लेखक के पास न तो साफ़-सुथरी और तीखी भाषा-शैली ही है और न विचारों की सुस्पष्टता ही। इसका प्रकाशन हुआ है **विद्यामन्दिर, रानी कटरा, लखनऊ** से तथा मूल्य है ४)।

* * *

हिन्दी साहित्य : कुछ विचार : डॉ० प्रेमनारायण टंडन के चौदह आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। ये निबन्ध समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा अभिनन्दन-ग्रन्थों आदि के लिए लिखे गए थे इसीलिए इनमें परस्पर किसी प्रकार की क्रमबद्धता नहीं है। ये निबन्ध दो खण्डों में संग्रहीत हैं—प्रथम भाग में चन्द के 'पृथ्वीराज रासो' से लेकर श्री मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' तक हिन्दी के विभिन्न कवियों तथा कृतियों पर प्रकाश डाला गया है और दूसरे भाग में ऐसे निबन्ध हैं जिनमें हिन्दी-गद्य तथा कुछ पद्य-कृतियों पर विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली गई है। सभी निबन्धों में लेखक के गहन अध्ययन तथा सुस्पष्ट आलोचनात्मक दृष्टि का परिचय मिलता है। इसका प्रकाशन **हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ** से हुआ है और मूल्य है ७।) रु०।

* * *

उर्दू साहित्य का सरल इतिहास में श्री प्रताप नारायण टंडन ने उर्दू भाषा तथा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया है। इसमें लेखक ने उर्दू भाषा की उत्पत्ति तथा विकास पर सम्यक् प्रकाश डालने के बाद उर्दू-साहित्य के आविर्भाव, उसके प्रमुख केन्द्रों, साहित्य प्रवृत्तियों, महत्त्वपूर्ण कवियों तथा अन्य बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातों का विश्लेषणात्मक परिचय प्रस्तुत किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **विद्यामन्दिर, रानीकटरा, लखनऊ** से और मूल्य है २॥)।

* * *

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

झाँसी की रानी : लेखक एवं चित्रकार श्री भइया साहब ओंकार। बच्चों के लिए १८५७ के स्वातन्त्र्य-संग्राम की अमर-कहानी और महारानी झाँसी के पराक्रम को सरल तथा सुबोध भाषा में आकर्षक चित्रों-सहित इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। अनुवादक परमार, मूल्य ५० नये पैसे, प्रकाशक : **राजविराज प्रकाशन, पूना**।

* * *

आओ करें सवारी : श्री रामचन्द्र तिवारी ने इस बालोपयोगी पुस्तक में विभिन्न सवारियों का पद्य में बड़ा ही मनोरंजक विवरण किया है, जिसमें माँ की गोद से लेकर हैलिकॉप्टर तक की समस्त सवारियों का परिचय खेल-खेल में मिल सकता है। मूल्य ७५ नये पैसे, प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली**।

* * *

खेलें-कूदें, नाचें-गायें : श्री धर्मपाल शास्त्री ने मधुर और सुबोध कविताओं द्वारा बालकों के लिए मनोरंजक सामग्री इस पुस्तक में प्रस्तुत की है। मूल्य ५० नये पैसे, प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली**।

* * *

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

आधुनिक निबन्ध : दो वर्षों में तीन संस्करणों का प्रकाशित होना ही इस पुस्तक की लोकप्रियता का प्रमाण है। ले० रामप्रसाद किचलू, केशनीप्रसाद चौरसिया। मूल्य ३ रुपये ५० नये पैसे।

हिन्दी आलेखन : सेक्रेटेरियट हिन्दी ड्राफ्टिंग की अद्वितीय पुस्तक। ले० रामप्रसाद किचलू। मूल्य १ रुपया ५० नये पैसे।

हिन्दी संक्षिप्त लेखन : हिन्दी प्रेसी राइटिंग की पुस्तक। ले० रामप्रसाद किचलू। मूल्य २ रुपये।

बहते बादल : कुमारी उषा सक्सेना द्वारा लिखित ११ भावात्मक कहानियों का संग्रह। मूल्य २ रुपये।

इन्द्रधनुष : डॉ० रामकुमार वर्मा के सात सांस्कृतिक एकांकियों का संग्रह। मूल्य ३ रुपये मात्र।

बापू : डॉ० रामकुमार वर्मा के सात अन्य सांस्कृतिक एकांकियों का संग्रह। मूल्य २ रुपये ७५ नये पैसे।

राजकिशोर प्रकाशन,

१८-बी, एडमान्सटन रोड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मित्र लाभ : सम्पादक : प्रो० आदितेश्वर कौशिक, प्रकाशक **हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली; पृ० सं० १४३; मूल्य १II)** ।

संस्कृत साहित्य में 'हितोपदेश' नीतिशास्त्र का उज्ज्वल रत्न है । मित्रलाभ इस ग्रन्थ का सर्वश्रेष्ठ प्रकरण है । इसकी सैकड़ों टीकाएँ निकल चुकी हैं एवं विदेशी भाषाओं में भी इसके अनुवाद हो चुके हैं । अनेक विश्वविद्यालयों ने मित्रलाभ प्रकरण को अपने संस्कृत के पाठ्यक्रम में निर्धारित कर रखा है । प्रस्तुत पुस्तक परीक्षार्थियों के लिए लिखी गई है । आशा है, जिज्ञासु पाठकों को इससे लाभ होगा ।

* * *

देश देश के बालक : में श्री महेशचन्द्र 'सरल' ने अत्यन्त रोचक ढंग से सरल भाषा में भारत, नेपाल, चीन, जापान, अमरीका, इंग्लैण्ड, मिस्र, अरब, ईराक, रूस तथा उत्तरी-ध्रुव के जन-जीवन की संक्षिप्त झाँकी वहाँ के किसी एक बालक की कहानी कह कर प्रस्तुत की गई है । इसका प्रकाशन हुआ है **सरल प्रकाशन गृह** हरदोई से, और मूल्य है ७५ नये पैसे ।

* * *

अमरीका के राष्ट्रपति : नामक इस सचित्र तथा आकर्षक पुस्तक में जॉर्ज वाशिंगटन से लेकर ड्वाइट डी० आइज़न हौवर तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कुल चौंतीस राष्ट्रपतियों का संक्षिप्त जीवन-परिचय प्रस्तुत किया गया है । मूल पुस्तक अंग्रेजी में थी और बच्चों के लिए लिखी गई थी अत: अनुवाद करते समय अनुवादक को भाषा की सरलता तथा वर्णन की सहजबोधता की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए था । इसका प्रकाशन **इण्डियन यूनिवर्सिटी पब्लिशर्ज प्रा० लि०, काश्मीरी गेट, दिल्ली** से हुआ है ।

* * *

छुआछूत का अन्त : में श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने अत्यन्त सरल भाषा-शैली में भारत की अछूत समस्या तथा भारत-सरकार द्वारा अस्पृश्यता-निवारण के लिए बनाये गये कानून का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है । इसका प्रकाशन हुआ है **छात्रहितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग** से और मूल्य है ७५ नये पैसे ।

* * *

फल सब्जी संरक्षण में श्री जगपति चतुर्वेदी ने सहज ढंग से फलों तथा तरकारियों को अधिक दिनों तक उपयोग-योग्य रखने की वैज्ञानिक तथा सरल विधियों का उल्लेख किया है । पुस्तक सामान्य लोगों के लिए बड़ी उपयोगी है । इसका प्रकाशन हुआ है **छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज, प्रयाग** से और मूल्य है १) ।

* * *

१८५७ की चिनगारियाँ में भारत के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के महान् सेनानियों के जीवन से सम्बन्धित अनेक रोचक घटना-प्रसंगों तथा अनुश्रुतियों का संकलन प्रस्तुत किया गया है । जिनसे कितने ही ज्ञात-अज्ञात ऐतिहासिक तथ्यों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है । इसके लेखक हैं श्री श्रीनिवास बालाजी हर्डीकर तथा प्रकाशन हुआ है **साहित्य निकेतन, कानपुर** की ओर से । मूल्य १) रु० ।

* * *

छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज प्रयाग से प्रकाशित तथा श्री केशवकुमार ठाकुर द्वारा लिखित चरित्र-निर्माण-सम्बन्धी पुस्तक **सादगी श्रेष्ठता का निर्माण करती है** में अत्यन्त सहज ढंग से बताया गया है कि मनुष्य के आचार-व्यवहार के समस्त कार्यों में सादगी का कितना अधिक महत्त्व है क्योंकि मनुष्य की श्रेष्ठता तड़क-भड़क में नहीं बल्कि सादगी में ही निहित है । मूल्य २) रु० २५ नये पैसे ।

* * *

शिक्षा-विज्ञान

स्वतन्त्र भारत में शिक्षा : हुमायूँ कबीर, प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** । ड० क्रा० १६ पेजी, सजिल्द पृष्ठ-संख्या २८१, मूल्य ५) ५० नये पैसे ।

श्री हुमायूँ कबीर कई वर्ष पर्यन्त भारत-सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय के सचिव रहे हैं और स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय शिक्षा के संगठन तथा प्रगति का उन्हें निकट का एवं प्रामाणिक परिचय है । अपनी इस पुस्तक को उन्होंने ९ अध्यायों में विभाजित किया है—भारत में शिक्षा की स्थिति: विहंगावलोकन, बुनियादी शिक्षा का सिद्धान्त और व्यवहार, माध्यमिक शिक्षा का पुनर्गठन, समाज शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

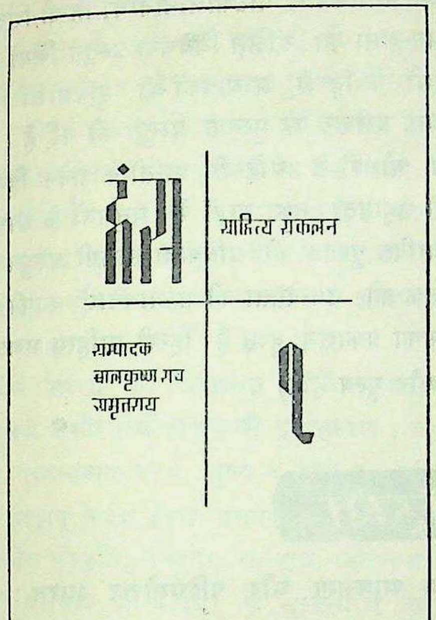

हंस

साहित्य-संकलन

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि 'हंस' अपने नये रूप में प्रकाशित हो गया है। उसका नया रूप अर्द्ध-वार्षिक साहित्य-संकलन का रूप है। हमारा विश्वास है कि अपने इस नये रूप में 'हंस' आपको और भी अधिक सुन्दर व सन्तोषप्रद लगेगा। इसमें आपको एक स्थान पर जितनी और जैसी साहित्यिक सामग्री मिलेगी उसका अनुभव आपको संकलन देखने पर ही होगा। उसका कुछ अनुमान आपको निम्नलिखित विषय सूची से हो जायेगा—

—एक सम्पूर्ण उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', लेखक, कमलेश्वर।

—व्यंग कृतियाँ और अन्य कथाएँ, जिनके लिखने वाले हैं, अमृतलाल नागर, नागार्जुन, मार्कण्डेय, मोहन राकेश, कृष्ण बलदेव वैद, हरिशंकर पारसाई, निर्मल वर्मा और शेखर जोशी।

—गजानन मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल, केदारनाथ सिंह, श्रीकान्त वर्मा, दुष्यन्त कुमार, कुँवरनारायण, अजित कुमार, कीर्ति चौधरी, हरिव्यास, वंशीधर आदि की कविताएँ।

—योरप की भ्रमण-कहानी, जिसे उमा राव ने लिखा है।

—विष्णु प्रभाकर व मोहन राकेश के एकांकी।

—प्रसिद्ध योरोपीय मार्क्सवादी आलोचक जार्ज लूकाच का एक सारगर्भित इण्टरव्यू जो रामकुमार ने बुडापेस्ट में लिया।

'साहित्यकार की आस्था' जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर एक अनूठी लेखमाला, जिसके अन्तर्गत अनेक कृती साहित्यकारों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं, जैसे महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सुमित्रानन्दन पन्त, राहुल सांकृत्यायन, रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त, नामवर सिंह, बालकृष्ण राव, गोपाल हल्दार व अमृतराय।

यह विषय-सूची स्वयं अपनी कहानी कहने के लिए काफ़ी है।

पृष्ठ-संख्या सवा चार सौ से ऊपर, रूप-सज्जा सुन्दर, सुरुचिपूर्ण। मूल्य ६॥) मात्र। डाकखर्च रु० १.१२ अतिरिक्त। रुपये मनीआर्डर से भेजिये। वी० पी० नहीं भेजी जायेगी।

हंस, ९३ जीरो रोड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का धारणा, भारतीय विश्वविद्यालयों के विषय में, अंग्रेजी का अध्ययन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और राज्य, छात्रों में अनुशासनहीनता, शिक्षा का नियत कर्तव्य।

स्वतन्त्र भारत के शिक्षा-सम्बन्धी प्रयत्नों की ओजस्विता, सजीवता तथा विविधता का परिचय देने में लेखक सफल हुए हैं।

* * *

शिक्षा के आधार-स्तम्भ (भाग १ तथा भाग २) श्री रामखेलावन चौधरी द्वारा लिखी गई शिक्षा-सिद्धान्त तथा मनोविज्ञान-सम्बन्धी दो खण्डों में अलग-अलग प्रकाशित पुस्तकें हैं। पहले खण्ड में शिक्षा-शास्त्र, शिक्षण-सिद्धान्त तथा विविध शिक्षण-प्रणालियों पर व्यापक प्रकाश डाला गया है और दूसरे खण्ड में शिक्षा-मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धान्तों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। ये दोनों पुस्तकें इण्टर कक्षाओं तथा प्रशिक्षण विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए काफ़ी उपयोगी हैं। इनका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ** से और प्रत्येक का मूल्य है ३।।।)।

'बाल-नवीनम्'

(बाल-उपन्यास माला)

सम्पादक :

किशोर गर्ग एम० ए०

इस माला में देश-विदेश के बाल-उपन्यास सरल हिन्दी में प्रस्तुत किये गये हैं। इन रोचक तथा शिक्षाप्रद पुस्तकों की कथा-सामग्री बाल-बालिका और प्रौढ़-नवसाक्षर दोनों की रुचि के अनुकूल है। सचित्र, सजिल्द, प्रत्येक पुस्तक का मूल्य रु० १.५० है।

नाम	मूलभाषा	नाम	मूलभाषा
श्यामू	अँग्रेजी	स्वर्णनदी का राजा	अँग्रेजी
कठपुतला	इतालियन	हेडी	जर्मन
साहसी पिप	,,	हिमरानी	डैनिश
बाम्बी	आस्ट्रियन	अलीसा	अँग्रेजी
सूरजक	रूसी	गुलाब और अँगूठी	,,

प्रमुख वितरक :

भारती साहित्य मन्दिर

फव्वारा, दिल्ली।

हिन्दी शिक्षण कला में शिक्षा के सिद्धान्त तथा उसके इतिहास, बाल मनोविज्ञान, पाठशाला-प्रबन्ध, हिन्दी-शिक्षण और अध्यापन-कला का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया है। अहिन्दी प्रदेशों के हिन्दी अध्यापकों की सुविधाओं तथा हितों का ध्यान रखकर यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। श्री रामखेलावन चौधरी ने अहिन्दी प्रान्तों के अनेक हिन्दी-प्रचारकों की सहायता तथा उन्हीं के अनुभवों के आधार पर इस सम्पादित पुस्तक की अधिकांश सामग्री प्रस्तुत की है अतः पुस्तक की उपादेयता की सम्भावनाएँ काफी बढ़ गई हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ** से और मूल्य है ४) रु०।

* * *

इतिहास

सिकन्दर का आक्रमण और पश्चिमोत्तर भारत : श्री बलराम श्रीवास्तव, प्रकाशक: **आराधना प्रकाशन, वाराणसी** सजिल्द, ड० क्रा० १६ पेजी, पृष्ठ-संख्या १५२, मूल्य ३)।

ईसा से चतुर्थशती पूर्व पश्चिमोत्तर भारत की भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों का संक्षिप्त किन्तु प्रामाणिक परिचय देने वाली पुस्तक। डॉ० राजबली पाण्डेय के अनुसार लेखक ने उन परिस्थितियों का "विषद और सफल पर्यवेक्षण और विश्लेषण प्रस्तुत पुस्तक में किया है। इस विषय पर अब तक जो सामग्री उपलब्ध है, प्रायः सभी का उपयोग इस ग्रन्थ के प्रणयन में किया गया है।"

* * *

प्राचीन भारत की सांग्रामिकता : ले० पं० रामदीन पांडेय, एम० ए०, साहित्याचार्य; प्रकाशक : **बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना;** पृ० सं० १६६, मूल्य पाँच रुपये पचास नये पैसे।

प्रस्तुत पुस्तक के मननशील लेखक, हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्य-सेवी हैं।

आदि काव्य 'रामायण' के बाद पौराणिक-युग में तो भारतीयों की रणकुशलता के अनेक प्रमाण मिलते हैं। रणवाद्यों और शस्त्रास्त्रों के नाम, रथों के आकार-प्रकार, महारथियों की ध्वजा के चिह्न, व्यूहों के नाम और उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्माण की विधि, युद्ध की वेशभूषा, युद्धक्षेत्र के नीति-नियम, चतुरंगिणी सेना की संख्या और बनावट, शिविर-संघटन प्रणाली, दूतों और जासूसों की निपुणता आदि के अतिरिक्त जलयुद्ध और आकाशयुद्ध के वर्णन एवं दृश्य भी हमारे पौराणिक युग के साहित्य में दर्शनीय हैं। इस पुस्तक के पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि इस विषय में आगे और भी अन्वेषण करने की आवश्यकता है। आशा है, अनुसन्धानशील पाठकों के हृदय में यह पुस्तक इस विषय की जिज्ञासा जगावेगी। छपाई-सफाई तथा आवरण उत्कृष्ट।

* * *

प्राचीन भारत की झलक : श्री रामप्रताप त्रिपाठी, प्रकाशक : **कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद**। डि० क्रा० १६ पेजी, पृष्ठ-संख्या ३२८, मूल्य ४ रुपये ५० नये पैसे।

विद्वान् लेखक द्वारा समय-समय पर लिखे गये प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्य, जीवन-दर्शन, इतिवृत्त तथा धार्मिक मान्यताओं के सम्बन्ध में खोजपूर्ण ३३ निबन्धों का पठनीय एवं संग्रहणीय संग्रह।

* * *

विविध

भारत के सन्त-महात्मा : श्री रामलाल, प्रकाशक : **वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्राइवेट लि०, बम्बई**। सजिल्द, डि० क्रा०, १६ पेजी, पृष्ठ संख्या १०१६-मूल्य १०) मात्र।

भारत के प्राचीन, मध्यकालीन तथा अर्वाचीन ११४ सन्त-महात्माओं के जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत पुस्तक में अंकित की गई है; उनके चमत्कारों के विषय में विस्तार से न लिखकर उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और उपदेशों पर लिखा गया है। अन्त में दी गई सहायक पुस्तकों की सूची तथा आवश्यक शब्दों एवं नामों की अनुक्रमणिका पाठकों को सुविधाजनक एवं लाभप्रद सिद्ध होगी।

* * *

अध्यात्मयोग और चित्र-विकलन : ले० स्वर्गीय श्री वेंकटेश्वर शर्मा; प्रकाशक **बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना**; पृ० सं० २६३, मूल्य छः रुपये पचास नये पैसे।

प्रस्तुत ग्रन्थ, पूज्य राष्ट्रपति, देशरत्न डाक्टर राजेन्द्र प्रसादजी ने परिषद् से प्रकाशित करने के लिए भेजा था। परिषद् के संचालक-मण्डल ने नियमानुसार कतिपय विशेषज्ञों से इसको जँचवाकर प्रकाशनार्थ स्वीकृत किया। संशोधन और सम्पादन के सिलसिले में लेखक की मौलिकता की सुरक्षा का ध्यान रखा गया है। श्रद्धेय श्री भगवानदासजी ने इस ग्रन्थ पर अपनी सम्मति देते हुए लिखा है कि भारतीय भाषाओं में ऐसा कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं देखने में आया है। आशा है कि हिन्दी-पाठकों को यह दार्शनिक ग्रन्थ सुरुचिपूर्ण और ज्ञानवर्द्धक प्रतीत होगा।

* * *

जीवन धर्म अहिंसा : ले० भगवानदास केला, प्रकाशक **सर्वोदय ग्रन्थमाला, ६०, हिवेट रोड, इलाहाबाद**; पृ० सं० २७२; मूल्य ढाई रुपये।

अपने विषय की इस अपेक्षाकृत छोटी-सी पुस्तक में उस अहिंसा का विवेचन है, जो व्यक्तियों तथा संस्थाओं का, परिवारों, जातियों, राज्यों या राष्ट्रों का और सभी सृष्टि का जीवन-धर्म है। सर्वोदय साहित्य के पाठकों को पर्याप्त सन्तोष प्राप्त होगा।

(शेष पृष्ठ २०३ पर)

वे उपन्यास जिनकी आज सर्वत्र माँग की जा रही है, अब आप भी पढ़िए

नगर परिमोहन
मू० ५॥)
(Lure of Cities)
गुरुदत्त का नवीन रोचक उपन्यास

जीत या हार
४)
प्रो० बलराज मधोक का
काश्मीर-युद्ध पर आधारित उपन्यास

ओरिएण्टल बुक डिपो
नई सड़क, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी
—बालक सीखता कैसे है, महात्मा भगवानदीन
—ग्रामदान क्यों, श्री चारू चन्द्र भण्डारी
—मेरा जीवन विकास, श्री ऊ० वा० सहस्रबुद्धे, अनु० गो० न० वैजापुरकर
—नवाखाली के चर्लमें, श्री मनुबहन गांधी
—स्थायी समाज व्यवस्था, श्री जे० सी० कुमारप्पा
—समता की खोज में, श्री जयप्रकाश नारायण, अनु० डॉ० ओमप्रकाश

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—साहित्य और कला, डॉ० भगवतशरण उपाध्याय
—महाकवि कीट्स का काव्यालोक, श्री यतेन्द्र कुमार
—भोजपुर की लोक-कथाएँ, श्री शिवमूर्तिसिंह वत्स
—मुलतानी लोक कथाएँ, सत्यप्रिय शान्त
—मुन्नी का सांप काका, श्री दयाशंकर मिश्र 'दद्दा'

एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली
—एक नदी दो पाल, श्री गुलशन नन्दा
—धरती की बेटी, श्री कमल शुक्ल
—लायसेंस, मिन्टो, अनु० श्री मुगनी अमरोहवी
—इन्शा अल्लाह, शौकत थानवी, अनु० श्री श्रीकृष्ण गुप्त

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली
—दण्डीकृत काव्यादर्श, टीकाकार श्री रणवीर सिंह

बम्बई बुक हाउस, बम्बई
—यात्रा, श्री साने गुरुजी, उपन्यास
—नेपथ्य, श्री आरिगपूडि, नाटक

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—साहिर लुधियानवी और उनकी शायरी, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
—जोश और उनकी शायरी, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
—ग़ालिब और उनकी शायरी, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
—इकबाल और उनकी शायरी, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
—आज का भारतीय साहित्य, साहित्य अकादमी की ओर से
—मां और मुन्ना, प्रिंसिपल हरिश्चन्द्र
—उर्दू की कहानियाँ, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
—महाभारत, श्री प्राणनाथ वानप्रस्थी
—गुलीवर की यात्राएँ, श्रीकान्त व्यास
—नया घोंसला, श्री शिवमूर्ति वत्स
—हलाहल, पु० मु०, बच्चन
—सूत की माला, पु० मु०, बच्चन
—आकुल अन्तर, पु० मु०, बच्चन

सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद
—नीड़ दूर है, रवीन्द्रनाथ

रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
—हिन्दी व्याकरण एवं अलंकार, श्रीविराग, श्रीवास्तव एवं अग्रवाल
—साहित्य मल्लिका, सम्पा० विरागी, शुक्ला एवं व्यथित हृदय
—काव्य दर्पण, डॉ० शम्भूनाथ पाण्डेय

विनय पुस्तक भण्डार, इन्दौर
—नया पैसा रेकनर, श्री आर० एस० जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत कार्यालय, हाथरस

—संगीत विशारद, श्री वसन्त

—काफी थाट अंक, सम्पा० श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—संकटानन्द, श्री यज्ञदत्त शर्मा

—एक अकेला प्यार, श्री यज्ञदत्त शर्मा, कविता

—जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा, डॉ० रामरतन भटनागर

—प्रसाद साहित्य और समीक्षा, डॉ० रामरतन भटनागर

—स्त्री विवाह से पूर्व क्या जाने, डॉ० लक्ष्मीचन्द्र

साहित्य प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली

—बच्चों के रूपक, डॉ० महेन्द्र भटनागर

साहित्य सदन, देहरादून

—चिन्तन : मनन, सम्पा० दुर्गाशंकर मिश्र

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई

—मेघदूत एक पुरानी कहानी, डॉ० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

—विजया, शरत, अनु० पं० रूपनारायण पाण्डे, नाटक

—बाणभट्ट की आत्म-कथा, पु० मु०, डॉ० हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

—कलाकार कंदी, पु० मु०, पं० सिद्धगोपाल काव्यतीर्थ

हिन्दी प्रचारक मण्डल, लखनऊ

—कल्याण मार्ग, श्री रामदास मिश्र 'विजय'

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

—हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रो० भारतभूषण सरोज

—छन्द चार्ट, श्री तिलकधर शास्त्री

—अलंकार चार्ट, श्री गम्भीर साहित्यरत्न

—कबीर विवेचन, डॉ० सरनाम सिंह

(पृष्ठ २०१ का शेष)

भारतीय समाज विन्यास में डॉ० राधाकमल मुकर्जी ने अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से संक्षेप में भारतीय जीवन-दर्शन की रूपरेखा स्पष्ट की है। इसमें यज्ञों का महत्त्व, पंचमहायज्ञों का आधार, वर्ण-व्यवस्था तथा हिन्दू जाति तथा धर्म-सम्बन्धी अन्य मूलभूत सिद्धान्तों का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना तथा मद्रास** से और मूल्य है २) रु०।

* * *

समाज का शास्त्रीय विवेचन में श्री रामलाल गुप्त ने अत्यन्त सरल और बोधगम्य शैली में समाज-शास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप से समझाने का सफल प्रयास किया है। इतने विस्तृत विषय को इतने संक्षेप में लिखकर सामान्य पाठकों के लिए इस गहन विषय को बोधगम्य बनाकर लेखक ने प्रशंसनीय प्रयास किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **कमला प्रकाशन, कानपुर** से और मूल्य है ३।।)।

* * *

महिलाओं की जानकारी में स्त्रियों के अंग-रक्षण, आरोग्य तथा सौन्दर्य-वृद्धि-सम्बन्धी अनेक उपयोगी बातों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। पुस्तक में स्त्रियों के अनेक रोगों तथा विकृतियों को दूर करने के उपाय तथा औषधियों के नुस्खे दिये गए हैं। इसके अतिरिक्त इसमें आकस्मिक चोट-चपेट से सम्बन्धित अनेक नुस्खों तथा उपायों का भी उल्लेख है। प्रत्येक घर में इस पुस्तक की उपयोगिता असन्दिग्ध है। इसकी लेखिका हैं श्रीमती ज्योतिर्मयी ठाकुर और प्रकाशन हुआ है **छात्र हितकारी पुस्तक माला, दारागंज, प्रयाग** से और मूल्य ४) रु०।

* * *

अनाथों के नाथ अमरीका के महान् ईसाई पादरी श्री फ्लैनैगन का जीवन-चरित्र है जिन्होंने अपराधी तथा अनाथ बच्चों के सुधार तथा संरक्षण के लिए बाल-घर तथा बाल-नगर की स्थापना का अपूर्व आदर्श उपस्थित किया था। मूल पुस्तक अँग्रेजी में सुश्री फुल्टन औस्लेर तथा विल्ल औस्लेर द्वारा लिखी गई थी और इसका हिन्दी-अनुवाद श्री केशव सागर ने प्रस्तुत किया है। इसका प्रकाशन हुआ है **इण्डियन यूनिवर्सिटी पब्लिशर्स, प्रा० लि०, दिल्ली—६** से तथा मूल्य है २)।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर मास के प्रकाशन

आलोचना-कोष-निबन्ध-संस्कृति

अवतरे, साहित्य, ४५०, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	६.००
आदित्येश्वर कौशिक, अशोक बाल हिन्दी कोष, ८६०, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	३.७५
ओम्प्रकाश शर्मा, आधुनिक साहित्य परिचय, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली	२.२५
केशवदास, सम्पा० लाला भगवानदीन, कविप्रिया, ड० क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	६.००
गुलाबराय, काव्य के रूप, पु०मु०, २७६, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
देवराज उपाध्याय, डॉ०, कथा के तत्त्व, २२७, डि०, ग्रन्थमाला कार्यालय	४.२५
धर्मानन्द कोसम्बी, अनु० श्रीपाद जोशी, पार्श्वनाथ का चातुर्याम धर्म, ११८, क्रा०, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	१.२५
नन्ददुलारे वाजपेयी, महाकवि सूरदास, पु० मु०, १७६, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	४.००
भगवती लाल, निबन्ध रत्नाकर, २४०, ड० क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी	२.००
भिक्षु धर्म रक्षित, पाली व्याकरण, १८७, ड० क्रा०, ज्ञान मण्डल लि०, वाराणसी	२.२५
मनमोहन गौतम, डॉ०, सरल भाषा विज्ञान, ५८०, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	५.७५
रामरतन भटनागर, डॉ०, अध्ययन और आलोचन, क्रा०, साहित्य सदन, देहरादून	८.००
शरत, अनु० रूपनारायण पाण्डे, शरत प्रतिभा, २५०, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	३.००
शान्तिकुमार नानूराम व्यास, संस्कृत और उसका साहित्य, १६०, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	२.२५
सुधाकर पाण्डेय, प्रसाद काव्य कोश, ४००, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	१६.००

इतिहास-राजनीति

इन्द्र विद्यावाचस्पति, मुग़ल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, पु० मु०, ५२८, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई,	७.५०
..रिग बुखारी, अनु० प्रभाकर, बाया खाँन, ३६७, क्रा०, एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली	७.००
यदुनन्दन कपूर, धर्म-निरपेक्ष प्राचीन भारत की प्रजातन्त्रात्मक परम्पराएँ, २०७, डि०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा	५.५०
वाल्मीकि चौधरी, राष्ट्रपति और राष्ट्रपति भवन, १६८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	६.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

इर्विन स्टोन, अनु० नरेन्द्र राणा, **लालसा**, ३८०, क्रा०, साहित्य सदन, देहरादून	५.००
उदयराज सिंह, **भूदानी सोनिया**, २७४, डं० क्रा०, अशोक प्रेस, पटना	४.००
कृष्णचन्द्र, **जब खेत जागे**, पु० मु०, १३६, क्रा०, बम्बई बुक हाऊस, बम्बई	३.००
गिरिजाशंकर पाण्डेय, **चेतसिंह का सपना, भाग २**, २७०, क्रा०, आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी	५.००
गुरुदत्त, **नगर परिमोहन**, ३३५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली	५.५०
दण्डी, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **दशकुमार चरित**, २३१, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	३.००
बलराज मधोक, **जीत या हार**, २३०, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो दिल्ली	४.००
वीरेन्द्र पाण्डेय, **बसन्ती भूमि के हज़ार मील**, २००, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ	३.५०
शिवप्रसाद मिश्र रुद्र, **सुचिताच**, ३००, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	४.५०
शौकत थानवी, अनु० हंसराज रहबर, **कार्टून**, २४८, क्रा०, एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली	४.२५
सॉमर सेट मॉम, अनु० नूरनबी अब्बासी, **तूलिका**, ३०६, क्रा०, एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली	५.२५

कविता

कान्तानाथ पाण्डेय चोंच, **मसलन**, १२८, डं० क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	२.२५
भगवतशरण चतुर्वेदी, **विदलोपाख्यान**, १०८, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा	१.००
मुग़नी अमरोहवी व नूरनबी अब्बासी, सम्पा०, **दीवाने ग़ालिब**, २३२, डि०, एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली	६.००
रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री, **राष्ट्रभाषा के पुजारी**, १९३, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा	१.५०

कहानी

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, सम्पा०, **श्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ**, १६५, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा	२.००
ठाकुर प्रसाद सिंह, **चौथी पीढ़ी**, १८६, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ	३.००
बेढब बनारसी, **हुक्का पानी**, १७२, क्रा०, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी	३.००
शैलेन्द्र कुमार पाठक, अनु०, **इन्सान का दिल और संसार की अन्य श्रेष्ठ कहानियाँ**, ९०, क्रा०, नया भारत प्रकाशन, दिल्ली	१.५०
सुदर्शन, **चार कहानियाँ**, पु० मु०, २५२, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	३.५०

टेकनिकल-इण्डस्ट्रियल

कालीचरण गुप्ता, **अमूल्य औद्योगिक रहस्य**, ३२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	०.५०
कालीचरण गुप्ता, **ठण्डी क्रिया से साबुन बनाना**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	०.५०
कालीचरण गुप्ता, **डाक व्यापार पद्धति**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	०.५०
कालीचरण गुप्ता, **रबड़ के गुब्बारे बनाना**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	१.२५
कालीचरण गुप्ता, **लिखने की स्याही**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	०.५०
नरेन्द्रनाथ, **रेलवे ट्रेन लाइटिंग**, २४०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	४.५०
बसन्त कुमार चैटर्जी, **वैज्ञानिक चांद**, ९०, क्रा०, एन० डी० सहगल एण्ड सन्स, दिल्ली	१.५०
सर स्टैनले अनविन, अनु० मुनीश सक्सेना, **पुस्तक प्रकाशन**, ३२२, डं० क्रा०, ज्ञानमण्डल लि०, वाराणसी	६.००
हरिचन्द रत्ता, **लोको गाइड**, पु० मु०, ५००, डि० आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक

इन्दुशेखर, अनु०, **अभिज्ञान शाकुन्तल**, १६८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	३.००
ठाकुर प्रसाद सिंह, **पन्द्रह अगस्त**, ८०, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ	१.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **एक सपना**, १३०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **तूफान**, १३४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **सम्राट् लियर**, १६८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
शेक्सपीयर, अनु० डॉ० रांगेय राघव, **हैमलेट**, २०८, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
सुधीर कुमार, **उपनिषदों की कथाएँ**, ५५, डि०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली	१.००

बाल-साहित्य

चतुरसेन शास्त्री, **महापुरुषों की झाँकियां**, ३६, कापी साइज़, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	०.७५
जान लिवेतेन, अनु० विराज, **एटम की कहानी**, ५२, कापी साइज़, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१.००
दयाशंकर मिश्र 'दद्दा', **बकरी माँ**, १६, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	
धर्मपाल शास्त्री, **मेरी गुड़िया कुछ तो बोल**, २०, कापी साइज़, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	०.७५
प्राणनाथ वानप्रस्थी, **गुरु गोविन्द सिंह**, ६०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	०.५०

मनोविज्ञान-शिक्षा-समाज-शास्त्र

जगदानन्द पाण्डेय, ४४८, डि०, ग्रंन्थमाला कार्यालय, पटना	१०.००
राधाकमल मुकर्जी, डॉ०, **भारतीय समाज-विन्यास**, ७६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	२.००
सरयूप्रसाद चौबे, डॉ०, सम्पा०, **अध्ययन विधियाँ**, ३६४, डि०, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	६.५०

विविध

चन्द्रोदय दीक्षित, **ग्रामोद्योग पंचायत**, पु० मु०, ११२, क्रा०, राष्ट्रीय प्रकाशन मन्दिर, लखनऊ	१.२५
दादाभाई नाईक, **ग्रामदान वरदान**, ६४, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी	०.२५
धीरेन्द्र मजूमदार, **समग्र ग्राम सेवा की ओर (दो खण्डों में)**, २८० व २४०, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, प्रति भाग	१.५०
नाथूराम प्रेमी, **अर्ध अथानक**, २५७, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	३.५०
पुरातन जे० बुच, **विकास की ओर**, ४८, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी	०.२५
राम अवतार वीर, **शास्त्रीय कण्ठ संगीत**, १००, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	२.५०
राम अवतार वीर, **कबीर संगीत भजनामृत**, १००, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली	२.५०
विनोबा, **शान्ति सेना**, १२८, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी	०.५०
विनोबा, **सर्वोदय विचार और स्वराज्य शास्त्र**, २३२, क्रा०, अखिल भारत सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी	१.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-लेखक-चित्रावली

हिन्दी के मूर्धन्य लेखकों का प्रथम फोटो-एल्बम। उत्कृष्ट विदेशी आर्ट पेपर पर प्रकाशित १०"×१५" के २५ चित्रों का संग्रह। बढ़िया पोर्टफोलियो में सुरक्षित। मूल्य १२ रुपये ५० नये पैसे।

निम्नलिखित लेखकों के चित्र इस चित्रावली में प्रकाशित किये जा रहे हैं :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ० श्यामसुन्दर दास, श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्री जयशंकर प्रसाद, श्री प्रेमचन्द, श्री राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री सुमित्रानन्दन पन्त, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री रामधारी सिंह दिनकर, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री जैनेन्द्रकुमार, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री इलाचन्द्र जोशी, श्री भगवतीचरण वर्मा, श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र, श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, श्री यशपाल, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क।

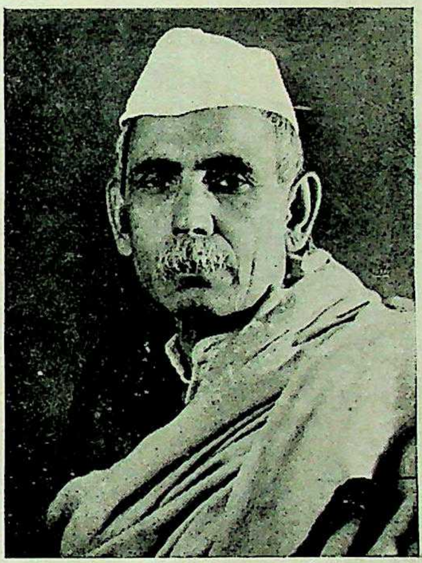

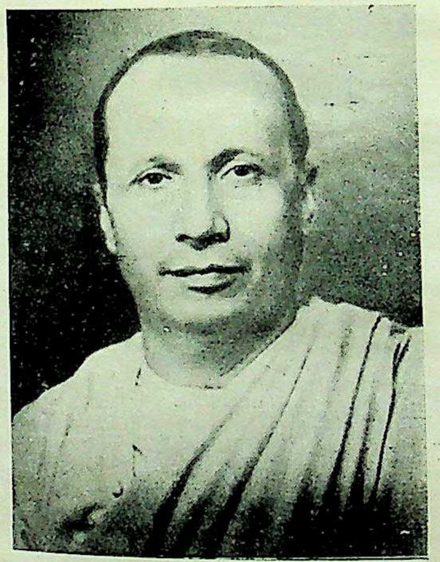

३१ जनवरी १९५८ को प्रकाशित होगा।

'हिन्दी-लेखक-चित्रावली' का मूल्य—प्रकाशन-तिथि से पूर्व प्राप्त आर्डरों पर—११ रुपये ५० नये पैसे।

१ फरवरी ५८ के बाद का मूल्य—१२ रुपये ५० नये पैसे।

राजकुमार प्रकाशन, प्रयाग की ओर से प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि०,

दिल्ली-७, बम्बई-१, इलाहाबाद-१, पटना-६, मद्रास-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Regd. No. D—594

हमारे मुख्य-मुख्य प्रकाशन

(तमाम पुस्तकें सफ़ेद कागज़ पर)

१. फर्नीचर बुक—ले० रत्न प्रकाश 'शील', पृष्ठ संख्या २८४, चित्र संख्या ४७७, मूल्य १०) ।
२. ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग (डीज़ल इंजन गाइड)—ले० कृष्णानन्द शर्मा, पृष्ठ संख्या ६१६, चित्र-संख्या १६२, फुल कपड़े की जिल्द, मू० १०) ।
३. ट्रांसफार्मर गाइड—ले० प्रो० नरेन्द्रनाथ, पृ० सं० २६४, चित्र सं० ५७, फुल कपड़े की जिल्द, मूल्य ४।।) ।
४. रैफरीजरेटर गाइड—ले० प्रो० नरेन्द्रनाथ, पृ० सं० ४८८, चित्र सं० १०६, फुल कपड़े की जिल्द. मू० ६) ।
५. भवन-निर्माण कला—ले० राम अवतार 'वीर', पृ० सं० २८४, चित्र सं० १६०, मूल्य १०) ।
६. आधुनिक कृषियन्त्र—ले० कान्तऋषि, मूल्य १।) ।
७. लोकोशैड फिटर गाइड—ले० हरिश्चन्द्र रत्ता, पृ० सं० ६५६, चित्र सं० ५१८, मूल्य १२) ।
८. माडर्न हिन्दी-इंगलिश टीचर—ले० राजेश्वर कुमार गुप्त, पृ० सं० ४५२, फुल कपड़े की जिल्द, मू० ६) ।
९. पाक भारती—ले० शुक्ल, पृ० सं० ६००, चित्र सं० १४०, फुल कपड़े की जिल्द, मूल्य ६) ।
१०. कार्तिक माहात्म्य क्षेमांकरी—सम्पूर्ण ३५ अध्याय, पृ० सं० ३६६, मूल्य ४।।=) ।
११. देहाती जड़ी-बूटियाँ—ले० वैद्यराज पं० रामनारायण, पृ० सं० ४६४, चित्र सं० १६१, मूल्य ७) ।
१२. योग आसन—ले० स्वामी सेवानन्द, पृ० सं० १६८, चित्र सं० २००, मू० २।।) ।
१३. नाड़ी ज्ञान तरंगिणी—ले० रघुनाथप्रसाद शुक्ल, पृ० सं० १७६, मूल्य २।।) ।
१४. आधुनिक एलोपैथिक गाइड—ले० डॉ० आर० एस० बंसल, पृ० सं० ५००, मूल्य ८।।) ।
१५. हैण्डबुक ऑफ पोल्ट्री—ले० कालीचरन गुप्ता, पृ० सं० ५३५, चित्र सं० १००, मूल्य १०) ।
१६. मधु भारतीय कढ़ाई—ले० मधुरानी, पृ० सं० १००, साइज़ २० × ३० = ८, मूल्य ४।।) ।
१७. लता कढ़ाई कला—ले० लतारानी, पृ० सं० ८०, साइज़ २० × ३० = ८, मूल्य २।।) ।
१८. स्टीम इंजीनियर्ज़ गाइड—ले० एच० सी० कपूर, पृ० सं० ३५२, मूल्य १०) ।
१९. फिल्मी वायलिन गाइड—ले० राम अवतार 'वीर', साइज़ २० × ३० = १६, पृ० सं० ६६, मूल्य २।।) ।
२०. बाँसुरी गाइड—ले० राम अवतार 'वीर', पृ० सं० ११२, मूल्य २।।) ।
२१. सुन्दर हारमोनियम पुष्पांजलि—ले० राम अवतार 'वीर', पृ० सं० २८०, मूल्य २।।) ।
२२. बृहद् हिप्नोटिज्म और मिस्मरिज्म—ले० अमोलचन्द्र शुक्ला, पृ० सं० ३४४, चित्र सं० ६३, मूल्य ६) ।
२३. हम स्वस्थ कैसे रहें—ले० सत्यकाम जी, पृ० सं० ४५६, चित्र सं० लगभग १००, मूल्य ६) ।
२४. आधुनिक कृषि विज्ञान—ले० रामेश्वर 'अशान्त', पृ० सं० ७५२, चित्र सं० १५०, मूल्य ६) ।
२५. शाक रत्नाकर—लेखिका सुशीला, पृ० सं० १४०, मूल्य २) ।
२६. पशुओं का घरेलू तथा डाक्टरी इलाज—ले० सोमरस, पृ० सं० ३६४, मूल्य ६) ।

प्रेस में—प्लम्बिंग गाइड, जनरल मैकेनिक गाइड, ट्रेन लाईटिंग, मोटर कार ओवरहालिंग, वात्स्यायन कामसूत्र, फर्नीचर डिजाइन बुक।

: पुस्तकालयों, लायब्रेरियों तथा पुस्तक विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन :

नया सूचीपत्र, जिसमें लगभग ४००० पुस्तकों के नाम हैं, केवल २५ नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर फ्री मँगायें। विशेष जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार करें।

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली—६

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ अप्रैल, १९५८ अंक ८

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुँचाने वाला मासिक

3072-14

गत वर्ष श्री जी० बी० जथार व स्वर्गीय श्री एस० जी० बेरी द्वारा लिखित 'भारतीय अर्थशास्त्र' का प्रकाशन हिन्दी-क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। दो जिल्दों की यह पुस्तक हिन्दी में इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि पहला बड़ा संस्करण कुछ मास में ही समाप्त हो गया। अब विद्यार्थियों की आवश्यकता को देखते हुए उस ग्रन्थ का एक संक्षिप्त संस्करण श्री जी० बी० जथार व उनके सुपुत्र श्री के० जी० जथार द्वारा प्रस्तुत किया गया है। 'भारतीय अर्थशास्त्र' के इस संस्करण में अद्यतन आँकड़े सम्मिलित किये गए हैं तथा भारत की प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजनाओं और आर्थिक हलचलों का पूरा चित्रण हुआ है। हिन्दी अनुवाद के प्रस्तुतकर्ता प्रयाग विश्व विद्यालय के श्री डी० एस० कुशवाहा हैं जिनकी सरल भाषा विद्यार्थियों को पहले ही प्रभावित कर चुकी है। पुस्तक के अन्त में अनुक्रमणिका व शब्दावली दे दी गई है जिनसे इसकी महत्ता कहीं अधिक बढ़ गई है। पृष्ठ-संख्या ५८६। सुन्दर आवरण। मूल्य केवल दस रुपये। प्रकाशक हैं राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना व मद्रास। अपनी प्रति के लिए स्थानीय-विक्रेता से आज ही माँग करें। अध्यापक विस्तृत जानकारी के लिए प्रकाशक को लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास :—

धूल के बादल······महुदत्त सिंह ········ २)
अंधकार का अंत···हरिशंकर मेहरोत्रा ····· १।।।)
सती वेश्या······पं० जगमोहन नाथ अवस्थी ··· ४।।।)
रक्त का बदला··· पं० जगमोहन नाथ अवस्थी ··· १।।)
घटना चक्र········वी० पी वाजपेयी ····· १।।।)
गहरा पानी·······वी० पी वाजपेयी ····· १।।।)
नया आदमी·······शिवचन्द्र शर्मा ······ ३।।।
खून खराबी······ओंकार शरद् ······ १।)

नारी-उपयोगी-पुस्तकें :—

पत्नी के पत्र····श्रीमती उपतिर्मयी ठाकुर ····· ३)
घर की लक्ष्मी···श्रीमती उपतिर्मयी ठाकुर ··· २।।।)
अच्छी बुनाई····श्रीमती हिरण्यमयी ······ ३)

कविता :—

प्रतिध्वनि····प्रसिद्ध कवियों की कविताएँ ···· ४।।)
अर्चना········राजाराम श्रीवास्तव ······ १।।)
अग्निमा·········गिरिधर गोपाल ······ २।।।)
आशुकवि मोहन···वी० पी० वाजपेयी ····· ५।।।)
अमर बापू······पं० जगमोहन नाथ अवस्थी ···· १।)
एक पग!·········"शील" ······· १।)

बिखरे मोती — भाग १ और २
प्रत्येक का मूल्य १) रुपया।
कलात्मक चित्र एवं रंगीन छपाई!
ये मोती विचारों के हैं जो रोज सुबह से शाम तक मानस की सीप में से निकल कर बिखर जाते हैं — उन्हीं को भावुक लेखक ने लिपिबद्ध कर लिया है!
भाषा और शैली की दृष्टि से पुस्तक अपनी तरह की अनूठी है! इन विचार मुक्ताओं में जीवन के विभिन्न पहलुओं और लेखक के भावनात्मक जगत के विभिन्न रूप सामने आते हैं। ऐसे रूप जो मात्र उसके नहीं, सब के हैं!
श्रीमती महादेवी वर्मा ने लेखक के प्रयास को सराहा है!

* विविध पुस्तकें :—

सेवाग्राम··(चित्रावली)··· १।)
कदम की फूली डाल······· ३)
ग्राम-विज्ञान (भाग १, २ और ३) १), १),।।।)
वनस्पति विज्ञान········ १।।)
उपयोगी हिन्दी शब्दकोष······२)

कहानी :—

नई नारी········रामवृक्ष बेनीपुरी ···· १।।)
कच्ची नींद·······ओंकार शरद ······ १।)
नीराजना·······नर्मदा प्रसाद खरे ····· १।।।)
लंका महराजिन···ओंकार शरद ····· ३)
प्लाट का मोर्चा····शमशेर बहादुर सिंह ···· १।।)
हिरन की आँखें······'पहाड़ी' ······· २।)

नाटक :—

संघमित्रा और सिंहलविजय··बेनीपुरी ···१।।)
पश्चाताप·····पं० जगमोहन नाथ अवस्थी ··· ।।।)
सुनी सुनाई·········शौकत थानवी ···· २।।।)

बच्चों की चटपटी पुस्तकें :—

सम्पादक जी·················· ।=)
काठ का घोड़ा················ ।=)
नट का खेल················ ।=)
ननिहाल की················ ।=)
बहादुर राजकुमार·············· ।=)
भयानक सपना·············· ।=)
मेरी चिट्ठी················ ।=)
मुन्नू की चिट्ठी·············· ।=)
हीरे का पेड़················ ।=)

"हमारी स्काउटिंग की पुस्तकें"

आकर्षक और

उपयोगी पुस्तकें

न्यू लिटरेचर : जीरो रोड : इलाहाबाद

सुन्दर टिकाऊ एवं उचित मूल्य पर ब्लाकों तथा आकर्षक छपाई के लिये हमारे २५ वर्षों के अनुभव का लाभ उठावें!

• दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स प्राइवेट लिमिटेड : जीरो रोड, इलाहाबाद •

सब प्रकार की हिन्दी-पुस्तकों के लिए लिखें—सूचीपत्र मुफ्त मँगावें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ८ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

भारत-सरकार हिन्दुस्तान की सब भाषाओं में सस्ते मूल्य की पुस्तकें प्रकाशित देखने की इच्छुक है। शायद यह कहना अधिक सत्य होगा कि हमारे प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू की यह इच्छा ही हमारी केन्द्रीय सरकार की इच्छा के रूप में कभी-कभी व्यक्त होती है। यदि पंडित नेहरू के हाथ में होता तो प्रकाशन-व्यवसाय की अनेक कठिनाइयाँ कभी की दूर हो जातीं और सुलभ पुस्तकों का प्रकाशन बड़ी मात्रा में होने लगता जो कि देश के सभी हितैषियों को अभीष्ट है। लेकिन उन्हें भी लोकतन्त्रात्मक साधनों के माध्यम से काम करना पड़ता है और यदि हमें केन्द्र में अथवा राज्यों में अदूरदर्शी एवं पुस्तकों के महत्त्व से अपरिचित अधिकारियों की पुस्तकों के प्रति उपेक्षापूर्ण नीति तथा व्यवहार को भुगतना पड़ता है तो उसके लिए भी हमीं लोग, जो एक-न-एक तरीके से पुस्तकों की दुनिया से सम्बन्धित हैं, जिम्मेवार हैं। लोकतन्त्र-प्रणाली में किसी परिवर्तन अथवा माँग-विशेष के लिए जो जनमत तैयार करना आवश्यक है, हम लोग जिसमें देश के शिक्षाविद, विचारक, अध्यापक, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता, पुस्तकाध्यक्ष एवं पाठक सम्मिलित हैं—उसे अभी तैयार नहीं कर पाये।

केवल पंडित नेहरू के हस्तक्षेप से ही पुस्तकों के डाक से भेजे जाने वाले पैकेटों की दर कुछ कम हुई। वह कमी कतई उपयोगी सिद्ध नहीं हुई; उसकी मात्रा इतनी छोटी थी। लेकिन सरकार ने पुस्तकों को विशेष महत्त्व की एक चीज तो माना। उन्हीं के कहने पर पुस्तकों के रेलों द्वारा भेजे जाने वाले पार्सलों के भाड़े में पहले भी कमी की गई और १ अप्रैल, ५८ से ये दरें प्रचलित दरों से आधी कर दी गई हैं। नेशनल डिवेलपमेंट कौंसिल ने उन्हीं के इशारे पर गतवर्ष जून में यह प्रस्ताव सब राज्यों के सामने रखा कि पुस्तकों की बिक्री में किसी प्रकार का टैक्स न लगाया जाय और इस प्रकार उनके अधिकाधिक प्रचार में सरकारें सहायक हों। देश की इस सर्वोच्च नीति-निर्धारिणी सभा का सुझाव कुछ सरकारों को मान्य हुआ, अन्य को नहीं। मद्रास-राज्य में पुस्तकों से 'बिक्री-कर' हटा दिया गया; बंगाल ने इसे हटाने से इन्कार कर दिया; हैदराबाद ने गत मास ही घोषणा की है कि 'बिक्री-कर' हटाने का प्रश्न विचाराधीन है।

पंडित नेहरू ने गत मास ही बजट पर बहस के अवसर पर लोकसभा में कहा कि केन्द्रीय सरकार पुस्तकों के लिए विशेष रूप से न्यूज़प्रिंट का आयात करने के प्रश्न पर विचार कर रही है जिस पर किसी प्रकार की कस्टम-ड्यूटी नहीं ली जाय ताकि ऐसे न्यूज़प्रिंट पर छपी पुस्तकों का दाम कम रखा जा सके। पंडित नेहरू का ही मुख्य समर्थन पृष्ठभूमि में साहित्य अकादेमी तथा नेशनल बुक ट्रस्ट जैसी सरकारी प्रकाशन-संस्थाओं के पीछे है।

कहा जाता है कि पंडित नेहरू टेण्डर माँगकर पुस्तकें खरीदने की सरकारी प्रणाली के सक्रिय विरोधी हैं। इस प्रकार उनकी दृष्टि तथा सहायता इस व्यवसाय की दिक्कतों के सब पहलुओं पर जाती है। दुर्भाग्य यही है कि न तो उन जैसे पुस्तक-प्रेमी केन्द्र व राज्यों की सरकारों में ही देखने को मिलते हैं और न वही लोकतन्त्रात्मक धीमी रफ्तार को तेजी में बदलने में अधिक सफल हो पा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

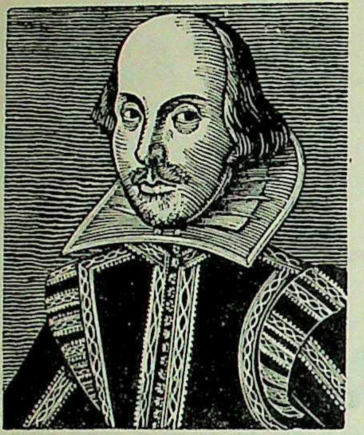

विश्व के महान् नाटककार

शेक्सपियर

की अमर कृतियों के सरस हिन्दी अनुवाद

अनुवादक : डॉ० रांगेय राघव

: कुछ सम्मतियां :

दैनिक हिन्दुस्तान

"शेक्सपियर साहित्य का मूल्यांकन करते हुए इंग्लैंड के किसी महापुरुष ने कहा था कि यदि मुझे ब्रिटिश-साम्राज्य और शेक्सपियर साहित्य में से किसी एक को चुनने को कहा जाय तो मैं शेक्सपियर साहित्य चुनूंगा। स्वतन्त्र भारत में समस्त शेक्सपियर साहित्य का अनुवाद डा० रांगेय राघव कर रहे हैं जिसके लिए वे तथा प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।"

विशाल भारत

"हिन्दी के कोष-वर्द्धन के लिए उसमें अन्य भाषाओं की सुन्दर रचनाओं का अनूदित होना अपेक्षणीय है। इस दृष्टि से ये अनुवाद एक अभाव की पूर्ति-सी करते प्रतीत होते हैं।"

साहित्य संदेश

"ये अनुवाद बहुत ही सुन्दर हुए हैं। इनमें मूल पुस्तकों का भाव-सौष्ठव बिना कम किए भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से अनुवाद सुन्दर हुआ है।"

वेनिस का सौदागर
रोमियो जूलियट
जूलियस सीज़र
जैसा तुम चाहो
तिल का ताड़
बारहवीं रात
सम्राट् लियर
एक सपना
हैमलेट
मैकबेथ
ऑथेलो
तूफ़ान

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ द्वारा प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

३० जून, १९५७ को समाप्त होने वाले आर्थिक वर्ष में ४८,८११ पुस्तकों और पैंफलेट आदि का अमरीका के कापीराइट के कानून के अनुसार पंजीबन्धन हुआ। हिन्दुस्तान में कापीराइट का नया कानून २१ जनवरी, ५८ से लागू हो चुका है और प्रेस में जाने तक कापीराइट का एक भी रजिस्ट्रेशन अभी तक नहीं हुआ।

* * *

अमरीका में कुल मिलाकर १९५७ में १३१४२ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। सबसे अधिक उपन्यास छपे: २१११, उसके बाद बाल-साहित्य १५५७, और उसके बाद धार्मिक पुस्तकें, १००३। ३१ प्रकाशकों ने १००-१०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कीं, ३४ प्रकाशकों ने ५० से १०० तक।

* * *

जुलाई से दिसम्बर १९५७ में इंग्लैण्ड में जितनी पुस्तकें छपीं, उनका औसत मूल्य १४ रुपये ३१ नये पैसे था। इसी अवधि में प्रकाशित उपन्यासों का औसत मूल्य ९ रुपये ८७ नये पैसे था।

* * *

१९५८ की पहली जनवरी से न्यूज़ीलैंड में विदेशों से पुस्तकों का आयात करने के लिए सरकार से लाइसेंस प्राप्त करना आवश्यक कर दिया गया है।

* * *

बुक सब्क्रिप्शन्स लिमिटेड नाम की एक नई संस्था इंग्लैण्ड में बनी है जो जनता द्वारा खरीदी गई पुस्तकों में पूंजी लगाया करेगी। इससे मुख्य लाभ उन पुस्तक-विक्रेताओं को होगा जिनके यहाँ से कुछ लोग नियमित रूप से पुस्तकें खरीदा करते है और इस प्रकार पुस्तक-विक्रेताओं का काफी रुपया ऐसे खातों में उधार लगा रहता है। पुस्तकें खरीदते वक्त ग्राहकों को इस नई संस्था के एक फार्म पर हस्ताक्षर करने होंगे; पुस्तक-विक्रेता को अपने बिल का रुपया १० प्रतिशत कमी से इस संस्था से तुरन्त प्राप्त हो जायगा और संस्था ग्राहक से स्वयं रुपया वसूल करेगी।

* * *

'५७ के अक्तूबर मास में इंग्लैंड की प्रकाशन-संस्था "हचिन्सन" ने एक नई प्रकाशक संस्था के निर्माण की घोषणा की थी "न्यू ऑथर्स लिमिटेड" जिसका उद्देश्य केवल नये लेखकों की पहली कृतियाँ प्रकाशित करना है ताकि "प्रकाशन-संसार की विषम आर्थिक परिस्थितियों में नये लेखक की निराशाओं का" एक हल खोजा जा सके। इस घोषणा के बाद कुछ ही महीनों में ६०० से ऊपर पाण्डुलिपियाँ इनके पास पहुँच गईं। प्रत्येक पाण्डुलिपि को बहुत ग़ौर से जाँचा गया और अब पहले ६ प्रकाशनों को चुन लिया गया है। पहली पुस्तक एक उपन्यास और दूसरी एक आत्मकथा होगी जिनका प्रकाशन १ सितम्बर, ५८ को किया जायगा।

* * *

जनसंख्या के अनुपात में जितने पुस्तकालय स्वीडन में हैं, यदि उसी अनुपात को अमरीका में चरितार्थ करना हो तो वहाँ के पुस्तकालयों की संख्या ७५०० से बढ़ाकर ७७,००० करनी पड़ेगी। हॉलेंड में जनसंख्या के अनुपात में जितनी दुकानें पुस्तकें बेचने वालों की हैं, उतनी करने के लिए अमरीका में ऐसी दुकानों की संख्या १५०० से बढ़ाकर २३,००० करनी होगी।

* * *

१६ मार्च से २२ मार्च, ५८ तक अमरीका में पुस्तकें पढ़ने की रुचि बढ़ाने के लिए 'नेशनल लाइब्रेरी वीक' मनाया गया। अमरीका की सीनेट तथा हाउस ऑफ़ रिप्रेज़ेण्टेटिव्स ने अगस्त '५७ में एक प्रस्ताव द्वारा प्रेज़िडेंण्ट आइज़नहावर से प्रार्थना की थी एक घोषणा द्वारा वह अमरीका की जनता को इस समारोह में सम्मिलित होने का आमन्त्रण दें। इस 'सप्ताह' का मुख्य नारा था: "जागिये और पढ़िये।" अमरीकन लाइब्रेरियन एसोसिएशन तथा अमरीका की (वेक अप एण्ड रीड) नेशनल बुक कमेटी ने इसका मुख्य संचालन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की पुस्तकों का सम्पादन

एम० बी० ग्लिक

हाल ही में भारतीय प्रकाशक, विशेषकर हिन्दी प्रकाशक, बाल-साहित्य के प्रकाशन की ओर अग्रसर हुए हैं। वाइकिंग प्रेस, न्यूयार्क, के प्रकाशन-अध्यक्ष द्वारा लिखा हुआ यह लेख उनके लिए सहायक सिद्ध होगा।

इस बात का प्रायः अनुभव किया जाता है कि प्रकाशन-व्यवसाय पर बड़ी मात्रा में सामाजिक तथा सांस्कृतिक उत्तरदायित्व है; और इसमें सन्देह नहीं कि बच्चों की पुस्तकों के प्रकाशन में यह उत्तरदायित्व कई गुना बढ़ जाता है। जो पुस्तकें हम अपने और अपने पड़ोसियों के बच्चों के हाथों में देते हैं, उनमें यदि नैतिक प्रभाव डालने वाले तथा चरित्रनिर्मायक तत्त्व नहीं हैं तो हम भावी पीढ़ी को भ्रष्ट करने के लिए दोषी हैं।

नैतिक मूल्यों का जितना ही सूक्ष्म समावेश होगा, उनका प्रभाव भी उतना ही गहरा होगा। जो पुस्तकें हम प्रकाशित करते हैं उनमें इन मूल्यों का समावेश करने में हमें चूकना नहीं चाहिए लेकिन कोरी नैतिकता बिलकुल बेकार-सी चीज होगी। साहसपूर्ण वास्तविक जीवन तथा महती कल्पनाओं से युक्त वातावरण में दृष्टान्तों तथा उदाहरणों द्वारा उच्च नैतिक अधिमानों की ओर संकेत करने से ही वांछित प्रतिफल प्राप्त किया जा सकता है और प्रकाशकों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक उत्तरदायित्व की पूर्ति हो सकती है।

बच्चों का सम्पादक

ठीक-ठीक शाब्दिक अर्थ लिया जाय तो बच्चों की पुस्तकों का सम्पादक पूर्णरूपेण प्रकाशक है। वह भी विस्तृत बाजार, अच्छी खपत वाली पुस्तक या पाण्डुलिपि, से सम्बन्धित है और उसी तरह उसका सम्बन्ध रूपसज्जा सम्बन्धी निर्देशन, उत्पादन की विधियों, छपाई की अच्छाई और खराबी, लागत और मूल्य से है।

बच्चों की पुस्तकों के प्रकाशन का अपना एक अलग क्षेत्र होने के कारण उसका कार्य एक अलग विभाग द्वारा सम्पादित होता है और इस सूक्ष्म किस्म के प्रकाशन के निर्देशन की पूरी जिम्मेदारी उसके सम्पादक पर होती है। वयस्क पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तकों की अपेक्षा बच्चों की पुस्तकों के सम्पादक को उसके समक्ष प्रस्तुत की गई प्रत्येक पाण्डुलिपि की खपत के क्षेत्र, उसके सम्पादन, उत्पादन, प्रचार और विक्रय-योजनाओं के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से निश्चय कर लेना चाहिए।

बच्चों की पुस्तकों के सम्पादक को इन विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों की सलाह तथा सहयोग प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ती है। लेकिन आकार, चित्रलेखन, रंगों की संख्या, संस्करण का-परिमाण, मूल्य आदि के संबन्ध में अन्तिम निर्णय लेने की मुख्य जिम्मेदारी सम्पादक पर ही होती है। और जब बिक्री के लिए पुस्तक तैयार हो जाती है तो यह जानना सम्पादक की जिम्मेदारी है कि हमारी पुस्तक की प्रतियोगिता किससे है, और अपनी पुस्तक को इस प्रतियोगिता में सफल बनाने के लिए उसे कैसे प्रस्तुत किया जाय। यह देखना भी उसका कार्य है कि उस पुस्तक के विषय में कलाकार, सम्पादक तथा दूसरे लोगों ने किन विशिष्ट गुणों का समावेश किया है जो बिक्री में सहायक हो सकते हैं।

किसी सम्पादक के लिए यह असाधारण बात नहीं है कि वह किसी पाण्डुलिपि को स्वीकार करने के पूर्व अपने उत्पादन-विभाग को पुस्तक का आकार-प्रकार बताकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी लागत आदि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर ले। कारण यह है कि विशेष रूप से छोटे बच्चों की कहानियों की पाण्डुलिपि को तभी प्रकाशन-योग्य कहा जा सकता है जब उसे एक निश्चित मूल्य पर आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जा सके। यदि लागत इतनी अधिक पड़ती हो कि मूल्य काफी ज्यादा रखना पड़े तो पाण्डुलिपि को अस्वीकार किया जा सकता है, कहानी के काफी अच्छे होने पर भी अधिक लागत के कारण बाजार में प्रतियोगिता नहीं की जा सकती।

सम्पादकीय निर्णय

बच्चों की पुस्तकों के सम्पादक के निर्णय इस पर भी आधारित होते हैं कि भिन्न-भिन्न आयु के बच्चे क्या सुनना अथवा पढ़ना पसन्द करेंगे और उनकी रुचियों में कहाँ तक समानता या विभिन्नता हो सकती है, कितनी काल्पनिक वास्तविक तथा प्रधान कहानियाँ भिन्न-भिन्न आयु के बच्चों की पुस्तकों में दी या नहीं दी जानी चाहिएँ, किस मात्रा का पठन कौशल उपयुक्त और कितने संश्लिष्ट विचार का समावेश होना चाहिए। सम्पादक पाण्डुलिपि के चरित्र-निर्मायक तत्त्वों पर ध्यान देता है और कोरी नैतिकता पर कड़ी दृष्टि रखता है। वह जानता है कि किस आयु के बच्चों के लिए कितनी बड़ी पाण्डुलिपि होनी चाहिए। वह ऐसी पाण्डुलिपि से बचता है जो बच्चों में हीन भाव उत्पन्न करे और इस सम्बन्ध में ऐसी पाण्डुलिपियों का सम्पादन बड़ा कठिन होता है जिसमें पशु-पक्षियों को मानवीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया रहता है।

वह पुस्तकालयाध्यक्षों, अध्यापकों और सबसे अधिक स्वयं बच्चों से निकट सम्पर्क बनाए रखता है और प्रायः विभिन्न आयु के बच्चों पर उन कहानियों से प्रयोग करता रहता है जिन्हें प्रकाशित करने की वह इच्छा रखता है।

बच्चों की पुस्तकों का सम्पादक खपत के क्षेत्र तथा प्रतियोगिता-सम्बन्धी सूक्ष्म निरीक्षण करने के लिए पुस्तकभण्डारों तथा पुस्तकालयों में प्रायः जाता रहता है। वह रूप के विभिन्न क्षेत्रों—जन-पुस्तकालयों, स्कूल-पुस्तकालयों, पुस्तक भण्डारों, तथा विशेष खरीद की जगहों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी रखता है कि कहाँ कितनी पुस्तकें, किस मूल्य की, किस विषय की या किस विशेषता वाली—जैसे पुस्तकालयों के लिए कैसी जिल्द वाली—किताबें खप सकती हैं।

उत्पादन की समस्याएँ

सम्पादन तथा खपत-सम्बन्धी समस्याओं के बीच ही उत्पादन की समस्या भी स्थित है। इससे भी बच्चों की पुस्तकों के सम्पादक का गहरा सम्बन्ध होता है और विभिन्न विवरणों से वह घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध होता है। भिन्न-भिन्न पुस्तकों के लिए सबसे उपयुक्त कलाकार का चुनाव, कलाकार के साथ पुस्तक में दिये जाने वाले चित्रों की शैली के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करना, कौनसा चित्र कहाँ दिया जाना चाहिए और उसके नीचे क्या लिखा होना चाहिए, इस बात का निर्णय करना, कितने रंग होने चाहिएँ, मूल चित्रों के आकार तथा अनुक्षेपण का अनुपात निर्धारित करना, मुखचित्र या आवरण चित्र कैसा दिया जाय इस बात का निर्णय करना आदि ऐसी अनेक बातें हैं जिनमें सम्पादक को कलाकार, कलानिर्देशक तथा

आरोग्य-मन्दिर प्रकाशन

१.	रोगों की नयी चिकित्सा : ले० लूई कूने	२-०-०
२.	कश्मीर में पन्द्रह दिन : ले० विट्ठलदास मोदी	१-०-०
३.	बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग : स० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
४.	सर्दी जुकाम खाँसी : डॉ० रैसमस अल्साकर, एम० डी०	०-१२-०
५.	उपवास से लाभ : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
६.	जीने की कला : ले० विट्ठलदास मोदी	१-४-०
७.	प्राकृतिक जीवन की ओर : ले० ऐडोल्फ जस्ट	२-८-०
८.	उठो! : ले० स्वामी कृष्णानन्द	१-०-०
९.	रोगों की सरल चिकित्सा : ले० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
१०.	स्वास्थ्य कैसे पाया? : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
११.	आदर्श आहार : ले० डॉ० ऐस० सी० दास	१-०-०
१२.	योगासन : ले० आत्मानन्द	२-०-०

मिलने का पता :

व्यवस्थापक : "आरोग्य"

पो० आरोग्य-मन्दिर, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पादन-व्यवस्थापक के घनिष्ठतम सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। पुस्तक का आकार-प्रकार टाइप के आकार तथा संयोजन-व्यवस्था मुद्रण विधि, कागज की किस्म और उसका हल्का या भारीपन, जिल्द सम्बन्धी विशेषताओं आदि क्षेत्र में सम्पादक तथा उत्पादन-व्यवस्थापक के परस्पर सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

कभी-कभी आवश्यकता इस बात की भी पड़ती है कि कलाकार पहले केवल एक ही चित्र पूरा कर ले फिर दूसरे चित्र बनाने के पहले मुद्रक उसका ब्लाक बनवाकर प्रूफ देख ले ताकि मालूम हो जाय कि छपकर वह कैसा लगेगा। इस प्रकार कलाकार को भी पता लग जाता है कि क्या कमी रह गई है जिसे वह अपनी शैली में सुधार करके दूसरे चित्रों में दूर कर देता है। ऐसा कर लेने से ब्लाक बनाने के परिष्कृत ढंग के बारे में ब्लाक बनाने वाले से विचार-विमर्श करने का और रंगों तथा कागज के चुनाव पर भी पुनर्विचार का मौका मिल जाता है।

रंगीन ब्लाक

कभी-कभी, विशेष रूप से तीन और चार रंगों के काम में प्रेस में देने के पहले सभी चित्रों के प्रूफ़ उठवा लेने का प्रश्न उठता है। चूंकि इसके लिए काफ़ी खर्च की आवश्यकता पड़ती है अतः सम्पादक को चाहिए कि वह उत्पादन-व्यवस्थापक और कला-निर्देशक से सलाह करके यह तय कर ले कि सावधानी के लिए यह अतिरिक्त व्यय किया जाय या पुस्तक को कम आकर्षक ढंग से छापने का खतरा लिया जाय। इस प्रकार का निर्णय लेना कठिन होता है, कागज़ के भारी मूल्य को देखते हुए पूरे संस्करण को भ्रष्ट करने की अपेक्षा पहले ही रंगीन ब्लाकों के प्रूफ़ देख लेना अच्छा होगा। यह देखना उत्पादन-व्यवस्थापक का काम है कि मुद्रक और ब्लाक बनाने वाला अतिरिक्त मूल्य न ले सके और छपाई या ब्लाक बनाने के काम में यदि कोई स्पष्ट खराबी हो तो वे उसे दुबारा ठीक कर दें।

हर बुद्धिमान सम्पादक पाण्डुलिपि देखकर ही यह कल्पना कर लेता है कि इससे कैसी पुस्तक बन सकेगी और उसी के अनुसार लेखक से लेकर विक्रेता तक सभी योगदाताओं को निर्देश प्रदान करता है। कभी-कभी अच्छे कलाकार किसी-न-किसी कारण दिये गए काम में अपनी पूरी प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में यह सम्पादक और कला-निर्देशक का कर्तव्य है कि वे कलाकार को इस बात पर सहमत कर लें कि वह उस काम को दुबारा करके ऐसा बनाए कि उस पर गर्व कर सके। यद्यपि यह काफ़ी कठिन काम है लेकिन ऐसा किया जाता है और अगर कलाकार की व्यक्तिगत भावनाओं तथा रचनात्मक योग्यताओं का उचित सम्मान किया जाय तो वह दूने जोश से उस काम को करेगा और इस सृजनात्मक आलोचना के लिए कृतज्ञ होगा।

पूर्व योजना

फिर यह देखना भी सम्पादक का ही काम है कि कलाकार ने पुस्तक के नमूने की प्रति के प्रत्येक पृष्ठ पर ठीक से काम कर लिया है। इसके लिए पृष्ठों पर गेली-प्रूफ (या टाइप की हुई पाण्डुलिपि जिसमें इस बात की सावधानी बरती गई हो कि छपने पर हर पंक्ति उतनी ही बड़ी हो) चिपका लेने चाहिएँ और कलाकार से सलाह करके यह तय कर लेना चाहिए कि कहाँ और किस आकार का चित्र लगेगा। बच्चों की पुस्तकों में दिये गए चित्र और उनसे सम्बन्धित विवरण एक ही पृष्ठ पर या आमने-सामने के पृष्ठ पर पड़ें न कि दूसरे पृष्ठ पर। और ऐसा केवल पहले से ही योजना बनाकर सावधानी बरतने पर ही सम्भव हो सकता है।

ऐसा प्रायः होता है कि बच्चों की पुस्तकों की लागत का पहला अनुमान बहुत ऊँचा रहता है। ऐसा इसलिए होता है कि सम्पादक तथा उसके साथी पुस्तक के विक्रय-मूल्य से उसकी कीमत बहुत अधिक समझते हैं। इसके बाद पुस्तक के गुणों में बिना अधिक कमी किये जितना भी सम्भव हो सके लागत में कमी करने के विकल्प खोजने का प्रयास किया जाता है। यह एक ऐसी समस्या है जिसके समाधान में उत्पादन-व्यवस्थापक तथा कलानिर्देशक की पटुता का विशेष हाथ होता है। किन्तु निर्णय का अन्तिम उत्तरदायित्व सम्पादक पर ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के दो महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

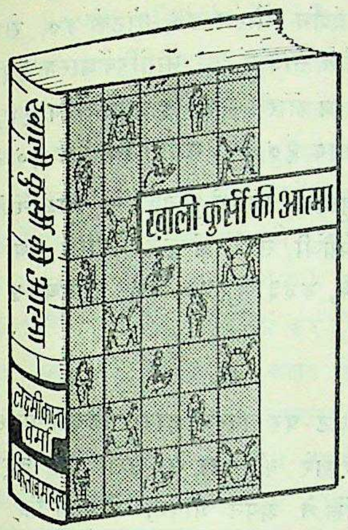

श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा का बहुप्रतीक्षित उपन्यास जो प्रकाशन के पूर्व ही हिन्दी-जगत् में चर्चा का विषय बन चुका था। हिन्दी का यह पहला प्रतीकात्मक उपन्यास है जो वस्तु तथा शिल्प दोनों की दृष्टि से एक अनूठी रचना है। लेखक ने एक बिलकुल अछूते ढंग से इस बृहत् उपन्यास में हमारी आज की ग़लत सामाजिक मान्यताओं, रूढ़ियों तथा सड़ी-गली परम्पराओं को निवारण करके एक स्वस्थ जीवन-दर्शन का प्रतिपादन किया है। बढ़िया कागज, सुन्दर छपाई, कपड़े की मज़बूत ज़िल्द, आकर्षक मुखपृष्ठ !

मूल्य ८.५० रुपये

●

बनारस विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध, जिसमें डॉ० बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे ने हिन्दी-साहित्य के विविध गद्य-रूपों—उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबन्ध, आलोचना आदि—का वैज्ञानिक ढंग से विकास-क्रम तो दिखाया ही है, साथ ही हिन्दी के लगभग सभी प्रतिष्ठित गद्य-लेखकों के कृतित्व का निष्पक्ष मूल्यांकन एवं गहन विश्लेषण भी प्रस्तुत किया है।

मूल्य ८.५० रुपये

●

किताब महल

इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

केन्द्रीय सरकार की एक घोषणा के अनुसार पहली अप्रैल से मालगाड़ी तथा सवारी गाड़ी से भेजे जाने वाले पुस्तकों के पार्सलों के भाड़ों की दर वर्तमान दरों से आधी कर दी गई है।

* * *

पंजाब यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. ए. सी. जोशी ने १६ मार्च, ५८ को 'आल इंडिया बुक फेस्टिवल' का उद्‌घाटन किया। पुस्तक प्रदर्शनी के लिए हिन्दी और अंग्रेजी की ५०००से अधिक उत्कृष्ट पुस्तकें एवं पाण्डुलिपियाँ एकत्रित की गई थीं। प्रदर्शनी १६ मार्च से २२ मार्च ५८ तक खुली रही।

* * *

२० मार्च, ५८ की एक घोषणा के अनुसार हिमाचल प्रदेश में १६५८-५६ वर्ष के लिए मिडिल कक्षाओं की चालू पाठ्य-पुस्तकों में कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा। इन स्कूलों का प्रबन्ध और संचालन हिमालय प्रदेश की टेरिटोरियल कौंसिल के हाथ में है।

* * *

केरल सरकार के शिक्षा विभाग ने आगामी वर्ष के लिए शिक्षा पर कुल ११ करोड़ २६ लाख रुपये खर्च करने का बजट बनाया है। केन्द्रीय सरकार की अनुमति से बेसिक शिक्षा की पद्धति में कुछ परिवर्तन किये जायँगे, तीन नये इंजीनियरिंग कालेज खोले जा रहे हैं और राज्य के हर जिले में एक पॉलिटेकनीक संस्था का आयोजन किया जा रहा है।

* * *

१६५७ में उत्तर प्रदेश में कुल २५७८ पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। गत वर्ष यह संख्या २१६७ थी। प्रकाशित पुस्तकों में से ५६२ पुस्तकें भाषा और साहित्य से सम्बन्धित विषयों पर थीं, तथा २६६ धार्मिक, २७८ कविता, २५० उपन्यास, कृषिसम्बन्धी ६४, शिक्षा की ५८, कानून की ५७, व्यापार सम्बन्धी ५५, भूगोल विषयक ५४, अर्थशास्त्र ५१, दर्शन शास्त्र ४०, नाटक ४०, राजनीति शास्त्र ३८, मेडिकल साइंस ३७, नागरिकशास्त्र ३२, कला-विषयक ३०, समाज शास्त्र २१, इंजीनियरिंग १६, यात्रा सम्बन्धी ११, उद्योग १० तथा संगीत विषयक १०।

अधिकतर पुस्तकें पाठ्य-पुस्तकों से सम्बन्धित थीं। इनमें से हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, नेपाली तथा अरबी में क्रमशः १७५२, ४४३, १५०, ८६, ६ तथा ५ पुस्तकें प्रकाशित हुई।

* * *

लोक सभा में बजट पर सदस्यों द्वारा विचार प्रकट किये जाने के बाद सरकार की ओर से उत्तर देते हुए प्रधान मन्त्री पंडित नेहरू ने अपने भाषण में कहा कि देश में सस्ते मूल्य की पुस्तकों के प्रकाशन से सम्बन्धित कठिनाइयों से वह परिचित हैं। पुस्तकें न्यूज़ प्रिंट पर प्रकाशित करके ही सस्ती हो सकती हैं, और जब कि विदेशों से पुस्तकों के आयात पर कोई कर नहीं वसूला जाता, न्यूज़ प्रिंट के आयात पर ड्यूटी ली जाती है। हिन्दुस्तान के प्रकाशन-व्यवसाय को मंहगे कागज का उपयोग करना पड़ता है। सुझाव रखा गया है कि न्यूज प्रिंट से ड्यूटी हटा दी जाय। इसे हटाने के रास्ते में कठिनाइयाँ हैं लेकिन सरकार इस प्रश्न पर विचार कर रही है। हो सकता है कि पुस्तकों के प्रकाशन के लिए सरकार कुछ मात्रा में विदेशों से विशेष रूप से न्यूज़ प्रिंट के आयात की इजाजत दे दे, क्योंकि सरकार की इच्छा है कि देश में सस्ते दामों की पुस्तकें सुलभ हों।

* * *

भारत सरकार ने अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के लिए हिन्दी व्याकरण की एक पुस्तक प्रकाशित की है। इसका प्रणयन विशेषज्ञों की एक समिति की देखरेख में हुआ।

* * *

१६६० में बिहार सेकण्डरी स्कूल की परीक्षाओं के लिए वही पाठ्य-पुस्तकें चालू रहेंगी जो १६५६ की परीक्षाओं के लिए स्वीकृत हैं। स्कूलों की ४थी से ६वीं कक्षा तक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य-पुस्तकों में भी परिवर्तन इस वर्ष के लिए नहीं किया गया है।

* * *

पंजाब यूनिवर्सिटी के चांसलर डॉ. ए. सी. जोशी ने १८ मार्च, ५८ को लुधियाना के मालवा ट्रेनिंग कालेज में सीमान्त भाषण देते हुए कहा कि पंजाब में शिक्षा के आयोजन पर मूलतः परिवर्तन करने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है ताकि मैट्रिक्युलेशन परीक्षा पास करने के बाद प्रत्येक विद्यार्थी किसी-न-किसी धन्धे को अपना सके। प्रस्तावित परिवर्तन आठ वर्ष की अवधि में पूरे हो सकेंगे। समाज-शास्त्र (सोशल स्टडीज़) जनरल साइंस तथा दस्तकारी की शिक्षा अनिवार्य कर दी जायगी। इस वर्ष से दस्तकारी का विषय ९वीं कक्षा के लिए अनिवार्य कर दिया गया है, अगले वर्ष से जनरल साइंस का विषय भी अनिवार्य कर दिया जायगा। अगले दो वर्षों के लिए सोशल स्टडीज़ का विषय गौण होगा लेकिन उसके बाद से अनिवार्य।

विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों की कमी पेंशन प्राप्त अध्यापकों तथा डॉक्टरों की सेवाएँ लेकर पूरी की जायगी।

* * *

भारत सरकार ने बालोपयोगी पुस्तकों की पुरस्कार प्रतियोगिता में इस वर्ष कुल २२ पुस्तकों अथवा पाण्डुलिपियों को पुरस्कृत किया है। इनमें से ५ पुस्तकें हिन्दी की हैं : (१) **चित्रों में १-२-३-४-५**, लेखक व्रजराय चौधरी, (२) **हमारे पक्षी**, लेखक रुद्रदत्त, (३) **दूध बताशा**, लेखक सोहनलाल द्विवेदी, (४) **प्रकाश की बातें**, लेखक ब्रह्मानन्द गुप्ता तथा नरेश बेदी, (५) **नीलम और मसहरी की देवी**, लेखिका श्रीमती शारदा मिश्रा।

* * *

बालोपयोगी पुस्तकों की ४थी पुरस्कार-प्रतियोगिता के लिए हिन्दी, सिन्धी तथा उर्दू की पुस्तकें अथवा पाण्डु-

आज का भारतीय साहित्य

साहित्य अकादमी द्वारा नियोजित इस ग्रंथ में भारत की सोलह भाषाओं के साहित्यों का संक्षिप्त परन्तु सारगर्भित परिचय उन्हीं भाषाओं के मान्य विद्वानों ने प्रस्तुत किया है। इसी ग्रंथ के अँग्रेजी संस्करण की समाचार पत्रों और साहित्यिक जगत् में बहुत चर्चा हुई थी।

हिन्दी
सच्चिदानन्द वात्स्यायन
संस्कृत
वे० राघवन
उर्दू
ख्वाजा अहमद फारूकी
असमिया
विरिंचिकुमार बरुआ
उड़िया
मायाधर मानसिंह
कन्नड़
वि० कृ० गोकाक
कश्मीरी
पृथ्वीनाथ 'पुष्प'
गुजराती
मनसुखलाल झवेरी

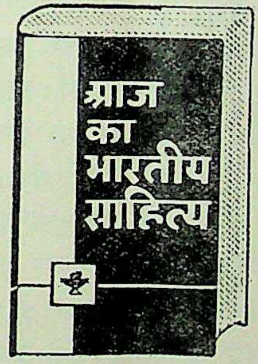

तमिल
नि० पि० मीनाक्षि सुंदरम् पिल्लै
तेलगु
के० रामकोटीश्वर राव
पंजाबी
खुशवंतसिंह
बंगला
काज़ी अब्दुलवदूद
मराठी
मंगेश विट्ठल राजाध्यक्ष
मलयालम
सी० कुंजन राजा
सिंधी
ला० ह० अजवाणी
अँग्रेजी
के० आर० श्रीनिवास अय्यंगार

भूमिका
डॉ० राधाकृष्णन्
मूल्य : सात रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़ कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अभिनव प्रकाशन

•उपन्यास

यथार्थ से आगे	श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५·५०
भारत सेवक	,, यज्ञदत्त शर्मा	५·५०
नगर-परिमोहन	,, गुरुदत्त	५·५०
मायाजाल	,,	५·००
उमड़ती घटाएँ	,,	६·००
लुढ़कते पत्थर	,,	५·५०
सहस्रबाहु	,,	६·००
राग और त्याग	श्री कमल शुक्ल	५·००
मौलश्री	,,	६.००
काले नगर में	,,	२.५०
जीत या हार	श्री बलराज मधोक	४.००

•आलोचना

भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका	डॉ० नगेन्द्र	१०·००
सूर मीमांसा	डॉ० व्रजेश्वर वर्मा	४.२५
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य	डॉ० प्रतिपालसिंह	८·५०
भाषा का इतिहास	पं० भगवद्दत्त	५·००
सिद्धान्तालोचन	प्रो० सन्त तथा प्रो० बलदेव कृष्ण	४·५०
हिन्दी साहित्य की कहानी	श्री प्रभाकर माचवे	२.२५
महादेवी की काव्य-साधना	,, सत्यपाल चुघ	२.५०
प्रेमचन्द और उनका गोदान	,, बलदेवकृष्ण	५·२५
काव्य सम्प्रदाय और वाद	,, अशोककुमार सिंह	४·५०

•नाटक

भारतेन्दु	सेठ गोविन्ददास	२·००
रहीम	,,	२·००
समाधि	श्री विष्णु प्रभाकर	२·५०

•शिक्षा

बुनियादी शिक्षण पद्धति	ला० धर्मप्रकाश	३·००

ओरिएण्टल बुकडिपो,

नई सड़क, दिल्ली

लिपियाँ असिस्टेंट एजुकेशनल एडवाइजर (बी. एण्ड. एस.) मिनिस्ट्री आफ एजुकेशन एण्ड साइंटिफिक रिसर्च, एम. ब्लाक, नई दिल्ली के मास ३१ अगस्त, ५८ तक भेजनी चाहिए। अधिक जानकारी भी इसी कार्यालय से प्राप्त हो सकती है।

* * *

१० मार्च ५८ को इलाहाबाद में यू. पी. बोर्ड आफ हाई स्कूल एण्ड इंटरमीडियेट एजुकेशन की बैठक में १९६० की परीक्षाओं के लिए प्रकाशकों द्वारा पुस्तकें सबमिट करने के प्रश्न पर विचार हुआ तथा विभिन्न पाठ्य-समितियों के सुझावों पर भी विचार हुआ। बैठक में इन दोनों प्रश्नों पर अभी निर्णय नहीं लिया गया।

* * *

आंध्र सरकार के रेवेन्यू मिनिस्टर श्री कला वेंकटराव ने राज्य की विधान-सभा में ११ मार्च, ५८ को एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि पुस्तकों की बिक्री से बिक्री-कर हटाने के प्रश्न पर राज्य सरकार विचार कर रही है। १९५७ के जून मास में नेशनल डिवेलपमेंट कौंसिल ने सब राज्यों के आगे यह सुझाव रखा था कि पुस्तकों की बिक्री पर किसी प्रकार का कर न होना चाहिए।

* * *

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने हिन्दी में रसायन शास्त्र, सामान्य अर्थशास्त्र, कृषि तथा शिक्षा-सम्बन्धी साधारण पुस्तकों के लिए लिखी गई संक्षिप्त व प्रामाणिक पुस्तकों पर १५००), १०००) तथा ५००) के तीन पुरस्कार देने की घोषणा की है। भारत सरकार ने हिन्दी में जो शब्दावलियाँ तैयार की हैं, उनके उपयोग को प्रोत्साहन देने के लिए ये पुरस्कार दिये जायंगे। पुस्तकों की भाषा सरल और उनमें विषय को समझने के लिए रोजमर्रा के उपयुक्त उदाहरण होने चाहिएँ। पृष्ठ-संख्या २०० से अधिक न हो तथा उनमें काफ़ी चित्र हों। पुस्तकें अथवा पाण्डुलिपियों की ६-६ प्रतियाँ ९ सितम्बर, १९५८ तक अंडर सेक्रेटरी टु दि गवर्नमेंट आफ इंडिया, मिनिस्ट्री आफ एजुकेशन एण्ड साइंटिफिक रिसर्च, हिन्दी डिवीजन, नई दिल्ली के पास भेज दी जानी चाहिएँ। अधिक जानकारी उपर्युक्त अधिकारी से मिल सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पेन का महान् प्रकाशक

इंग्लैण्ड के 'बुकसेलर' मासिक में
प्रकाशित एक लेख के आधार पर
श्री सुरेन्द्रपालसिंह द्वारा प्रस्तुत।

पिछले नववर्ष दिवस के अवसर पर ही स्पेन की एक प्रमुख प्रकाशन-संस्था एग्विलर एस० ए० डि० एडिसिओनीज़, जिसकी शाखाओं की शृङ्खला पूरे लैटिन अमेरिका—ब्यूनोस एयर्स, मैक्सिको, कैराकास, बँगॉटा,—में फैली हुई है, के संस्थापक तथा प्रबन्ध संचालक श्री मन्युएल एग्विलर ने भी अपनी सत्तरवीं वर्षगाँठ मनाई।

डॉन मैन्युएल महोदय ने बड़ी ईमानदारी से अपनी जीवन-यात्रा आरम्भ की। पहले-पहल उन्होंने वैलेंसिया की एक प्रकाशन संस्था—जिसका संचालन उपन्यासकार ब्लास्को इबानेज कर रहे थे—प्रॉमेटियो नाम के नगर में इधर-से-उधर प्रूफ़ ले जाने वाले छोकरे के रूप में कार्य करना शुरू किया। इसके बाद वे सड़कों पर अख़बार बेचने का कार्य करने लगे और जब तक वहाँ रहे, यही करते रहे। बाद में लिवरपूल चले गए जहाँ उन्हें उनके स्वयं के प्रदेश बार्सिलोना का कोई व्यक्ति मिल गया जिसने उन्हें हरे फल बेचने वालों के पास जाकर नारंगियों का नमूना दिखाने का काम सौंपा। यह काम वे तब तक करते रहे जब तक उनकी भूख स्वयं नारंगियाँ खाने के लिए उन्हें मजबूर करती रही। जब उनका यह अस्थायी व्यवसाय तथा नारंगियों की फसल समाप्त हो गई तो वे पेरिस चले गए। प्रथम महायुद्ध के पहले पेरिस ऐसे प्रकाशनों का प्रमुख उत्पादन केन्द्र था, जो मुख्य रूप से लैटिन भाषी अमरीकी प्रदेशों में भेजने के लिए प्रकाशित किये जाते थे। स्पेनिश भाषा की पुस्तकें प्रकाशित करने वाले कुछ फ्रांसीसी प्रकाशकों ने अपने प्रकाशनों के वितरण का सम्यक् प्रबन्ध करने के लिए उन्हें ब्यूनोस एयर्स भेजा। जाने के पूर्व उन्होंने विवाह कर लिया।

उनकी पहली पुस्तक

ब्यूनोस एयर्स में श्री मैन्युएल एग्विलर को पहली सफलता मिली। वे पेरिस वापस बुला लिये गए और उन्हें उससे भी अच्छा पद और वेतन प्रदान किया गया, लेकिन लड़ाई शुरू हो जाने के कारण नई समस्याएँ उत्पन्न हो गईं। कुछ दिनों बाद उन्होंने अपने पास संचित कुछ हज़ार रुपयों और सौभाग्यवश एक साधारण दुर्घटना की चपेट में आ जाने के कारण बीमा कम्पनी से मिले धन से प्रकाशन व्यवसाय में प्रविष्ट होने का इरादा किया।

उनकी पहली पुस्तक, जिसमें उन्होंने अपने पास का सारा रुपया लगा दिया था, पाकविज्ञान सम्बन्धी एक पुस्तक थी जिसे उनकी पत्नी ने लिखा था और उनके प्रकाशन तथा वितरण-सम्बन्धी छोटे बड़े सभी काम स्वयं उन्होंने ही किये थे। इस प्रकार उन्होंने अपनी प्रकाशन संस्था की स्थापना की और जे० हक्सले की भारी संख्या में बिकने वाली पुस्तक जीवन-विज्ञान ने इस नये प्रकाशन-गृह की नींव दृढ़ कर दी। श्री एग्विलर की सबसे विख्यात पुस्तक-माला 'ओब्रास इटरनास' है जिसकी बहुत अधिक नक़ल स्पेन और स्पेन से बाहर के प्रकाशकों ने की है। इस माला की पुस्तकों की जिल्दें चमड़े की होती हैं और प्रत्येक में लगभग २००० पृष्ठ होते हैं। सर्वेन्टीज, शेक्सपियर, डिकेन्स, दॉस्तोवॅस्की, तॉल्स्ताय, गर्टा, मार्क ट्वैन, मोपासाँ, मोलियर, ग्लैडॉस, ऑस्कर वाइल्ड, सैन्टा टेरेसा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और गैरसिया लॉरका के सम्पूर्ण साहित्य का प्रकाशन इसी माला के अन्तर्गत हुआ है। 'ओब्रास इटरनास' माला स्पेन की प्रकाशन योजनाओं में अत्यन्त सफल सिद्ध हुई है। इस माला की, 'शेक्सपियर' और 'सर्वेन्टीज' के सम्पूर्ण साहित्य वाली प्रथम दो पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए उन्होंने अपने पास की अन्तिम पाई तक लगा दी। स्पेन के पुस्तक विक्रेताओं की राय थी कि स्पेन की जनता, जो अगर पुस्तकें ख़रीदती भी है तो बहुत सस्ते दाम की, इस प्रकार की पुस्तक में रुचि नहीं दिखाएगी। इस भविष्य-वाणी के विपरीत सर्वेन्टीज़ और शेक्सपियर के सम्पूर्ण साहित्य वाली पुस्तकें लोकप्रिय उपन्यासों की-सी तीव्रगति से बिकने लगीं। अभी हाल ही में सफल सिद्ध होने वाली इसी माला की पुस्तक गैरिसा लारका के सम्पूर्ण साहित्य वाली है।

नया समारम्भ

स्पेन की लड़ाई के कारण मैन्युएल एग्विलर को अपने व्यवसाय की शुरुआत नये सिरे से करनी पड़ी। उनका स्टॉक विनष्ट कर दिया गया था, लेकिन एक प्रकाशक के रूप में उनकी साख और लोकप्रियता बनी हुई थी। विषम परिस्थितियों के बावजूद दूसरे महायुद्ध शुरू होने के कुछ ही दिनों पूर्व उन्होंने पूरे जोश-खरोश से काम करना शुरू कर दिया। इसी समय से उन्होंने दाम में सस्ती और देखने में आकर्षक लगने वाली 'क्राइसॅल' पुस्तक माला का प्रकाशन शुरू किया। अनेक ग्राहकों के अनुरोध पर उन्होंने ब्यूनो एयर्स, मैक्सिको, और बाद में कैराकास तथा बॅगॉटा में अपनी शाखाएँ खोलीं और अन्य अमरीकी गणतन्त्रों से महत्त्वपूर्ण सम्पर्क स्थापित किये। परिणामस्वरूप जुएन रैमॅन जिमेनेज़—जिन्हें तब नोबुल पुरस्कार नहीं मिला था—की पुस्तक प्लैटरो ई यो के विशेष संस्करण की ३५००० प्रतियाँ प्रकाशन-तिथि के पूर्व ही बिक गई थीं। इधर हाल का विकास-चरण मानचित्र विभाग की स्थापना है जिसने बृहत् तथा मध्यम आकार के ग्विलर विश्व मानचित्रावली प्रकाशित करने की योजना बनाई है।

विविधतापूर्ण सूची

इस सूची में एग्यूलर के पास आज ३० पुस्तक-मालाएँ हैं और अधिकांश में लगभग १३०० पुस्तकें हैं और ये एक-दूसरे से अत्यन्त भिन्न प्रकार के क्षेत्रों से सम्बन्ध रखती हैं। अपनी पुस्तक माला "बिब्लियोटेका डि प्रिमियोस के अन्तर्गत नोबुल पुरस्कार पाने वाले साहित्य-कारों की कृतियों के १५०० पृष्ठों वाले बृहत् संस्करण प्रकाशित करने वाले वे विश्व के प्रथम प्रकाशक हैं। अपने अनुवादों, जो उन्होंने मुख्य रूप से ब्रिटिश तथा अमरीकी ग्रन्थों के किये हैं, की "साइन्सिया ई टेक्निका" नामक पुस्तक-माला द्वारा वे स्पेन तथा लैटिन अमरीका में विज्ञान का स्तर ऊँचा करने में मूल्यवान योग दे रहे हैं। इस पुस्तकमाला के प्रकाशन से पूर्व स्पेन में विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशन-मात्र जर्मन-ग्रन्थों तक सीमित थे। उनकी विस्तृत पुस्तक माला "बिब्लियोटेका डि साइन्सियाज़ सोसिआलीज़" भी महत्त्वपूर्ण है जिसने स्पेनिश पाठकों के सम्मुख नये-पुराने लेखकों की उत्कृष्ट कृतियों को रखा है जिन्होंने अर्थशास्त्र के क्षेत्र में महान् कार्य किये हैं।

●

हिन्दी का एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी-एच. डी. की थीसिस

सूर की भाषा

ले०—डॉ० प्रेमनारायण टण्डन

('ब्रजभाषा सूरकोश' के सम्पादक)

हिन्दी-साहित्य में यह पहला प्रकाशन है जिसमें एक कवि-विशेष की भाषा का इतना विशद अध्ययन किया गया है।

पृ० ६२५ रायल अठपेजी। मू० २०)

आपके पुस्तकालय में इस ग्रन्थ की एक प्रति अवश्य रहनी चाहिए।

मनीआर्डर से पूरा मूल्य पेशगी भेजने पर डाक-व्यय फ्री रहेगा।

हिन्दी-साहित्य-भण्डार,

गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

उर्दू शायरी

शेर-ओ-शायरी श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ८)
शेर-ओ सुख़न [पांच भाग] श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २०)

कविता

वर्द्धमान [महाकाव्य] श्री अनूप शर्मा ६)
मिलन-यामिनी ,, बच्चन ४)
धूप के धान ,, गिरिजाकुमार माथुर ३)
मेरे बापू ,, हुकमचन्द्र बुखारिया २॥)
पञ्च-प्रदीप ,, शान्ति एम० ए० २)
सौवर्ण ,, सुमित्रानन्दन पन्त २॥)
लेखनी-बेला ,, वीरेन्द्र मिश्र ३)

संस्मरण, रेखाचित्र

जैन जागरण के अग्रदूत श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय ५)
हमारे आराध्य श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
संस्मरण श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ३)
रेखाचित्र श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ४)

एकांकी नाटक

रेडियो नाट्य शिल्प श्री सिद्धनाथ कुमार २॥)
पचपन का फेर श्री विमला लूथरा ३)
तरकश के तीर श्रीकृष्ण एम० ए० ३)
चेखव के तीन नाटक राजेन्द्र यादव ३)
रजत-रश्मि डॉ० रामकुमार वर्मा २॥)
और खाई बढ़ती गई श्री भारतभूषण अग्रवाल २॥)

निबन्ध, आलोचना

संस्कृत साहित्य में आयुर्वेद श्री अत्रिदेव विद्यालङ्कार ३)
शरत् के नारी-पात्र श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी ४॥)
क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ? श्री रावी २॥)
ज़िन्दगी मुस्कराई श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ४)
बाजे पायलिया के घूँघरू श्री कन्हैयालाल मिश्र ,, ४)
माटी हो गई सोना श्री कन्हैयालाल मिश्र ,, २)

दार्शनिक, आध्यात्मिक

वैदिक साहित्य- श्री रामगोविन्द त्रिवेदी ६)
भारतीय विचारधारा श्री मधुकर एम० ए० २)
अध्यात्म-पदावली श्री राजकुमार जैन ४॥)
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन श्री भोलाशंकर व्यास ५)

विविध

हिन्दू विवाह में कन्यादान का स्थान श्री सम्पूर्णानन्द १)
द्विवेदी-पत्रावली श्री बैजनाथ सिंह 'विनोद' २॥)
ध्वनि और संगीत श्री ललितकिशोर सिंह ४)

ऐतिहासिक

हिन्दी जैन साहित्य-परिशीलन-१ श्री नेमिचन्द्र शास्त्री २॥)
हिन्दी जैन साहित्य-परिशीलन-२ श्री नेमिचन्द्र शास्त्री २॥)
खण्डहरों का वैभव श्री मुनि कान्तिसागर ६)
खोज की पगडण्डियाँ श्री मुनि कान्तिसागर ४)
चौलुक्य कुमारपाल श्री लक्ष्मीशंकर व्यास ४)
कालिदास का भारत-१, २ श्री भगवतशरण उपाध्याय ८)

कहानियाँ

गहरे पानी पैठ श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
आकाश के तारे : धरती के फूल
श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' २)
खेल-खिलौने श्री राजेन्द्र यादव २)
अतीत के कम्पन श्री आनन्दप्रकाश जैन ३)
जिन खोजा तिन पाइयां श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
नये बादल ,, मोहन राकेश २॥)
कुछ मोती कुछ सीप ,, अयोध्याप्रसाद गोयलीय २॥)
काल के पंख ,, आनन्दप्रकाश जैन ३)
जय-दोल ,, अज्ञेय ३)
नये चित्र ,, सत्येन्द्र शरत् ३)
संघर्ष के बाद ,, विष्णु प्रभाकर ३)
पहला कहानीकार ,, रावी २॥)
मेरे कथागुरु का कहना है ,, रावी ३)

ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष श्री नेमिचन्द्र जैन ज्योतिषाचार्य ६)

उपन्यास

मुक्तिदूत श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए० ५)
तीसरा नेत्र ,, आनन्दप्रकाश जैन २॥)
रक्त-राग ,, देवेशदास ३)
संस्कारों की राह ,, राधाकृष्ण प्रसाद २॥)

सूक्तियाँ, राजनीति

ज्ञानगंगा श्री नारायणप्रसाद जैन ६)
शरत् की सूक्तियाँ ,, रामप्रकाश जैन २)
एशिया की राजनीति ,, परदेशी साहित्यरत्न ६)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का पत्र

प्रकाशक बन्धुओं से निवेदन

फ़रवरी मास के 'नया साहित्य' में 'प्रकाशक और पुस्तक-विक्रेता' नाम से एक विचारणीय प्रश्न उठाया गया है।

युद्धोपरान्त देश में प्रकाशकों की संख्या बहुत तेज़ी से बढ़ गई है और आज लगता है कि प्रत्येक पुस्तक-विक्रेता प्रकाशक पहले है और पुस्तक-विक्रेता बाद में। पुस्तक-विक्रेताओं में से जो प्रकाशक हुए हैं उसका मुख्य कारण प्रकाशकों का पुस्तक-विक्रेताओं से उचित सहयोग की भावना का अभाव होना है। दूसरा कारण पुस्तकों की बिक्री का बढ़ना भी है। इतना ही नहीं, पुस्तकों की नकली प्रतियाँ छपने की ज़िम्मेदारी भी उन पुस्तकों के मूल प्रकाशकों पर है।

पुस्तक के चलते ही प्रकाशक तुरन्त कमीशन घटा देता है और अन्य सुविधाएँ भी बन्द कर देता है। वह सोचता है कि अब तो पुस्तक स्वीकृत हो ही गई, प्रत्येक स्थिति में यह बिकेगी ही, अतः पुस्तक-विक्रेताओं की ओर से वह सर्वथा उदासीन हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि पुस्तक यदि टेक्स्ट बुक हुई और खूब बिकने वाली है तो वह नकली छप जाती है और यदि आलोचनात्मक पुस्तक खूब बिकने वाली है तो उसके आधार पर नोट्स के रूप में लगभग नकल बनकर पुस्तक-विक्रेता या अन्य प्रकाशक द्वारा निकाल दी जाती है और उस मूल पुस्तक की सर्वथा हत्या कर दी जाती है।

दूसरी ओर सरकार द्वारा थोक खरीद के इस ज़माने में प्रकाशकों द्वारा अपना माल किसी भाव पर बेचने के लिए सीधे सप्लाई करने तथा अधिकाधिक कमीशन देने की होड़ा-होड़ी ने पुस्तक-विक्रेताओं की हत्या कर दी है। प्रकाशक स्वयं २५ प्रतिशत वाली पुस्तकों पर ३५ या ४० एफ० ओ० आर० का टेण्डर भर देगा और यदि वही आर्डर किसी पुस्तक-विक्रेता को प्राप्त हो गया और प्रकाशक को मालूम हो गया कि यह पुस्तक-विक्रेता की लाचारी है तो वह ३० प्रतिशत से अधिक की बात नहीं करेगा और सारे खर्चे भी पुस्तक विक्रेता से लेगा। इतना ही हो तो ग़नीमत है, किसी पुस्तक-विक्रेता को एक प्रकाशक की पुस्तकों का आर्डर प्राप्त हो गया और वह जानता है कि वे पुस्तकें पुस्तक-विक्रेता उन्हीं से लेकर सप्लाई करेगा तो भी वे पुस्तक-विक्रेता के ग्राहक के पास सीधे पहुँचकर उसे अधिक कमीशन का लोभ देकर वह आर्डर स्वयं प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार की अनेक घटनाएँ हमारे साथ हुई हैं। इन सब का परिणाम यह है कि पुस्तक-विक्रेता भी प्रकाशक बन थोक खरीद वाली दो-चार अपनी पुस्तकें निकालने लग जाता है और इस प्रकार एक ही विषय पर अनेक पुस्तकें निकलने लग जाती हैं जो प्रकाशकीय व्यवसाय के लिए निन्दाजनक एवं निराशाजनक प्रवृत्ति है।

प्रकाशकों को सूचना

स्कूल या कॉलेज के विद्यार्थियों के योग्य पुस्तकें एवं पारितोषिक (प्राइज़) या पुस्तकालय (लाइब्रेरी) योग्य पुस्तकें प्रकाशित करने वाले सभी प्रकाशकों से नम्र-निवेदन है कि वे अपने यहाँ से प्रकाशित होने वाले सभी प्रकाशनों की सूचना निम्न पते से बराबर भेजा करें। उन पुस्तकों पर वे पुस्तक-विक्रेताओं को क्या कमीशन देते हैं, इसकी भी सूचना देने की कृपा करें।

मन्त्री,

आरा पुस्तक-विक्रेता संघ, आरा

ARRAH (BIHAR)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण के लिए हिन्दी में एक प्रकाशक ने लोक-कथाएँ छापना शुरू कीं तो देखते-देखते अनेक प्रकाशकों ने छाप डालीं। यही दुर्गति सस्ता साहित्य मंडल की समाज विकास माला, संस्कृत साहित्य सिरीज आदि पुस्तकों की हुई। यहाँ तक कि भारत सरकार का प्रकाशन विभाग भी लोक-कथाएँ, जातक कथाएँ आदि प्रकाशित कर बैठा। नकल की इस प्रवृत्ति के कारण आज हिन्दी में इतना कूड़ा प्रकाशित होने लगा है कि कोई भी पुस्तक-विक्रेता उन सबमें अपनी पूँजी नहीं लगा सकता। हिन्दी साहित्य की आलोचनात्मक पुस्तकों का हाल तो यह है कि आज हिन्दी के लगभग सभी प्रकाशकों ने सूर, तुलसी, कबीर, 'प्रसाद' आदि पर एक-एक पुस्तक प्रश्नोत्तर तथा अन्य भिन्न-भिन्न रूपों में छाप ली है। उनमें अन्य पुस्तकों से कोई अन्तर नहीं है।

इस प्रकार की प्रवृत्ति प्रकाशकों की ओर से चलती रही तो धीरे-धीरे पुस्तक-विक्रेताओं की संख्या समाप्त हो जायगी, सभी प्रकाशक हो जायँगे और तब प्रकाशकों के लिए यही शेष रह जायगा कि वे हर बड़े शहर में अपनी दुकानें खोल बैठें।

आज हिन्दी-प्रकाशन व्यवसाय संक्रान्ति काल से गुज़र रहा है। यदि अधिवेशनों में कोरी प्रतिज्ञा करने के बजाय व्यावहारिक रूप से विचार कर सबके स्थायी हित-अहित की बात ध्यान में रख कार्य करें तो हिन्दी-प्रकाशन व्यवसाय स्वस्थ मार्ग से आगे बढ़ सकता है और हर समय जो शासन की ओर से यह ताड़ना मिलती रहती है कि वे स्वयं अपना प्रकाशन आरम्भ करेंगे, उससे भी छुटकारा मिलेगा। कभी भी किसी देश में शासन कुशल प्रकाशकों की बरबादी नहीं कर सकता।

आज हम मिलकर अपनी-अपनी कमज़ोरियों को टटोलकर कमीशन तथा व्यवसाय की अन्य शर्तें तय कर लें तो हिन्दी-प्रकाशन तथा विक्रय-व्यवसाय का बड़ा कल्याण होगा और हिन्दी में जो समुद्र के समाज विशाल और तालाब के समान छिछला साहित्य प्रकाशित होता जा रहा है उसकी बाढ़ भी रुकेगी। और हिन्दी देश की अन्य समर्थ भाषाओं से ऊपर उठ सकेगी।"

—पुरुषोत्तमदास मोदी

विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर

हमारे प्रकाशन

उपन्यास

१. जब खेत जागे	कृष्णचन्द्र	३.००
२. अँधेरा-उजाला	ख्वाजा अहमद अब्बास	२.२५
३. यात्रा	साने गुरुजी	४.००
४. जहाँ बर्फ गिरती है	ए० हमीद	३.५०

कहानियाँ

५. यहाँ से वहाँ तक	महेन्द्रनाथ 'अश्क'	२.२५
६. निशानियाँ	उपेन्द्रनाथ 'अश्क'	३.००
७. मम्मी	सआदत हसन मण्टो	२.५०

नाटक

८. बाबू	आचार्य आत्रेय	२.००
९. नेपथ्य	आरिगपूडि	३.००

जीवनी

१०. बापू की कहानी (रंगीन चित्रों के साथ)	कृष्णा हठीसिंह	२.००

आगामी प्रकाशन

१. झील और कंवल (उपन्यास)	ए० हमीद
२. बेवकूफ़ों की कहानियाँ	कृष्णचन्द्र
३. मौत की मौत	,,
४. सोने की सन्दूकची	,,

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०

मनु मैन्शन, १६, ओल्ड कस्टम हाउस रोड,

बम्बई—१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक की अपनी कहानी

डॉ० वी० राघवन

मुद्रण-कला के आविष्कार के पूर्व पुस्तकों का स्वरूप क्या होता था? मद्रास विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष डॉ० वी० राघवन ने अपने इस लेख में इसी सम्बन्ध में रोचक तथा उपयोगी विवरण प्रस्तुत किया है।

पुस्तकों में अनेकानेक मोहक कथाएँ लिखी गई हैं, लेकिन पुस्तक की अपनी कथा भी कुछ कम मोहक नहीं है जिसके सम्बन्ध में लोगों को बहुत अधिक जानकारी नहीं है। आज इससे सामान्य कोई दूसरी बात नहीं कि जिसके पास पुस्तकें हैं उसके बारे में यह सोच लिया जाय कि वह विद्वान् भी है। लेकिन वाणी और अभिव्यक्ति-शक्ति के विकास के बहुत दिनों बाद तक मनुष्य ज्ञान का संचरण और संरक्षण व्यक्तिगत रूप से करता रहा; वाणी और कान सुप्रचलित माध्यम बने रहे; बहुत कुछ ऐसा ही भारत में भी रहा जहाँ ज्ञान को संस्कृत और तमिल में 'श्रुत' और 'केल्वि' कहा गया जिसका अर्थ है "जिसका श्रवण किया गया हो या जो सुना गया हो।"

इस बात की केवल कल्पना-भर की जा सकती है कि कब प्राचीन भारत ने अपने ज्ञान को दृश्यमान प्रतीकों तक सीमित करना आरम्भ किया। इतिहास-विशारदों का अनुमान है कि भारत की प्राचीनतम लिपि ब्राह्मी, ९वीं शती ई० पू० में भारतीय व्यापारियों द्वारा बाहर से लाई गई थी जिसका मूल सेमेटिक लिपि में है, यूरोपीय अक्षर-माला का मूल भी ग्रीक के माध्यम से वहीं तक पहुँचता है। वाणी का प्रयोग करने वाले प्राचीन मानव ने लेखन के लिए वस्तुचित्रों, भावचित्रों, ध्वनिचित्रों तथा कीलाक्षरों का प्रयोग करने के पूर्व अपनी स्मृति के लिए कुछ बाह्य साधनों का सहारा लिया जैसे रस्सियों की गाँठों, और चिह्नों तथा मुद्राओं आदि का। जब उसे अपने विचारों तथा ध्वनियों को दृश्यमान रूप देने की इच्छा हुई तो जो भी उसके हाथ लगा उसने उसी का उपयोग किया। किसी तेज़ वस्तु से उसने कठोर तल पर खरोंचें बनाईं या किसी मुलायम रंगीन चीज़ से किसी कठोर या कोमल तल पर आलेखन-कार्य किया।

पटेरा (Papyrus)

प्राचीनतम सामग्री जिसका मनुष्य ने लिखने के लिए उपयोग किया नील नदी के किनारे पाये जाने वाले एक विशेष प्रकार के नरकुलों की भीतरी छाल से बना हुआ पटेरा है; मिश्र की "दिवंगतों का ग्रन्थ (Book of the Dead)" नामक पुस्तक २५वीं शती ई० पू० में पटेरों पर लिखी गई थी। बाइबिल शब्द का मूल ग्रीक भाषा के पटेरों के कुण्डलाकार बण्डल के लिए प्रयुक्त होने वाले एक सामान्य शब्द में खोजा गया है। निकट पूर्व तथा मध्यपूर्व में मिट्टी के कुछ ऐसे टिक्कड़ खुदाई में मिले हैं जिन पर राजनीतिक दस्तावेज़ तथा आचार-सम्बन्धी अधिनियम लिखे हुए हैं। इन टिक्कड़ों के पूरे-के-पूरे पुस्तकालय मिल चुके हैं। संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में किसी भी ग्रन्थ को पुस्त, पुस्तक या पुस्तिका कहा जाता है। पुस्त का अर्थ है ढालना जैसे गीली मिट्टी या धातु से ढलाई की जाती है। जब हम इसका सम्बन्ध खुदाई में मिले हुए उन मिट्टी के टिक्कड़ों, बर्तनों और धातु के टुकड़ों से स्थापित करते हैं जिन पर कुछ खुदा या लिखा होता है तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि ग्रन्थ के लिए पुस्तक का मूल किताबों आदि रूपों—मिट्टी के टिक्कड़ों और धातु की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहरों—में है। चूँकि पटेरों को सुरक्षित रखना बड़ा कठिन था, इसीलिए २री शती ई० पू० में पशुओं की परिष्कृत खालों का इस्तेमाल शुरू हुआ और इसी परिष्कृत खाल से चर्मपत्र (Parchment) शब्द निकला। मृत्यु सागर की नामावलियों के बण्डल (३०० शती ई० पू०—७० ई०) खालों या चर्मपत्रों में ही सुरक्षित हैं। यहाँ पाई गई कुछ बाद की पाण्डुलिपियाँ ताम्रपत्रों पर अंकित हैं। जब चर्मपत्रों का प्रचलन समाप्त नहीं हुआ था तभी पूर्व के लोगों ने पश्चिम से रेशों की लुगदी का इस्तेमाल सीखा।

तालपत्र

सिन्धु घाटी की खुदाई में मिली हुई मोहरों, बर्तनों तथा धातु के टुकड़ों—जिन पर कुछ लिखावट-सी अंकित है—से केवल इसी बात का पता नहीं चलता कि पूर्व-वैदिक भारत के लोग लेखन-कला से भिज्ञ थे बल्कि इस बात का भी संकेत मिलता है कि प्राचीन भारत में इसके लिए किन चीजों का इस्तेमाल किया जाता था। वेदों में एक लिखित बोली या भाषा की पूर्व-कल्पना की गई है। Neorchos और Curtis के ग्रीक प्रमाणों में इस बात का उल्लेख है कि भारत में कपड़े और पेड़ों की छाल—हिमालय पर पाये जाने वाले भुर्जवृक्ष की छाल—का इस्तेमाल किया जाता था। खोतान और अफ़गानिस्तान में खुदाई से मिले हुए बौद्ध-आलेखों के लिए इसी वृक्ष के पत्तों (भुर्जपत्र) का इस्तेमाल लिखने में किया गया था। जिस पत्ते का सबसे अधिक और सबसे प्राचीन इस्तेमाल लिखने के काम के लिए किया गया वह था ताल-वृक्ष का पत्ता।

कालिदास ने लेखन-सामग्री के रूप में भुर्जवृक्ष की छाल का उल्लेख किया है और अभी हाल तक कश्मीर में लिखने के लिए इसका उपयोग किया जाता था। पुस्तकालयों में बहुत सी भुर्ज-वल्कल पर लिखी हुई पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत हैं और इनमें से सबसे प्रसिद्ध है कश्मीर में प्राप्त 'अथर्व वेद' जो टुबिन्जेन (Tubingen) पुस्तकालय में रखा हुआ है। ग्यारहवीं शताब्दी के कश्मीरी कवि क्षेमेन्द्र ने लेखन तथा लेखापालन का कार्य करने वाले वर्ग कायस्थों के सम्बन्ध में अपनी व्यंग्य-प्रधान कृति में इस बात का उल्लेख किया है कि वे लेखन-सामग्री, पत्तियाँ काटने की कैंची, कलम और दावात आदि लेकर चलते हैं।

गत बत्तीस वर्षों में बाईस उपन्यास लिखे !

किसने ?

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी ने।

"प्रेमचन्द के बाद की पीढ़ी में जिन तीन कहानी-लेखकों को मैं अप्रतिद्वन्द्वी मानता हूँ, उनमें जैनेन्द्र और अज्ञेय के साथ वाजपेयी का ही नाम है और मेरा विश्वास है कि वे युग-युग जीवित रहेंगे।"

—कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

"स्वर्गीय प्रेमचन्द के उपरान्त हिन्दी कथा-साहित्य काफ़ी समृद्ध हुआ है। अनेक नई प्रतिभाएँ प्रकाश में आई हैं, जिनमें श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी हिन्दी के प्रौढ़ कथाकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।"

—"समालोचक"

मार्च '५८

★

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी के उपन्यास

चलते-चलते	६)	भूदान	६)
पतवार	५)	रात और प्रभात	३।।)
विश्वास का बल	५।।)	मनुष्य और देवता	३।।)
यथार्थ से आगे	५।।)	सूनी राह	३।।)
धरती की साँस	२)	निर्यातन	२।।)
उनसे न कहना	५)	अनाथ पत्नी	४)
निमन्त्रण	४)	लालिमा	४)
निरन्तर	३।।)	मीठी चुटकी	४)
दो बहनें	३।।)	त्यागमयी	२।।)
पिपासा	३।।)	प्रेम पथ	४)
पतिता की साधना	४)	त्यागमयी	२।।)

पारिजात प्रकाशन

१०९/१६८ जवाहर नगर, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य किस्म के छोटे और मोटे तालपत्र और विशेष चौड़े, पतले और चिकने किस्म के, श्रीताल के पत्तों पर ही भारत के लगभग सभी भागों में पुरानी पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित हैं। मध्य एशिया, उत्तरी पश्चिमी सीमा प्रदेश तथा पंजाब आदि में पाई गई खण्डित पाण्डुलिपियों तथा ताम्रपत्रों को देखने से पता लगता है कि पाण्डुलिपियों का आदर्श तालपत्र ही था, क्योंकि उन्हें तालपत्र के आकार में ही काटा गया है और तागा पिरोने के लिए बीच में गोल छेद किया गया है। ताल-पत्र को साफ़ करके दक्षिण में उस पर लोहे की नोक कील-जैसी कलम से खरोंचकर और उत्तर में काली स्याही से लिखा जाता था। पहली स्थिति में अक्षरों को काला बनाने के लिए उन पर कोयले का चूर्ण या किसी पत्ती का रस डाला जाता था और उत्तर भारत में तालपत्रों पर स्याही से लिखे गए अक्षरों को चमकीला बनाने के लिए किसी खड़िया-जैसे पदार्थ के चूर्ण का इस्तेमाल किया जाता था। तालपत्र पर लिखी हुई सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि नेपाल में पाई गई है जो ७०० वर्ष पुरानी है।

वस्त्र, काष्ठ और धातु

इसके अतिरिक्त सूती तथा रेशमी कपड़ों का इस्तेमाल भी किया जाता था; राजकीय आलेख आदि इन्हीं पर लिखे जाते थे। कन्नड़ प्रदेश में लेखन के लिए सामान्य रूप से जिस चीज़ का इस्तेमाल किया जाता था और जो कदितम (Kaditam) कहलाता था, वह रुई के रेशों का बना होता तथा उस पर किसी काली चीज़ का लेप किया गया रहता था। इस पर खड़िया (Kathini) या एक सफ़ेद किस्म की पेंसिल से लिखा जाता था। इनके उदाहरण दक्षिण भारत में पाण्डुलिपियों के पुस्तकालयों में पाये जा सकते हैं।

बांस और काष्ठ-फलक भी, उपयोग में लाये जाते थे। पुस्तक का कोडेक्स (Codex) नाम इसी काष्ठ-वस्तु से ही निकला है, लकड़ी के चीरे हुए फट्टों का इस्तेमाल पश्चिम में भी होता था। अंग्रेजी का बुक (Book) शब्द भी बीच (Beech) वृक्ष से ही निकला है क्योंकि एंग्लो सैक्सन तथा जर्मन लोगों द्वारा बीच (Beech) के फट्टों का इस्तेमाल किया जाता था।

पवित्रता के प्रति भारतीयों की अतिशय जागरूकता के बावजूद प्राचीन भारत में कुछ-न-कुछ चमड़े का भी उपयोग हुआ है, जिस पर लिखे हुए कुछ अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं। स्ट्रैबो ने निर्देश किया है कि भारत में राजकीय लेखों के लिए चर्मपत्र का उपयोग होता था। प्राचीन काल में भोज-पत्रों की भाँति ही धातु-पत्रों, विशेषतया ताम्र-पत्रों का राजाज्ञाओं व अनुदानों के लेखन के लिए विस्तृत प्रयोग होता था। कभी-कभी ये धातु-पत्र भोज-पत्र के समान पतले होते थे और कभी-कभी वे भारी और आकार में आयताकार होते थे। ताम्र-पत्रों में अंकित अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण साहित्यिक अभिलेख तिरुपती के मन्दिर में ताम्र-पत्रों की ढेर-सी पर्तों में उपलब्ध हैं, जिनमें तिरुपति मन्दिर के (१५वीं व १६वीं शताब्दी) तल्लापावय निर्माताओं की संगीतात्मक रचनाएँ सुरक्षित हैं। कुछ धातु के सिक्कों पर भी अवदान अंकित हैं। मेहरोली (वर्तमान दिल्ली के निकट) के लौह-स्तम्भ पर गुप्त-वंश के चन्द्रगुप्त द्वितीय का उत्कीर्ण लेख मिलता है।

प्रस्तर और चट्टानों के किनारों का भी राजकीय विजय-अभियानों व अनुदानों के लिपिबद्ध करने के लिए व्यापक उपयोग हुआ है। कदाचित् ही कोई ऐसा गुफा-मन्दिर अथवा अन्य साधारण रूप से निर्मित मन्दिर होगा, जिसमें इस प्रकार की लिपिबद्ध सामग्री से युक्त अक्षय पुस्तकालय न उपलब्ध हो। प्रस्तर-खण्डों पर उत्कीर्ण कुछ नाटक भी आज सुरक्षित मिलते हैं।

१२वीं शताब्दी के 'हरकेलि' व 'ललित विग्रहराज' नाटकों और इससे भी कुछ शताब्दियों पूर्व पुडुकोट्टा के निकट कुडुमियभलाई में पल्लवों द्वारा शिलाखण्डों पर उत्कीर्ण संगीत पर लिखा गया प्रबन्ध उदाहरण-स्वरूप उल्लेखनीय हैं। प्राचीनतम और सर्वविदित शिलालेखों व प्रस्तर-स्तम्भों में अशोक के शिलालेख आते हैं, जो देश के सुदूर प्रान्तों में मिलते हैं।

काग़ज़ पर लिखी हुई पुस्तकें

उपर्युक्त सभी लेखन-सामग्रियों को आज़माइश कर लेने के उपरान्त ही काग़ज़ का प्रयोग प्रारम्भ होता है। काग़ज़ का अनुसन्धान चीनियों द्वारा (१०० ई०) किया गया। भारत में प्राप्य काग़ज़ पर लिखी पाण्डुलिपियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

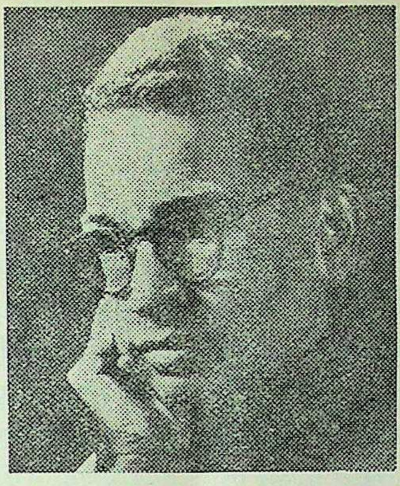

श्री वि० स० खाण्डेकर

भारतीय भाषाओं के लोकप्रिय

श्री खांडेकरजी का लोकप्रिय साहित्य
मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, मलयालम् और
राष्ट्र-भाषा हिन्दी में प्रकाशित हुआ है।

हिन्दी में प्रकाशित रचनाएँ

१. उल्का	(उपन्यास)	रु० ६·००
२. दो ध्रुव	,,	,, ६·००
३. हरा चंपा	,,	,, ६·००
४. दो मन	,,	,, ६·००
५. सूना मन्दिर	,,	,, ४·५०
६. पहला प्रेम	,,	,, ४·५०
७. झुलसी मंजरी	,,	,, ५·००
८. आँसू	,,	,, ६·००
९. क्रौंचवध	,,	,, ६·००
१०. रुपहले बादल	,,	,, ५·००
११. संध्यादीप	(कहानी)	,, ३·००
१२. कलिका	(लघु निबन्ध)	,, ६·००
१३. प्रीति की खोज	(कहानी)	,, ५·००
१४. चाँदनी	(लघु निबन्ध)	,, ६·००

रुपहले बादल

लेखक वि० स० खांडेकर

मूल्य ५ रुपया

रुपहले बादल
(सामाजिक दृष्टि से महत्त्व का उपन्यास)

आदर्शवादी नवयुवक अभय के मन में समाजवाद के प्रति किस तरह निष्ठा उत्पन्न होती है और आगे चलकर वह किस तरह दृढ़मूल हो जाती है, इसका सहज सुन्दर ढंग से वर्णन—

जिस मध्यम वर्ग से अभय आया है उसके संस्कार,
बन्धन, शक्ति आदि बातों का यथोचित आलोचन
हिन्दी का यथार्थ और मनोरम चरित्र-चित्रण
प्रमिला जैसी निर्मला युवती का सजीव चित्रण
प्रकाशित हुआ

●

चाँदनी

लेखक—वि० स० खांडेकर

चाँदनी काव्य, व्यंग्य, विनोद, तत्त्वचिन्तन, आत्म-कथन, जीवन-दर्शन, इत्यादि अनेक बातों का अच्छे ढंग से लिखा हुआ लघु निबन्ध प्रकाशित हुआ।

खांडेकर साहित्य ए० एच० व्हीलर एण्ड कम्पनी के सभी बुक स्टॉलों पर मिलता है।

प्रकाशक—**देशमुख एण्ड कम्पनी, २२ कसबा, पूना-२**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०वीं शताब्दी से मिलती हैं, यद्यपि काशगर में प्राप्त वस्तुओं में कुछ ऐसे कागज़ के टुकड़े भी मिले हैं, जो उससे भी पहले—तीसरी और पाँचवीं शताब्दी—के हैं। कागज़ पर लिखी हुई पाण्डुलिपियाँ दक्षिण भारत में बहुत-कम हैं। उत्तरी भारत में कागज़ की पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने के लिए एक पीले लेप का प्रयोग किया गया है।

संस्कृत में 'पुस्तक' के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्दों में एक शब्द 'ग्रन्थ' भी है, जिसका अर्थ होता है कि किसी वस्तु को कसकर बाँधना। भोज-पत्रों को एक किनारे या दो किनारों पर छेद लिया जाता था और उनके बीच से होकर गुजरता हुआ धागा सभी पत्रों को कसकर बाँधे रखता था। पत्रों की सुरक्षा के लिए काठ या कभी-कभी धातु का गत्ता चढ़ा दिया जाता था। लकड़ी के गत्ते पर कभी-कभी चित्रकारी भी रहती थी। प्राचीन पटेरा या कपड़े पर अंकित अभिलेख एक लकड़ी पर या दो लकड़ियों के बीच लपेट दिया जाता था, लपेटने की इस प्रक्रिया के कारण ही 'वॉल्यूमन' (Volumen) अथवा 'वॉल्यूम' (Volume) का नामकरण हुआ। चर्म-पत्रों, छालों और पत्रों के कारण पृथक्-पृथक् पृष्ठों का अस्तित्व सामने आया। 'पेज' (Page) शब्द की व्युत्पत्ति 'बाँधने' अर्थ की द्योतिका एक धातु से है। जब लकड़ी की ओर से काट करके दो-तीन तख्तों में पृथक् करके प्रयोग होने लगा, तो उसको बाँधने की आवश्यकता पड़ी। ताम्र-पत्रों में छिद्र होते थे, जिन्हें एक गोल धातु के छल्ले द्वारा बाँधकर लटकाया जाता था। इस छल्ले पर मुहर भी पड़ी रहती थी। जिस प्रकार सुरक्षित रखने के लिए भोज-पत्रों और कागज़ की पाण्डुलिपियों पर तख्ते लगाए जाते थे, उसी प्रकार छाल की पाण्डुलिपियों की सुरक्षा के लिए चमड़े के खोल का प्रयोग होता था। पश्चिमी भारत में कागज़ की पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित रखने के लिए कपड़े के टुकड़ों में भी बाँधी जाती थीं। कन्नड़ के कद्वितम में लेप की मोटी तह से भरे रुई के आयताकार टुकड़े एक-दूसरे से चिपका दिये जाते थे और उन्हें एक-दूसरे पर तह कर लिया जाता है और पढ़ने के समय फैला लिया जाता था।

पुरस्कृत-ग्रन्थ

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् ने इस वर्ष
डा० दशरथ ओझा के ग्रन्थ

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास

पर १०००) के पुरस्कार की घोषणा की।
इसी पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार ने भी
योग्य लेखक को १२००) रु० का पुरस्कार दिया।

कुछ सम्मतियां

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

"हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास" ग्रन्थ आपके कितने ही वर्षों के प्रगाढ़ परिश्रम का फल है। यह बात ग्रन्थ पढ़ते हुए प्रत्येक अध्याय से प्रकट होती है। यदि हिन्दी के सभी ग्रन्थ इसी स्तर पर लिखे जाने लगें तो हिन्दी का कायाकल्प हो जाय।"

नन्ददुलारे वाजपेयी

"मैंने आपकी पुस्तक पढ़ी। उसका ऐतिहासिक अनुशीलन मुझे विशेष अच्छा लगा। नाटकों की साहित्यिक समीक्षा भी आपने की है। आपका कार्य उपयोगी और प्रशंसनीय है।"

डा० नगेन्द्र

"हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वानों तथा विद्यालयों द्वारा अभिनन्दित इस ग्रन्थ की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। ओझा जी हिन्दी के अनुभवी प्राध्यापक और अध्यवसायी विद्वान् होने के अतिरिक्त कुशल नाटककार भी हैं, अतएव विषय के साथ उनका आत्मीय सम्बन्ध रहा है, यही ग्रन्थ की सफलता का मूल रहस्य है।"

बाबू गुलाबराय

"पुस्तक लिखने में लेखक महोदय का दृष्टिकोण व्यापक एवं संतुलित है और प्रतिपादन में एक तर्कपूर्ण स्पष्टता। पुस्तक सराहनीय और ज्ञानवर्द्धक है।"

मूल्य : नौ रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त विधियों के माध्यम से अव्यवस्थित लेखन-सामग्री को प्रवाहमय अथवा धारापूर्ण संग्रह या पुस्तक का आकार दिया गया। उक्त विधियों से विभिन्न मात्रा में लेखन-कला की अभिव्यक्ति में सुविधा मिली और साथ-ही-साथ उन पुस्तक-निर्माताओं को भी सुविधा मिली जिनको सुन्दर रूप से पुस्तकें निर्मित करने में अभिरुचि थी। धार्मिक लेख सोने-चांदी के माध्यम से लिखे जाने लगे। इस्लामी व ईसाई धर्म की पाण्डुलिपियों में भी सुन्दर लेखन-कला के दर्शन होते हैं। बर्मा में चौड़ी पत्तियों या तने की छालों पर लाख व अलकोहल का गाढ़ा रोग़न चढ़ा लिया जाता था और उन पर बौद्ध धर्म-ग्रन्थों को मुलम्मे के अक्षरों में लिखा जाता था। जहाँ तक संस्कृत की काग़ज़ पर लिखी पाण्डुलिपियों का सम्बन्ध है, उनमें सिवा इसके कि पूर्ण कृति अति सूक्ष्म अक्षरों में लिखी गई है और किसी उल्लेखनीय कुशलता के दर्शन नहीं होते। किन्तु दक्षिणी भारत में, विशेषकर कुछ तमिल के धार्मिक ग्रन्थों में प्रयुक्त भोज-पत्रों को काटकर शिवलिङ्ग का आकार दिया गया है अथवा रुद्राक्ष की माला की गुरियों का रूप दिया है। प्लिनी (Pliny) ने ऐसे पटेरों के कुण्डलाकार बण्डलों का उल्लेख किया है जिनमें सम्पूर्ण इलियड अंकित है और जो एक 'नटशेल' में रखे जा सकते हैं। भारत में ऐसी पाण्डुलिपियाँ काग़ज़ और भोज-पत्रों पर लिखी मिलती हैं। भारतीय पुस्तकों में प्रयुक्त प्राचीनतम सामग्री भोजपत्र कदाचित् सर्वाधिक टिकाऊ भी है।

सातवीं शताब्दी के उपरान्त पुस्तकालयों के सम्बन्ध में स्पष्ट साक्ष्य उपलब्ध हैं। समस्त भारत में संस्कृत की लाखों पाण्डुलिपियाँ फैली हैं और एक कृति की सैकड़ों प्रतिलिपियाँ भी मिलती हैं। लेखन-सामग्री की प्रकृति अथवा लेखन-सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण प्रतिलिपियाँ करने का अथवा कृतियों के विस्तृत वितरण का कार्य अवरुद्ध नहीं हुआ। पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि करने का कार्य एक अमूल्य सेवा समझा जाता था। विद्वान् अपनी यात्राओं में एक प्रदेश की पाण्डुलिपियाँ दूसरे प्रदेशों को अत्यन्त उत्कण्ठा से ले जाया करते थे। पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने की अनेक देशी विधियाँ प्रचलित थीं। जर्जर पाण्डुलिपियों की या तो फिर से पूर्ण प्रतिलिपि की जाती थी अथवा जर्जर पत्रों की प्रतिलिपि करके नये पत्र जोड़ दिए जाते थे।

मुद्रण-युग के पूर्व पुस्तकों की इस कहानी की परि-समाप्ति एक संस्कृत पाण्डुलिपि के अन्त में मिलने वाले निम्नलिखित श्लोक के साथ की जा रही है, जिसमें यह कहा गया है कि अलभ्य पुस्तकों के प्रेमियों को एक पाण्डुलिपि को कैसे सुरक्षित रखनी चाहिए—

''अपने प्रिय बालक के समान उसका अलंकरण किया जाय; परायों से अपनी सदाचारिणी पत्नी के समान उसकी रक्षा की जाय; अपने शरीर के आहत अंग के समान उसकी परिचर्या की जाय; प्रतिदिन एक भले मित्र की भाँति उसकी देख-रेख की जाय; मजबूत धागों से उसे एक बन्दी की भाँति कसकर बाँधा जाय; और नारायण के नाम की भाँति उसका निरन्तर ध्यान किया जाय; यदि ऐसा कोई करता है, तो उसकी पाण्डुलिपि को दुर्दिन नहीं देखने पड़ते हैं।''

चिर प्रतीक्षित पुस्तक का नया संस्करण छप गया।

शिक्षण-विधियों की रूपरेखा

ले०—श्री रामखेलावन चौधरी,

एम० ए०, एम० एड०,

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद ने इस वर्ष का १०००) का पुरस्कार इस पुस्तक पर दिया है।

इसमें प्राचीन और अर्वाचीन शिक्षण-विधियों की विस्तृत विवेचना की गई है। पुस्तक का पहला संस्करण तीन महीने में ही बिक गया था। दूसरा संशोधित संस्करण इसी महीने में छपा है। पृ० ६२५। मू० ८॥।)

अपने पुस्तकालय में इसे अवश्य रखिए!

मूल्य मनीआर्डर से भेजने पर डाक-व्यय फ्री।

हिन्दी-साहित्य-भण्डार,

गंगाप्रसाद रोड, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

मृगतृष्णा : विश्वविख्यात अमरीकी उपन्यास लेखिका पर्ल बक के प्रेम-प्रधान उपन्यास "Hidden Flower" का श्री गंगा रत्न पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत किया गया हिन्दी रूपान्तर है। भाषा-शैली के साथ-ही-साथ इस उपन्यास की कथावस्तु इतनी मोहक है कि पाठक जल्दी-से-जल्दी अन्तिम पृष्ठ तक पहुँचने के लिए लालायित हो उठता है। इसमें अन्तर्जातीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय प्रणय-सम्बन्ध को मान्यता प्रदान की गई है। उपन्यास की नायिका जापानी युवती जोशुई और नायक एलेन जो अमरीका निवासी है, विश्व मैत्री और विश्व-प्रेम सम्बन्धी पावन भावना के प्रतीक हैं इसका प्रकाशन हुआ है **अशोक प्रकाशन, लखनऊ** से और मूल्य है ५।।) । क्या ही अच्छा होता यदि छपाई, कागज़ और बाइंडिंग की तरह ही आवरण-पृष्ठ भी सुरुचिपूर्ण होता !

* * *

राह न रुकी : 'मुर्दों का टीला' तथा 'कब तक पुकारूँ'- जैसे उत्कृष्ट उपन्यासों के लेखक डॉ० रांगेय राघव का सद्यःप्रकाशित नया उपन्यास है। नया यह अपने शिल्प में भी है और वस्तु में भी। इसका कथानक ऐतिहासिक भले ही है, लेकिन जिन मानव-समस्याओं के समाधान के लिए इसके पात्र संघर्ष-रत हैं वे शाश्वत हैं तब भी थीं और अब भी हैं। डॉ० रांगेय राघव की यह कृति रोचक होने के कारण पठनीय तो है ही, साथ ही प्रेरणाप्रद तथा ज्ञान-वर्द्धक होने के कारण संग्रहणीय भी है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से और मूल्य है ३) ।

* * *

अनोखी तृप्ति : ओलिवर गोल्डस्मिथ के विख्यात अंग्रेजी उपन्यास "The Vicar of Wakefield" का श्री शिवकण्ठ त्रिवेदी द्वारा प्रस्तुत किया गया सफल हिन्दी-रूपान्तर है। वैसे यह उपन्यास लिखा तो ग्यारहवीं शताब्दी में गया था लेकिन आज भी इसके शिल्प और कथानक में बासीपन नहीं आया है। इस उपन्यास के पात्र और गाँवों तथा नगर के जीवन के चित्रण इतने सजीव हैं कि लगता है जैसे कोई सदियों पहले बनाई गई डाक्युमेन्ट्री फ़िल्म देख रहे हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **अशोक प्रकाशन, लखनऊ** से और मूल्य है ४) ।

* * *

अमरनाथ : प्रेमचन्द के 'मंगलसूत्र' और जयशंकर प्रसाद के 'इरावती' की तरह ही शरत् बाबू का अन्तिम और अधूरा उपन्यास है। इसके अनुवादक हैं श्री दर्शन' और प्रकाशन हुआ है **वोरा एण्ड कम्पनी,** बम्बई से। प्रकाशक की ओर से बताया गया है कि 'शरत् बाबू के एक मित्र श्री ननीमाधव बंदोपाध्याय से परामर्श करके इसे अपनी शक्ति और कल्पनानुसार यथासम्भव उचित रूप में पूर्ण किया गया है। किसके द्वारा पूरा किया गया है इसे स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं समझी गई। कुछ भी हो शरत् बाबू की इस अन्तिम कृति का इतना सुरुचिपूर्ण हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक बधाई के पात्र हैं और साथ ही वे अज्ञात पूर्तिकर्ता महोदय भी, क्योंकि पूरक अंश भले ही उतना प्रभावपूर्ण न बन पड़ा हो लेकिन पूरा उपन्यास पढ़ जाने पर कहीं भी पाठक को झटका नहीं लगता। मुखपृष्ठ का चित्र अत्यन्त सादा, प्रतीकात्मक तथा सुरुचिपूर्ण है। मूल्य २) ।

* * *

पक्षी और आकाश : डॉ० रांगेय राघव का नव प्रकाशित ऐतिहासिक उपन्यास है। आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व की कथा कहने वाले इस लघु उपन्यास में तत्कालीन भारत के सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक और राजनीतिक वातावरण तथा उस युग के संघर्षमय जीवन के घात-प्रतिघातों का अत्यन्त सजीव चित्रण हुआ है। मानव-जीवन की समस्याएँ आकाश की तरह अनन्त हैं और मानव स्वयं एक नन्हे पक्षी की तरह नितान्त निरीह और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकिंचन। उपन्यासकार ने इस सूत्र को ही कलात्मक ढंग से इस उपन्यास का आधारबिन्दु बनाया है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से और मूल्य है ४) रु०।

* * *

श्यामा : नारी-जीवन की विभिन्न समस्याओं पर सहानुभूतिपूर्ण ढंग से प्रकाश डालने वाला एक सुधारपरक सामाजिक उपन्यास है। लेखक ने इस उपन्यास में बड़ी कुशलतापूर्वक अश्लीलता से अपना दामन बचाया है। कथानक रोचक होते हुए भी भाषा की अलंकारिकता के कारण शैली कुछ बोझिल हो गई है। इसके लेखक हैं श्री त्रिभुवन पति सिंह और प्रकाशन हुआ है **मिश्रा पुस्तक भण्डार, कलकत्ता—७** से। मूल्य ३॥)।

* * *

ज़नानी ड्योढ़ी : अमरीका की सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका श्रीमती पर्ल बक के विश्वविख्यात अंग्रेजी उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर है। इस उपन्यास में कुशल लेखिका ने चीन के गृहस्थ जीवन और रीति-रिवाजों का अद्भुत चित्रण प्रस्तुत किगा है। हिन्दी के विख्यात कथाकार श्री यशपाल ने इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते समय मौलिक जैसा प्रभाव उत्पन्न कर दिया है। इसका प्रकाशन हुआ है **अशोक प्रकाशन, लखनऊ** से और मूल्य है ७॥)।

* * *

नाटक

नये हाथ : श्री विनोद रस्तौगी का एक सामाजिक नाटक है। लेखक ने इसे पूर्णतया स्टेज करने की दृष्टि से ही लिखा है। इसी का ज्वलन्त प्रमाण यह है कि प्रकाशन से पूर्व यह नाटक कलकत्ता में दो बार अभिनीत होकर वहीं के 'थियेटर सेण्टर' द्वारा पुरस्कृत भी हो चुका है। इस नाटक की एक विशेषता यह भी है कि सम्पूर्ण नाटक एक ही सैटिंग से अभिनीत किया जा सकता है, बार-बार पर्दा उठाने-गिराने का झंझट नहीं करना पड़ता। क्राउन साइज़ के ११४ पृष्ठ का यह सजिल्द नाटक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने प्रकाशित किया है और वहीं से दो रुपये में मिल सकता है।

* * *

उधार का पति : श्री मा० धो० ताम्हणकर के 'उसना नवरा' नामक मराठी नाटक का हिन्दी रूपान्तर है। रूपान्तर किया है सुश्री वनमाला भावालकर ने। इसमें मनोविज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार आज के खिलाड़ी वृत्ति के युवक-युवतियों के जीवन का चित्रण किया है। यह एक प्रहसन है। इसमें इस बात का ही चित्रण किया गया है कि जब लोग किन्हीं अप्रत्याशित घटनाओं की उलझन में फँस जाते हैं, तब उससे किस प्रकार बाहर निकलते हैं। क्राउन साइज के ५८ पृष्ठ का यह सजिल्द नाटक **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित हुआ है और एक रुपये में मिलता है।

* * *

कविता

आरती और अंगारे : हिन्दी के अत्यन्त लोकप्रिय गीतकार श्री बच्चन के नये गीतों का बृहत् संग्रह है जिसमें उनके १६५० से लेकर १६५७ तक के कुल १०० गीत संग्रहीत हैं। वैसे अब स्वयं बच्चन जी भी यदा-कदा 'नयी कविता' (ऐसी कविता जो कविप्रिय भले ही हो लोकप्रिय किंचित् भी नहीं) लिखने लगे हैं, लेकिन प्रस्तुत संग्रह में उन्होंने विशुद्ध गीत ही दिये हैं। इन गीतों को पढ़कर एक बार फिर गीतों के प्रति मन में आस्था जाग पड़ती है और उन लोगों के नारे बिलकुल खोखले-से लगने लगते हैं जो गला फाड़-फाड़कर कहते फिरते हैं कि अब गीतों का जमाना गया। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से और मूल्य है ४) रु०।

* * *

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ने इधर बच्चन जी की तीन काव्य-कृतियों के नये संस्करण प्रस्तुत किये हैं। पहली कृति है **'हलाहल'**। 'मधुशाला' के समान हलाहल भी प्रबन्धात्मक चौपदों का संग्रह है। अपने भावावेग तथा अनुभूति की गहराई में भी यह किसी तरह मधुशाला से कम नहीं है। इसका मूल्य है २·५०। दूसरी कृति है **'आकुल अन्तर'**। 'एकान्त संगीत' और 'निशानिमन्त्रण'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तरह ही 'आकुल अन्तर' के गीतों में भी अवसाद की छाया भासित होती है। बच्चन के हृदय की विकलता ने इन गीतों में साकार रूप धारण किया है। इसमें ७१ गीत संग्रहीत हैं और इसके नये संस्करण का मूल्य है २·५०। तीसरी कृति **'सूत की माला'** है। बच्चन जी इस कृति में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बलिदान से सम्बन्धित १११ गीत संग्रहीत हैं। इन गीतों की अनुभूति इतनी गहरी और करुण है कि पढ़कर बरबस आँखें नम हो जाती हैं और दिल भर आता है। इसका मूल्य भी २·५० रु० ही है।

* * *

मेरे गीत : में श्री ललित गोस्वामी के १०० सुगम तथा गेय गीतों का संग्रह है। इसका प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** की ओर से हुआ है। कवि के ये सब गीत आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से समय-समय पर प्रसारित होते रहे हैं। प्रारम्भ में हिन्दी के प्रख्यात कवि श्री नरेन्द्र शर्मा की प्रस्तावना और सर्वश्री भगवतीचरण वर्मा और उदयशंकरभट्ट की सम्मतियाँ भी प्रकाशित हैं। क्राउन साइज के ११६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक २ रुपये में प्राप्त होती है।

* * *

नवीन गीत : में भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर द्वारा पंचवर्षीय योजना के कार्यों के प्रचार और प्रसार के लिए पुरातन लोकगीतों की धुनों के अनुसार प्रस्तुत कुछ राजस्थानी गीतों का संग्रह किया गया है। इस पुस्तक में समाविष्ट आरम्भ के ८ गीत श्री पुरुषोत्तम मेनारिया और शेष ७ गीत श्री लक्ष्मीनारायण द्वारा रचित हैं। साथ ही इन गीतों का हिन्दी-गद्यानुवाद भी दे दिया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन **सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान जयपुर** ने किया है और वहीं से २५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

नया कवि : नयी कविता में प्रिंस सतीश प्रेमी की कुछ कविताओं का संग्रह है। इसका प्रकाशन **हरि प्रकाशन, पठानकोट** द्वारा हुआ है। क्राउन साइज़ के ३२ पृष्ठ की इस पुस्तिका का मूल्य एक रुपया है।

* * *

नई रागनी में श्री सुमनेश जोशी की १५ राष्ट्र-निर्माणकारी कविताओं का संग्रह है। इसका प्रकाशन **सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान, जयपुर** की ओर से हुआ है। सभी कविताएँ गेय और प्रेरणादायक हैं। डिमाई साइज़ के २४ पृष्ठ की यह पुस्तिका २५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थशास्त्र : बी० ए० कक्षा के छात्रों के लिए एक अनुपम देन है। भारत के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री श्री जी० बी० जथार और उनके सुपुत्र श्री के० जी० जथार द्वारा लिखे गए इस उपयोगी ग्रन्थ में ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन से लेकर राष्ट्रीय प्रगति और उथल-पुथल के बाद के आर्थिक क्षेत्र के दृश्य तक का चित्रण है। भारतीय अर्थ-व्यवस्था का कोई भी अंग लेखकों की सूक्ष्म दृष्टि से छूट नहीं सका है। इस बात का भी पूरा प्रयत्न किया गया है कि केवल अद्यतन आँकड़े ही लिये जायँ और हाल की प्रवृत्तियों का ठीक-ठीक चित्रण हो। इसका हिन्दी रूपान्तर प्रयाग विश्वविद्यालय के श्री कुशवाहा ने किया है जो स्वयं अर्थशास्त्र के उद्भट ज्ञाता हैं। विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए तो पुस्तक उपयोगी है ही, लेकिन पंचवर्षीय योजनाओं की आर्थिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवरण दे दिये जाने के कारण यह ग्रन्थ हिन्दी के प्रत्येक जागरूक पाठक के लिए संग्रहणीय बन गई है। अन्त में दिये गए पारिभाषिक शब्दावली सम्बन्धी परिशिष्ट ने पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ा दी है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है १०) रु०।

* * *

बाल-साहित्य, प्रौढ़-साहित्य

एटम की कहानी : एक बालोपयोगी, रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक पुस्तक है। इसमें बड़ी ही सरल भाषा में स्थान-स्थान पर चित्रों का उपयोग करके परमाणु और परमाणु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

मां और मुन्ना

प्रिन्सिपल हरिश्चन्द्र एम० ए०

मूल्य २·५० रु०

यथार्थ और कल्पना

[हिन्दी की प्रतिनिधि कहानियों का संकलन]

प्रो० विराज एम० ए० मूल्य ४·५० रु०

किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएँ

रॉबिन्सन क्रूसो

खजाने की खोज में

कठपुतला

अनुवादक :—
श्रीकांत व्यास
मूल्य
१·५० रु०

आज के उर्दू शायर

सरदार जाफरी : जीवनी और संकलन

मूल्य १·५० रु०

राजपाल एण्ड सन्ज़

कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिए हमारा स्थायी साहित्य

आलोचनात्मक व साहित्यिक

१—कुछ उथले कुछ गहरे — बा० गुलाबराय ५)
२—निराला — डॉ० रामविलास शर्मा ३)
३—सूर की झाँकी — डॉ० सत्येन्द्र ६)

अमूल्य ऐतिहासिक ग्रन्थ

१—दिल्ली सल्तनत — डॉ० आशीर्वादीलाल
(७११-१५२६) द्वितीय संस्करण — श्रीवास्तव ८)
अंग्रेज़ी संस्करण १०)

२—मुगलकालीन भारत
डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव १०)
(१५२६-१८००) द्वितीय संस्करण
अंग्रेजी संस्करण ८)

३—भारतीय संस्कृति का इतिहास
डॉ० मथुरालाल शर्मा ६)

४—राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास
श्री मन्मथनाथ गुप्त ६)

५—A Short History of Akbar the Great :
Dr. A. L. Srivastava ३॥)

राजनीति

१—द्वैतशासन से स्वराज्य की ओर
डॉ० इकबाल नारायन ६)

२—From Dyarchy to Self Govt.
Dr. I. N. Srivastava ४)

जीवनियाँ

१—My Search for Truth
Dr. S. Radha Krishnan १॥)
(2nd Edition)

२—Netaji Ed. by Shri Ram Sharma २०)
(A Grand Souvenir Volume printed on art paper and contains nearly 100 rare photos on real art paper. Recommended for Libraries by the Governments of U. P., Punjab and Bombay.)

ऐतिहासिक अनुसन्धान ग्रन्थ

१—अवध के प्रथम दो नवाब
डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव १२॥)

२—A Study in Maratha Diplomacy
Dr. S. P. Verma १५)

३—Mewar & the Mughal Emperors
Dr. G. N. Sharma १२॥)

४—The First two Nawabs of Awadh
Dr. A. L Srivastava १२॥)

५—Some Aspects of Society & Culture in Mughal Age. Dr. P. N. Chopra ८)

६—History and Administration of the North-Western Provinces (1303-1856)
Dr. Dharma Bhanu १५)

शिक्षा

शिक्षालय व्यवस्था — एम० एल० जैन ३)

अर्थशास्त्र

गांधीवादी योजना — श्रीमन्नारायण अग्रवाल २॥)
भूमिका-लेखक महात्मा गांधी (तृतीय संस्करण)

गृह विज्ञान

सुव्यवस्थित गृह — श्रीमती एस० पी० सुखिया
व श्रीमती जी० पी० शौरी (द्वितीय संस्करण) २॥)

नागरिक शास्त्र

१—नागरिक शास्त्र दर्शन — विष्णुनरायन वर्मा
व इकबाल नरायन (तृतीय संस्करण) ५)

२—हमारा संविधान तथा नागरिक जीवन
इकबाल नरायन ५)

दर्शन शास्त्र

१—Introduction to Philosophy
Dr. K. S. Verma ४॥)

२—गांधी और गांधीवाद — डॉ० पट्टाभि सीतारमैया ५)

बाल साहित्य

१—देश की झाँकी — डॉ० राजेन्द्रप्रसाद चतुर्वेदी ॥।)
२—नये राष्ट्र का जन्म — राजेन्द्रसिंह रघुवंशी ॥।)
३—हमारा निर्माण — डॉ० राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी ॥।)
४—उनका पथ हमारा निर्माण — फूलचन्द सारंग ॥)

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति के बारे में अत्यन्त उपयोगी जानकारी प्रस्तुत की गई है। जान लेवलेन द्वारा लिखी गई इस अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद प्रस्तुत किया है श्री शिवराज एम॰ ए॰ ने। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से मूल्य है १)।

* * *

इधर **भारती भण्डार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद** की ओर से छोटे बच्चों के लिए दो उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। ये पुस्तकें लोक-शिक्षण माला के अन्तर्गत प्रस्तुत की गई हैं। पहली पुस्तक **कपड़े की कहानी** में अत्यन्त सरल भाषा तथा रोचक शैली में छोटे-छोटे पदों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि आदिम युग से लेकर अब तक मनुष्य ने अपना तन ढकने तथा सर्दी-गर्मी से बचने के लिए कब-कब किन-किन चीजों का इस्तेमाल किया और कैसे पेड़ों के पत्तों से लेकर मिल के बने हुए ऊनी, सूती तथा रेशमी कपड़ों तक की प्रगति सम्भव हुई। इसी तरह दूसरी पुस्तक **'हमारी नाव चली'** में जल यात्रा के साधनों की क्रमिक प्रगति की कहानी है। प्राच्य तथा पाश्चात्य आलोचना-शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान् तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध हास्यरस लेखक स्व॰ डॉ॰ एस॰ पी॰ खत्री ने इन छोटी-छोटी पुस्तकों के रूप में गागर में सागर का उदाहरण उपस्थित किया है। बहुरंगे तथा आकर्षक मुखपृष्ठ तथा स्थान-स्थान पर दिये गए रंगीन चित्रों के कारण ये पुस्तकें और भी उपयोगी बन गई हैं। नन्हे-मुन्नों को ये पुस्तकें अवश्य पसन्द आयेंगी इसमें सन्देह नहीं। प्रत्येक का मूल्य १)।

* * *

कुमाऊँ की लोक-कथाएँ में श्री रमेश मटियानी 'शैलेश' द्वारा लिखित, कुमायूँनी लोक-कथाएँ संग्रहीत हैं। इसका प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** ने अपनी लोक-कथा-माला के अन्तर्गत किया है। कापी साइज के ५० पृष्ठ की यह सचित्र पुस्तक प्रकाशक से डेढ़ रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

बकरी माँ श्री दयाशंकर मिश्र 'दद्दा' की एक सचित्र बालोपयोगी कहानी है। इसका मुद्रण और प्रकाशन अच्छा हुआ है। बच्चे इसे बड़ी रुचि से पढ़ेंगे। **आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक ५० नये पैसे में मिलती है।

* * *

राजस्थान की कला का प्रकाशन **सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान, जयपुर** द्वारा हुआ है। इसमें चित्रकला, छपाई और रंगाई का काम, मीनाकारी, जवाहरात का काम, स्थापत्य-कला पर सर्वश्री रामगोपाल विजयवर्गीय, ए॰ के॰ राय, बी॰ डी॰ चोपड़ा, मोतीचन्द खजांची तथा सत्यप्रकाश के लेख प्रकाशित हैं। डिमाई साइज के ३२ पृष्ठ की यह पुस्तिका आठ आने में मिल सकती है। पुस्तक में कई उपयोगी चित्र भी दे दिये गए हैं।

* * *

आलोचना, निबन्ध

मूल्य और मीमांसा : श्री कुमार विमल के १५ आलोचनात्मक निबन्धों का संग्रह है। इन निबन्धों में लेखक ने साहित्य के अनेक रूपों और प्रश्नों तथा हिन्दी की कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों तथा प्रवृत्तियों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया है। संधी हुई शैली तथा संयत विचारों के कारण ये निबन्ध साहित्य के विद्यार्थियों को एक दिशा-संकेत देने में तो सक्षम हैं ही साथ ही सामान्य पाठक भी इस ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे इसमें सन्देह नहीं। सफाई-छपाई सभी कुछ सुरुचिपूर्ण है। इसका प्रकाशन हुआ है **पुस्तकायन, मुंगेर** से और मूल्य है ४)।

* * *

सूर सारावली : नामक ग्रन्थ का सम्पादन ब्रज भाषा और उसके साहित्य के मर्मज्ञ श्री प्रभुदयाल मीतल ने किया है और इसका प्रकाशन **अग्रवाल प्रेस, मथुरा** द्वारा हुआ है। इसमें विद्वान् लेखक की ६४ पृष्ठ की विशद भूमिका भी समाविष्ट है, जिसमें उसने अब तक सभी उपलब्ध प्रतियों के आधार पर उसे सम्पादित किया है। यथास्थान पाठान्तर भी दे दिये गए हैं। भूमिका में श्री मीतल ने प्राचीन प्रतियों की खोज, आधार-प्रतियों का परिचय, आधार-प्रतियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवेचन, रचना का संक्षिप्त परिचय, प्रामाणिकता की परीक्षा, रचयिता और उसकी नाम-छाप, भाव-भाषा और शैली की समानता, 'तत्त्व' और 'लीला-भेद' का स्पष्टीकरण, हरिलीला-दर्शन का अभिप्राय, कथावस्तु की रूपरेखा, होली-गान, परब्रह्म की नित्य लीला, वैष्णव भक्ति और पुष्टि सम्प्रदायी सेवा आदि विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत सूर के काव्य की विशद विवेचना प्रस्तुत की है। अन्त में ९० पृष्ठों में सारावली के प्रामाणिक पदों का संकलन भी कर दिया गया है। ब्रज साहित्य और विशेषतः सूर के काव्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक सर्वथा संग्राह्य है। डिमाई साइज़ के १५४ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक ३॥) में मिलती है।

* * *

चन्द सखी की जीवनी और पदावली : में श्री प्रभुदयाल मीतल ने राजस्थानी, बुन्देलखण्डी, मालवी और ब्रज भाषा के प्राचीन कवि चन्द सखी के ब्रजभाषा के भजनों और लोकगीतों का प्रामाणिक संकलन प्रस्तुत करके प्रारम्भ में ७० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में उनके काव्य और जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला है। पुस्तक के 'जीवनी' और 'पदावली' नामक दो खण्ड हैं। क्राउन साइज़ के १२४ पृष्ठ की यह पुस्तक **अ० भा० ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा** की ओर से प्रकाशित हुई है और १॥) में मिल सकती है।

* * *

शिक्षा-विज्ञान

शिक्षा-दर्शन की भूमिका—अमरीका के महान् शिक्षा-शास्त्री जॉन ड्यूई के विख्यात ग्रन्थ 'Democracy and Education' का श्री सुरेन्द्रपालसिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया सफल हिन्दी रूपान्तर है। प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने प्रजातन्त्रात्मक दृष्टिकोण से जन-शिक्षा के क्रियात्मक उद्देश्यों तथा उनका विस्तृत विश्लेषण करने के साथ-साथ उन पुराने सिद्धान्तों की युक्तिसंगत आलोचना भी प्रस्तुत की है जो आज प्रजातन्त्रात्मक-आदर्श की पूर्ण-प्राप्ति में बाधक हैं। शिक्षा के सम्बन्ध में लेखक विचार, प्रजातन्त्र के अभ्युदय तथा विज्ञान की प्रयोगात्मक विधि एवं प्राणि-शास्त्रीय विकासवादी सिद्धान्त के विकास और व्यावसायिक पुनर्निर्माण में सामञ्जस्य स्थापित करते हैं। साथ ही इन विकासों के कारण, शिक्षा की विषय-सामग्री में उत्पन्न परिवर्तनों को भी व्यक्त करते हैं। इस उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है **लीडर प्रेस, इलाहाबाद** से और मूल्य है १० रुपया।

* * *

दर्शन

अमरीकी दर्शन और दार्शनिक : सुप्रसिद्ध दर्शनशास्त्री जोसेफ़ एल० ब्लो के ग्रन्थ 'Men and Women in American Philosophy' का हिन्दी रूपान्तर है। जैसा कि पुस्तक के नाम से ही स्पष्ट है विद्वान् लेखक ने अपने इस ग्रन्थ में अमरीका की प्रमुख दार्शनिक प्रतिभाओं और उनकी विचारधाराओं का सम्यक् अध्ययन, विश्लेषण और मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। श्री राधेश्याम पाठक ने मूल लेखक के सूक्ष्म आशयों तथा पारिभाषिक शब्दों का अनुवाद प्रस्तुत करते समय पर्याप्त सतर्कता बरती है। सफ़ाई-छपाई साफ़-सुथरी है। इसका प्रकाशन हुआ है **लीडर प्रेस, इलाहाबाद** से और मूल्य है १०)।

* * *

आत्मकथा

आत्म कथा : नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्म-कथा' नामक ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद है। अनुवादक हैं श्री काशिनाथ त्रिवेदी। अनुवाद की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में प्रकाशन ने 'निवेदन' में लिखा है— "अनुवादक को साबरमती आश्रम में कुछ समय तक गांधीजी की छाया में रहने का मौका मिला था और जो गांधीजी के जीवन-काल में वर्षों तक 'हिन्दी नवजीवन' तथा 'हरिजन सेवक' के सम्पादन का कार्य कर चुके हैं।" अनुवाद प्रामाणिक होगा ऐसी हमें आशा है। प्रत्येक पाठक के लिए यह ग्रन्थ उपादेय है। क्राउन साइज़ के

(शेष पृष्ठ ३४२ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

अग्रवाल प्रेस, मथुरा
—सूरदास मदनमोहन, श्री प्रभुदयाल मीतल
—गो० हरिराय जी, श्री प्रभुदयाल मीतल
आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—भूगोल के भौतिक आधार, पु० मु०, श्री रामस्वरूप वशिष्ठ
—चित्रज्ञान का सारांश, जमादार रामकंवार
—मनोरम कश्मीर, श्री मोहन कृष्ण दर
—इन्सान कभी नहीं हारा, श्रीमती सावित्री देवी वर्मा
गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा
—दारा शिकोह, श्री कानूनगो
—मन की मौज, पं० हरिशंकर शर्मा
—शैशव, श्री वीरेन्द्र 'मृदु', बालोपयोगी
—कांग्रेस की देश-सेवा, पु० मु०, श्री एल जी नेने
—समुद्र परी, पु० मु०
—अद्भुत कहानियां, पु० मु०
भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली
—भावुकता का मूल्य, पु० मु०, श्री गुरुदत्त
मंगल प्रकाशन, जयपुर
—विचारों की धारा, डॉ० देवराज उपाध्याय
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
—अजन्ता के चित्रकूट, श्री रायकृष्णदास व आनन्दकृष्ण
—तुम बड़ी पागल हो, कु० मालती परूलकर
—अपभ्रंश व्याकरण, आचार्य हेमचन्द्र, अनु० शालिग्राम उपाध्याय
—अक्षरों का आरम्भ, आग़ा हैदर हुसैन
—काल सुन्दरी, श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव
—सरल मनोविज्ञान, पु० मु०, श्री हंसराज भाटिया
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
—मनोविश्लेषण, फ्रायड्, अनु० श्री देवेन्द्र कुमार विद्यालंकार
—आज के उर्दू शायर, सम्पा० श्री प्रकाश पण्डित
रूप कमल प्रकाशन, दिल्ली
—मनोविज्ञान द्वारा सफल जीवन, श्री शैलेन्द्र कुमार पाठक
लखनऊ विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ
—आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द-योजना, डॉ० पुत्तूलाल शुक्ल
—परिचयी साहित्य, डॉ० त्रिलोकी नारायण दीक्षित
—कनौजी लोकगीत, श्री सन्तराम अनिल
लोक-चेतना प्रकाशन, जबलपुर
—कोइलिया बोली रे, श्री श्रीचन्द्र जैन, लोकगीत
सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
—घिरि आई बदरिया सावन की, श्री श्रीचन्द्र जैन, लोकगीत
—बाल लोक-कथाएँ, श्री श्रीचन्द्र जैन
—तुलसी, डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित
—चन्द्रावली नाटिका, श्री श्रीकृष्ण वर्मा
—चन्दा, श्री रामप्रसाद ग़ाफ़िल
सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद
—रोटी रोज़ी और प्यार, श्री सुरेश
—और चिराग बुझ गया, पु० मु०, श्री सुरेश
—तूफान, ज़िन्दगी और बहार, पु० मु०, श्री सुरेश
—बड़े चाचा जी, टैगोर, अनु० प्रेम अग्रवाल
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई
—चतुर्मणी, अनु० डॉ० वासुदेवशरण व डॉ० मोतीचन्द्र
—कलाकार कैदी, ड्यूमा, अनु० श्री सिद्ध गोपालजी
—शेर की सवारी, श्री भवानी भट्टाचार्य
—राजस्थान का पिंगल साहित्य, श्री मोतीलाल मेनारिया
हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
—अलंकार विवेचन, श्री तिलकधर शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्च मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

जी० बी० जथार व के० जी०, जथार, **भारतीय अर्थशास्त्र**, ५६८, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, १०·००

आलोचना—कोष—निबन्ध—संस्कृति

गोपीनाथ तिवारी डॉ०, **ऐतिहासिक उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा**, १६०, क्रा०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा २·५०

प्रताप, **आधुनिक काव्य-संग्रह**, पु० मु०, १२०, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ २·००

प्रताप, **त्यागपत्र अध्ययन**, ६४, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ १·००

प्रभुदयाल मीतल, **चन्द सखी, जीवनी और पदावली** १३६, ड० क्रा०, अग्रवाल प्रेस, मथुरा १·५०

प्रभुदयाल मीतल, **सूर सारावली**, १६४, डि०, अग्रवाल प्रेस, मथुरा ३·५०

प्रेमनारायण, **काव्यांग परिचय**, पु० मु०, १४०, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ १·५०

प्रेमनारायण, **गबन : अध्ययन**, पु०मु०, १८०, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ २·००

ब्रह्मदत्त शर्मा, डॉ०, **हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन**, ५००, डि०, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा ८·००

भारत भूषण सरोज, **चन्द्रगुप्त समीक्षा**, ८२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली १·६५

लक्ष्मी नारायण टण्डन व रामखेलावन चौधरी, **आचार्य शुक्ल और त्रिवेणी**, पु० मु०, ११५, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ २·२५

इतिहास—भूगोल

अलक्जेण्डर किनलॉक फार्बस, अनु० गोपाल नारायण बहुरा, **रासमाला**, २६४, अंगल प्रकाशन, जयपुर ५·००

कृष्णदत्त वाजपेयी, **ब्रज का इतिहास द्वितीय खण्ड**, ५४०, डि०, अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा ८·००

मदन गोपाल, **अफ्रीका**, ७६, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २·००

हरिदत्त वेदालंकार, **भारतीय संस्कृति का संक्षिप्त इतिहास**, पु० मु०, १९६, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २·३०

उपन्यास

गुरुदत्त, **गुण्ठन**, पु० मु०, ३५६, क्रा०, भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली ५·००

चतुरसेन शास्त्री, **अपराजिता**, पु० मु०, १४८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २·००

टैगोर, अनु० प्रेम अग्रवाल, **कौन किसी का**, पु० मु०, १३२, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २·००

टैगोर, अनु० प्रेम अग्रवाल, **बहूरानी**, पु० मु०, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २·२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलदेवदत्त शर्मा, धरती की पुकार, २१२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	३·००
शरत, अनु० शशि अग्रवाल, छुटकारा, पु० मु०, ७८, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद	१·२५
शरत, अनु० प्रेम अग्रवाल, देहाती समाज, पु० मु०, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद	२·२५
शौकत थानवी, अनु० प्रेम अग्रवाल, सपने, १०८, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद	१·७५
हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०, मेघदूत एक पुरानी कहानी, २१८, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	३·००
हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ०, बाणभट्ट की आत्मकथा पु० मु०, ३२८, क्रा०, हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर प्राइवेट, लि० बम्बई	५·००

उर्दू शायरी

प्रकाश पण्डित, सरदार जाफ़री, जीवनी और संकलन, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१·५०
सागर निज़ामबादी, रस सागर, २६०, डि०, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लि०, बम्बई	५·००

कविता

जयनाथ नलिन, धरती के बोल, १२८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	३·५०

कहानी

विराज, सम्पा०, यथार्थ और कल्पना, ३००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	४·५०

नाटक

चिरंजीत, रंगारंग, १२८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२·२५
मुकुल कुमार सिन्हा, रात के आँसू, १२८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	२·००

बालोपयोगी—प्रौढ़ोपयोगी

आनन्द प्रकाशसिंह, सहकारी आन्दोलन, पु० मु०, ३६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	०.६०
इन्द्रनाथ भदान डॉ० लेनिन, पु० मु०, २४, कापी साइज़ राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	१.००
इन्दिरादेवी, देश की जानकारी, पु० मु०, ३५, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	०.५०
दयाशंकर मिश्र, बकरी माँ, १६, कापी साइज, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	०·५०
वृह्मवती नारंग, महान् भारतीय, पु० मु०, १६८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२·५०
मुनीश सक्सेना, पेड़ पौधे, पु० मु०, ३२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	०.६०
श्रीकान्त व्यास, ख़ज़ाने की खोज में, १००, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१·२५
श्रीकान्त व्यास, गुलीवर की यात्राएँ, १००, डि०, राजपाल एण्ड, सन्स दिल्ली	१·२५
श्रीकान्त व्यास, राबिन हुड, १००, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१·२५
श्रीकान्त व्यास, राबिन्सन क्रूसो, १००, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	१·२५
सूर्य कुमार जोशी, फल और सब्जियां, पु० मु०, ३१, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	०.६०

मनोविज्ञान—स्वास्थ्य

चाँद मोहम्मद, स्वास्थ्य और जीवन, १८४, क्रा०, आधुनिक साहित्य प्रकाशन, ब्यावर	३·००
जॉन कैनेडी, इच्छा शक्ति, ६४, क्रा०, रूपकमल प्रकाशन, दिल्ली	१·२५
जे० एम० ग्राहम, व्यक्तित्व, पु० मु०, ८०, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई	१.२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध

इरा एम० फ्रीमैन, १७२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२·००
कामताप्रसाद, **गांवों की सफाई**, ४८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन, मण्डल, पटना	०·७५
कामता प्रसाद, **नस्ल सुधार**, ४८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	०·७५
खलील जिब्रान, **जीवन दर्शन**, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड-सन्स, दिल्ली	१·५०
बृजबिहारी पांडे, **राष्ट्रीय प्रसार सेवा खण्ड उसके कार्य**, ४८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	०·७५
बृजबिहारी पांडे, **समाज शिक्षा एवं उसका नवीन रूप**, १२८, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय, प्रकाशन मण्डल, पटना	२·००
बृह्मदेव गुप्त, **कृषि यन्त्र शास्त्र**, ६८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२·००
मानिकसिंह, डॉ०, **व्यावहारिक परिवार नियोजन**, १३४, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	२·५०
मुकुल कुमार सिन्हा, **गोल गोलगप्पा**, ८०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	१·२५
रमाशंकर पांडे, **विकास गीत**, ४८ क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना	०·७५
हरिश्चन्द्र, **मां और मुन्ना**, १६४, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली	२·५०

(पृष्ठ ३३८ का शेष)

४४० पृष्ठ का यह ग्रन्थ प्रकाशक से केवल डेढ़ रुपये में मिल सकता है।

* * *

इतिहास

रासमाला : अलक्जेण्डर किन्लॉक फार्बस द्वारा रचित ग्रन्थ का अनुवाद है। अनुवादक हैं श्री गोपालनारायण बहुरा। यह ग्रन्थ गुजरात के मध्यकालीन इतिहास से सम्बन्ध रखता है। इसमें वर्णित तथ्य ऐतिहासिक कसौटी पर भले ही खरे न उतरते हों, लेकिन उनका सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व अवश्य है। इतिहास के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक पठनीय है। क्राउन साइज़ के २४८ पृष्ठ की यह पुस्तक **मंगल प्रकाशन, जयपुर** की ओर से प्रकाशित हुई है और वहीं से पाँच रुपये में मिलती है।

* * *

राजनीति

प्रशासन शब्दावली : में श्री विराज एम० ए० ने उन अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द दिये हैं जो दैनिक शासन और कार-बार के काम में आते हैं। यह पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए 'गाइड' का काम दे सकेगी। क्राउन साइज़ के १३० पृष्ठ की यह सुमुद्रित पुस्तक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से डेढ़ रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

लोककथा

नटो तो कहो मत : डॉ० कन्हैयालाल सहल की एक लोक-कथा-कृति है। इसमें उन्होंने राजस्थान में प्रचलित लोक-कथाओं में कुछ प्रेरक अभिप्रायों का विवेचन करके मूल भावों के निदर्शनार्थ राजस्थानी लोक-कथाओं के उदाहरण भी दिये हैं। इसका प्रकाशन **वानर प्रकाशन, जयपुर** द्वारा हुआ है और वहीं से सवा रुपये में मिल सकती है। लोक-कथा-साहित्य के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक बड़े काम की सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

* * *

एकांकी

पृथ्वीपुत्रों की जयमाला : श्री सुमनेश जोशी द्वारा लिखित श्रमदान की विवेचना करने वाला एक भावपूर्ण एकांकी है। इसका प्रकाशन **सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, राजस्थान** ने किया है। प्रौढ़ों और नवसाक्षरों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी नाटक है। डिमाई साइज़ के ४८ पृष्ठ की यह पुस्तिका ५० नये पैसे में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-लेखक-चित्रावली

हिन्दी के मूर्धन्य लेखकों का प्रथम फोटो-एलबम। उत्कृष्ट विदेशी आर्ट पेपर पर प्रकाशित १०" × १५" के २५ चित्रों का संग्रह। बढ़िया पोर्टफोलियो में सुरक्षित। मूल्य १२ रुपये ५० नये पैसे।

निम्नलिखित लेखकों के चित्र इस चित्रावली में प्रकाशित किये जा रहे हैं :

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ० श्यामसुन्दरदास, श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्री जयशंकर प्रसाद, श्री प्रेमचन्द, श्री राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री सुमित्रानन्दन पन्त, श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री रामधारी सिंह दिनकर, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री जैनेन्द्रकुमार, श्री वृन्दावनलाल वर्मा, श्री रामवृक्ष बेनीपुरी, श्री इलाचन्द्र जोशी, श्री भगवतीचरण वर्मा, श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र, श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन, श्री यशपाल, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क।

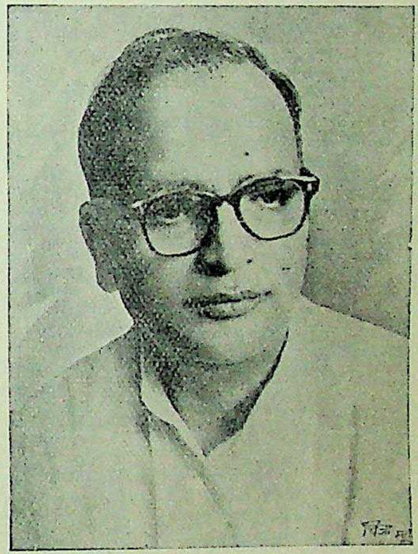

'हिन्दी-लेखक-चित्रावली' का मूल्य—प्रकाशन-तिथि से पूर्व प्राप्त आर्डरों पर—११ रुपये ५० नये पैसे।

साधारण मूल्य—१२ रुपये ५० नये पैसे।

राजकुमार प्रकाशन, प्रयाग की ओर से प्रकाशक

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लि०,

दिल्ली-७ : बम्बई-१ : इलाहाबाद-१ : पटना-६ : मद्रास-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No. D—594

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

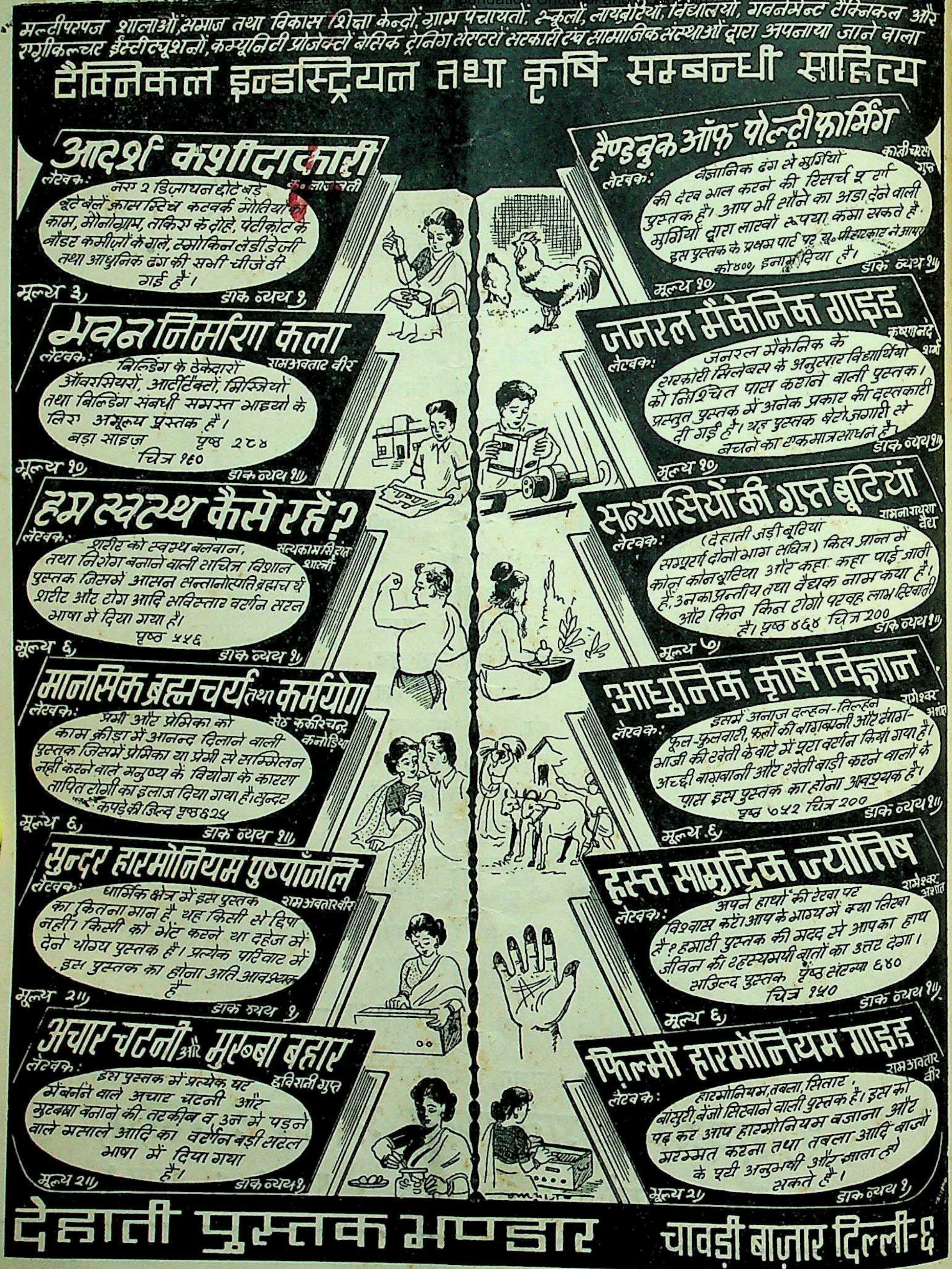

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष ५ | मई, १९५८ | अंक ९

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10-5-58

प्रकाशन समाचार

वाचनालय, गुरुकुल कांगड़ी

वार्षिक रु० ३.०० | एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुँचाने वाला मासिक

राजकमल प्रकाशन

निम्न नई पुस्तकें इसी मास प्रकाशित हो रही हैं

मध्यकालीन हिन्दी-गद्य :	श्री हरिमोहन श्रीवास्तव
प्राचीन भारत में विचार और विभूतियाँ :	डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी
रोड़े और पत्थर (उपन्यास) :	डॉ० देवराज
दूध-गाछ (उपन्यास) :	श्री देवेन्द्र सत्यार्थी
हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण :	डॉ० भोलानाथ तिवारी

निम्न पुस्तकें मई मास में ही पुनर्मुद्रित होंगी

हिन्दू सभ्यता :	डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी	७.५०
भारतीय संस्कृति :	प्रो० शिवदत्त ज्ञानी	५.५०
हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियां :	एतद्विषयक उत्कृष्ट निबन्धों का संग्रह	२.००
हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियां :	एतद्विषयक उत्कृष्ट निबन्धों का संग्रह	२.००
सरल मनोविज्ञान :	प्रो० हंसराज भाटिया	४.२५

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'खरे खोटे' के ख्याति-प्राप्त रचयिता

दक्षिण भारत के सर्वप्रथम हिन्दी उपन्यासकार

श्री ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' की नवीन रचना

'आदरणीय'

शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है

दो अन्य नवीन एवं अनुपम प्रकाशन

१. पथ की खोज (उपन्यास) • २. मेरी पसन्द (नाटक)

लेखक : हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार

श्री गुरुदत्त

पूर्ण सजधज के साथ छप रहे हैं।

हमारे प्रकाशन

१. विकृत छाया	मू०	४॥)	११. आवरण	मू०	५)
२. भावुकता का मूल्य	,,	६)	१२. कला	,,	५)
३. बहती रेता	,,	५)	१३. दासता के नए रूप	,,	६)
४. विश्वासघात	,,	५॥)	१४. पत्रलता	,,	७)
५. विडम्बना	,,	६)	१५. धरती और धन	,,	६)
६. देश की हत्या	,,	५॥)	१६. अन्तिम यात्रा	,,	१)
७. वाम मार्ग	,,	७)	१७. भूले-भटके	,,	३)
८. विलोम गति	,,	५)	१८. खरे-खोटे	,,	५)
९. गुण्ठन	,,	५)	१९. अलका (कविता-संग्रह)	,,	२॥)
१०. मानव	,,	५)			

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

सूचना :—भावुकता का मूल्य, देश की हत्या तथा गुण्ठन का द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ६ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हिन्दी के विधान-प्रदत्त राष्ट्रभाषा के पद को लेकर देश के अहिन्दी-प्रदेशों में काफ़ी क्षोभ दिखाई पड़ रहा है और देश की राजनीति पर पड़ने वाले इस विरोध के कुप्रभाव के प्रति आँखें बन्द नहीं की जा सकतीं। एक बड़ी सीमा तक यह विरोध रागात्मक है; इस रागात्मक विस्फोट के प्रतिकार की राह खोज निकालने का दायित्व राजनीतिज्ञों पर है। लेकिन हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिये जाने के विरोध में जो तर्क और युक्तियाँ दी जाती हैं, निस्सन्देह उनमें बल है। यदि हिन्दी-भाषी प्रदेशों के साहित्यिक, शिक्षक और प्रकाशक हिन्दी के अभावों की पूर्ति की कोई सुविचारित योजना बना सकें जिनकी ओर अहिन्दी-क्षेत्रों से निरन्तर अँगुली उठाई जाती है, तो वे हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के अनुरूप योग्यता, सामर्थ्य और गौरव देने में सहायक हो सकेंगे। हिन्दी के समर्थकों के मौखिक दावों से हिन्दी की निजी कमियाँ कभी पूरी नहीं होंगी।

विज्ञान की चरम उन्नति के इस युग में आज हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य का नितान्त अभाव है—भारत-सरकार द्वारा आयोजित हिन्दी में वैज्ञानिक साहित्य की प्रदर्शनियाँ भी इस सत्य पर पर्दा नहीं डाल सकतीं। विज्ञान के किसी भी पहलू पर हिन्दी में प्रामाणिक अनूदित अथवा मौलिक प्रकाशनों का अभाव है। समाजशास्त्र के विभिन्न विषयों पर थोड़ा-बहुत साहित्य अवश्य उपलब्ध है लेकिन उसमें भी तथ्यपूर्ण तथा अधिकृत कम है, थोथा और अनधिकृत अधिक।

आज हमारा देश जिस संक्रान्तिकाल से गुज़र रहा है और जिन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति का उद्देश्य उसके सामने है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि कविता, कहानी, उपन्यास आदि के ललित साहित्य को छापने में प्रकाशकों की शक्ति और समय का काफ़ी अपव्यय हो रहा है। निर्माणकाल में यदि निर्माणात्मक और सामाजिक दृष्टि से अधिक उपयोगी साहित्य के प्रकाशन का बन्धन हमने अपने ऊपर डाल लिया होता तो हमारी देश और समाज के प्रति दायित्व की सजग भावना का परिचय मिलता। लेकिन न केवल प्रकाशकों में, बल्कि सरकार द्वारा पालित-पोषित प्रकाशन-संस्थाओं में भी आज यह सजगता और दायित्व की भावना दीख पड़ रही है।

अखिल भारतीय हिन्दी-प्रकाशक संघ के एक शिष्टमण्डल ने दो वर्ष हुए हिन्दी-कमीशन के सम्मुख प्रस्तुत किये गए अपने प्रतिनिधित्व में हिन्दी के अभावों को स्वीकृत करते हुए एक ऐसी योजना की रूप-रेखा रखी थी जिसे मान लेने पर बहुत बड़े पैमाने पर हिन्दी को उन प्रकाशनों से भरा-पूरा जा सकता था जो उसे राष्ट्रभाषा का पद अधिकार से नहीं, उसकी योग्यता के बल पर दिला सकती थी। केन्द्र की तथा राज्यों की सरकारें लाखों रुपये देश में पुस्तकालय आन्दोलन को वृद्धि देने में खर्च कर रही हैं। **प्रकाशक संघ** के शिष्टमण्डल ने माँग की थी कि केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के तत्त्वावधान में तथा देश के गण्यमान्य शिक्षाविदों तथा विश्वविद्यालयों की सहायता से ऐसे सब विषयों एवं पुस्तकों की सूची तैयार की जाय जिनका हिन्दी में प्रकाशन, अनुवाद करके अथवा मौलिक लिखाए जाकर, होना नितान्त आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाण्डुलिपियों को तैयार करवाने का भार एक केन्द्रीय परिषद् पर रहे—इनके मुद्रण तथा प्रकाशन का भार बिना किसी प्रकार की आर्थिक सहायता दिये हुए प्रकाशकों पर डाल दिया जाय। सरकारें, जो लाखों रुपयों का एक बड़ा अंश देश-भर में फैले पुस्तकालयों के लिए कई दृष्टि से आपत्तिजनक साहित्य खरीदने में लगा रही हैं, पुस्तकालयों को दिये जाने वाले अनुदान को उन पुस्तकों की प्रतियाँ खरीदने में लगाए और यही पुस्तकें नकद सहायता के स्थान पर पुस्तकालयों में पहुँचा दी जायँ।

हिन्दी के समर्थकों का हित इस योजना को विस्तार से समझने में है। खोखले दावों और नारेबाज़ी का प्रभाव अधिक देर तक नहीं बना रह सकता है।

●

एक कलाकार की घायल स्मृतियों की कहानी

सिन्दूर की राख

संयोग और वियोग की अनुपम प्रेम-कहानी

ले० कश्मीरीलाल ज़ाकिर

'सिन्दूर की राख' एक सुन्दर, साहित्यिक रचना है और मेरी दृष्टि में ज़ाकिर की सर्वश्रेष्ठ कृति है।—कृष्णचन्द्र

'ज़ाकिर साहब की शैली अपने ढंग की निराली है।... इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।' —रजनी पनीकर

'सिन्दूर की राख' एक मर्द की चीख़ और एक प्रेमी की घायल भावनाओं की कहानी है, जिसे लेखक ने अपने ख़ून-भरे आँसुओं से काग़ज़ की सतह पर बिखेर दिया है।

साइज़ डेमी, आकर्षक तिरंगा आवरण, बढ़िया काग़ज़ व गेटअप, सुन्दर मुद्रण, मज़बूत जिल्द मू० रु० ३

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लिमिटेड,

३, राउण्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई-२

हिन्दी साहित्य में पहली बार

किशोर-साहित्य

[विश्व-साहित्य के अत्यन्त रोचक उपन्यास सरल भाषा में]

अनुवादक : श्रीकान्त व्यास

गुलिवर की यात्राएँ (GULLIVER'S TRAVELS)

खजाने की खोज में (TREASURE ISLAND)

रॉबिन्सन क्रूसो (ROBINSON CRUSOE)

कठपुतला (PINNOCHIO)

जादूनगरी (ALICE IN WONDERLAND)

डॉन क्विक्ज़ोट (DON QUIXOTE)

वीर सिपाही (IVANHOE)

रॉबिन हुड (ROBINHOOD)

प्रत्येक पुस्तक में

- अनेकों चित्र
- सरल मुहावरेदार भाषा
- मनोहारी तिरंगी जिल्द
- सुन्दर साफ़ छपाई
- आकर्षक रूपसज्जा

मूल्य प्रत्येक रु० १.५०

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

उत्तर प्रदेश सरकार प्रतिवर्ष उत्कृष्ट हिन्दी-रचनाओं पर ५०,००० रुपये का पुरस्कार दिया करती है। एक प्रेस-विज्ञप्ति के अनुसार प्रकाशकों से प्रार्थना की गई है कि उत्कृष्ट पुस्तकों की तीन-तीन प्रतियाँ सचिव, हिन्दी-समिति, सूचना-विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के पते पर रजिस्टर्ड डाक से १५ मई, १९५८ तक भेज दें। जो प्रकाशक अपनी पुस्तकें पुरस्कारार्थ भेजने को इच्छुक हों, उन्हें स्पष्ट शब्दों में अपना नाम, स्थायी पता, पुस्तक का विषय, पुस्तक मौलिक है अथवा अनूदित, लिखना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी उल्लेख कर देना चाहिए कि पुस्तक इससे पूर्व कहीं पुरस्कारार्थ भेजी गई थी या नहीं। प्रकाशित कृति की मुख्य विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन तथा प्रकाशन के प्रथम संस्करण की तिथि का उल्लेख भी कर देना चाहिए।

* * *

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी की एकेडेमिक कौंसिल ने अपनी ५ अप्रैल, ५८ की बैठक में त्रैवार्षिक डिग्री-कोर्स तथा प्री-यूनिवर्सिटी कोर्स के पाठ्यक्रमों की रूपरेखा निर्धारित कर ली। आर्ट्स तथा कॉमर्स के विद्यार्थियों के लिए साइन्स की सामान्य शिक्षा तथा साइन्स के विद्यार्थियों के नागरिक शास्त्र, भारतीय इतिहास की रूपरेखा, भूगोल, भारतीय संस्कृति आदि की सामान्य शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है।

* * *

छात्रों को यूनिवर्सिटी की ओर से ही पाठ्य-पुस्तकें पढ़ने के लिए मिलें तथा इस बात की देखभाल की जाय कि वे उन्हें निर्धारित समय में पढ़ें, ऐसी योजना बनारस हिन्दू-यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर श्री वी० एस० झा तैयार कर रहे हैं। उनका मत है कि छात्र अपनी पाठ्य-पुस्तकों को महंगा होने के कारण ख़रीद नहीं पाते। यूनिवर्सिटी से पुस्तकें मिलने पर इस बात का ध्यान भी रखा जा सकेगा कि वे पुस्तकों को अवश्य पढ़ें। यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में पाठ्य-पुस्तकों की काफ़ी प्रतियाँ रखी जाया करेंगी और अधिक अध्ययन-कक्षा तैयार कराए जायेंगे जहाँ अध्यापकों की निगरानी में बैठकर ही छात्र पुस्तकें पढ़ें।

* * *

मैसूर राज्य की विधान-सभा में राज्य के वित्त-मन्त्री श्री मरिअप्पा ने घोषणा की कि शीघ्र ही कुछ विशेष प्रकार की पुस्तकों की बिक्री से सेल्स-टैक्स हटा लिया जायगा।

* * *

मध्यप्रदेश राज्य के शिक्षा मन्त्री ने १२ अप्रैल, ५८ को भोपाल में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि शीघ्र ही त्रैवार्षिक डिग्री-कोर्स का आरम्भ राज्य में कर दिया जायगा। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में राज्य-सरकार की नीति राष्ट्रीयकरण की ओर जाने की है। पाठ्य-पुस्तकों और पाठ्यक्रम में काफ़ी परिवर्तन किया जा रहा है।

* * *

भारत सरकार ने १ अप्रैल, ५८ से पाठ्यक्रम तथा अन्य पुस्तकों में उपयोगी आने वाले न्यूज़ प्रिंट पर से कस्टम ड्यूटी हटा दी है। देश में भी ऐसे कागज़ से आबकारी ड्यूटी प्रणाली उठा ली गई है ताकि सस्ती पुस्तकों का प्रकाशन हो सके।

* * *

मध्यप्रदेश के प्रकाशकों एवं पुस्तक-विक्रेताओं के एक शिष्टमण्डल ने राज्य के मुख्य मन्त्री श्री कैलाशनाथ काटजू से भेंट की तथा इस बात का विरोध किया कि नई पाठ्य-पुस्तकों के सबमिशन के लिए उन्हें केवल तीन मास का समय ही दिया गया है। कहा जाता है कि मुख्यमन्त्री ने उनकी इस माँग को मान लिया कि पुस्तकों के सबमिशन के लिए उन्हें एक वर्ष का समय चाहिए।

* * *

राजस्थान राज्य की विधान-सभा में अनेक सदस्यों ने अपना क्षोभ और विरोध प्रदर्शित करते हुए मार्च '५८ के अन्तिम सप्ताह की बैठक में शिक्षा-सम्बन्धी व्यय की मद्द पर बोलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कहा कि पाठ्यक्रम की जिन पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण हो चुका है, उनमें से कई-एक अभी तक प्राप्त नहीं हैं जबकि परीक्षा बीस दिनों में आरम्भ होने वाली है।

* * *

केन्द्रीय सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय ने १ जनवरी, ५५ से ३१ दिसम्बर ५५ के बीच प्रकाशित सात श्रेष्ठ हिन्दी की पुस्तकों पर दो-दो हज़ार रुपये के पुरस्कार दिये हैं। लेखकों, पुस्तकों एवं प्रकाशकों के नाम इस प्रकार हैं : श्री विनयमोहन शर्मा: **गीतगोविन्द,** आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली; श्री अमृतराय : **आदि विद्रोही,** हंस प्रकाशन, इलाहाबाद; श्री जयचन्द्र विद्यालंकार : **भारतीय कृष्टि का क ख,** हिन्दी भवन, जलन्धर-इलाहाबाद; श्री परमानन्द तिवारी : **पार्वती,** प्रकाशक स्वयं; डॉ० रामकुमार वर्मा : **रिमझिम,** किताब महल, इलाहाबाद; श्री इलाचन्द्र जोशी : **जहाज का पंछी,** राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, पटना, बम्बई, मद्रास; श्री उपेन्द्रनाथ अश्क : **बड़ी-बड़ी आँखें,** नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद।

* * *

आन्ध्र के मुख्य मन्त्री श्री संजीव रेड्डी ने तेनाली में भाषण देते हुए २३ अप्रैल, ५८ को कहा कि उनके राज्य की सरकार राष्ट्रीयकृत पुस्तकों में से सर्वप्रथम पाँचवीं कक्षा की तेलुगु की पुस्तक प्रकाशित करेगी। इस पुस्तक की १६ लाख प्रतियाँ छपेंगी।

* * *

अप्रैल १९५९ से पंजाब और पेप्सू ने पुनर्संगठित राज्य में प्राइमरी तथा मिडल कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम की एक समान पुस्तकें स्वीकृत की जायेंगी। हिन्दी, पंजाबी और अंग्रेजी की ९० पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी और इन पर विशेषज्ञों से सम्मतियाँ पाने के लिए १ लाख २० हज़ार रुपये का समालोचना-शुल्क स्वीकृत हुआ है।

* * *

२५ अप्रैल, ५८ को बम्बई राज्य द्वारा मनोनीत सेल्स टैक्स इन्क्वायरी कमेटी के सामने, विदर्भ के प्रकाशकों तथा पुस्तक-विक्रेताओं के शिष्टमण्डल ने राज्य में साक्षी देते हुए पुस्तकों की बिक्री पर लगने वाले बिक्री-कर का विरोध किया।

* * *

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कार

इस वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने नेशनल पब्लिशिंग हाऊस द्वारा प्रकाशित निम्नलिखित पुस्तकों पर क्रमशः ७०० रुपये और ४०० रुपये के नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त और साहित्य

लेखक—डॉ० विजयेन्द्र स्नातक, रीडर
दिल्ली विश्वविद्यालय, एम० ए०, पी-एच० डी०

इस ग्रन्थ में गोस्वामी हित हरिवंश द्वारा प्रवर्तित राधावल्लभ सम्प्रदाय के सिद्धान्तों और तद्विषयक साहित्य पर गम्भीर गवेषणा की गई है। वैष्णव भक्ति की पृष्ठभूमि प्रथम बार इस ग्रन्थ में लेखक ने उपस्थित की है। इस ग्रन्थ पर दिल्ली विश्वविद्यालय ने विद्वान् लेखक को पी-एच० डी० की डिग्री प्रदान की है। उत्तर प्रदेश सरकार ने भी ७०० रुपये के पुरस्कार से लेखक को सम्मानित किया है। पृष्ठ सं० ... , साइज २०×२६/८, कीमत १८ रुपये।

वसन्त के फूल

लेखक—विराज

दार्शनिक और कवित्वपूर्ण रुबाइयों की इस पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार ने ४०० रुपये का पुरस्कार दिया है। इस पुस्तक की सभी पत्रों ने प्रशंसापूर्ण समालोचना की है। सारी पुस्तक दो रंगों में सुन्दर कलापूर्ण ढंग से छपी है। तिरंगा आवरण, मूल्य ४ रुपये।

नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की पुस्तकों का चित्रांकन

लेखक श्री ए० सेण्डल

प्रस्तुत लेख में एसोसिएटेड प्रिंटर्स प्राइवेट लि०, मद्रास के जनरल मैनेजर महोदय ने बच्चों की पुस्तकों के चित्रांकन के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी स्तुत की है।

बच्चों की पुस्तकों के सामान्य मुद्रण पर और चित्रांकन को विशेष रूप से लक्ष्य करके विचार करते समय इस बात पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि पुस्तक किस आयु के बच्चों के लिए प्रस्तुत की जा रही है। पढ़ पाने की योग्यता रखने के पहले ही बच्चे पुस्तकों की ओर अपने हाथ लपकाते हैं, अतः यदि इसी कम उम्र से पुस्तकें प्राप्त करने के बच्चों के उत्साह को भंग नहीं करना है तो इस उम्र के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तक खूब रंग-बिरंगी और प्रतिदिन सम्पर्क में आने वाली ऐसी वस्तुओं के चित्रों से अलंकृत होनी चाहिए जिन्हें बच्चे आसानी से पहचान सकें और जो उनके दैनिक वातावरण के अंग हों। जैसे-जैसे बच्चों का अनुभव और जानकारी बढ़े वैसे-वैसे पुस्तक भी परिष्कृत होती जानी चाहिए।

प्रस्तुत विषय जिस पर विचार किया जा रहा है। बच्चों की पुस्तकों का चित्रांकन है। चित्रों का चुनाव, रेखांकन या रेखा-चित्र—इसे आप जो कुछ भी कहें—दोनों दृष्टियों से किया जाना चाहिए अर्थात् जिस आयु के बच्चों के लिए पुस्तक हो उनके लिए शिक्षाप्रद भी हों और कम खर्च में आसानी से उनकी बढ़िया छपाई भी की जा सके।

बाल मनोविज्ञान

बच्चों की सचित्र पुस्तकों की ओर लौटते हुए यह स्पष्ट है कि अपने घुलने वाले रंगों की सहायता से चित्रकार ही इस कार्य को कर सकता है, एक ऐसा काम जिसे बच्चों को पुस्तकों के महान् संसार से परिचित कराने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तत्त्व कहा जा सकता है। ऐसी आशा की जानी चाहिए कि वे चित्रकार जो इस काम के लिए चित्र बनाते हैं उन्हें बाल मनोविज्ञान की अच्छी तरह शिक्षा मिल चुकी है अतः वे कलात्मक चित्र प्रस्तुत कर सकने में समर्थ हैं; इससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि वे शिक्षा की दृष्टि से उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत कर सकने में समर्थ हैं।

मुद्रण के लिए देने से पहले प्रकाशक को यह देख लेना चाहिए कि उन चित्रों का आशय बच्चे अच्छी तरह समझ सकते हैं।

यह समझ लिया जा सकता है कि इस बात पर विचार कर लिया गया है कि खपत की दृष्टि से पुस्तक की कीमत क्या पड़ेगी।

मुद्रक को अब पुस्तक के मुद्रण का कार्य सौंप दिया गया है—बच्चों की एक सचित्र पुस्तक के मुद्रण का कार्य।

मुद्रण प्रणाली

इसमें सन्देह नहीं कि 'फोटो आफसेट' इस तरह की पुस्तकों के मुद्रण की सबसे अच्छी प्रणाली है क्योंकि इससे तीन या चार रंगों के लाइन या हाफटोन चित्रों की छपाई आसानी से हो जाती है। एक पुरानी कहावत है कि मुद्रक को नमूने के अनुसार ही मुद्रित करना चाहिए, चाहे वह उसे गलत ही क्यों न लगे। इस कथन का अन्धानुकरण कदापि नहीं करना चाहिए क्योंकि मुद्रक का कर्तव्य है कि वह प्रकाशक को पुस्तक के कम खर्चीले अच्छे मुद्रण के सम्बन्ध में सलाह दे। कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी पाँच रंगों के चित्र को उसके आकर्षण में विशेष कमी आने दिये बिना थोड़े से परिवर्तन के साथ चार रंगों में छापा जा सकता है। चित्रांकनों का आकार निर्धारित करते समय कागज के साइज का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्सर मुद्रक पाता है कि उसे मुद्रण के लिए दिये गए चित्रांकनों का अनुपात ठीक नहीं है और दुर्भाग्यवश प्रायः मुद्रकगण इस गलती को चित्र को अन्धाधुन्ध रूप से घटा-बढ़ाकर ठीक करते हैं। तब एक तीसरी भयानकता उत्पन्न होती है जब चित्रों को डाक से भेजा जाता है। ऐसा करने से मुड़-मुड़ा जाने से, चित्रांकनों के आर-पार भद्दी दरारें पड़ जाती हैं। कितने ही मुद्रक ऐसी स्थिति को स्वीकार कर लेते हैं और अपना काम ही एक गलत आधार पर आरम्भ करते हैं।

मुद्रक की सहायता

अब हम पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठवें आयु-समुदाय के बच्चों की पुस्तकों पर विचार करें। ऐसी दशा में चित्रों के साथ साथ मुद्रण-अक्षर भी स्थान ग्रहण करते हैं और स्वभावतः ही चित्रांकनों का एक दूसरा पक्ष सामने आता है। अब बहुरंगे चित्रों की आवश्यकता नहीं रह जाती, क्योंकि मुद्रित शब्दों के मुकाबिले चित्रांकनों का स्थान गौण हो जाता है।

ऐसे पुस्तकों के चित्रांकन का सबसे कम खर्चीला तरीका काली स्याही से बने चित्रों के लाइन-ब्लाकों के प्रयोग का है। इसमें सन्देह नहीं कि यह सबसे कम खर्चीला तरीका है, लेकिन लेखकों और चित्रकारों ने इस बात पर विशेष ध्यान दिया है कि किस प्रकार मुद्रित होने वाली सामग्री और चित्रांकनों को कम खर्चीला बनाने के लिए एक-दूसरे के साथ सजाया जा सकता है। यह कोई असाधारण बात नहीं है कि एक क्राउन आक्टेवो पृष्ठ पर १८ प्वाइंट टाइप के पचपन शब्दों के साथ अधिक से-अधिक छः लाइन ब्लाक फैले दिखाई दें। वास्तव में यदि इतने चित्रांकनों की आवश्यकता हो तो वे एक पृष्ठ पर मुद्रित होने के लिए एक या दो ब्लाकों में सम्मिलित कर लिये जा सकते हैं।

पहले, दूसरे और तीसरे आयु-समूह के बच्चों की पुस्तकों में प्रायः १२० ब्लाक दिये जाते हैं, जो लगभग इतने ही पृष्ठों पर फैले होते हैं और यह कहा जा सकता है कि उनमें से बहुत कम ऐसे होते हैं जो एक ही आकार के हों और उनका सम्बन्ध न तो कालम की चौड़ाई से होता है और न पृष्ठों की। इस तरह के कम्पोज करने वाले पृष्ठों—जिनकी लागत पर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए—को काफी कष्टसाध्य बना दिया जाता है। अगर ब्लाक बनवाते समय उनके आकार के सम्बन्ध में ध्यान दिया जाय तो कम्पोजीटर को उन्हें कम्पोज किये हुए पृष्ठों में फिट करने में आसानी हो और समय भी बहुत कम लगे।

हाफटोन ब्लाक

अब हम हाफटोन ब्लाक के उपयोगों की परीक्षा करें। चित्रांकनों के मुद्रण के लिए इसका प्रायः और सबसे अधिक उपयोग किया जाता है अतः आइए, इस समय हम इस पर विचार कर लें।

बच्चों की पुस्तकों को अलग रख दें तो अधिकांश पुस्तकें चाहे वे कला, विज्ञान, भूगोल, जीव विज्ञान, यात्रा, जीवन-चरित आदि किसी भी विषय से सम्बन्ध रखती हों उनमें कुछ फोटो-चित्र सम्मिलित करने की आवश्यकता पड़ती है जिससे पुस्तक में दी गई जानकारी को पूरी तरह आत्मसात करने में पाठक को सहायता मिले। किसी भी वस्तु को मूल रूप में देखने के लिए फोटो-चित्रों से बढ़कर हमारे पास और क्या साधन है।

यह सर्वज्ञात है कि व्यावसायिक चित्र-कला के क्षेत्र में वस्तुओं के फोटो इसलिए लिये जाते हैं कि उन्हें सूची-पत्रों, विवरण-पत्रिकाओं आदि पर छापा जा सके। अतः कोई कारण नहीं कि किसी भी फोटो को उसके मूल रूप में मुद्रित करने के लिए ब्लाक बनाने वाले द्वारा बढ़िया ब्लाक बनाकर मुद्रक को क्यों न दिया जाय।

लेकिन ब्लाक-चित्रांकन में हमेशा ऐसा ही नहीं होता। कभी-कभी लेखक को ऐसे पुराने फोटो-चित्र अपनी पुस्तक में देने पड़ते हैं जिनकी हिफाजत के लिए सावधानी नहीं बरती गई होती। इसका यह अर्थ नहीं कि पुस्तक में दिया गया चित्रांकन निश्चित रूप से भद्दा ही हो। किसी भी क्षतिग्रस्त फोटो-चित्र का ब्लाक बनाने से पहले उसको थोड़ा सुधार-सँवार लेना हमेशा अच्छा रहता है।

प्रकाशक को अपने किसी भी आगामी प्रकाशन के लिए ब्लाक बनाने के पहले अपने मुद्रक से अवश्य विचार-विमर्श कर लेना चाहिए। ताँबे या जस्ते किस चीज की प्लेट पर ब्लाक बनवाना ठीक होगा, यह इस बात पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भर है कि उसकी कितनी प्रतियाँ छपनी हैं और किस तरह के चित्र का ब्लाक बनना है। जस्ते की प्लेट पर अच्छी तरह बने हुए ब्लाक से ७५००० प्रतियाँ छापी जा सकती हैं और ताँबे की प्लेट पर बने हुए ब्लाक से १५०००० प्रतियाँ तक छप सकती हैं। सामान्यत: लोगों का ऐसा विचार है कि अगर किसी रेखाचित्र की आपेक्षिक रूप से कम प्रतियाँ छापनी हों तो जस्ते की प्लेट पर बना हुआ ब्लाक ही ठीक रहता है। यह ठीक है, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि यदि चित्र में महीन रेखाओं का प्रयोग किया गया हो और हूबहू छपाई जरूरी हो तो ताँबे की प्लेट पर बने हुए ब्लाक का ही इस्तेमाल करना चाहिए।

कागज़ की किस्म

एकरंगी छपाई के लिए हाफटोन ब्लाक बनवाते समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन इस बात का निर्णय करने के पहले कि किस तरह की स्क्रीन का उपयोग किया जाय, कागज की किस्म पर विचार कर लेना चाहिए। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि अगर ऐसे कागज का इस्तेमाल करना हो जो स्याही सोखता है जैसे अखबारी कागज,तो रूखड़ स्क्रीन यानी ८५ स्क्रीन का उपयोग करना चाहिए। कैलेण्डर कागज या कृत्रिम आर्ट पेपर के लिए १०० स्क्रीन वाला ब्लाक इस्तेमाल करना चाहिए। द्वितीय श्रेणी के आर्ट पेपर के लिए १२० स्क्रीन और प्रथम श्रेणी के आर्ट पेपर के लिए जैसा कि आर्ट प्लेट के लिए इस्तेमाल किया जाता है, १३३ या १५० स्क्रीन उपयोग में लानी चाहिए।

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि १३३ स्क्रीन के हाफटोन ब्लाक की छपाई अच्छी नहीं आ सकती यदि न्यूजप्रिंट या अन्य घटिया किस्म का कागज पुस्तक छापने के लिए इस्तेमाल किया जाय। अन्त में यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि चाहे कितनी भी बढ़िया स्क्रीन और कागज का इस्तेमाल किया जाय, कोई भी मुद्रक मूल चित्र से अच्छी प्रतिलिपि छापकर नहीं दे सकता।

ट्रिक्रोमैटिक या चार रंगों के ब्लाकों की छपाई वास्तविक आर्ट पेपर के अलावा अन्य किसी कागज पर अच्छी नहीं आ सकती और ताँबे की प्लेट का ही उपयोग करना ठीक रहता है। आर्ट पेपर का चमकीला तल ट्रिक्रोमैटिक स्याही के लिए काफी उपयुक्त सिद्ध होता है और चित्र काफी खिलकर आते हैं। अगर कृत्रिम आर्ट पेपर का इस्तेमाल किया जाता है तो कागज स्याही को अपने-आप न सूखने देखकर सोख लेता है और चित्र की चमक जाती रहती है और रंगों की वह स्वाभाविकता बनी नहीं रहने पाती जो वास्तविक आर्ट पेपर पर सुरक्षित रहती है।

आर्ट प्लेट

यदि पुस्तक में कुछ आर्ट प्लेटें दी जानी हों तो उनको फिट करने के स्थान पर दोनों दृष्टियों से ध्यान देना चाहिए अर्थात् विषय-सामग्री की दृष्टि से भी और पुस्तक के अन्य अंशों के साथ उनकी बँधाई की दृष्टि से भी। उन्हें एक अलग अंश के रूप में संयोजित कर देना चाहिए या ऐसे अंश के रूप में हों जिसे अलग से उपयोग में लाया जा सके।

अन्तिम शब्द के रूप में मैं उन लोगों से, जो किसी पुस्तक के लिए चित्रांकनों के चुनाव का विचार कर रहे हों, यह कहना चाहता हूँ कि हमेशा या तो फोटो-चित्रों से मूल प्रति प्राप्त करें या किसी सुयोग्य चित्रकार से पुस्तक के लिए उपयुक्त चित्र बनवाएँ न कि यह दृष्टिकोण अपनाएँ कि "चलो इससे काम चल जायगा।"

द्वितीय पंचवर्षीय योजना की
वास्तविकता व समाजवादी सुझाव
पृष्ठ सं० ६० • मूल्य : ४० नये पैसे
केशवप्रसाद शर्मा • राजनारायण आर्य
व अन्य मार्क्सवादी साहित्य के लिए
सोशलिस्ट पब्लिशर्स,
दर्शन पुरवा, कानपुर
पुस्तक-विक्रेता मुफ्त स्पेसिमेन के लिए लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षाएँ और समीक्षक

'बुकसेलर', लन्दन में प्रकाशित इस लेख के भावानुवाद को दिलचस्पी से पढ़ा जायगा, क्योंकि भारतीय परिस्थितियों से बहुत सी साम्यता इसमें झलकती है।

अमरीका के नवयुवक प्रकाशक संघ की पिछली बैठक में 'समीक्षाएँ और समीक्षक' नामक विषय पर विचार-विमर्श किया गया। अतिथि वक्ता मि० पीटर ग्रीन ने बताया कि पुस्तक-समीक्षा और आलोचना का कार्य अधिकाधिक उन लोगों के हाथ में पड़ता जा रहा है जिनका प्रमुख उद्देश्य लेखक बनना है—"जो या उपन्यासकार हैं, नाटककार हैं, कवि हैं या सामान्य लेखक हैं, या उससे भी गये बीते ऐसे लोग हैं जिन्होंने लेखक बनने की, चेष्टा की लेकिन असफल रहे हैं।"

आज की समीक्षा को समझ पाना तब तक सम्भव नहीं है जब तक कोई इस बात को न समझ ले कि अधिकांश समीक्षकों के लिए एक गौण व्यवसाय—उन्होंने इसे इसलिए चुना है क्योंकि यह लेखन का एक दूसरा पक्ष है, क्योंकि इसका सम्बन्ध पुस्तकों से है। "इस दृष्टि से मैं स्वयं गम्भीर रूप से दोषी हूँ। एक राष्ट्रीय दैनिक पत्र के लिए मैं उपन्यासों से सम्बन्धित पाक्षिक स्तम्भ लिखता हूँ; टाइम्स के साहित्यिक परिशिष्ट के लिए मैं नियमित रूप से बहुत सी पुस्तक-समीक्षाएँ लिखता रहता हूँ; और अभी थोड़े दिन पहले तक मैं एक प्रकाशन-संस्था के लिए साहित्यिक सलाहकार का कार्य करता रहा। फिर भी इनमें से किसी भी कार्य को मैं अपना पेशा नहीं कह सकता, यद्यपि जो भी इन कार्यों को करता है ये उस पर छा जाते हैं।

फिर भी दोहरे कार्यों का अर्थ यह नहीं है कि व्यवसाय-सम्बन्धी स्तर समीक्षा-कार्य के सम्बन्ध में लागू नहीं होंगे। यदि केवल आत्म सन्तुष्टि के लिए ही समीक्षकगण अपने साथियों के प्रति सच्चाई बरतें, और अपने साथियों के प्रति ही क्यों, कोई भी इस बात के लिए आश्वस्त नहीं हो सकता कि अमुक उपन्यासकार महोदय को किसी पत्र का रविवार-स्तम्भ सौंप दिया जायगा और स्वयं उसी के परखचे उधेड़कर रख दिये जायँगे। इससे समीक्षा-जगत् के सम्बन्ध में आपकी आशंकाओं और सन्देहों की पुष्टि ही होगी। लेकिन वैसे विस्तृत रूप से यह प्रणाली ठीक तरह काम करती रहती है। समीक्षकों से लेखकों को जो शिकायतें रहती हैं वे सनातन और शाश्वत हैं। कितनी भी ईमानदारी से समीक्षा की गई हो, लेकिन उसके विरुद्ध कितनों को ही शिकायतें रहती हैं।

स्तर

कोई भी लेखक जिसे आजीविका के लिए लिखना पड़ता है, अपना व्यक्तिगत आदर्श स्तर कायम नहीं रख सकता। उसे बाज़ार की माँग, सम्पादक के दृष्टिकोण और अपने पत्र की अधिकारिक नीति का ध्यान रखना ही पड़ता है। इसके अतिरिक्त समय की कठिनाई भी उसके सामने रहती ही है। मि० ग्रीन ने एक ऐसे समीक्षक का उदाहरण लेते हुए कहा जो किसी पत्र के मुख्य पृष्ठ के लिए कोई लेख लिख रहा हो, उसे न केवल उस पुस्तक को बहुत ध्यान से पढ़ जाना होगा बल्कि उस विषय के अन्य प्रमुख ग्रन्थों तथा हाल ही में प्रकाशित पुस्तकों से भी उसे परिचय प्राप्त कर लेना होगा—जो कभी-कभी अनेक भाषाओं में उपलब्ध होते हैं। अगर यह कोई विदेशी भाषा की पुस्तक हो तो समीक्षक को मूल ग्रन्थ तथा उस भाषा के प्रमुख पत्रों में प्रकाशित उस पुस्तक से सम्बन्धित समीक्षाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए हमारे अनुपम ग्रन्थ

आलोचना

रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय : डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह १५.००
हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य : गुरुदेव प्रसाद वर्मा २.५०
विद्यापति : शिवप्रसाद सिंह ५.००
मधुमालती (मंझन कृत) : डॉ० शिवगोपाल मिश्र ८.००
समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द : डॉ० महेन्द्र भटनागर ५.००
हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य : गुरुदेव प्रसाद वर्मा २.५०
मानस : बालकांड के स्रोत : श्रीशकुमार ५.००
गोस्वामी तुलसीदास और रामकथा : सत्यदेव चतुर्वेदी ३.७५
हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास : डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (डॉ० किशोरीलाल गुप्त द्वारा सम्पादित) ६.००
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा : त्रिभुवन सिंह ४.००
कबीर और जायसी का मूल्यांकन : पुरुषोत्तमचन्द्र वाजपेयी २.२५
प्रसाद के नाटक : परमेश्वरी लाल गुप्त ४.५०
रस-साहित्य और समीक्षाएँ : 'हरिऔध' ४.००
कहानी का रचना-विधान : डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा ५.००
हास्य की रूपरेखा : डॉ० एस० पी० खत्री ६.००
भारतीय प्रेमाख्यान काव्य : डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव १०.००
हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : त्रिभुवन सिंह ६.००
आधुनिक साहित्य और कला : डॉ० महेन्द्र भटनागर २.५०
भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि : किशोरीलाल गुप्त १०.००
सूर के सौ कूट : चुन्नीलाल 'शेष' ५.००
हिन्दी महाकाव्य : स्वरूप-विकास : डॉ० शम्भूनाथ सिंह १२.००
श्रीराधा का क्रम-विकास : डॉ० शशिभूषण दासगुप्त ८.००
डॉ० इकबाल और उनकी शायरी : प्रो० हीरालाल चोपड़ा ३.५०
फ़ारसी साहित्य की रूपरेखा : डॉ० हिकमत ५.००
हिन्दी लिटरेचर (अंग्रेजी) : डॉ० रामअवध द्विवेदी ५.००
रत्नाकर और उनका काव्य : उषा जायसवाल ५.००
छायावाद के गौरव-चिह्न : प्रो० क्षेम ६.००

निबन्ध साहित्य

बौद्ध-कलाकृतियाँ : कुमारी विद्यावती मालविका ३.००
इनसे : आचार्य ललिताप्रसाद सुकुल २.५०
आधान : शांतिप्रिय द्विवेदी २.५०
साकल्य : शान्तिप्रिय द्विवेदी ४.००
स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य : डॉ० रामविलास शर्मा ४.००
कला क्या है ? : तालस्ताय ०.६७
साहित्यधारा : प्रकाशचन्द्र गुप्त ४.५०
अतीत से वर्तमान (प्रथम खंड) : राहुल सांकृत्यायन ३.५०
स्वदेश और साहित्य : अनु० डॉ० महादेव साहा ०.६७
भारतीय संस्कृति (वैदिक धारा) : डॉ० मंगलदेव 'शास्त्री' ७.००

पुस्तकालय-विज्ञान साहित्य

भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास : द्वारकाप्रसाद शास्त्री ५.००

उपन्यास

टूटती हुई जंजीरें : डॉ० सत्यनारायण शर्मा ३.२५
आनन्द भवन : निहालचन्द वर्मा ३.००
जादू का महल : ,, ,, ३.००
मोती महल : ,, ,, ६.००
सोने का महल : ,, ,, ८.००
उल्का : रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ४.५०
वनमाला : सरस्वती सरन 'कैफ' ३.५०
सूर्यग्रास : सुशील जाना ४.००
इन्दुमती : सेठ गोविन्ददास १५.००

कहानी-संग्रह

भूख : डॉ० कंचनलता सब्बरवाल २.२५
अनदेखे चित्र, अनबोले चेहरे : मोहनलाल गुप्त ३.००

उपयोगी बाल-साहित्य

हाथी दादा : बालबन्धु ०.६७
माँ की सहायता : विमला लूथरा ०.६७
शावक कहानियाँ : शारदा मिश्र ०.६७
बच्चों की सरकार : मोहनलाल गुप्त १.००
अंग्रेजों का देश : देवकी पाण्डेय ०.६७
बम्बई से टिलबरी तक : ,, ,, ०.६७

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० ७०—ज्ञानवापी-वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को भी देख जाना होगा। इस सारी सामग्री को आत्मसात कर लेने के बाद ही वह अपना लेख लिख सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में शायद ही तीन हफ्ते से कम लगे और आर्थिक दृष्टि से इसमें यदि घाटा न भी उठाना पड़े तो यह अवश्य है कि कोई अन्य सामान्य लेखन-कार्य करके बड़ी आसानी से उतने रुपये प्राप्त किये जा सकते हैं। सामान्य सिद्धान्त के रूप में कहा जा सकता है कि जितने कम विशुद्ध पाण्डित्य की आवश्यकता किसी लेख को लिखने में पड़ेगी उतने ही अधिक पाठक मिलेंगे और उतना ही अधिक रुपया भी। थोड़े में कहा जाय तो साहित्यिक पत्र-कारिता के क्षेत्र में ईमानदारी घाटे की चीज़ है।"

इसके बाद मि० ग्रीन ने पत्रों के रविवार स्तम्भों के बारे में बताते हुए कहा कि किसी भी अन्य प्रकार की समीक्षा के बजाय इनसे पुस्तकों की बिक्री तथा प्रचार-प्रसार में अधिक सहायता पहुँची है। जिनके हाथों में स्तम्भ होते हैं उन पर अपने प्रकाशनों की चर्चा कर देने के लिए प्रकाशक-गण काफी हद तक प्रभाव डालते हैं और चूँकि वे अपने पद पर काफी दिन तक बने रहते हैं इसलिए वे काफी शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेते हैं। चूँकि वे काफी दिनों तक अपने पद पर बने रहते हैं और उनकी नियुक्ति काफी परिपक्व आयु में होती है इसलिए वे साहित्य की नई प्रवृत्तियों से अपना सम्बन्ध बनाए नहीं रख पाते, और अपने निर्णयों में प्रतिक्रियावादी बन जाते हैं। वैसे कभी-कभी उनके निर्णय काफी उत्तेजक और प्रभावपूर्ण होते हैं।

यह स्थिति बदलनी चाहिए और यह सुझाव दिया गया है कि व्यावसायिक समीक्षा नाम की कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए। हर पुस्तक का मूल्यांकन उस विषय के किसी विशेषज्ञ से कराना चाहिए। ऐसा किया गया है, लेकिन यह पद्धति असफल सिद्ध हुई है। "इस पद्धति का आधार यह भ्रम है कि कोई भी, चाहे वह कोई भी हो, समीक्षा लिख सकता है···प्रायः विशेषज्ञों की लिखी हुई समीक्षाएँ व्याकरण की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण, असंगत तथा विस्तृत रूप से एकांगी एवं अपूर्ण सिद्ध हुई हैं।" अन्त में साहित्य-सम्पादक ने पाया कि विशेषज्ञ महोदय की अपेक्षा तो उसके स्थायी समीक्षक ही अधिक बुद्धिमानी और योग्यता से समीक्षा कर सकते हैं। इस प्रकार स्थायी समीक्षकों की माँग बनी रही "और वे काम से लदे, अभावग्रस्त, उस विरस क्लांति से पीड़ित हैं जिससे हर समीक्षक परिचित है और किसी भी आकार-प्रकार में मुद्रित पृष्ठों के प्रति उत्पन्न अरुचि का अनुभव करते हुए···"

हर समीक्षक का स्वप्न

आप कह सकते हैं कि फिर ऐसे कार्य से मुक्ति क्यों नहीं ले लेते? क्यों ऐसे दुःखदायी कार्य में लगे हुए हैं जिसकी हर चीज़ आपकी विरोधी है। कारण यह है कि अपनी तमाम खामियों के बावजूद हम ऐसे दुर्निवार्य आदर्शवादी हैं जो ऐसी पुस्तक की प्रतीक्षा करते रहते हैं जो हमारी इस समस्त सहनशीलता की सार्थकता सिद्ध कर देगी। पुस्तकें ही हमारे जीवन का अंग बन जाती हैं और हम साहित्यिक ज्योति के पास बन जाते हैं, और अगर यह कभी बुझने भी लगती है तो हम सोचते हैं कि कल यह फिर जलने लगेगी और हमें प्रेरणा देगी; जो हमें शक्ति प्रदान करता रहता है यह सुखद, अव्यक्त और पवित्र विश्वास कि तमाम लोलुप, भ्रष्ट और ईर्ष्यालु प्रतिभा-सम्पन्न लोगों के बीच हममें से प्रत्येक एक अपरिभ्रष्ट, सर्वज्ञ और पक्षपातहीन समीक्षक है। साथ ही अपने इस व्यक्तिगत स्वप्न से भी हमें बल मिलता है, जो किसी-न-किसी रूप में हर समीक्षक के अन्तर में होता है, कि एक ऐसी महान् कृति लिखेंगे जो सबसे अधिक बिकने वाली भी होगी। और फिर स्वयं ही समीक्षा करेंगे—प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण और त्रुटिहीन!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली के इस समय ३६,००० सदस्य हैं और लाइब्रेरी में पुस्तकों की संख्या १ लाख से ऊपर है। लाइब्रेरी के तत्त्वावधान में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सक्रियताएँ भी जारी रखी जाती हैं। गतवर्ष पुस्तकालय से ४,३७,१३३ पुस्तकें पढ़ने के लिए सदस्यों को दी गईं तथा १,६६,५०० पुस्तकें पुस्तकालय में बैठकर ही पढ़ी गईं।

* * *

मध्य प्रदेश की जनता में शिक्षितों का अनुपात केवल ६.८ प्रतिशत है।

* * *

बंगाल में हिन्दी शिक्षा की एक पुस्तक स्वीकृत की गई है जिसमें अभिनेत्री नर्गिस और सुरैया आदि की बातचीत दी हुई है। कहते हैं कि आवश्यक पुस्तक की सूचना एक ही प्रकाशक को दी गई थी और उसने इस पुस्तक से हजारों रुपयों का लाभ उठाया।

* * *

बिहार के पूर्णिया जिला के अररिया नाम के शहर के दो पुस्तक-विक्रेताओं को प्रकाशकों को धोखा देने के अभियोग में नौ-नौ महीने की कैद तथा तीन-तीन सौ रुपये जुर्माना किया गया है। ये दोनों पुस्तक-विक्रेता भाई हैं। कहा जाता है कि इन्होंने पटना के तीन प्रकाशकों को पुस्तकों का आर्डर देते हुए बंडल कुसियार गाँव नाम के रेलवे-स्टेशन पर तथा रेलवे-रसीद बैंक अथवा वी० पी० पी० से भेजने के लिए लिखा। बैंक द्वारा हुण्डी मिलने पर उन्होंने छुड़वाई नहीं, लेकिन पुस्तकों के बंडल उन्होंने इन्डेम्निटी बॉण्ड भर के छुड़वा लिए।

* * *

आन्ध्र प्रदेश सरकार अपने राज्य की आवश्यकता की पाठ्य-क्रम की पुस्तकें छापने के लिए अपना प्रेस स्वयं लगा रही है जिसके लिए १० लाख रुपयों की पूँजी स्वीकार की गई है। कुछ मशीनरी आ भी गई है और प्रेस की इमारत का काम बढ़ रहा है।

* * *

सारे संसार के देशों में संख्यानुसार पुस्तकों के प्रकाशन में भारत का नम्बर चौथा है, ऐसी सूचना संयुक्त राष्ट्र-संघ की वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित की गई है। १९५७ में सबसे अधिक पुस्तकें रूस में ५९,५३०, फिर जापान में २५,५४१, इंग्लैण्ड में १९,१०७ तथा फिर हिन्दुस्तान में, १८,५५९ प्रकाशित हुईं।

* * *

केरल के शिक्षा-मंत्री ने २३ मार्च '५८ को राज्य के प्रकाशक-संघ का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर प्रकाशित मलयालम की पुस्तकों का एक बड़ा और पहला सूचीपत्र भी प्रचारित किया गया। प्रकाशक-संघ के छोटे-बड़े मिलाकर २६ सदस्य हैं।

* * *

विदर्भ बोर्ड ऑफ़ सेकण्डरी एजुकेशन, बम्बई राज्य, नागपुर के मंत्री द्वारा प्रचारित एक विज्ञप्ति के अनुसार प्रकाशकों से १९६० की बोर्ड की परीक्षाओं के लिए विभिन्न भाषाओं की, जिनमें हिन्दी भी है, कि पाठ्य-पुस्तकों की माँग की गई है। पुस्तकें २५ मई, १९५८ तक सबमिट की जा सकती हैं।

* * *

१९५७ के वर्ष में ब्रिटिश पब्लिशर्स एसोसिएशन के अनुमान के अनुसार इंग्लैण्ड के प्रकाशकों ने ८५ करोड़ ५० लाख रुपयों से अधिक मूल्य की कुल मिलाकर पुस्तकें बेचीं।

* * *

फरवरी १९५८ में अमरीका में कुल मिलाकर १०५१ पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

* * *

पेप्सू राज्य की भूतपूर्व सरकार द्वारा राष्ट्रीयकृत पाठ्य-पुस्तकें अभी तक पटियाला डिवीजन में उपलब्ध नहीं हैं। कहा जाता है कि विद्यार्थियों को पुरानी पुस्तकें छपे हुए

(शेष पृष्ठ ३६८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाट्यकला सम्बन्धी नये गुजराती ग्रन्थ

जयेन्द्र त्रिवेदी

हमारे देश में विश्वविद्यालयों की संख्या में पिछले कुछ वर्षों में अच्छी वृद्धि हुई है पर इनमें से अनेक तो परीक्षा लेकर डिग्रियाँ बाँटने में ही व्यस्त हैं। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय ने नई सूझबूझ का परिचय दिया है। उक्त विश्वविद्यालय में अनेक विशिष्ट प्रवृत्तियों का प्रारम्भ हो चुका है जिनमें एक है "भारतीय संगीत-नृत्य-नाट्य-महाविद्यालय" (College of Indian Music and Dramatics)। इस संस्था ने गुजरात की कला-शिक्षण प्रवृत्ति को नया मोड़ दिया है। अनेक भावी कलाकार वहाँ शास्त्रीय ढंग से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

इस संस्था की एक योजना के अनुसार विशिष्ट विद्वानों की संस्था के छात्रों के सामने निर्धारित विषयों पर व्याख्यान या वार्ताएँ देने के लिए निमन्त्रित किया जाता है। इन व्याख्यानों को प्रकाशित करने की भी व्यवस्था की गई है। इस योजना के अन्तर्गत पिछले तीन वर्षों में संस्था को जिन व्याख्यान-मालाओं का लाभ मिला उनमें से चार अब तक ग्रन्थस्थ हो चुकी हैं।

पहला ग्रन्थ है 'एकांकी स्वरूप अने साहित्य।' लेखक श्री नन्दकुमार पाठक इस विषय के ज्ञाता के रूप में पहले से प्रतिष्ठित थे ही। उन्होंने १९५५ की १२, १५ और १६वीं जनवरी को ये व्याख्यान दिये थे। १९५६ में ये ग्रन्थाकार निकले। सवा सौ पृष्ठ के इस ग्रन्थ को सात अध्यायों में विभक्त किया गया है। पीछे एक उपयोगी शब्द-सूची भी दी गई है। अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) संस्कृत साहित्यमां 'एकांकी'
(२) पाश्चात्य देशोमां एकांकी : उत्पत्ति अने विकास
(३) एकांकी : संविधान, कला अने कसब
(४) तख्तानुं तन्त्र (रंगमंच)
(५) गुजराती एकांकीना विकासनी रूपरेखा
(६) एकांकी अने रेडियो नाटिका
(७) भगिनी भाषाओमां एकांकी : टूंकी नोंध
(८) शब्द-सूची।

दूसरी व्याख्यान-माला श्री जशवंत ठाकर ने दी थी। श्री ठाकर इस विषय के केवल अभ्यासी ही नहीं हैं, स्वयं अच्छे अभिनेता और दिग्दर्शक हैं। नये गुजराती रंगमंच के विकास में उनकी देन महत्त्वपूर्ण है। इनकी व्याख्यान-माला 'नाट्य शिक्षणनां मूल तत्त्वो' नाम से १९५६ में ग्रन्थस्थ हुई है। २३६ पृष्ठ के इस ग्रन्थ को १९ अध्यायों में बाँटा गया है और पीछे अत्यन्त उपयोगी शब्द-सूची दी गई है। नाट्यकला विषयक पारिभाषिक शब्दों की सूची तो विशेष उपादेय है। इस व्याख्यान-माला को तैयार करने में जिन सन्दर्भ ग्रन्थों का व्याख्याता ने उपयोग किया था उसकी सूची भी पीछे दी गई है।

अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं :—

प्रारम्भ में 'रंग-प्रवेश-द्वार' नाम से लेखक ने एक भूमिका दी है।

अध्याय (१) नाटकनो जन्म
(२) याद राखवा जेवुं कांईक
(३) नाट्य अने नाट्य-संग्रह
(४) नाट्य संग्रहना विषयो विषे
(५) नाट्य : सत्य :
(६) हिंदमां नाट्यगृहनी उत्क्रांति अने विकास
(७ से १८) अभिनय (आंगिक, वाचिक, सात्त्विक आदि)
(१९) अन्तःकरणनी सर्जनात्मक अवस्था

यह ग्रन्थ पाठ्यपुस्तक के रूप में लिखा गया है। पुस्तक में प्रयोग पाठ (Lessons for Home work) भी दिये गए हैं। केवल पुस्तकीय अध्ययन से ऐसे ग्रन्थ नहीं लिखे जा सकते। अभिनय कठिन कला है पर उस पर शास्त्रीय ग्रन्थ लिखना विशेष कठिन है। श्री ठाकर का यह प्रयास इस दृष्टि से स्तुत्य है।

तीसरा ग्रन्थ है 'गुजराती बिनधंधादारी रंगभूमिनो इतिहास।' श्री धनसुखलाल महता ने ये व्याख्यान दिये थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

हिन्दी के दो श्रेष्ठ नाटककारों की नवीन कृतियाँ

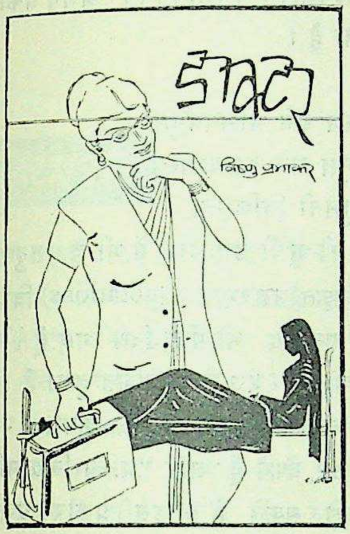

डॉक्टर

विष्णु प्रभाकर

मूल्य रु० २.५०

ममता

हरिकृष्ण प्रेमी

मूल्य रु० २.५०

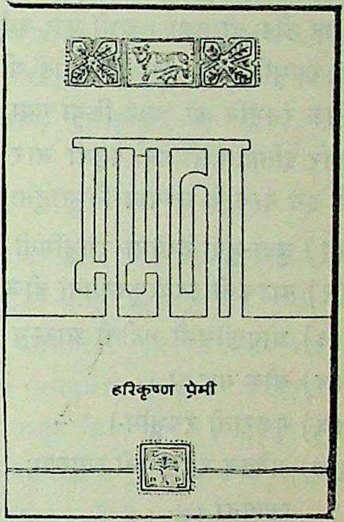

जीवन दर्शन

खलील जिब्रान के 'दि प्राफेट' का
सरल हिन्दी रूपान्तर
मूल्य रु० १.५०

आज की उर्दू कविता का सर्वश्रेष्ठ संकलन !

उर्दू के २५ लोकप्रिय शायरों की जीवनी और उनकी बेहतरीन ग़ज़लों, नज़्मों, रुबाइयों, शेरों का संग्रह, साथ ही प्रत्येक शायर का कलात्मक पेन-स्केच

आज के उर्दू शायर और उनकी शायरी

सम्पादक : प्रकाश पण्डित

मूल्य : आठ रुपये

'जोश' मलीहाबादी, 'जिगर' मुरादाबादी, 'फ़िराक़' गोरखपुरी, 'हफ़ीज़' जालन्धरी, अख़्तर शीरानी, अब्दुल हमीद 'अदम', 'सागर' निज़ामी, मजाज़ लखनवी, फ़ैज़ अहमद 'फ़ैज़', नून मीम राशिद, मुईन अहसन, 'जज़्बी', सरदार जाफ़री, 'मख़्दूम' मुहीउद्दीन, अहमद 'नदीम' क़ासमी, जाँ निसार अख़्तर, 'साहिर' लुध्यानवी, 'वामिक़' जौनपुरी, गुलाम रब्बानी, 'ताँबा', जगन्नाथ 'आज़ाद', 'अर्श' मलस्यानी 'मख़मूर' जालन्धरी, 'अख़्तर' उल-ईमान, 'सलाम' मछलीशहरी, 'मजरूह' सुलतानपुरी, 'क़तील' शफ़ाई ।

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१९५४ में, पर प्रकाशित हुए हैं १९५६ में। श्री महता अन्तिम ५० वर्षों से एक या दूसरे रूप में गुजराती नाट्य-प्रवृत्ति से सम्बन्धित हैं। खास करके बम्बई की बिनधंधादारी अवेतन रंगभूमि (Amature theatre) से उनका सतत सम्पर्क रहा है। इसलिए ऐसे विषय पर उन्हें बुलाया गया, यह ठीक ही हुआ। अभी कुछ वर्ष पूर्व ही गुजरात ने अपनी रंगभूमि की शताब्दी मनाई थी। उस समय भी अवैतनिक रंगभूमि को याद किया गया था पर व्यवस्थित ग्रन्थाकार इतिहास तो यहाँ पहली बार मिलता है। १३८ पृष्ठ के इस ग्रन्थ के अध्याय निम्नानुसार हैं —

(१) जुदा-जुदा देशोमां रंगभूमिनी शुरुआत।
(२) नाटकनी स्वयंस्फुरणानां बीज।
(३) ओगणीसभी सदीनो आरम्भ।
(४) लोक नाटको।
(५) गुजराती रंगभूमि।
(६-७) अवेतन रंगभूमिनी व्याख्या; अवेतन रंगभूमिनी स्थापना।
(८) जेहाद अने चन्द्रवदन महेता।
(९) मुनशीजी अने एमनी प्रवृत्तिओ।
(१०) १९४० सुधा; १९४०-१९५०; १९४०-५० ना मुख्य कार्यकर्ताओ, १९४८ पछी; १९५०-५४।
(११) सरवैयुं।
(१२) नाट्य तालीम—अभ्यास।

लेखक ने अपने इस अध्ययन में उपयोगों में आये हुए ग्रन्थों का नामोल्लेख तो किया ही है, एकांकी नाटकों के लिखने वालों की भी सूची अन्त में दी है।

चौथा ग्रन्थ है 'नाट्यशास्त्र अने आचार्य अभिनवगुप्ताचार्य।' इसमें आचार्य के० का० शास्त्रीजी के तीन व्याख्यान ग्रन्थस्थ हुए हैं। शास्त्रीजी अपने ज्ञानबल से अधिकार प्राप्त करने वाले सज्जनों में प्रमुख हैं। विश्वविद्यालय की कोई उपाधि उनके पास नहीं है, पर Ph. D. के छात्र उनके पास तालीम ले रहे हैं। उनके इस ग्रन्थ के अध्याय निम्नानुसार हैं।

व्याख्यान १

प्रास्ताविक, नाट्यशास्त्र पहेलां, नाट्यशास्त्र
(१) नाट्यशास्त्रनो रचनाकाल
(२) नाट्यशास्त्रनो कर्ता
(३) नाट्यशास्त्रनी वाचनाओ

व्याख्यान २

(१) नाट्यशास्त्रनी विशिष्टता इस व्याख्यान का एक अंश 'नाट्यशास्त्रे चर्चेला विषय" अलग प्रकाशित होने वाला है।

व्याख्यान ३

(१) नाट्यशास्त्र अने अभिनवगुप्त
(२) अभिनवगुप्त अने काव्यशास्त्र
(३) अभिनवगुप्तनी विशिष्टता

विशिष्ट शब्दों की सूची इस ग्रन्थ में भी है। तदुपरान्त पुस्तक में जितने संस्कृत उद्धरण (Quotations) दिये गए हैं उनके गुजराती अनुवाद भी पीछे दिये गए हैं। ग्रन्थ १६४ पृष्ठों का है और १९५७ में प्रकाशित हुआ है।

इन सजिल्द चारों ग्रन्थों की कीमत क्रमशः २.५०, ३.५०, २.५०, २.७५ रुपये हैं और "प्राच्य विद्यामन्दिर, बड़ौदा" से प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रकार गुजराती साहित्य के शास्त्रीय ग्रन्थों में इन ग्रन्थों का स्थान महत्त्वपूर्ण है। भारतवर्ष गतानुगतिक विश्वविद्यालयों में सर्वप्रथम नाट्यशास्त्र का चार वर्ष का डिग्री-कोर्स प्रारम्भ करने वाला बड़ौदा विश्वविद्यालय इन प्रकाशनों के लिए हमारे धन्यवाद का अधिकारी है। दुर्भाग्य से ऐसे शास्त्रीय ग्रन्थ पढ़ने वालों की संख्या कम होने से केवल ५०० प्रतियाँ, हरेक ग्रन्थ की, छपी हैं।

हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है। भारतीय भाषाओं का अर्घ्य उसको व्यवस्थित ढंग से मिलता रहे इसकी कोई योजना होनी चाहिए। उपन्यास, कहानी, एकांकी आदि के प्रकाशक तो सुलभ्य हैं, ऐसे ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद कराके प्रकाशित कराने की तैयारी होनी चाहिए। इस प्रकार एक भारतीय भाषा में जो कुछ अच्छा कार्य होगा उसका परिचय सभी भाषाओं के जिज्ञासुओं को हिन्दी माध्यम से मिल जायगा। गुजराती के ये चार ग्रन्थ हिन्दी को एक ओर से समृद्ध भी करेंगे और दूसरी ओर भारतवर्ष के अन्य भाषाभाषी विद्वान् भी इन ग्रन्थों का लाभ उठा सकेंगे। इस प्रकार परस्पर ज्ञान की वृद्धि होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

'सिंदूर की राख' : उर्दू के प्रसिद्ध लेखक श्री कश्मीरीलाल ज़ाकिर का हिन्दी में पहला उपन्यास है। इसमें एक मर्द की चीख और एक प्रेमी की घायल भावनाओं की कहानी है, जिसे लेखक ने अपने खून-भरे आँसुओं से कागज की सतह पर बिखेर दिया है। डिमाई साइज़ के १४० पृष्ठ का यह उपन्यास वोरा एण्ड कम्पनी, बम्बई की ओर से प्रकाशित हुआ है और वहीं से तीन रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

* * *

युग देवता : श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' द्वारा लिखित उनका नौवाँ उपन्यास है। इसमें आज के युग के तथाकथित अहम्मन्य उस नेता पर कठोर व्यंग्य है—जो अपने को जनता का सेवक कहने का दम भरता है या दम्भ रचता है। क्राउन साइज के २१२ पृष्ठ के इस उपन्यास का प्रकाशन राजहंस प्रकाशन, दिल्ली द्वारा हुआ है और चार रुपये में मिल सकता है।

* * *

धरती की पुकार : श्री बलदेवदत्त शर्मा का नवप्रकाशित उपन्यास है। ग्राम्य-जीवन पर आधारित इस उपन्यास में हमारे आज के जनजागरण का एक जीता-जागता चित्र उपस्थित किया गया है। भाषा और शैली दोनों ही सहज सुगम हैं। कथानक विशृङ्खल है फिर भी रोचक है। ग्राम-विकास की नवीनतम योजनाओं की पृष्ठभूमि में लिखा गया यह उपन्यास **हिन्दी साहित्य संसार, नई सड़क, दिल्ली** से प्रकाशित हुआ है और इसका मूल्य है ३)।

* * *

अन्तिम वेला : श्री ओंकार शरद् का लोकप्रिय लघु उपन्यास है। यह उसका तीसरा संस्करण है। ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि पर लिखे गए इस प्रेम-प्रधान उपन्यास की कथा जितनी मार्मिक है चित्रण उतने ही सजीव हैं। स्थान-स्थान पर लेखक ने ग्राम्य-जीवन तथा ग्रामीण दृश्यावलियों के साकार चित्र प्रस्तुत करके अपनी सूक्ष्म अनुभूति एवं गहरे अनुभव का परिचय दिया है। इसका प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद** से और मूल्य है २.५० रुपये।

* * *

संघर्षों के बीच : श्री गंगा प्रसाद मिश्र का सामाजिक लघु उपन्यास है। यह इसका चौथा संस्करण है। इसमें पग-पग पर सामाजिक असंगतियों एवं रोड़ों-रुकावटों से डटकर टक्कर लेने वाले संघर्षशील नवयुवक मर्मस्पर्शी को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। थोड़े में लेखक ने एक व्यक्ति के ही नहीं बल्कि पूरे समाज के संघर्षमय जीवन की झाँकी प्रस्तुत कर दी है। आज के शोषण तथा अनाचार की भित्ति पर खड़े समाज में शान्तिपूर्वक जी पाना कितना कठिन है, सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लेखक अपने प्रयास में सफल हुआ है, इसमें सन्देह नहीं। इस उपन्यास का प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद** से और मूल्य है १.७५ रुपये।

* * *

कविता

गीली आँखें, गीले गीत : में प्रसिद्ध तरुण कवि श्री शिवशंकर वाशिष्ठ की ५३ नई कविताओं का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली ने किया है। सुरुचिपूर्ण मुद्रण और आकर्षक आवरण से युक्त डिमाई साइज के ९२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक प्रकाशक से तीन रुपये में मिलती है।

* * *

सौवर्ण : में हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त द्वारा लिखित उनके 'सौवर्ण' तथा 'स्वप्न और सत्य' शीर्षक दो काव्य-रूपक प्रकाशित हैं। इनमें कवि ने प्रतीकात्मक रूप में भावी मानव की कल्पना को चित्रित किया है। इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपकों में पन्त जी की गहन चेतना दार्शनिक के रूप में उद्भूत हुई है। भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित क्राउन साइज की ११८ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक वहीं से ३॥) में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

वाणी : में श्री सुमित्रानन्दन पन्त की ४७ नवीन कविताओं का संग्रह है। पन्त जी के काव्य के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक सर्वथा उपादेय है। इसका प्रकाशन भी भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा हुआ है और इसकी पृष्ठ-संख्या १८८ है। मूल्य चार रुपये।

* * *

लेखनी बेला : में तरुण पीढ़ी के गीतकार श्री वीरेन्द्र मिश्र की ५७ नवीनतम रचनाओं का संकलन प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी गीति-काव्य की समृद्धि में इन गीतों का अभूत-पूर्व स्थान होगा। भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित क्राउन साइज के १८२ पृष्ठ की यह पुस्तक तीन रुपये में मिलती है।

* * *

इधर **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद** से डॉ० ब्रजमोहन गुप्त के दो कविता-संग्रहों **'संघर्ष'** और **'जिज्ञासा'** के नये संस्करण प्रकाशित हुए। इन दोनों संग्रहों में अधिकतर गीत ही हैं, लेकिन बीच-बीच में एकाध मुक्त छन्द में लिखी गई कविताएँ भी दे दी गई हैं। जीवन के उल्लास, वेदना, संघर्ष, मिलन, वियोग, राग, विराग, पराधीनता और शोषण के प्रति विद्रोह, प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति अनुरक्ति आदि को इन संग्रहों की कविताओं में सफल अभिव्यक्ति मिल सकी है। कवि की अनुभूति में गहराई है और भाषा में सहज प्रवाह है। इन संग्रहों की रूप-सज्जा तथा सफाई-छपाई साफ-सुथरी और मूल्य है प्रत्येक का १.५० रुपये।

* * *

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद से ही हिन्दी की उर्दू शैली के महान् कवि स्व० मिर्जा ग़ालिब की चुनी हुई रचनाओं का सुसम्पादित नया संस्करण प्रकाशित हुआ है। इसका सम्पादन किया है श्री ओंकार शरद तथा हुनर शाहजहाँ-पुरी ने। आरम्भ में ग़ालिब के जीवन और कला के सम्बन्ध में एक छोटा-सा परिचयात्मक लेख है और फिर उनकी रचनाएँ नागरी लिपि में दे दी गई हैं। बीच-बीच में अरबी-फारसी के जो मुश्किल शब्द आये हैं उनके सरल हिन्दी अर्थ दे दिये गए हैं। रूपरंग सादा तथा आकर्षक है। १२५ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य २.५० रुपये।

* * *

इकबाल, सरदार जाफरी, फैज अहमद फैज : इससे पहले उर्दू के प्रसिद्ध शायरों का परिचय देने वाली प्रस्तुत माला के प्रकाशकों के यहाँ से पाँच पुस्तकें छप चुकी हैं। प्रत्येक पुस्तक में शायर की जीवनी और उनकी कविता में से प्रतिनिधि चयन करके दिया गया है। संक्षेप में इस प्रकार कवियों के और उनके कृतित्व से वाकफ़ियत हो जाती है। ग़ालिब, फ़ैज़ तथा जाफ़री की कविता के प्रेमी इन तीनों पुस्तकों को अवश्य खरीदना चाहेंगे।

इन संग्रहणीय सुन्दर पुस्तकों का प्रकाशन **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** ने किया है—मूल्य प्रत्येक का १ रुपया ५० नये पैसे है।

* * *

काम और कामिनी : श्रीमती प्रेमा कंटक द्वारा लिखित मराठी के इस प्रसिद्ध उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर श्री परदेशी ने प्रस्तुत किया है। अनुभूति और अभिव्यक्ति की तीव्र मार्मिकता इस इतिवृत्तात्मक कथा की उल्लेखनीय विशेषता है। समाज के बन्धनों में जकड़े हुए पारिवारिक जीवन तथा सामाजिकता की नाना विधाओं से नितान्त परे उन्मुक्त आश्रम के जीवन का दर्शन तथा अनुभव लेखिका की मर्मभेदी दृष्टि एवं संवेदनशील हृदय का संयोग पाकर उपन्यास के पृष्ठों में प्रभावपूर्ण ढंग से जीवन्त हो उठा है।

पुस्तक के आरम्भ में महात्मा गांधी से एक प्रश्नोत्तर का महत्त्वपूर्ण उद्धरण दिया गया है जो पुस्तक के मूल-उद्देश्य की ओर इंगित करता है।

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स (प्रा०) लि०, बम्बई, द्वारा प्रकाशित २९० पृष्ठों के इस सजिल्द उपन्यास का मूल्य ६ रुपये मात्र है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

तुम बड़ी पागल हो : सुश्री मालती परूलकर की ग्यारह कहानियों का संग्रह है। इसमें लेखिका ने हमारे पारिवारिक जीवन की विभिन्न कहानियाँ प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। यह लेखिका का पहला संग्रह है। इसका प्रकाशन **राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली** द्वारा हुआ है। क्राउन साइज के १३६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक प्रकाशक से २ रुपये ५० नये पैसे में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

काल सुन्दरी : में नवयुवक कथाकार श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव की दस कहानियों का संकलन प्रस्तुत किया गया है। प्रायः सभी कहानियों से हमारे मध्यवर्गीय समाज का चित्रण बड़ी सफलतापूर्वक हुआ है। १४४ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से तीन रुपये में प्राप्त होती है।

* * *

जानवर और जानवर : श्री मोहन राकेश की नौ कहानियों का संग्रह है। सरल और बोधगम्य भाषा में लिखी गई इन कहानियों में हमारे समाज की विषमताओं पर जहाँ कटु व्यंग्य-प्रहार हैं वहाँ उनका सहानुभूतिपूर्ण मनोवैज्ञानिक अध्ययन भी है। क्राउन साइज के १६० पृष्ठ की यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ने प्रकाशित की है और वहीं से तीन रुपये में मिलती है।

* * *

नेत्र दान : में श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' की १० कहानियों का संग्रह प्रस्तुत किया गया है। इनमें कुछ ऐतिहासिक हैं और कुछ लोक-गीतों तथा लोक-कथाओं पर आधारित। 'अन्तिम कहानी' 'में टैसीटोरी से मिला' एक संस्मरण है, क्राउन साइज के ११२ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **विक्रेता प्रकाशन संघ प्रकाशन दिल्ली,** ने किया है और यह वहीं से २ रुपये ५० नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

Latest Publications

Will be out by
15th AUGUST '58

An Exposition of Vata, Pitta, Kapha in Modern Terms and Principles of Synthetic
SYSTEM OF TREATMENT

SECRETS OF INDIAN MEDICINE

By
Dr. R. S. AGARWAL

Foreword by
Pt. SHIV SHARMA
(President All India Ayurvedic Association)

Price : Rs 4-0 *Bound : Rs 5-0*

★

हमारी आँखें

(एलोपैथिक, आयुर्वेदिक प्राकृतिक साधनों द्वारा निदान)

लेखक : डा० एम० एस० अग्रवाल

मूल्य : ४ रु० ● सजिल्द : ५ रु०

Post Free Service for the Orders Before August 15th.

Sole Agent : Kitab Mahal,
28, Faiz Bazar-DELHI.

Dr. AGARWAL'S EYE INSTITUTE
Dr. Agarwal Road,
15, Darya Ganj, DELHI.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे कथा गुरु का कहना है : में प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री रावी की ८२ लघु कथाओं का संग्रह है। इन कथाओं का स्रोत केवल लेखक का अपने ढंग का चिन्तन है। इन कहानियों की शैली की छाप प्रत्येक पाठक पर पड़े बिना न रहेगी। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित २४० पृष्ठ की यह पुस्तक वहीं से तीन रुपये में प्राप्त हो सकती है।

* * *

नये चित्र : श्री सत्येन्द्र शरत् द्वारा सम्पादित हिन्दी के नये कथाकारों की सन् १९४८ से १९५२ तक की प्रतिनिधि कहानियों का संग्रह है। कहानीकारों में सर्वश्री कृष्णा सोबती, रामकुमार, राय आनन्द कृष्ण, कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, जीवन नायक, मिसला मिश्रा, राधाकृष्ण प्रसाद, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, राजेन्द्र यादव, परदेशी, मोहन राकेश और स्वयं सम्पादक सत्येन्द्र शरत् हैं। नई पीढ़ी के कहानी-लेखकों की प्रतिभा का अंकन करने वाले पाठकों के लिए यह संग्रह पठनीय है। भारतीय ज्ञानपीठ, काशी द्वारा प्रकाशित क्राउन साइज के २१४ पृष्ठों का यह संग्रह वहाँ से तीन रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

* * *

यथार्थ और कल्पना : हिन्दी कहानियों का एक नया संकलन है। संकलनकर्ता और सम्पादक हैं श्री विराज एम०ए० और प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से। वैसे तो इसे 'हिन्दी की प्रतिनिधि' कहानियों के नाम से अभिहित किया गया है, लेकिन यह संकलन आज के हिन्दी कथा-साहित्य का विशेष प्रतिनिधित्व नहीं करता। पुरानी पीढ़ी के हिन्दी कथाकारों की कहानियों का ही इसमें मुख्यतः संग्रह है। कहानीकारों की तालिका में वही पुराने नाम दुहराये गए हैं जो स्कूल-कालेजों में पढ़ाये जाने वाले अन्य कथा-संकलनों में प्रायः मिलते हैं। संकलन के आरम्भ की भूमिका पिष्टपेषित बातों से भरी है। सफाई-छपाई, गेटअप आदि सुन्दर है। मूल्य ४.५० नये पैसे।

* * *

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ : उर्दू के १५ प्रमुख कहानीकारों की प्रतिनिधि कहानियाँ इस संग्रह में संकलित की गई हैं; साथ में प्रत्येक कहानीकार का अपने जीवन और कला के सम्बन्ध में उसके अपने शब्दों में परिचय दिया गया है। कहानियाँ कृष्णचन्द्र, राजेन्द्रसिंह बेदी, मुमताज़ मुफ़्ती, शफ़ीक़-उर्रहमान, इब्राहीम जलीस, कन्हैयालाल कपूर, रामानन्द सागर, इस्मत चुगताई, ग़ुलाम अब्बास सआदतहसन मन्टो, ख़्वाजा अहमद अब्बास, बलवन्तसिंह, अहमद नदीम कासमी, हाजार मसरूर तथा प्रकाश पण्डित की हैं। क्राऊन आकार के २४२ पृष्ठों की इस सुमुद्रित, सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३ रुपये ५० नये पैसे है। **प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली**

* * *

आलोचना, निबन्ध

हिन्दी गद्य-काव्य : डॉक्टर पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' द्वारा लिखित पी० एच० डी० उपाधि के लिए स्वीकृत शोधपूर्ण प्रबन्ध है। इस प्रबन्ध पर आगरा यूनीवर्सिटी से उन्हें डॉक्टरेट मिली है। इसमें विद्वान् लेखक ने प्रारम्भ में गद्य-काव्य की परिभाषा देकर फिर हिन्दी-गद्य काव्य के विभिन्न रूपों पर विस्तार से विचार किया है। हिन्दी गद्य-काव्य के क्षेत्र में अब तक चली आने वाली इस मान्यता का लेखक ने बड़े ही तर्कपूर्ण ढंग से निराकरण कर दिया है कि हिन्दी में गद्य-काव्य-लेखन का प्रचलन बंगला से हुआ। 'कमलेश' जी ने पुष्ट प्रमाणों और तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध किया है कि वेदों और उपनिषदों के काल से चली आने वाली गद्य-काव्य की धारा ने हिन्दी में स्वयं ही अपना स्थान बनाया। इस ग्रन्थ में हिन्दी गद्य-काव्य की अब तक प्राप्त कृतियों और लेखकों का सर्वाङ्गीण अध्ययन पाठकों को मिलेगा। प्रारम्भ में श्री विनयमोहन शर्मा की विद्वत्तापूर्ण भूमिका है। डिमाई साइज के ३४६ पृष्ठ का यह ग्रन्थ **राजकमल प्रकाशन दिल्ली** ने प्रकाशित किया है और वहीं से सात रुपये में मिलता है।

* * *

हिन्दी में भ्रमर गीत काव्य और उसकी परम्परा : में डॉक्टर स्नेहलता श्रीवास्तव ने विषय-प्रवेश, भ्रमर-गीत काव्य का आधार, हिन्दी-काव्य में भ्रमर गीत-परम्परा का क्रमिक विकास एवं उपलब्ध सामग्री, भ्रमर गीत की धार्मिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि, भ्रमर गीत का आलोचनात्मक अध्ययन, रीति-युग में भ्रमर गीत, आधुनिक काल में प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

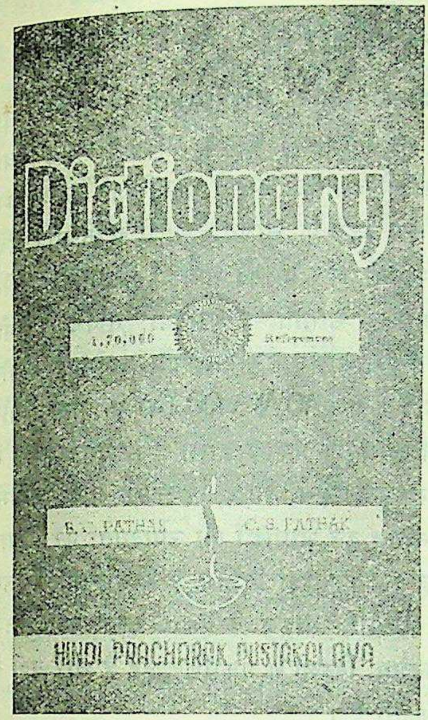

हिन्दी जगत् को

'प्रचारक' की महान् देन

जिसकी तैयारी में दस वर्ष का समय लगा है

आदर्श सीनियर डिक्शनरी

(अंग्रेजी से हिन्दी)

•

लेखक

श्री भालचन्द्र पाठक तथा श्री चन्द्रशेखर पाठक

डिमाई साईज़ के १८७२ पृष्ठ, २३४ फार्म, १७०,००० रिफरेन्सेज, १५०० चित्र, ग्लेज़ कागज़ पर मोनो वर्णों में मुद्रित, परिशिष्ट में अधुनातन शब्दों का चयन आदि डिक्शनरी की विशेषताएँ हैं। प्रत्येक घर, पुस्तकालय, ऑफ़िस, कॉलेज, स्कूल के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

सूल्य चौदह रुपये मात्र

निकटस्थ पुस्तक-विक्रेताओं से लें या सीधा हमें लिखें :

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० ७०, ज्ञानवापी, वाराणसी-१

कलकत्ता आफिस—१९५/१ महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमर-गीत काव्य, तथा भ्रमर गीत-परम्परा का विकास-सूत्र एवं मूल्यांकन आदि विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत भ्रमर-गीत काव्य और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों का विस्तृत पर्यालोचन किया है। इस ग्रन्थ पर उन्हें दिल्ली विश्व-विद्यालय द्वारा पी·एच० डी० उपाधि प्राप्त हुई है। डिमाई साइज के ६१६ पृष्ठ का यह ग्रन्थ भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़ ने प्रकाशित किया है और वहीं से १२) में मिल सकता है।

* * *

चन्द्रगुप्त समीक्षा : प्रसाद जी के विख्यात नाटक 'चन्द्रगुप्त मौर्य' की प्रश्नोत्तर-रूप में विस्तृत समीक्षा की गई है। यह नाटक चूँकि प्रायः प्रत्येक विश्वविद्यालय की उच्च परीक्षाओं तथा उनके स्तर की अन्य परीक्षाओं के लिए स्वीकृत है अतः लेखक-द्वय श्री भारत भूषण 'सरोज' तथा श्रीनिवास शर्मा ने परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखकर इसकी कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन, देशकाल, शैली और उद्देश्य—नाट्यकला के छः तत्वों के आधार पर प्रश्नोत्तर रूप में समीक्षा प्रस्तुत की है। प्रसादजी की सामान्य नाट्यकला का विश्लेषण तथा नाटक का संक्षिप्त सार जोड़ देने से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ गई है। इसका प्रकाशन हुआ है हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली से और मूल्य है १।)।

* * *

आज का भारतीय साहित्य : साहित्य अकादेमी की ओर से प्रकाशित यह ग्रंन्थ उस मूल अंग्रेजी की पुस्तक का अनुवाद है जिसका प्रकाशन हिन्दी के साहित्य-क्षेत्र में अच्छी खासी चर्चा का केन्द्र बन गया था। इसमें विधान में उल्लिखित १४ भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त आज के अंग्रेजी के भारतीय साहित्य का भी परिचय विभिन्न भाषाओं के अधिकारी विद्वानों ने दिया है। हिन्दी-साहित्य का परिचय श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन द्वारा लिखित है।

प्रस्तुत हिन्दी-ग्रन्थ अंग्रेजी के संशोधित-परिवर्द्धित संस्करण का अनुवाद है, ऐसी विज्ञप्ति साहित्य अकादेमी के मन्त्री की ओर से इसमें प्रकाशित की गई है।

प्रकाशक : **राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली;** पृष्ठसंख्या ४६२, सजिल्द, मूल्य ७ रुपये।

* * *

भाषा-विज्ञान

अक्षरों का आरम्भ और भाषा-विज्ञान के पहले भाग में आगा हैदर हुसैन ने पृथ्वी, मनुष्य, आर्य, इतिहास विधा, भाषा, बोलियों की बनावट, बोलने और लिखने का आरम्भ विचारों को एक करने के साधन, बोली अपने-आप पैदा होती है, मनुष्य और पशुओं की भाषा, बोली का प्राचीन इतिहास, भाषा की उन्नति की सीढ़ियाँ, नोकदार तिमी, कागज, प्राचीन पुस्तकालय, हीरोलिफी, वर्णमाला, और गणना शीर्षक १८ अध्यायों में वर्णमाला में प्रारम्भ और विकास पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डाला है। दूसरे भाग में सामी बोली, संस्कृत, चीन, मिस्र, इवरानी आदि विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत इन भाषाओं की उपादेयता पर विचार किया है। यह पुस्तक भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उपादेय है। डिमाई साइज के ८८ पृष्ठ की पुस्तक **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली** से प्रकाशित हुई है और वहीं से दो रुपये में मिलती है।

* * *

शिक्षा-विज्ञान

अ० भा० सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन, काशी द्वारा प्रकाशित पुस्तक **भाषा का प्रश्न** में महर्षि विनोबा भावे द्वारा भारत की भाषा सम्बन्धी समस्या के सम्बन्ध में व्यक्त किये गए विचारों का संकलन है। समस्या के विभिन्न पक्षों का सम्यक् अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत करने के बाद यह स्पष्ट मत व्यक्त किया गया है कि जब तक अंग्रेजी को अपदस्थ करके उसकी जगह हिंदी को प्रतिष्ठित नहीं किया जायगा तब तक देश का कल्याण सम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त हिन्दी प्रचार के अनेक क्रियात्मक उपाय भी सुझाये गए हैं। मूल्य २५ नये पैसे।

* * *

पहली कक्षा में हिन्दी सिखाने का रुचिकर ढंग : में टीचर्स कालिज जामिया मिलिया इस्लामिया के अध्यापक श्री अब्दुल गफ्फार मुदहोली ने बच्चों को वर्णमाला सिखाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस प्रकार हिन्दी की शिक्षा दें, इस पर अच्छी तरह विचार किया है। अध्यापकों के लिए यह पुस्तक पठनीय है। कापी साइज के ७८ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन मकतबा जामिया लिमिटेड, दिल्ली द्वारा हुआ है और वहीं से एक रुपये बारह आने में मिलती है।

* * *

जामिआ विधि : में पहली कक्षा में हिन्दी सिखाने के लिए अध्यापक अब्दुल गफ़्फ़ार मुदहोली ने अध्यापकों के लिए उपयोगी विधि पर विचार किया है। बेसिक स्कूल के अध्यापकों के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी है। कापी साइज के १२० पृष्ठ की यह पुस्तक मकतबा जामिया-लिमिटेड, दिल्ली ने प्रकाशित की है और वहीं से दो रुपये बारह आने में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

बुनियादी शिक्षा : बुनियादी प्रशिक्षण केन्द्र, महिलाश्रम, वर्धा के भूतपूर्व प्राध्यापक श्री गुरुशरण सक्सेना द्वारा लिखी गई पुस्तक का यह चौथा संस्करण है। बुनियादी शिक्षा का विकास-क्रम दिखाते हुए लेखक ने इस शिक्षा-प्रणाली के सम्बन्ध में बहुत थोड़े में पर्याप्त जानकारी प्रस्तुत की है। विषय का व्यक्तिगत अनुभव होने के कारण ही लेखक इतनी सहज भाषा-शैली में 'गागर में सागर' वाली उक्ति चरितार्थ कर सका है। इसका प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद** से और मूल्य है ।।।)।

* * *

आत्म रचना अथवा आश्रमी शिक्षा (दूसरा भाग) : श्री जुगतराम दवे की गुजराती पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है। इस पुस्तक में आश्रम-जीवन के सम्बन्ध में बड़े ही सुगम ढंग से विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। पुस्तक के इस भाग में लेखक ने "आश्रमवासी की अन्तरश्रद्धाओं" का बोधगम्य और विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। आत्मोन्नति तथा जनसेवा में रुचि रखने वालों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसका प्रकाशन हुआ है **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद** से और मूल्य है १।।)।

* * *

अध्यात्म-धर्म

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास : डॉ० नलिनाक्ष दत्त और श्री कृष्णदत्त वाजपेयी द्वारा लिखा गया एक गवेषणात्मक ग्रन्थ है। उत्तर प्रदेश भगवान् बुद्ध तथा बौद्ध-धर्म का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य-क्षेत्र रहा है। बौद्ध-धर्म के सर्वांगीण उन्नयन में इस प्रदेश का अपना विशेष स्थान है। उत्तर प्रदेश के प्राचीन राज्यों, बुद्ध के पूर्व यहाँ की धार्मिक तथा सामाजिक स्थिति का सम्यक् विवेचन करने के बाद बुद्धकालीन तथा बुद्धोत्तर उत्तर-प्रदेश की राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक दशा का गवेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया है। बौद्ध धर्म के विकास का क्रम दिखलाते हुए इस प्रदेश के जिन सांस्कृतिक अंगों पर बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है, उनका भी स्पष्ट विवेचन लेखक-द्वय ने कर दिया है। भगवान् बुद्ध की जीवनी तथा बौद्ध धर्म सम्बन्धी अन्य आवश्यक बातों का सामान्य उल्लेख कर देने से ग्रन्थ

आरोग्य-मन्दिर प्रकाशन

१. रोगों की नयी चिकित्सा : ले० लूई कूने — २-०-०
२. कशमीर में पन्द्रह दिन : ले० विट्ठलदास मोदी — १-०-०
३. बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग : स० विट्ठलदास मोदी — ३-०-०
४. सर्दी जुकाम खाँसी : डॉ० रैसमस अलसाकर, एम० डी० — ०-१२-०
५. उपवास से लाभ : स० विट्ठलदास मोदी — १-८-०
६. जीने की कला : ले० विट्ठलदास मोदी — १-४-०
७. प्राकृतिक जीवन की ओर : ले० ऐडोल्फ जस्ट — २-८-०
८. उठो ! : ले० स्वामी कृष्णानन्द — १-०-०
९. रोगों की सरल चिकित्सा : ले० विट्ठलदास मोदी — ३-०-०
१०. स्वास्थ्य कैसे पाया ? : स० विट्ठलदास मोदी — १-८-०
११. आदर्श आहार : ले० डॉ० ऐस० सी० दास — १-०-०
१२. योगासन : ले० आत्मानन्द — २-०-०

मिलने का पता :

व्यवस्थापक : "आरोग्य"

पो० आरोग्य-मन्दिर, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भी उपयोगी बन गया है। ऐसा उत्कृष्ट खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखने के लिए लेखक निश्चय ही बधाई के पात्र हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **प्रकाशन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ** से और मूल्य है ६)। सफाई-छपाई साफसुथरी और सुरुचिपूर्ण है।

* * *

गीता मन्थन : श्री कि० घ० मशरूवाला के लोकप्रिय गुजराती ग्रन्थ का सफल हिन्दी रूपान्तर है। गांधीजी के आदर्शों, सिद्धान्तों और विचारों के सफल भाष्यकार के रूप में श्री मशरूवाला पर्याप्त कीर्ति अर्जित कर चुके हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में उन्होंने गीता जैसे शाश्वत और सनातन महत्व रखने वाले महान् धर्मग्रन्थ के अत्यन्त गूढ़ विषय की बड़ी ही सरल, बोधगम्य और रोचक शैली में व्याख्या प्रस्तुत की है। भारत की हिन्दी पढ़ और समझ लेने वाली जनता में यह ग्रन्थ अवश्य लोकप्रियता प्राप्त करेगा, इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रकाशन हुआ है **नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद** से और मूल्य है ३)।

* * *

कोष

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली से प्रकाशित **अशोक हिन्दी-कोष** एक उपयोगी प्रकाशन है। आकार छोटा होने पर भी इसके सम्पादक प्रो० आदित्येश्वर कौशिक ने इसमें बड़ी कुशलता से ३०,००० शब्द समाविष्ट कर दिये हैं। इसके अतिरिक्त भी इस कोष की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं। साधारण बोलचाल तथा ग्राम व्यवहार के शब्दों के अतिरिक्त नये गढ़े गए प्रायः सभी उपयोगी पारिभाषिक शब्द भी दे दिये गए हैं। अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों के पाठकों की सुविधा के लिए अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी दे दिया गया है। अन्त में प्रचलित लोकोक्तियों और मुहावरे आदि दे देने से कोष और भी उपयोगी बन गया है। मू० ३·७५ रुपये।

* * *

बालोपयोगी

लोककथाएँ : श्री द्रोणवीर कोहली द्वारा सरल भाषा और सुगम शैली में लिखी गई एक बालोपयोगी पुस्तक है। लोक-कथाओं को माध्यम बनाकर बच्चों के लिए इधर हिन्दी में कई दर्जन पुस्तकें प्रस्तुत की जा चुकी हैं लेकिन यह पुस्तक कुछ बातों में दूसरों से बिलकुल भिन्न है। अन्य पुस्तकों में आपको मिलेगा कि एक तो उनकी भाषा सरल नहीं है और अगर सरल भी है तो लोक-कथा चाहे जिस प्रदेश की हो लेकिन भाषा वही एक जैसी टकसाली हिन्दी है। ऐसा होने से लोक-कथा की अपनी मूल विशेषता ही नष्ट हो जाती है। इस पुस्तक में ऐसा नहीं किया गया है। जहाँ आवश्यकता पड़ी है वहाँ लोक-भाषा का भी व्यवहार किया गया है, और लोक-शैली का निर्वाह तो आरम्भ से अन्त तक है। चित्र भी इसमें जो दिये गए हैं वे सार्थक और आकर्षक हैं। इसके चित्रकार हैं श्री कुमारिल स्वामी और प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से। सजिल्द और इतनी आकर्षक होते हुए भी मूल्य है केवल १.२५ रुपये।

* * *

न्यू लिटरेचर, इलाहाबाद ने स्काउटिंग संबन्धी दो उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। पहली है **सिंहशावक कब** और दूसरी है **सिंहशावक (कब) नायक**। पत्र की शैली में अत्यन्त रोचक ढंग से लिखी गई इन दोनों पुस्तकों में स्काउटिंग सम्बन्धी लगभग सभी उपयोगी बातें बड़े सहज ढंग से समझा दी गई हैं। बालकों में साहस, सदाशयता, सूझ-बूझ तथा राष्ट्रनिर्माण की भावना जगाने वाली इन पुस्तकों की उपयोगिता रंगीन और सार्थक चित्रांकनों के कारण और भी बढ़ गई है। मूल्य प्रत्येक का १) मात्र।

* * *

अफ्रीका : राजकमल विश्व परिचय माला के अन्तर्गत प्रकाशित सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री मदनगोपाल द्वारा लिखी गई एक उपयोगी पुस्तक। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य किशोरों और नवसाक्षर प्रौढ़ों को विश्व के विभिन्न महाद्वीपों के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी प्रदान करना है। प्रस्तुत पुस्तक अफ्रीका महाद्वीप तथा उसके छोटे-बड़े विभिन्न देशों के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। लेखक ने बड़ी ही कुशलता से सरल-सुगम भाषा-शैली में इस महाद्वीप के लगभग प्रत्येक देश की भौगोलिक तथा सामा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट उपन्यास

राहुल सांकृत्यायन

विस्मृत यात्री	५।।।)
अनाथ	२।।)
विस्मृति के गर्भ में	३)
शैतान की आँख	२।)
सोने की ढाल	४)
सिंह सेनापति	४)
जय यौधेय	५)
राजस्थानी रनिवास	५)
दा खुन्दा	५)
सूदखोर की मौत	१।।)
जादू का मुल्क	२।।)

डॉ० रांगेय राघव

मुर्दों का टीला	७।।)
रूप की ज्वाला	३)
सीधा सादा रास्ता	६।।)
चीवर	५)
प्रतिदान	३।।)
अँधेरे के जुगुनू	४)
विषाद मठ	३।।)
बोलते खण्डहर	३)
अँधेरे की भूख	३)

निराला

बिल्लेसुर बकरिहा	२।।)
प्रभावती	३)
चोटी की पकड़	३)

नागार्जुन

वरुण के बेटे	३)
रतिनाथ की चाची	२।।)
बलचनमा	३)
नई पौध	२।।)

कन्हैयालाल मुन्शी

किसका अपराध	३)
पृथ्वी वल्लभ	३)
भगवान् कौटिल्य	३)
स्वप्न द्रष्टा	५)
शिशु और सखी	२)
राजाधिराज	६)
पाटण की प्रभुता	३)

शरत् चन्द्र

चन्द्रनाथ	१।)
अरक्षणीया	१।)
नव विधान	१।)
गृह दाह	३)
देवदास	१।।।)
दत्ता	१।।)
विराज बहू	२)
देहाती दुनिया	१।।।)
परिणीता	१)

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

व्यंग कौतुक	२)
मालिनी	२)
शशांक	२)
चतुरङ्ग	२)
एला दीदी	२)
तीन साथी	२)
चारुलता	२)

अजीमबेग चग़ताई

श्रीमतीजी	३)
फुलवूट	१।)
दो उपन्यास	१।।।)
खुरपा बहादुर	२।।)

शौकत थानवी

बेगम	२।।)
मौलाना	२।।)
आठ सौ चालीस	३।।)

अमर विदेशी उपन्यास

जय पराजय :	टामस हार्डी	३)
अन्तर्द्वन्द्व :	एन्टन चेख़ोव	३)
साइकिल चोर :	वार्तोलिनि	३)
अतृप्त वासनाएँ :	ए० मोराविया	२)
ममता के बन्धन :	सॉमरसेट मॉम	३)
कोनी :	डी० एच० लारेन्स	२।।)
बरसात और आवारा :	सॉमरसेट मॉम	२।।)
अपराध और दण्ड :	दास्तवस्की	४)
रोम की नगर-वधू :	ए० मोराविया	६)
महा समर :	इलिया एहरेन्बुर्ग	५)
भूख :	न्यूट हैम्सन	४)
शिल्पी का प्रेम :	पाइरे मिले	३)
पेरिस का रंगीला :	मोपासाँ	३)
मदाम बोवैरी :	फ्लाबर्ट	३)
नाना :	एमिल जोला	३)
दिव्य जीवन :	फ्रांज वारलाफ	२)
नाना की माँ :	एमिल ज़ोला	३।।।)
दोन के किनारे :	सोलोखव	४)
बराबास :	पायरलागरविस्त	२।।)
सीमाएँ टूटीं :	बरकेनफील्ड	२।।)

अन्य उपन्यास

बूँद और समुद्र :	अमृतलाल नागर	१२)
खाली कुर्सी की आत्मा :	लक्ष्मीकान्त वर्मा	८।।)
सेठ बाँकेमल :	अमृतलाल नागर	१।।)
वीर कुणाल :	किशोर साहू	४)
चढ़ती धूप :	अंचल	४)
नई इमारत :	अंचल	४।।)
सूनी घाटी का सूरज :		३)
तन्तुजाल :	डॉ० रघुवंश	६)
श्यामू की माँ :	साने गुरूजी	३)
काला पानी :	वीर सावरकर	५)
इन्दिरा :	बंकिमचन्द्र चटर्जी	१।।)
निर्यातन :	भगवती प्रसाद वाजपेयी	२)
राधारानी :	बंकिमचन्द्र चटर्जी	।।।)
मिलन :	डॉ० हिकमतुल्ला खाँ	३।)

रोमांच-प्रधान उत्कृष्ट उपन्यास

मौत के मुँह में, प्रेम का चक्कर, खूनी कौन, हीरे की चोरी, पीताम्बर का खून, बैंक में डाका, कठपुतली का रहस्य, नागिन, अपराधों की छाया में, खूनी चक्कर, जाली वसीयत, वासना का जहर, खून का प्याला, आस्तीन का साँप, ले० सूर्या कमलानी। मूल्य प्रत्येक का १)।

किताब महल

५६ ए, जीरो रोड, इलाहाबाद • २८, फैज़ बाज़ार, दिल्ली • २३५, हार्नबी रोड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

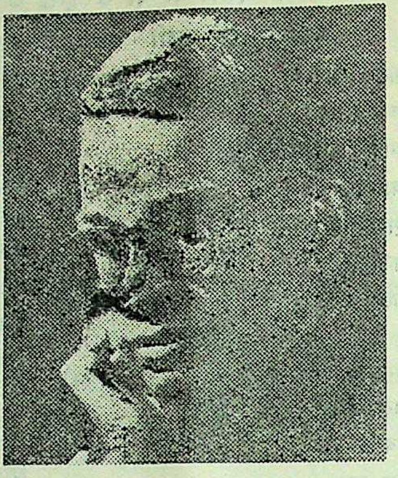

श्री वि० स० खाण्डेकर

भारतीय भाषाओं के लोकप्रिय

श्री खाण्डेकरजी का लोकप्रिय साहित्य मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल, मलयालम् और राष्ट्र-भाषा हिन्दी में प्रकाशित हुआ है।

हिन्दी में प्रकाशित रचनाएँ

१.	उल्का	(उपन्यास)	रु०	६·००
२.	दो ध्रुव	,,	,,	६·००
३.	हरा चंपा	,,	,,	६·००
४.	दो मन	,,	,,	६·००
५.	सूना मन्दिर	,,	,,	४·५०
६.	महला प्रेम	,,	,,	४·५०
७.	झुलसी मंजरी	,,	,,	५·००
८.	आँसू	,,	,,	६·००
९.	क्रौंचवध	,,	,,	६·००
१०.	रुपहले बादल	,,	,,	५·००
११.	संध्यादीप	(कहानी)	,,	३·००
१२.	कलिका	(लघु निबन्ध)	,,	६·००
१३.	प्रीति की खोज	(कहानी)	,,	५·००
१४.	चांदनी	(लघु निबन्ध)	,,	६.००

रुपहले बादल

लेखक वि० स० खाण्डेकर

मू० ५ रुपया

रुपहले बादल

(सामाजिक दृष्टि से महत्त्व का उपन्यास)

आदर्शवादी नवयुवक अभय के मन में समाजवाद के प्रति किस तरह निष्ठा उत्पन्न होती है और आगे चलकर वह किस तरह दृढ़मूल हो जाती है, इसका सहज सुन्दर ढंग से वर्णन—

जिस मध्यम वर्ग से अभय आया है उसके संस्कार, बन्धन, शक्ति आदि बातों का यथोचित आलोचन

हिन्दी का यथार्थ और मनोरम चरित्र-चित्रण

प्रमिला जैसी निर्मला युवती का सजीव चित्रण

प्रकाशित हुआ

चाँदनी

लेखक—वि० स० खाण्डेकर

चाँदनी काव्य, व्यंग्य, विनोद, तत्त्वचिन्तन, आत्म-कथन, जीवन-दर्शन, इत्यादि अनेक बातों का अच्छे ढंग से लिखा हुआ लघु निबन्ध प्रकाशित हुआ।

खाण्डेकर साहित्य ए० एच० व्हीलर एण्ड कम्पनी के सभी बुक स्टॉलों पर मिलता है।

प्रकाशक—**देशमुख एण्ड कम्पनी, २२ कसबा, पूना-२**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिक परिस्थितियों का सम्यक् परिचय प्रस्तुत कर दिया है। स्थान-स्थान पर दिये गए चित्रों तथा मानचित्रों से पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है २)।

* * *

कठपुतली, राबिन्सन क्रूसो, खजाने की खोज में, गुलिवर की यात्राएं : नव-वयस्कों के लिए पठनार्थ अंग्रेजी के चार विश्वविख्यात उपन्यासों के ये संक्षिप्त रूपान्तर **शिक्षा भारती, दिल्ली–६** ने प्रस्तुत किये हैं, वितरक हैं **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली**। चारों पुस्तकें सचित्र और सजिल्द हैं, और मूल्य सब का एक समान, अर्थात् १ रुपया ५० नये पैसे है। बालक-बालिकाएँ इन कहानियों को चाव से पढ़ेंगे। चारों पुस्तकें श्री श्रीकान्त व्यास द्वारा लिखी गई हैं।

* * *

ग्रामोपयोगी

खेती और भोजन में श्री रामकृष्ण शर्मा ने केवल यही नहीं बताया है कि क्या खाया जाय, कैसे खाया जाय, बल्कि इस बात का भी निर्देश किया है कि उसे कैसे और कहाँ पैदा किया जाय। समतोल पैदावार के अभाव से कैसे समाज का सन्तुलन बिगड़ने का खतरा है, खाद्य सम्बन्धी समस्याओं को सही दृष्टि से हल किये बिना कैसे राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर नहीं बढ़ सकता। राष्ट्रनिर्माण तथा बुनियादी शिक्षा में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए पुस्तक उपयोगी है। इसका प्रकाशन हुआ है **लहर प्रकाशन, इलाहाबाद** से और मूल्य है १)।

* * *

ग्राम विज्ञान (भाग १ व २) : महिला ग्राम विद्यापीठ, प्रयाग द्वारा संचालित ग्राम विनोदिनी—परीक्षा में बैठने वाली परीक्षार्थिनियों के लिए उसके नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार श्री हरिश्चन्द्र गौड़ द्वारा लिखी गई पुस्तक है। इसमें ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित लगभग समस्त समस्याओं का सम्यक् विवेचन एवं वैज्ञानिक ढंग से उनके समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक का मुख्य उद्देश्य ऐसे लोगों को तैयार करना है, जो ग्रामों की उन्नति में पूरा सहयोग दें और स्वयं अपना तथा अपने राष्ट्र का जीवन आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से सफल बनाने में समर्थ हैं। सरल-सुबोध भाषा-शैली में लिखी गई यह पुस्तक सामान्य पाठकों को भी रुचेगी ऐसी आशा है। इसका प्रकाशन हुआ है **शिक्षा भवन, २५७ चक, इलाहाबाद** से और मूल्य है प्रत्येक का क्रमशः १) तथा १)।

* * *

शिक्षा भवन, २५७ चक, इलाहाबाद से ही प्रकाशित **ग्राम विज्ञान** नाम की एक दूसरी पुस्तक भी है जो परीक्षोपयोगी न होकर सामान्य पाठकों के लिए लिखी गई है। श्री रामसुमेर त्रिपाठी ने अपनी इस पुस्तक में ग्राम्य जीवन सम्बन्धी विभिन्न विषयों कृषि, उद्योग, उत्पत्ति, पशु, कर, ऋण, स्वास्थ्य, सहकारिता, सामुदायिक योजनाएँ, मनोरंजन आदि के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी तथा विभिन्न ग्रामीण समस्याओं का विवेचन और समाधान प्रस्तुत किया है।

हमारे नये उपन्यास

राज संन्यासी : 'धूमकेतु', अनु० श्यामू संन्यासी
एक राजकुमार के त्याग और बलिदान की अपूर्व ऐतिहासिक गौरवकथा जो युग-युग तक उद्बोधन प्रदान करने वाली सिद्ध होगी। **मू० रु० ५.५०**
क्राउन साइज़, पृ० ३६६, सुन्दर मजबूत जिल्द, सुन्दर द्विरंगी आवरण

काम और कामिनी : प्रेमा कंटक, अनु० परदेशी
(महात्मा गांधी के संवादसहित)
यह अत्यन्त रोचक उपन्यास पाप पर प्रेम की विजय और पाप के प्रायश्चित की अनोखी कहानी प्रस्तुत करता है। **मू० रु० ६**), क्राउन साइज़, पृ० सं० ३६०, आकर्षक द्विरंगी आवरण, मजबूत जिल्द।

अमरनाथ : शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनु० 'दर्शन'
जमींदारी के प्रश्न को लेकर लिखा गया शरद बाबू का अन्तिम दिलचस्प उपन्यास। **मू० रु० २.५०**
द्विरंगी कवर, साइज क्राउन, पृ० सं० १७२

वोरा एण्ड कम्पनी पब्लिशर्स प्रा० लिमिटेड,
३, राउण्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

श्रीमती कुन्तला मोहन, द्वारा, प्रो० एस० एम० प्रसाद, कादिराबाद, दरभंगा से सूचना देती हैं कि उनके पति श्री एस० एम० प्रसाद की निम्न पाण्डुलिपियाँ उनके पास हैं। इच्छुक प्रकाशक उपरोक्त पते पर पत्रव्यवहार करें।

काजल, (उपन्यास), तुषार हार, (कहानी-संग्रह), रागिनी (गीत-संग्रह), वर्णों के चित्र, व्यंग चित्र।

* * *

श्री जे० डी० नारायणम, दरभंगा से सूचना देते हैं कि उनके पास मैथिली को पन्द्रह कहानियों के हिन्दी अनुवाद का एक संग्रह प्रकाशनार्थ तैयार है। इच्छुक प्रकाशक इस पते पर लिखें। मार्फत 'पल्लव' मैथिली मासिक, नेहरा (दरभंगा)।

* * *

श्री चन्द्र मोहन 'मधुर' सूचना देते हैं कि उनका नवीनतम उपन्यास 'रात और चांद' प्रकाशनार्थ तैयार है। इसके लिए इच्छुक प्रकाशक इस सम्बन्ध में निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें। श्रीचन्द्र मोहन 'मधुर', एक्सटेंशन आफिसर (इण्डस्ट्रीज़), खादी ग्रामोद्योग महाविद्यालय, त्रिवंक विद्या मन्दिर, नासिक।

* * *

श्री ताराकान्त झा 'मणि' के पास उनकी पन्द्रह मौलिक कहानियों का संग्रह तैयार है। जो सज्जन इसे छापना चाहें वे इस पते पर लिखें—मार्फत श्री राजेन्द्र प्रसादसिंह, ग्राम बुधामा, पो• खाड़ा बुधामा, जिला सहंषा वाया बिहपुर।

* * *

शंकर दयाल पांडे, ग्रा० व डा० पयागपुर, जिला बहराइच से सूचना देते हैं कि उनके पास "नर्तकी" नामक एक कहानी संग्रह तथा "बाजीरावपेशवा" (नाटक) की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ तैयार हैं। प्रकाशन के इच्छुक सज्जन उपरोक्त पते पर पत्रव्यवहार करें।

ग्रामोन्नति के कार्य में हाथ बटाने के लिए उत्सुक युवकों के लिए पुस्तक पथनिर्देशक का कार्य करेगी ऐसा विश्वास है। मूल्य ।।।=)।

* * *

महिलाओं के लिए

माँ और मुन्ना : श्री हरिश्चन्द्र द्वारा लिखी गई एक उपयोगी पुस्तक है। बड़े ही रोचक ढंग से इसमें माँ बनने वाली स्त्रियों के खान-पान बच्चों और रहन-सहन तथा छोटे बच्चों के पालन-पोषण के संबन्ध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई है। साथ ही बच्चों तथा माताओं की छोटी-मोटी बीमारियों के सम्बन्ध में कुछ कम खर्चीले नुस्खे भी दे दिये गए हैं। इसकी भाषा सरल तथा शैली बोधगम्य है। **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य है २.५० नये पैसे।

* * *

छन्द, अलंकार व्याकरण

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ने तीन छोटी-छोटी विद्यार्थियोपयोगी पुस्तकें प्रकाशित की है। पहली है श्री तिलक शास्त्री तथा रामकृष्ण शर्मा द्वारा लिखी गई ।≡) मूल्य

(शेष पृष्ठ ३७१ पर)

(पृष्ठ ३५३ का शेष)

मूल्य से दुगुने दामों पर खरीदनी पड़ रही हैं।

* * *

गोहाटी के 'आसाम ट्रिब्यून' में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार आसाम राज्य की टेक्स्ट-बुक कमेटी के विरुद्ध प्राप्त शिकायतों की चर्चा करते हुए राज्य के मुख्य मंत्री श्री चलीहा ने कहा कि 'कमेटी के कार्यकलाप में तथा उस द्वारा पाठ्य-पुस्तकों के चुनाव में काफी गड़बड़ी होती है। पुस्तकों की स्वीकृति पक्षपात के आधार पर अधिक और उनके निजी गुणों पर कम आश्रित रहती है। निस्सन्देह यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है।....यह मान लेना गलत है कि राज्य की विधान-सभा का सदस्य बनते ही उन सदस्यों में पुस्तकों का चुनाव करने वाली समितियों का सदस्य बनने की योग्यता आ जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

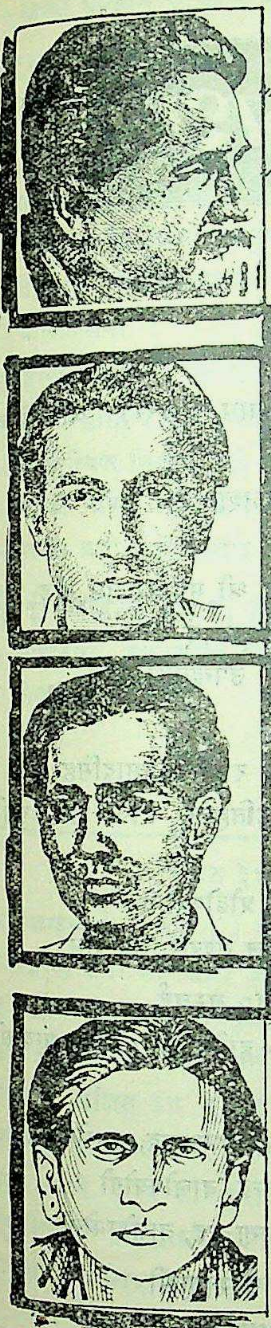

एक नई पुस्तकमाला

उर्दू के लोकप्रिय शायर

इस पुस्तक-माला का प्रयोजन है हिन्दी पाठकों को इस युग के लोकप्रिय उर्दू के शायरों से परिचित कराना। जहाँ शायर की जीवनी और उसकी कला पर एकदम अछूते ढंग से हिन्दी में पहली बार कुछ लिखा गया है, वहाँ साथ ही उनकी चुनी हुई, उत्कृष्ट और लोकप्रिय रचनाओं का संकलन भी कर दिया गया है। **प्रत्येक पुस्तक सचित्र और सजिल्द है।**

ग़ालिब	१.५०
इक़बाल	१.५०
जोश	१.५०
फ़ैज	१.५०
मजाज़ लखनवी	१.५०
साहिर लुधियानवी	१.५०
जिगर मुरादाबादी	१.५०
सरदार जाफरी	१.५०

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना
—**आस्तीन का सांप**, श्री कृष्णकिशोर श्रीवास्तव, नाटक
—**न हाथ खुला हो न मुट्ठी बन्द**, श्री जैन कुमार
—**जच्चा बच्चा**, श्री कामता प्रसाद
—**साग भाजी की खेती**, श्री ठाकुर जगदेवसिंह

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली
—**दैनिक गृहोपयोगी विज्ञान**, श्रीकृष्ण-मनमोहन सरल
—**सागर के सीप**, श्री भारत भूषण
—**आसावरी**, श्री नीरज
—**दर्शना**, सम्पा०, श्री नीरज
—**वस्त्र विज्ञान**, श्री आशारानी वोहरा
—**बिस्मिल की आत्मकथा**, श्री बिस्मिल

कल्याण दास एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
—**रत्ननगर**, श्री आदर्श जी

किताब महल, इलाहाबाद
—**महासमर**, रूपान्तरकार श्री श्रीकान्त व्यास, उपन्यास
—**मैं और मेरी मोटर**, श्री राजेन्द्रलाल हांडा
—**मछलियों की दुनिया**, श्री जगपति चतुर्वेदी
—**रोम की नगरवधू**, अनु० श्री श्रीकान्त व्यास

तेलुगु तोटा प्रकाशन, विजयवाड़ा
—**श्री मुख शातवाहन**, श्री चलसानि सुब्बाराव, नाटक
—**वीर पलनाड**, श्री चलसानि सुब्बाराव, नाटक

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
—**सर्वे इंजीनियरिंग बुक**, श्री राम अवतार वीर
—**जनरल वर्कशाप प्रैक्टिस**, श्री कृष्णानन्द शर्मा
—**स्टीम टरबाइन**, श्री कृष्णानन्द शर्मा
—**भारतीय कृषि कहावतें (घाघ भड्डरी)**' श्री रामेश्वर अशान्त

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
—**छिताई वार्ता**
—**घनानन्द और रीतिकाव्य**, श्री मनोहरलाल गौड़

नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद
—**सत्तर श्रेष्ठ कहानियां**, श्री उपेन्द्रनाथ अश्क

पुस्तकायन, मुंगेर
—**शृंगार मंजूषा**, प्रो० राम रघुवीर प्रसादसिंह
—**मुंगेर का साहित्यिक इतिहास**, प्रो० राम रघुवीर प्रसाद सिंह
—**प्रसार**, श्री महेश्वर मिश्र, प्रौढ़ोपयोगी
—**लाल पत्थर**, श्री अनूप लाल मण्डल, उपन्यास

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि० बम्बई
—**झील और कंवल**, श्री ए० हमीद, अनु० श्यामू संन्यासी, उपन्यास
—**बेवकूफों की कहानियां**, श्री कृष्णचन्द्र, बालोपयोगी
—**मौत की मौत**, श्री कृष्णचन्द्र, बालोपयोगी
—**सोने की सन्दूकची**, श्री कृष्णचन्द्र, बालोपयोगी

राजकमल कला प्रकाशन, वाराणसी
—**कृषि और सरल विज्ञान भाग १**,
—**कृषि और सरल विज्ञान भाग ३**,
—**वाराणसी दर्शन**, श्री एस० एन० राय

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
—**रोड़े और पत्थर**, डॉ० देवराज
—**दूध-गाछ**, श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेन्द्रकुमार एण्ड ब्रदर्स, बलिया

—हिन्दी साहित्य के सहस्र वर्ष, प्रो० अनन्त

लहर प्रकाशन, इलाहाबाद

—दीवान ग़ालिब, पु० मु०,

—संघर्षों के बीच, श्री गंगाप्रसाद मिश्र, उपन्यास

वसन्ता पब्लिकेशन्स, तेनाली

शरचन्द्र चटर्जी, चलसानि सुब्बाराव, बालोपयोगी

—देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद, श्री चलसानि सुब्बाराव, बालोपयोगी

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

—प्रसाद साहित्य और समीक्षा, डॉ० रामरतन भटनागर

—साहित्यिक निबन्ध, श्री यज्ञदत्त शर्मा

—हिन्दी भक्ति साहित्य के मूलाधार, श्री यज्ञदत्त शर्मा

—लगन घड़ी, श्री यज्ञदत्त शर्मा, नाटक

हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ

—महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रबोध सहायक, सम्पा०, श्री तेजनारायण टण्डन

—सूर पंचरत्न की सम्पूर्ण टीका, श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा व श्री तेजनारायण टण्डन

—मीराबाई की पदावली टीका, श्री योगेन्द्रनाथ शर्मा व श्री तेजनारायण टण्डन

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

—जायसी की काव्य साधना, प्रो० दान बहादुर पाठक

—जयहिन्द निबन्ध, पु० मु०, प्रो० भारत भूषण

—पठान का हृदय, बलदेवदत्त शर्मा

—सुन्दर कहानियां, श्री उर्मिला कुमारी

—मनोरंजक कथाएँ, प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त

—छल का फल, उर्मिला कुमारी

—कांच का महल, प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त

हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद

—अभिधान अनुशीलन, डॉ० विद्याभूषण विभु

—द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र, सम्पा०, श्री बैजनाथ सिंह 'विनोद'

—केशव ग्रन्थावली, भाग ३, सम्पा०, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(पृष्ठ ३६८ का शेष)

की, छन्दचार्ट, दूसरी ।।) मूल्य की श्री जगमोहनन्द तथा रामकृष्ण शर्मा की लिखी हुई व्याकरण चार्ट और तीसरी है श्री गम्भीर तथा रामकृष्ण शर्मा द्वारा लिखी गई ।=) मूल्य की अलंकार चार्ट, इन चार्टों में विषय को सूत्रशैली में इतने संक्षिप्त ढंग से रख दिया गया है कि विद्यार्थी आसानी से कण्ठस्थ कर सके। लेखकों ने विषय को बोधगम्य बनाये रखने का पूरा प्रयास किया है। हि० सा० सम्मेलन की परीक्षाओं तथा इन्टर और बी० ए० कक्षाओं के छात्रों के लिए ये पुस्तकें बड़ी उपयोगी हैं।

* * *

अलंकार विवेचन : श्री तिलकधर की एक परीक्षोपयोगी पुस्तक है। अलंकार-शास्त्र एक कठिन विषय है उसे सहज बोध-गम्य बनाकर प्रस्तुत करना आसान काम नहीं है। लेखक ने विद्यार्थियों की कठिनाइयों को ध्यान में रखकर ही यह पुस्तक लिखी है और अपने प्रयास में सफल हुआ है। विद्यार्थियों के लिए तो पुस्तक उपयोगी है ही, लेकिन अलंकारशास्त्र में रुचि रखने वाले पाठकों को भी रुचेगी ऐसी आशा है। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली** से और मूल्य है १=)।

* * *

लोक-साहित्य

हमारे लोक गीत : श्री वाचस्पति गैरोला द्वारा सम्पादित उत्तर भारत के कुछ भावपूर्ण लोक-गीतों का लघु संकलन है। आरम्भ में दी गई भूमिका में सम्पादक ने लोक-साहित्य सम्बन्धी अपनी गहन जानकारी एवं गवेषणा का परिचय दिया है। इसका प्रकाशन हुआ है **शिक्षा भवन, २५७ चक, इलाहाबाद** से और मूल्य है २५ नये पैसे।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल मास के प्रकाशन

आलोचना

उच्चतर साहित्य, ९८०, रायल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी २५.००

किशोरीदास वाजपेयी, **हिन्दी शब्दानुशासन**, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी १०.००

चन्द्रबली पाण्डेय, **तुलसीदास**, ३५०, डि०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ५.५०

तिलकधर शास्त्री, **अलंकार विवेचन**, ८८, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली १.१२

दुर्गाशंकर प्रसादसिंह, **भोजपुरी के कवि और काव्य**, ४१८, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ५.७५

धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ०, सम्पा०, **प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, प्रथम खण्ड**, पु० मु०, २४४, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना २.५०

धीरेन्द्र वर्मा, डॉ०, **हिन्दी भाषा और लिपि**, पु० मु०, ८०, क्रा०, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद १.००

पद्मसिंह शर्मा कमलेश, डॉ०, **हिन्दी गद्य-काव्य**, ३२९, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ७.००

पीताम्बरदत्त बडथ्वाल, डॉ०, **नाथ सिद्धों की बानियां**, १५०, डि०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ४.००

भारतभूषण सरोज, **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, पु० मु०, २७२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली २.५०

मनमोहन गौतम व अन्य, **अशोक साहित्य रत्न गाइड, द्वितीय खण्ड**, पु० मु०, १२४२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ८.००

योगेन्द्रनाथ शर्मा व तेजनारायण टण्डन, **कबीर संग्रह टीका**, पु० मु०, ८०, क्रा० हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ १.००

राजबली पाण्डेय, डॉ० सम्पा०, **हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास**, ८००, रायल, नागरी प्रचारिणी, वाराणसी १८.००

रामचरण महेन्द्र, डॉ०, **हिन्दी एकांकी उद्भव और विकास**, डि०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली १२.५०

रामरतन भटनागर, **जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा**, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ७.५०

वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ०, **कला और संस्कृति**, पु० मु०, ३५०, क्रा०, साहित्य भवन प्राइवेट लि०, इलाहाबाद ५.००

विजयशंकर मल्ल, सम्पा०, **प्रतापनारायण ग्रन्थावली**, ४००, डि०, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी १०.००

विन्ध्येश्वरी प्रसादसिंह, **भारतीय कला को बिहार की देन**, २८०+६४ चित्र, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ७.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमनाथ गुप्त, डॉ०, **पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य**, १८४, पाकेट बुक, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ५.००

सोमनाथ गुप्त, डॉ०, **हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास**, पु० मु०, २९४, हिन्दी भवन, इलाहाबाद ६.००

हेमचन्द्र, अनु०, शालिग्राम उपाध्याय, **अपभ्रंश व्याकरण**, ९६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २.००

इण्डस्ट्रियल, टेकनीकल

ए० सी० कपूर, **स्टीम इंजीनियर्स**, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १०.००

कृष्णानन्द शर्मा, **जनरल मैकेनिक गाइड**, ४००, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १०.००

के० एस० गुप्ता, **मोटर गाइड**, २८०, डि०, गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली ६.००

सत्यपाल वार्ष्णेय, **गृह उद्योग**, १९२, डि०, गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली ४.५०

गंगाप्रसाद सुमन, **व्यापार दस्तकारी**, १२८, गिरधारीलाल थोक पुस्तकालय, दिल्ली २.५०

फूलदेवसहाय वर्मा, **पेट्रोलियम**, ३०४, रायल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ५.५०

मास्टर बद्रीप्रसाद, **दर्जी मास्टर**, पु० मु०, २४०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली २.५०

रत्नप्रकाश शील, **आधुनिक फरनीचर डिजाइन बुक**, १५०, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली १०.००

सुरेशचन्द्र सहगल, **सोप मेकर्ज गाइड**, २७२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६.००

उपन्यास

अंचल, **मरु प्रदीप** २३४, पु० मु०, क्रा०, साहित्य भवन प्राइवेट लि०, इलाहाबाद ४.००

ओंकार शरद, **अन्तिम बेला**, पु० मु०, १८८, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद २.५०

कश्मीरीलाल ज़ाकिर, **सिंदूर की राख**, १३६, डि०, वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्रा० लि०, बम्बई ३.००

नकाबपोश भेदी, **अधूरा बयान**, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ०.७५

नकाबपोश भेदी, **काला गुलाब** १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ०.७५

नकाबपोश भेदी, **रक्त मण्डल**, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ०.७५

प्रतापचन्द्र अग्रवाल, **नारी का घमण्ड**, १३६, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ०.७५

प्रेमचन्द वाजपेयी, **शबनम, शराब और आंसू**, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद ०.७५

बृजबिहारी नागौड़, **भवसागर**, २००, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद १.००

बनवारीलाल साहू, **लाल बंगला**, १२८, क्रा०, भयंकर जासूस कार्यालय, इलाहाबाद १.००

यज्ञदत्त शर्मा, **चौथा रास्ता**, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ६.००

लक्ष्मीकान्त वर्मा, **खाली कुर्सी की आत्मा**, ४१६, डि०, किताब महल, इलाहाबाद ८.५०

कविता

केशवदास, सम्पा०, लाला भगवानदीन, **प्रिया प्रकाश**, ४००, क्रा०, कल्याणदास एण्ड सन्स, वाराणसी ५.००

चलसानि सुब्बाराव, **सन्त वेमना**, ५०, क्रा०, वसन्ता पब्लिकेशन्स, तेनाली ०.५०

जयनाथ नलिन, **धरती का बोल**, १२८, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.५०

ताँबा, **उर्दू शायरी (प्रथम सुमन)**, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली ३.००

देवदत्त शास्त्री, अनु०, **रघुवंश**, १८८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद २.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजमोहन गुप्त, डॉ०, **जिज्ञासा**, पु० मु०, ८०, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद — १.५०
ब्रजमोहन गुप्त, डॉ०, **संघर्ष**, पु० मु०, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद — १.५०
यज्ञदत्त शर्मा, **एक अकेला प्यार**, क्रा०, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली — ५.००
राजेन्द्र शर्मा, **ज्ञान सतसई**, १२२, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — ३.००
रामावतार चेतन, **'चांद से नीचे'**, ८०, पाकेट बुक, हिन्दी भवन, इलाहाबाद — ३.००

कहानी

ओंकारनाथ श्रीवास्तव, **कालसुन्दरी**, १४४, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — ३.००
मालती परुलकर, **तुम बड़ी पागल हो**, १३६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — २.५०
मोहन राकेश, **जानवर और जानवर**, १६०, क्रा० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — ३.००

नाटक

चलसानि सुब्बाराव, **रानी रुद्रमा**, १००, क्रा०, तेलुगु तोटा प्रकाशन, विजयवाड़ा — १.७५
चिरंजीत, **रंगारंग**, १२०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — २.००
प्रेमनारायण टण्डन, **अजात शत्रु तथा अन्य एकांकी**, १४४, क्रा०, हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ — २.००
बच्चनसिंह, डा०, **हिन्दी नाटक**, २५०, क्रा०, साहित्य भवन प्राइवेट लि०, इलाहाबाद — ४.००
लक्ष्मीकान्त वर्मा, **तिन्दुकुलम**, १००, रायल, किताब महल, इलाहाबाद — २ ५०
विमला रैना, **तीन युग**, ११८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद — २.५०

बाल-साहित्य

द्रोणवीर कोहली, **लोककथाएँ**, ३२, ड० डि० राजकमल प्रकाशन, दिल्ली इलाहाबाद, बम्बई — १.२५
राममूर्ति मेहरोत्रा, **जानवरों की पौराणिक कहानियां**, ३२, क्रा०, साहित्य भवन प्राइवेट लि०, इलाहाबाद — १.२५
शिवमूर्तिसिंह वत्स, **भोजपुर की लोक कथाएँ**, ५०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.२५

यात्रा-वर्णन

राहुल सांकृत्यायन, **घुमक्कड़ शास्त्र**, पु० मु०, १६८, क्रा०, किताब महल, इलाहाबाद — ३.००

समाज-शिक्षण व प्रौढ़ोपयोगी

आगा हैदर हुसैन, **अक्षरों का आरम्भ और भाषा विज्ञान**, ८७, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई — २.००
कपिला बहन ठाकोर, **सागर में उजाला**, ४०, क्रा०, वोरा एण्ड कं० पब्लिशर्स प्रा० लि०, बम्बई — ०.६०
गुरुशरण सक्सेना, **बुनियादी शिक्षा**, पु० मु०, ६४, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद — ०.७५
रामकृष्ण शर्मा, **खेती और भोजन**, ८०, क्रा०, लहर प्रकाशन, इलाहाबाद — १.००
श्रीकृष्ण, **सुबह का भूला**, ४०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.००
सावित्रीदेवी वर्मा, **इन्सान कभी नहीं हारा**, ३२, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.००
सावित्रीदेवी वर्मा, **नीम हकीम**, ४०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली — १.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

भारतीय अर्थशास्त्र : जी० बी० जथार, के० जी० जथार।
प्रस्तुतकर्ता श्री डी० एस० कुशवाहा।
मूल्य १० रुपये मात्र।

हिन्दी गद्य-काव्य : गद्य-काव्य की विभिन्न विधाओं एवं प्रवृत्तियों के सांगोपांग विवेचन से पूर्ण डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' द्वारा प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध।
मूल्य ७ रुपये मात्र।

तुम बड़ी पागल हो : कुमारी मालती परूलकर की कहानियों का प्रथम संग्रह।
मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे मात्र।

भाषा-विज्ञान और हिन्दी : डॉ० सरयू प्रसाद अग्रवाल।
मूल्य ४ रुपये मात्र।

अपभ्रंश व्याकरण : श्री शालिग्राम उपाध्याय द्वारा अनूदित।
मूल्य २ रुपये मात्र।

जीवी : श्री पन्नालाल पटेल के उत्कृष्ट गुजराती उपन्यास का साहित्य अकादेमी की ओर से हिन्दी संस्करण।
मूल्य ४ रुपये ५० नये पैसे मात्र।

भारतीय समाज-विन्यास : डॉ० राधाकमल मुकर्जी।
मूल्य २ रुपये मात्र।

जानवर और जानवर : श्री मोहन राकेश की १९५७ में लिखी गई नौ उत्कृष्ट कहानियों का संग्रह।
मूल्य ३ रुपये मात्र।

काल सुन्दरी : श्री ओंकारनाथ श्रीवास्तव की दस मार्मिक कहानियों का संग्रह।
मूल्य ३ रुपये मात्र।

अक्षरों का आरम्भ : श्री आग़ा हैदर हुसैन द्वारा भाषा-विज्ञान और लिपि की नवसाक्षरों के लिए लिखी गई सुलभ, सुबोध भाषा में सचित्र पुस्तक।
मूल्य २ रुपये मात्र।

अफ्रीका : अफ्रीका महाद्वीप के विभिन्न देशों की भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थिति का ज्ञान कराने वाली नवसाक्षरों के लिए श्री मदनगोपाल द्वारा लिखी गई पुस्तक।
मूल्य २ रुपये मात्र।

लोक-कथाएं : सुगम भाषा में लिखी गई नौ लोक-कथाएँ, कुमारिल स्वामी द्वारा चित्रित, श्री द्रोणवीर कोहली द्वारा लिखित।
मूल्य १ रुपया २५ नये पैसे मात्र।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

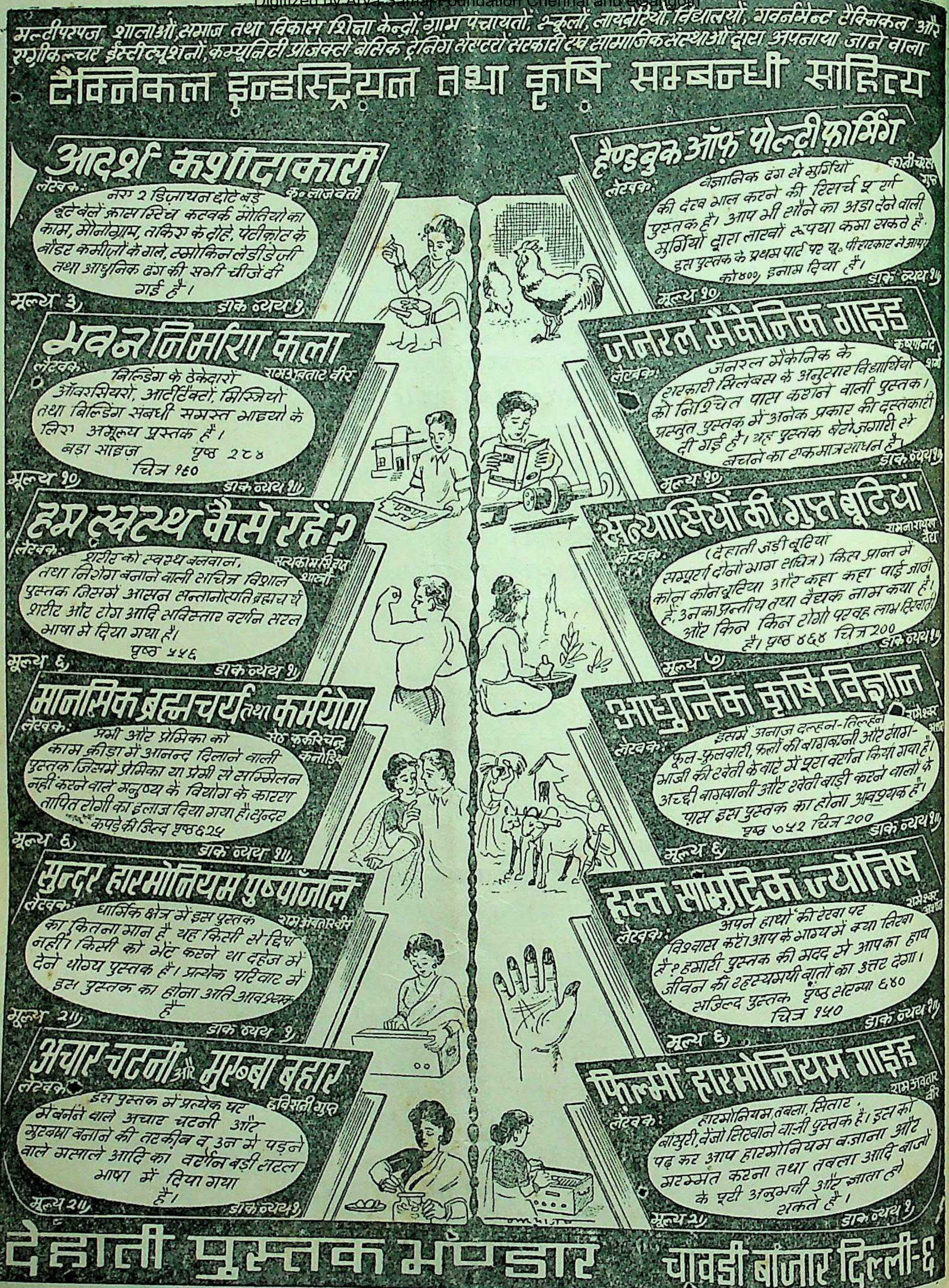

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष ५ जून, १९५८ अंक १०

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

15-6-58

ग़ालिब

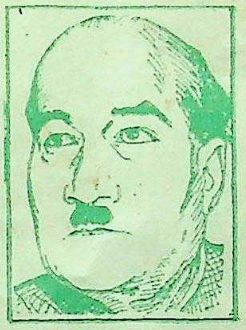
जोश मलीहाबादी

फ़ैज़

इक़बाल

सरदार जाफरी

साहिर लुधियानवी

मजाज़ लखनवी

उर्दू के लोकप्रिय शायर

इस पुस्तक-माला का प्रयोजन है हिन्दी पाठकों को इस युग के लोकप्रिय उर्दू के शायरों से परिचित कराना। जहाँ शायर की जीवनी और उसकी कला पर एकदम अछूते ढंग से हिन्दी में पहली बार कुछ लिखा गया है, वहाँ साथ ही उनकी चुनी हुई, उत्कृष्ट और लोकप्रिय रचनाओं का संकलन भी कर दिया गया है।

प्रत्येक पुस्तक सचित्र और सजिल्द है।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य डेढ़ रुपया

अपने स्थानीय पुस्तक-विक्रेता से खरीदिए !

राजपाल एण्ड संज़ कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-समाचार
के
विशेषांक की घोषणा

"प्रकाशन-समाचार" का अगस्त १९५८ का अंक विशेषांक होगा जिसमें १९४७ से लेकर मार्च '५८ के अन्त तक के हिन्दी के उन सब प्रकाशनों का सविवरण उल्लेख रहेगा जिन्हें भारत सरकार, राज्यों की सरकारों अथवा सम्मानित साहित्य-संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है।

पुस्तकालयों की उपयोगिता की दृष्टि से अन्य विवरण के साथ प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी के सिद्धान्तों के अनुसार क्लासिफिकेशन नम्बर भी दिये जाने की व्यवस्था की जा रही है।

प्रकाशकों से प्रार्थना

प्रकाशकों से इस विज्ञप्ति के माध्यम से आग्रह है कि १९४७ से अब तक उनकी जिन किन्हीं भी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है, उसकी सूचना लेखक के नाम, पुस्तक के आकार, पृष्ठ-संख्या, विषय, पुरस्कार के वर्ष तथा पुरस्कार देने वाली संस्था या सरकार के नाम हमें जून '५८ के अन्त तक इलाहाबाद के पते पर भेजने की कृपा करें।

विज्ञापनों के लिए सुअवसर

"प्रकाशन-समाचार" के अब तक पाँच विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें उपयोगिता और महत्त्व की दृष्टि से खूब सराहा गया है। प्रकाशक-बन्धुओं से प्रार्थना है कि इस विशेषांक में अपने विज्ञापनों के लिए स्थान शीघ्र ही सुरक्षित करवा लें।

सम्पादन-कार्यालय :

प्रकाशन-समाचार

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,

१५-ए महात्मा गांधी मार्ग,

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक १० :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

कुछ वर्ष हुए, उत्तर प्रदेश की सरकार की अध्यक्षता में नागरी लिपि में सुधार करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए लखनऊ में एक सम्मेलन हुआ था और उस सम्मेलन द्वारा प्रस्तावित सुझावों को उत्तर प्रदेश की सरकार ने मान लिया था। परिणामस्वरूप इस राज्य की अनेक राष्ट्रीयकृत पुस्तकों का प्रकाशन इस नई लिपि में हुआ और इन गत वर्षों में लाखों बालकों ने सनातन लिपि के स्थान पर इस नई लिपि की शिक्षा पाई।

इस वर्ष तक उत्तर प्रदेश राज्य के अतिरिक्त अन्य किस राज्य ने लिपि के इन सुधारों को मान्यता नहीं दी। इस बीच उत्तर प्रदेश में भी इस लिपि की सरकारी स्वीकृति के विरुद्ध जनमत प्रबल होता गया और अन्त में श्री कमलापति त्रिपाठी के इस राज्य में शिक्षा-मन्त्रीत्व को स्वीकारने के बाद उत्तर प्रदेश ने इस लिपि को तिलांजलि देने का निर्णय कर ही लिया। इस प्रकार बालकों की शिक्षा के साथ एक प्रयोग की—एक मंहगे और निष्प्रयोजन प्रयोग की—समाप्ति हुई। कई वर्ष नई लिपि को पढ़ने-सीखने के बाद विद्यार्थियों को फिर से पुरानी और लोक-मान्य लिपि को पढना-सीखना पड़ेगा।

हमारे लोकतन्त्रात्मक विधान ने राज्यों को इस प्रकार के प्रयोग करने की स्वतन्त्रता दे रखी है। शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं, शासन और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसे मनमाने प्रयोग—महत्त्वपूर्ण प्रश्नों से दायित्व और विचार-हीन खिलवाड़—करने की आजादी हमें मिल चुकी है जो १४वीं शती के मुहम्मद तुगलक के काल की शासकीय स्वच्छन्दता से किसी कद्र कम नहीं है। लेकिन हमें अपने से सम्बन्धित शिक्षा के क्षेत्र तक अपने को सीमित रखना ही अभीष्ट है।

इसी चालू वर्ष में अपनी भूल का निराकरण करते हुए उत्तर प्रदेश की सरकार ने उस लिपि का त्याग कर दिया जो अन्य कहीं मान्य नहीं हुई थी और अनुभव से पुरानी लिपि से अधिक सरल अथवा अधिक वैज्ञानिक भी सिद्ध नहीं हुई। लेकिन इसे दुर्भाग्य की बात ही कहेंगे कि हिन्दी-भाषी उत्तर प्रदेश द्वारा इस लिपि के त्याग की घोषणा के साथ ही अहिन्दी-भाषी बम्बई राज्य ने उसी लिपि को स्वीकारने की घोषणा कर दी।

जान पड़ता है कि राज्यों की स्वतन्त्रता के नाम पर हम भाषा और लिपि जैसे अखिल भारतीय प्रश्नों की भी छीछालेदर करने पर तुले हुए हैं। हिन्दी में अभिव्यक्ति के सामर्थ्य को तथा इसके साहित्य को लेकर पहले ही अहिन्दी भाषी राज्यों में भीषण तर्क-वितर्क छिड़ा हुआ है—अब इसकी लिपि को लेकर भी विरोधियों को तरकस में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर विदेशी उपन्यास

अँग्रेजी

जय पराजय	: टामस हार्डी	३)
ममता के बन्धन	: सॉमरसेट मॉम	३)
कोनी	: डी० एच० लारेंस	२।।)
बरसात और आवारा	: सॉमरसेट मॉम	२)

फ्रांसीसी

पेरिस का रंगीला	: मोपासाँ	३)
मादाम बॉवेरी	: फ्लाबर्ट	३)
नाना	: एमिल ज़ोला	३)
दिव्य जीवन	: फ्रांज वारलाफ़	२)
शिल्पी का प्रेम	: पाइरेमिले	३)
नाना की मां	: एमिल ज़ोला	३।।।)

रूसी

अन्तर्द्वन्द्व	: एन्टन चेखव	३)
अपराध और दण्ड	: दॉस्तवस्की	४)
महा समर	: इलिया एहरेन्बुर्ग	५)
दोन के किनारे	: शोलखॅव	४)

इतालियन

रोम की नगर वधू	: अ० मोराविया	६)
साइकिल चोर	: वार्तोलिनि	३)
अतृप्त वासनाएँ	: एल्बर्टो मोराविया	२)

स्वेडिश

बराबास	: पायरलागविस्त	२।।)

जर्मन

भूख	: न्यूट हैमसन	४)
सीमाएँ टूटीं	: बरकेन फील्ड	२)

किताब महल

इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

जुटाने के लिए नये तीर मिल जायँगे। यह कैसी राष्ट्रभाषा है जिसकी लिपियाँ भी अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग हैं? क्या केन्द्र इस प्रकार के मजाक की रोकथाम करने में इतना पंगु है जितना वह अपने को प्रदर्शित कर रहा है? क्या हिन्दी के प्राध्यापकों, आचार्यों तथा साहित्यिकों की लिपि में इस प्रकार के तोड़-मरोड़ को रोकने की ओर कोई जिम्मेवार नहीं है?

यह निश्चय है कि दो-तीन वर्षों में ही बम्बई राज्य भी लिपि-सुधार के नाम पर मुँह में डाले गए इस कड़वे कौर को थूक देगा, इसमें कतई सन्देह नहीं। इस अवधि में वहाँ से अहिन्दी-भाषी विद्यार्थी नई लिपि के नाम पर जिस विभीषिका से जूझना सीखेंगे उसके बाद उसे भूलना भी उन्हें सिखाया जायगा और हिन्दी की बैलगाड़ी इस प्रकार ऊबड़-खाबड़ धरातल पर घिसटती हुई बढ़ती जायगी। दिशा का ज्ञान इस बैलगाड़ी के हाँकने वाले को नहीं है क्योंकि अपनी लम्बी ऊँघ से वह अब तक अपना पीछा नहीं छुड़ा सका है और स्वतन्त्रता के नाम पर सचेतता से कन्नी काटने की आजादी उसे हासिल हो चुकी है।

यदि आप अब तक

प्रकाशन समाचार

के ग्राहक नहीं हैं

तो आज ही ३) तीन रुपये मनीआर्डर से भेजकर एक वर्ष के लिए ग्राहक बनें। पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।

प्रबन्ध विभाग
प्रकाशन समाचार
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ फैज़ बाजार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

केरल सरकार ने अपने राज्य में प्राइमरी शिक्षा की अवधि आठ वर्ष से कम करके सात वर्ष कर दी है और ६ वर्ष से कम के बालक स्कूलों में भरती नहीं किये जा सकेंगे। इस निश्चय को १९५९-६० के वर्ष से कार्यान्वित किया जायगा। केवल १९५८-५९ में ५½ वर्ष के बच्चों को भी भरती कर लिया जायगा। बेसिक शिक्षा को राज्य में प्राइमरी शिक्षा का आधार मान लिया गया है। लोग्रर प्राइमरी कक्षाओं में भाषा-सम्बन्धी विषयों को छोड़कर अन्य विषयों के अध्यापन के लिए पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग नहीं किया जायगा।

*　　*　　*

२२ मई ५८ तक कॉपीराइट के नये कानून के कॉपीराइट बोर्ड के पास केवल ४० कृतियों का पंजीबन्धन हुआ है। इनमें कुछ अप्रकाशित कृतियाँ भी हैं।

*　　*　　*

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के गायकवाड पुस्तकालय में आगामी वर्ष से पाठ्य-पुस्तकों का अलग विभाग खुलने जा रहा है जिसमें विभिन्न कक्षाओं में चलने वाली पाठ्य-पुस्तकों का ही संग्रह रहेगा।

*　　*　　*

उत्तर प्रदेश की सरकार ने प्राइमरी स्तर से लेकर यूनिवर्सिटी के स्तर की शिक्षा का सर्वेक्षण करने के लिए चार समितियों को मनोनीत किया है।

*　　*　　*

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अपने १५ मई '५८ को स्वीकृत किये गए प्रस्ताव में कहा है कि जिन विद्यार्थियों के संरक्षक उर्दू को अपनी मातृभाषा घोषित करें, उन्हें उर्दू में पढ़ाई-लिखाई की सुविधाएँ प्राप्त होनी चाहिएँ, और उनके लिए उर्दू में छपी पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था करवानी चाहिए।

*　　*　　*

९ मई को लोक-सभा में केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री डॉ० के० एल० श्रीमाली ने इस बात का समर्थन किया कि देश में पुस्तकालय आन्दोलन के समर्थन के लिए राज्यों द्वारा विशेष लाइब्रेरी-टैक्स लगाना चाहिए।

*　　*　　*

१० मई '५८ को दिल्ली में पुस्तकों के प्रति लोक-रुचि सम्बन्धित समस्याओं पर विचार करने के लिए हो रहे अखिल भारतीय सम्मेलन की समाप्ति हुई। इसमें भाग लेने वाले शिक्षाविदों ने कहा कि पुस्तकों के प्रति अरुचि केवल विद्यार्थियों में ही नहीं पाई जाती और इसके कारण भी स्कूलों तक सीमित नहीं हैं।

*　　*　　*

अम्बाला की खबर के अनुसार वहाँ के डिप्टीकमिश्नर का ध्यान ५ मई को इस बात की ओर दिलाया गया कि जिले में पंजाब सरकार द्वारा प्रकाशित प्राइमरी कक्षाओं की पुस्तकें प्राप्य नहीं हैं और चौथी कक्षा के लिए पुस्तकें अभी तक छपी भी नहीं हैं।

*　　*　　*

मई के प्रथम सप्ताह में दुनिया-भर के अध्यापकों के संघों के परिसंघ के अफ्रीका-एशियाई क्षेत्रीय खण्ड का सम्मेलन कोलम्बो में हुआ। इस सम्मेलन के एक प्रस्ताव में कहा गया कि यदि विभिन्न देशों में पुस्तकों का राष्ट्रीय-करण किया जाता है तो किसी-न-किसी प्रकार के विचार-विशेषों के बलात् ठूँसने का खतरा इससे बना रहेगा।

*　　*　　*

भारत के प्रसिद्ध व्यंग्य-चित्रकार श्री शंकर द्वारा संगठित चिल्ड्रन्स बुक-ट्रस्ट ने दिल्ली में मई के प्रथम सप्ताह में बाल-साहित्य की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें ३८ देशों से ५००० के लगभग पुस्तकें प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी का उद्घाटन डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने किया।

*　　*　　*

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत पंजाब का शिक्षा-विभाग राज्य में पुस्तकालय-आन्दोलन को अपना समर्थन दे रहा है। चण्डीगढ़ में केन्द्रीय पुस्तकालय तथा अम्बाला, जालन्धर एवं धर्मशाला में तीन जिला पुस्तका-लयों की स्थापना हो चुकी है। ग्रामों तक पहुँचने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकमल प्रकाशन के नवीनतम प्रकाशन

कवि प्रसाद : डॉ॰ भोलानाथ तिवारी प्रसाद की काव्य-कृतियों का गवेषणात्मक अध्ययन ४.००

भग्न मूर्ति : श्री आ॰ रां॰ देशपाण्डे 'अनिल' के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित इस मराठी खण्ड-काव्य का अनुवाद डॉ॰ प्रभाकर माचवे ने किया है और इसका प्रकाशन साहित्य अकादमी की ओर से हुआ है १.००

कविताएँ : कीर्ति चौधरी की कविताओं का संग्रह ३.५०

हिन्दू सभ्यता : (पुनर्मुद्रित) डॉ॰ राधा कुमुद मुकर्जी ७.५०

भारतीय संस्कृति : (पुनर्मुद्रित) श्री शिवदत्त ज्ञानी ५.५०

सरल मनोविज्ञान : (पुनर्मुद्रित) श्री हंसराज भाटिया ४.००

आगामी प्रकाशन

रोड़े और पत्थर : डॉ॰ देवराज का नवीनतम उपन्यास

दूध गाछ : श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का चिरप्रतीक्षित उपन्यास

अजन्ता के चित्रकूट : राय कृष्णदास व राय आनन्दकृष्ण : 'भारतीय सांस्कृतिक परिचय माला' का प्रथम भाग।

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

घूमने-फिरने वाले पुस्तकालयों का संगठन भी किया जा रहा है। केन्द्रीय पुस्तकालय, चण्डीगढ़ में इस वक्त २६,२७२ पुस्तकें हैं तथा अम्बाला, जालन्धर तथा धर्मशाला के पुस्तकालयों में क्रमशः २,३०२; ३,६८३ तथा ४,४६५ पुस्तकें।

* * *

१६५६-५७ के वर्ष में इंगलैण्ड के सार्वजनिक पुस्तकालयों ने कुल मिलाकर २१ करोड़ ६५ लाख ६३ हज़ार २५० रुपयों का व्यय किया। इस व्यय में से २४½% पुस्तकों पर किया गया, ५½% जिल्दबन्दी पर, १½% पत्र-पत्रिकाओं पर, ४२½% तनख्वाहों पर और ५¾% मेहनताने पर।

पुस्तकें पढ़ने के लिए घर ले जाने के लिए देने वाले पुस्तकालयों ने १६५६-५७ में कुल ४१,६४,२६,००० पुस्तकें दीं।

* * *

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा इस वर्ष हजार रुपयों के शिक्षा-सम्बन्धी पुरस्कार लखनऊ के श्री रामखेलावन चौधरी को उनकी पुस्तक **शिक्षण-विधियों की रूपरेखा** (प्रकाशक : हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ) पर दिया गया।

* * *

अपनी २५वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में उत्कल प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा इसी वर्ष उड़ीसा के साहित्य, इतिहास संस्कृति आदि सर्वपक्षों को लेकर एक बृहत् ग्रन्थ का प्रकाशन करने जा रही है जिस पर ६५,००० रुपये का व्यय कूता गया है। सभा के अध्यक्ष श्री हरेकृष्ण मेहताब की ओर से अपील की गई है कि जनसाधारण इस प्रयास में दान देकर हाथ बटाएँ। दान सभा के कटक-स्थित कार्यालय में पहुँचना चाहिए।

* * *

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी की ओर से सर्वसाधारण के नाम अपील निकाली गई है कि शीघ्र ही प्रेमचन्द-स्मारक की स्थापना उनके जन्मग्राम लमही में होगी। जो संस्थाएँ या लोग इस कार्य में सहायता करना चाहें, वे सीधे प्रधानमन्त्री काशी नागरी प्रचारिणी सभा से पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की पुस्तकों की रूपसज्जा

'बुक न्यूज' मद्रास के मई अंक में प्रकाशित श्री थाम्बी श्रीनिवासन के लेख का रूपान्तर

बच्चों के लिए जब हम कोई नई चीज तैयार करने लगते हैं तो विशेष सावधानी बरतते हैं। हम बच्चों के बाल रंगीन फीतों से सँवारते हैं। हम बच्चों की कमीजों और फ्राकों आदि पर कढ़ाई करते हैं। हम बच्चों के लिए विशेष रूप से खाने-पीने के बर्तन आकर्षक ढंग से तैयार करते हैं। तो क्या उनके लिए प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों को विशेष आशय से नहीं प्रस्तुत करना चाहिए ?

बच्चों के लिए पुस्तकें प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को अनेक बातों का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तक का आकार चित्रांकन, आवरण पृष्ठ, अन्दर की सामग्री, मुद्रणाक्षर, कागज जिस पर सामग्री छपनी है तथा मुद्रण की प्रणाली आदि के सम्बन्ध में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

आकार

प्रश्न उठता है कि बच्चों की पुस्तकों का आकार कितना बड़ा होना चाहिए। अधिकांश सामान्य पुस्तकें क्राउन आक्टेवो आकार में छापी जाती हैं। चूंकि बच्चों की पुस्तकों में मोटे मुद्रणाक्षरों तथा बड़े-बड़े चित्रांकनों का उपयोग किया जाता है इसलिए इन्हें डेमी आक्टेवो आदि जैसे बड़े आकार में छापना चाहिए। यदि बच्चों की अधिकांश पुस्तकें उपर्युक्त आकार में छापी जायँ तो उन्हें एक वर्ग के अन्तर्गत रखने में सुविधा होगी। इस आकार के उपयोग के सम्बन्ध में केवल सामान्य सुझाव भर दिया जा सकता है कोई स्थिर नियम नहीं बनाया जा सकता। मुद्रित पृष्ठ के क्षेत्र का सीमानिर्धारण पुस्तक की मोटाई तथा मुद्रित की जाने वाली सामग्री पर निर्भर है। किसी मानचित्र-पुस्तिका को छोटे आकार में मुद्रित करना उचित नहीं है। कोई कहानी की पुस्तक या वैज्ञानिक सिद्धान्तों की व्याख्या प्रस्तुत करने वाली सचित्र पुस्तक हो तो उसे अपेक्षाकृत बड़े आकार में छापना चाहिए।

इसी तरह यदि बच्चों के लिए कोई संक्षिप्त शब्दकोष प्रकाशित करना हो या खेलकूद के नियमों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करने वाली कोई ऐसी पुस्तिका हो जिसमें कुछ ही सौ शब्द हों तो उसे लघु आकार—क्राउन आक्टेवो—से भी छोटे आकार में छापना चाहिए।

चित्रांकन

क्या हम बच्चों के लिए प्रस्तुत की गई किसी ऐसी आधुनिक पुस्तक की कल्पना कर सकते हैं जिसमें चित्र न हों? चित्रांकनों का अनुपात विषय-सामग्री तथा बच्चों की आयु-समुदाय के अनुसार बदलता रहता है। नन्हे शिशुओं के लिए प्रस्तुत की गई पुस्तकों में केवल चित्र-ही-चित्र होते हैं अक्षर एक भी नहीं होते। उन बच्चों के लिए प्रस्तुत की गई पुस्तक में, जिन्होंने अभी पढ़ना सीखा ही है, ७५ प्रतिशत चित्र होते हैं और २५ प्रतिशत अक्षर। बच्चों की आयु का जैसे-जैसे क्रम बढ़ता जाता है वैसे-वैसे चित्रांकनों की संख्या में कमी आती जाती है।

चित्रांकन बच्चों की पुस्तकों को सजाने तथा उनमें वर्णित पात्रों एवं दृश्यों को जीवन्त तथा प्रभावशाली रूप प्रदान करने और बच्चों के मस्तिष्क पर प्रभाव डालने में सहायक सिद्ध होते हैं।

मुद्रणाक्षर

बच्चों के लिए जो भी कुछ प्रस्तुत किया जाय उसमें सहज-बोधगम्यता का होना अनिवार्य गुण है। बच्चों की पुस्तकों में ऐसे मुद्रणाक्षर प्रयोग किये जायँ जो सुविधाजनक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तेज गति से पढ़े जाने में सहायक हों। छोटे बच्चों की पुस्तकें १८ पॉइन्ट में छापी जानी चाहिएँ और आयु बढ़ने के क्रम से मुद्रणाक्षरों का आकार क्रमशः ११ या १२ पॉइन्ट तक छोटा होता चला जाना चाहिए। बच्चों की पुस्तकों के लिए इनसे छोटे मुद्रणाक्षरों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। केवल अच्छे मुद्रणाक्षरों के उपयोग से ही कोई पुस्तक आकर्षक रूप में नहीं प्रस्तुत की जा सकती।

कागज

यदि बच्चों की पुस्तकों की छपाई अच्छे कागज पर न हो तो लेखक, चित्रकार तथा मुद्रक आदि सभी लोगों का किया गया परिश्रम व्यर्थ है। बाजार में कागज की अनेक किस्में उपलब्ध हैं लेकिन उनमें से प्रत्येक किस्म का कागज का अपना विशेष उपयोग होता है। बच्चों की पुस्तकें मोटे ड्राइंग पेपर पर या एन्टीक कागज पर छापी जानी चाहिएँ, क्योंकि ये दोनों काफी मजबूत और टिकाऊ होते हैं। यदि उन्हें अखबारी कागज या किसी अन्य घटिया किस्म के कागज पर छाप दिया जाय तो चार दिन में ही उनके चिथड़े उधड़ जायँगे।

यदि कोई ऐसी पुस्तक हो जिसमें थोड़े से ही पृष्ठ हों तो उसकी छपाई खूब मोटे कागज या कार्डशीट पर हो तो वह काफी मोटी दिखाई देने लगेगी। जिस बच्चे के हाथ में ऐसी पुस्तक जायगी वह इसे पाकर गर्व का अनुभव करेगा। कागज के स्थान पर कपड़े का उपयोग हो तो और अच्छा रहे, क्योंकि बच्चे पुस्तकों के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा वे अपने खिलौनों के साथ करते हैं पक्के रंगों की छपाई की गई हो तो ऐसी पुस्तकों को जरूरत पड़ने पर धोकर साफ भी कर लिया जा सकता है।

आवरण

बच्चों की पुस्तकों के आवरण की तरफ भी काफी ध्यान देना चाहिए। खूब आकर्षक होने के साथ-साथ इसे पर्याप्त टिकाऊ भी होना चाहिए। आर्ट पेपर वैसे काफी बढ़िया होता है लेकिन बच्चों की पुस्तकों के लिए वह पर्याप्त मजबूत नहीं होता। इसकी चमक-दमक के मोह में पड़कर अनेक प्रकाशक इसका इस्तेमाल ऐसी पुस्तकों के लिए करते हैं, लेकिन जैसे ही पुस्तक किसी बच्चे के हाथ में पहुँचती है वैसे ही आवरण फट-फटाकर एक कोने हो जाता है और पुस्तक कुरूप दिखाई देने लगती है। इन पुस्तकों के लिए आर्ट बोर्ड या मजबूत कवर पेपर पर आवरण छापना चाहिए।

मुद्रण

ये पुस्तकें दो तरह से छापी जा सकती हैं एक तो अक्षर-मुद्रण प्रणाली से या फोटो आफसेट (लीथोग्रैफी) प्रणाली से। अधिकांश पुस्तकें अक्षर-मुद्रण प्रणाली से ही छापी जाती हैं। रंगीन चित्र और आवरण की छपाई लीथोग्राफी प्रणाली से की जा सकती है। यदि किसी चित्रों से भरपूर पुस्तक की कई हजार प्रतियाँ छापनी हों तो आफसेट प्रणाली सबसे अच्छी रहती है।

छोटे बच्चों की पुस्तकें आफसेट प्रणाली से छापी जानी चाहिएँ और जिनमें चित्रों की अपेक्षा शब्द बहुत अधिक हों उनके लिए अक्षर-मुद्रण प्रणाली का प्रयोग करना चाहिए। किसी सावधानी पूर्वक छापी गई पुस्तक का कई हजार की संख्या में पुनर्मुद्रण करना हो तो लीथोग्राफी का उपयोग अपेक्षाकृत अच्छा रहता है।

जिल्दबन्दी

पुस्तकों की जिल्दें काफी मजबूत होनी चाहिएँ। बच्चों की पुस्तकों की बँधाई ऐसी होनी चाहिए जो जल्दी उधड़ न सके। पतली पुस्तकों के लिए सूती तागे से बीच की सिलाई करनी चाहिए और मोटी पुस्तकों के लिए तानी सिलाई का उपयोग करना चाहिए। जिससे हर पृष्ठ पूरी तरह खोलकर पढ़ा जा सके। जहाँ तक हो सके बच्चों की पुस्तकों के लिए तार की सिलाई का उपयोग नहीं करना चाहिए।

पूर्व योजना

प्रकाशक को चाहिए कि मुद्रण के लिए भेजने के पूर्व पुस्तक की पाण्डुलिपि स्पष्ट निर्देशों सहित तैयार कर ले। आवश्यक चित्रों को संकलित करके उनके ब्लाक बनवा रखने चाहिएँ। उसे मुद्रणाक्षरों, शीर्षकों के लिए उपयुक्त मुद्रणाक्षरों आदि मुद्रित पृष्ठ के क्षेत्र, चित्रांकन की स्थिति कागज तथा जिल्दसाजी की किस्म इत्यादि के सम्बन्ध में भी निर्णय कर लेना चाहिए। सादे कागज की एक नमूने

(शेष पृष्ठ ४०७ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मास के नये प्रकाशन

आचार्य चतुरसेन शास्त्री का
अतीव रोचक सामाजिक उपन्यास

उदयास्त

मूल्य चार रुपये

महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित
श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र का
अभूतपूर्व मौलिक नाटक

मृत्युञ्जय

मूल्य तीन रुपये

हिन्दी नाट्य-साहित्य में एकदम नवीन प्रयोग
श्री मोहन राकेश का अद्वितीय नाटक

आषाढ़ का एक दिन

मूल्य दो रुपये

किशोरों के लिए उपन्यास

रॉबिन हुड (ROBINHOOD)

जादू नगरी (ALICE IN WONDERLAND)

वीर सिपाही (IVANHOE)

अनुवादक : श्रीकांत व्यास | मूल्य प्रत्येक १·५० रु०

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास का कन्निमरा सार्वजनिक पुस्तकालय

श्री सुरेन्द्रपाल सिंह

मद्रास म्यूजियम के केन्द्रीय भवन में स्थित कन्निमरा सार्वजनिक पुस्तकालय मद्रास का राज्य-पुस्तकालय तथा दक्षिण क्षेत्र के लिए राष्ट्रीय पुस्तकालय है।

स्थापना

इस पुस्तकालय की स्थापना गवर्नमेण्ट म्यूजियम, मद्रास के अवकाश-कालीन निरीक्षक श्री Jesse Mitchell के सत्प्रयासों से हुई थी जो इस पद पर वहाँ १८५६ से १८७२ ई० तक रहे। उन्होंने प्राकृतिक इतिहास के अध्ययन के महत्त्व को अनुभव किया और इसके विकास के लिए स्वभावतः ही एक पुस्तकालय की जरूरत उन्हें महसूस हुई। १८६० में उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा और इस प्रकार थोड़ी-सी आर्थिक सहायता मिली। उसीसे पुस्तकालय की स्थापना की गई। कैप्टन मिचेल महोदय बड़ी ही मितव्ययता से पुरानी किताबें खरीद-खरीदकर पुस्तकालय को समृद्ध करने लगे। उन्होंने प्रायोगिक विज्ञानों से सम्बन्धित पुस्तकों के संग्रह की ओर विशेष ध्यान दिया और इस काम में उन्हें अपने एक वैज्ञानिक मित्र से बड़ी सहायता मिली।

अन्त में जून १८६२ में यह पुस्तकालय सर्वसाधारण के लिए खोल दिया गया। यद्यपि इसमें जाने वालों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था, लेकिन प्रवेश अनुमति-पत्र द्वारा ही हो पाता था।

पुस्तकालय-भवन

जब जॉर्ज बिडी (Bidie) महोदय म्यूजियम के अवकाश-कालीन निरीक्षक थे (१८७२-८५) तो पुस्तकालय-भवन का निर्माण हुआ। भवन-निर्माण का कार्य दिसम्बर १८७३ में शुरू हुआ और १८७५ में पूरा हुआ।

मद्रास के तत्कालीन गवर्नर बकिंघम के ड्यूक महोदय के करकमलों से १६ मार्च, १८७६ को इस पुस्तकालय भवन का उद्घाटन हुआ। पूरी इमारत को बड़े ही कलात्मक ढंग से पुरातत्त्व-सम्बन्धी चित्रों तथा मानचित्रों से सजाया गया था।

इस भवन में पुस्तकालय लगभग २० वर्षों तक सफलता-पूर्वक चलता रहा और बाद में जब इसका आकार और उपयोगिता अधिक बढ़ गई तो इसके लिए किसी बड़ी इमारत की आवश्यकता महसूस हुई।

वर्तमान पुस्तकालय भवन

पुस्तकालय के वर्तमान भवन का निर्माण म्यूजियम के अवकाश-कालीन निरीक्षक डॉ० एडगर थार्स्टन साहब के समय में हुआ जब म्यूजियम-भवन के सामने वाले हिस्से का निर्माण कराया गया। म्यूजियम थियेटर तथा पुस्तकालय भवन के निर्माण का कार्य एक साथ अगस्त, १८९० में शुरू हुआ और सितम्बर, १८९६ में खतम हुआ। ५ दिसम्बर, १८९६ को मद्रास के तत्कालीन गवर्नर सर आर्थर-हैवलाक के हाथों पुस्तकालय के नये भवन का उद्घाटन-समारोह सम्पन्न हुआ। अपने उद्घाटन-भाषण में गवर्नर महोदय ने पुस्तकालय के महत्त्व तथा उद्देश्यों के सम्बन्ध में बताया कि प्रत्येक जाति तथा वर्ग के व्यक्तियों को ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति करने के लिए यह पुस्तकालय समान रूप से सहायक है। उन्होंने खेद प्रकट किया कि पुस्तकालय में महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का अभाव है लेकिन एक दिन आएगा जब यहाँ इतनी पुस्तकें होंगी कि उन्हें रखने के लिए स्थान नहीं रह जायगा। उन्होंने बताया कि एंग्लो-इटैलियन ढंग पर बनी हुई म्यूजियम तथा पुस्तकालय की इन नई इमारतों के अन्दरूनी भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का चित्र देखकर इंग्लैण्ड के कुछ लोगों ने बड़ी तारीफ की है।

लार्ड कैनेमरा

लार्ड कैनेमरा, जिनके नाम पर पुस्तकालय का नामकरण किया गया है, लार्ड मेयो के भाई थे और उन्होंने ही मद्रास के गवर्नर की हैसियत से २२ मार्च, १८६० को पुस्तकालय-भवन की नींव रखी थी। १८६४-६५ में इस पुस्तकालय का नाम 'म्यूजियम लाइब्रेरी' से बदलकर 'कन्निमरा फ्री लाइब्रेरी' और १८६६ में 'कन्निमरा पब्लिक लाइब्रेरी' कर दिया गया।

प्रमुख पुस्तकालयाध्यक्ष

डॉ० थर्स्टन को ही पहले-पहल इस पुस्तकालय के प्रमुख पुस्तकालयाध्यक्ष का पद सौंपा गया और तब १६४० तक यह परम्परा बराबर चलती रही कि म्यूजियम का निरीक्षक ही पुस्तकालय की भी व्यवस्था का काम देखे।

पुस्तकालय की प्रगति

डॉ० जॉन रावर्ट हैन्डर्सन ने, जो १६०८ में डॉ० एडगर थर्स्टन की जगह नियुक्त होकर आये, अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के अतिरिक्त जो सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य किया वह था विषयवार पुस्तकों की अनुक्रमणिका तैयार करवाना। इस सहज उपयोगी अनुक्रमणिका का प्रकाशन १ जून, १६१४ ई० में हुआ। इसमें पुस्तकालय की मार्च १६१२ ई० तक की सभी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं को सम्मिलित कर लिया गया था।

इसी समय पुस्तकालय की सभी पुस्तकों तथा पत्रिकाओं आदि को दो वर्गों में विभक्त करके उन्हें अलमारियों में अक्षर-क्रम से सजाया गया। पहले वर्ग में उच्च स्तर की पुस्तकों को रखा गया था और इस वर्ग की जो भी नई पुस्तकें आती थीं उनके नाम आदि चिटों पर मुद्रित कराकर अनुक्रमणिका में यथास्थान चिपकवा दिया जाता था। दूसरे वर्ग में सामान्य पुस्तकमालाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ तथा सरकारी और गैर-सरकारी प्रतिवेदनों आदि को रखा गया था। इस वर्ग की पुस्तकों आदि की अनेक अलग-अलग सूचियाँ तैयार की गई थीं और उन्हें प्रकाशन-स्थान या देश के अनुसार अलग-अलग आलमारियों में रखा गया था।

इसके बाद समय-समय पर अन्य अनेक प्रकार के सूचीपत्र प्रकाशित होते रहे और उनमें परिवर्तन-परिवर्द्धन होता रहा तथा आगे चलकर पुस्तकों के क्रय में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गए।

डॉ० टी० आॅर० हैण्डर्सन के ३५ अप्रैल, १६१६ में अवकाश ग्रहण करने पर श्री एच० डॉडवेल ने उनके स्थान पर ६ महीने तक कार्य किया और तब उक्त पद पर ३१ जनवरी १६२० में डॉ० ग्रैवेली की नियुक्ति की गई। इनके समय में पुस्तकालय की व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गए।

१६२८ में यहाँ के सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष श्री आर० गोपालन ने पुरानी प्रणाली को समाप्त करके डेवी डेसिमल (Dewey Decimal) प्रणाली के आधार पर पुस्तकालय में मौजूद ६०,००० पुस्तकों आदि का वर्गीकरण किया।

१६२६ के सितम्बर मास में श्री आर० जनार्दनम् नायडू यहाँ के पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किये गए और श्री गोपालन का स्थान रिक्त होने पर उसी वर्ष वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष महोदय श्री के० गोविन्द मेनन की नियुक्ति सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर की गई। श्री जनार्दनम ने पुस्तकालय के विकास तथा उसे प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी बनाने के लिए प्रशंसनीय प्रयास किया। दो बार इंग्लैण्ड जाकर उन्होंने पुस्तकालय-विज्ञान सम्बन्धी विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्हीं के सत्प्रयास से १६३० में पुस्तकालय की पुस्तकें लोगों को घर लेजाकर पढ़ने के लिए दी जाने लगीं।

मद्रास-पुस्तकालय अधिनियम

१६५८ में मद्रास विधानसभा ने मद्रास-पुस्तकालय अधिनियम पास किया, जिसके अनुसार सम्पत्ति-कर पर एक आना प्रति रुपया पुस्तकालय-कर वसूले जाने की व्यवस्था की गई और जिस जिला परिषद या नगरपालिका में इस प्रकार से जितना धन वसूल होता, उसमें उतना ही और मिलाकर उस क्षेत्र के पुस्तकालयों के विकास के लिए तथा नये पुस्तकालय खोलने के लिए दे दिया जाता।

इसी अधिनियम के अन्तर्गत कन्निमरा पुस्तकालय को केन्द्रीय राज्य पुस्तकालय घोषित किया गया और राज्य में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक पुस्तक की प्रतियाँ इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रकाशन

१. झील और कंवल (उपन्यास)
एहमीद, अनु० श्यामू संन्यासी ७.००

२. अमर ज्योति (जीवनियाँ)
मोहन १.२५

किशोर साहित्य

३. सयाना मूरख
कृष्णचन्द्र ०.९०

४. मौत की मौत
कृष्णचन्द्र ०.९०

५. सोने की सन्दूकची
कृष्णचन्द्र १.२५

आगामी उपन्यास

१. मध्यम मार्ग
बालज़ाक

२. चालाक खरगोश (दो भाग)
कृष्णचन्द्र

३. चिड़िया का अलिफ़ लैला (चार भाग)
कृष्णचन्द्र

४. मुक्ति के पथ पर
दत्त भारती

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
मनु मन्शन, १६ ओल्ड कस्टम हाउस रोड,
बम्बई १

पुस्तकालय को प्रेषित की जाने लगीं।

प्रत्येक जिले में पुस्तकालय अधिनियम के सफल पालन के लिए समितियाँ बनाई गईं और एक राज्य पुस्तकालय-समिति की स्थापना शिक्षा मन्त्री की अध्यक्षता में की गई।

श्री जनार्दनम् को, जो १९४९ में इंग्लैण्ड से लौट आये थे, बिना किसी झिझक के पुस्तकालयों के लिए विशेष पदाधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। कन्निमरा पुस्तकालय जो अभी तक सीधे सरकार के नियन्त्रण में था उसे व्यवस्था-सम्बन्धी कार्यों के क्षेत्र में सार्वजनिक पुस्तकालयों के संचालक को सौंप दिया गया।

एक स्वतन्त्र संस्था

१९४० में डॉ० ग्रैवेली महोदय ने अवकाश ग्रहण कर लिया। १९३९ से ही उन्होंने म्यूजियम के प्रबन्ध से पुस्तकालय का प्रबन्ध बिलकुल अलग कर दिया था, जिसका परिणाम यह हुआ कि पुस्तकालय जो लगभग ८० वर्षों तक म्यूजियम का अंग रहा था वह सरकार-नियन्त्रित एक स्वतन्त्र संस्था बन गया। म्यूजियम से उसका सम्बन्ध यही रह गया कि निरीक्षक, जिसे तब तक मुख्य पुस्तकालयाध्यक्ष के नाम से अभिहित करते थे अब सम्बद्ध पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में अपना सहयोग पुस्तकालय के विकास में देने लगे और उपहार के रूप में विभिन्न देशों से म्यूजियम को मिलने वाले वैज्ञानिक प्रकाशन पुस्तकालय में रखने के लिए स्थानान्तरित कर दिये जाते रहे।

१९५० में श्री जनार्दनम् के अवकाश ग्रहण करने के बाद श्री के० गोविन्द मेनन यहाँ के पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त किये गए और पुस्तकालयों के लिए विशेष पदाधिकारी के पद पर एक नई नियुक्ति की गई। इस प्रकार पुस्तकालयाध्यक्ष ही पुस्तकालयों के विशेष पदाधिकारी का पद भी सँभाले यह परम्परा आगे न चल सकी।

पुस्तकालय-भवन के आन्तरिक भाग में परिवर्तन

मद्रास पुस्तकालय अधिनियम के लागू हो जाने से इतनी अधिक पुस्तकें आने लगीं कि पुस्तकालय में उन्हें समुचित ढंग से रखने की समस्या उत्पन्न हो गई। श्री जनार्दनम् ने कुछ सुझाव पुस्तकालय-भवन के आन्तरिक भाग में परिवर्तन करने के सम्बन्ध में दिये थे जिसके फल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप १९०५ में पुस्तकालय के बाईं ओर के कक्ष में स्थापित की गई सफेद संगमरमर की बनी हुई लार्ड कार्नवालिस की भव्य मूर्ति को १९५० में हटाकर किले के संग्रहालय में रखवा दिया गया और उसके स्थान पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की वक्ष तक की एक कांस्य-मूर्ति १९५२ में स्थापित की गई। इस मूर्ति का मूल नमूना मद्रास के कला और शिल्प विद्यालय के प्राचार्य श्री डी० पी० राय चौधरी ने तैयार किया था और कांस्य-मूर्ति की ढलाई इटली में हुई थी।

सरकार ने १,३०,००० रु० पुस्तकालय भवन के अन्दर टीक की लकड़ी का मज़बूत फर्श तैयार करके पाठकों के लिए ऊपर अतिरिक्त स्थान निकालने के लिए अनुदान के रूप में दिया। नीचे की मंजिल में इस तरह जो स्थान खाली हुआ उसमें लोहे की मजबूत आलमारियाँ लगाने के लिए ३०,००० रुपये व्यय किये गए जिससे नई आने वाली ढेरों पुस्तकों को रखने की व्यवस्था हो सके।

जन-पुस्तकालय घोषित

पुस्तकालयों तथा नवप्रकाशित पुस्तकों के सम्बन्ध में जो नया अधिनियम १९५४ में भारतीय संसद ने पास किया उसके अनुसार 'राष्ट्रीय पुस्तकालय', कलकत्ता, तथा 'टाउन हाल पुस्तकालय' बम्बई के साथ इसे भी 'जन-पुस्तकालय घोषित किया गया और यह आदेश जारी किया गया कि जब तक चौथे 'जन पुस्तकालय' के नाम की घोषणा नहीं की जाती तब तक भारत-भर में प्रकाशित होने वाली प्रत्येक नई पुस्तक की एक-एक प्रति उपर्युक्त तीनों पुस्तकालयों को अनिवार्य रूप से भेजी जाया करे।

इस प्रकार भारत के एक 'जन पुस्तकालय' की हैसियत से कैनेमरा पुस्तकालय को प्रतिदिन ढेरों नई पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ प्राप्त हो रही हैं और यदि इसी गति से प्राप्त होती रहीं तो अगले दो वर्षों में पुस्तकों आदि की संख्या इतनी अधिक हो जायगी कि उनके रखने की व्यवस्था वर्तमान पुस्तकालय-भवन में न की जा सकेगी।

अधिकारियों को शीघ्र ही नये और आधुनिकतम ढंग के पुस्तकालय-भवन के निर्माण की व्यवस्था करनी पड़ेगी और साथ ही पुस्तकालय के कर्मचारियों की संख्या में भी वृद्धि करनी पड़ेगी।

हिन्दी साहित्य को अपूर्व भेंट

उच्चकोटि के व्यंग्यात्मक निबन्ध जिनमें कहानियों की-सी रोचकता है

सटक सीताराम

लेखक—प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

•

हिन्दी काव्यादर्श

(आचार्य दण्डी के काव्यादर्श की हिन्दी व्याख्या)

व्याख्याकार

रणवीरसिंह एम० ए०

•

हमारा पुरस्कृत साहित्य

• आलोचना

भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका
डॉ० नगेन्द्र १५००)

बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य
डॉ० प्रतिपालसिंह १००)

• उपन्यास

यथार्थ से आगे
भगवतीप्रसाद वाजपेयी ४००)

ज़िन्दगी की राहें
श्रीराम शर्मा 'राम' ४००)

इन्हें रखकर अपने पुस्तकालय का गौरव बढ़ाइये

प्रकाशक

ओरिएण्टल बुक डिपो,

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

बी० ए० के हिन्दी तथा अंग्रेजी के विद्यार्थियों के लिए आगरा विश्वविद्यालय इस वर्ष से स्वयं ही पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन किया करेगा। इस वर्ष अंग्रेजी तथा हिन्दी की २ पुस्तकें प्रकाशित की जायँगी।

* * *

१७ मई ५६ को आन्ध्र राज्य की पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण करने की नीति के कार्यान्वयन में पहली पुस्तक पाँचवीं कक्षा के रीडर का प्रकाशन सरकार की ओर से किया गया।

* * *

उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल और इण्टरमीडियेट शिक्षा-परिषद् ने निर्णय किया है कि राज्य के स्कूलों और कालेजों की भाषा की स्वीकृत पाठ्य-पुस्तकों में राष्ट्रीय गान सम्मिलित किया जाय।

* * *

आगरा विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आगरा की प्रकाशन-पुस्तक-विक्रय की परिस्थितियों का एक सर्वेक्षण सेन्ट जोन्स कालेज के प्रो० एस० आर० मिश्रा और विश्वविद्यालय के पुस्तकाध्यक्ष श्री एस० आर० मिश्रा द्वारा किया गया है। इनकी रिपोर्ट के अनुसार आगरा में ७० प्रकाशन-संस्थाएँ काम कर रही हैं जो एक वर्ष में लगभग ३०० पुस्तकों का प्रकाशन करती हैं जो कि कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, आगरा और लखनऊ से प्रकाशित पुस्तकों का पाँचवां हिस्सा है। आगरा से प्रकाशित होने वाली पुस्तकों का ५५ प्रतिशत अंश पाठ्य-पुस्तकों के सस्ते बाजारू किस्म के नोट्स का होता है, और १० प्रतिशत भाग भाषा सम्बन्धी पाठ्य-पुस्तकों का। किसी प्रकार की भी 'क्लासिक' पुस्तकों का प्रकाशन एक दम नहीं होता।

नोट्स और गाइड्स की पुस्तकों के प्रकाशन में प्रकाशकों को कोई विशेष खतरा नहीं उठाना पड़ता। उन्हें विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की संख्या का पता रहता है। प्रकाशक प्राध्यापकों अथवा विद्यार्थियों से ही नोट्स १।।) अथवा २) प्रति पृष्ठ देकर लिखवा लेते हैं। लेखकों को धोखा देने के लिए निम्नलिखित उपाय काम में लाए जाते हैं: (१) लेखकों के कॉपीराइट का उल्लंघन, (२) लेखकों के यहाँ से पाण्डुलिपि चुरा लेना, (३) विभिन्न संस्करणों के प्रकाशन के बारे में लेखकों का रायल्टी-सम्बन्धी हक मारने के लिए सूचना न देना, (४) लेखक और प्रकाशक को सूचना दिये बिना किसी चालू पुस्तक के शब्दशः वैसे ही अनधिकृत संस्करण छाप लेना; ऐसी पुस्तकें दूर-दूर के नगरों में छापी जाती हैं और उनका पता सम्बन्धित लेखक-प्रकाशकों को बहुत बाद में चलता है।

* * *

१६५८ के वर्ष में बिहार में ४थी से ९वीं कक्षा तक संस्कृत-साहित्य की जो पुस्तकें पाठ्य के रूप में अभी पढ़ाई जा रही हैं, वही चालू रहेंगी और उन्हीं क्षेत्रों में मान्य रहेंगी जिनमें वे अभी मान्य हैं।

* * *

उत्तर प्रदेश की प्राइमरी कक्षाओं के लिए शुद्ध देवनागरी लिपि में इस वक्त ७० लाख पुस्तकें छप रही हैं जो १५ जून तक तैयार हो जायँगी। राज्य सरकार ने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के मुद्रण का ठेका राज्य के १८० विभिन्न प्रेसों को दिया है। राष्ट्रीयकृत इन पुस्तकों से इस वर्ष राज्य-सरकार को प्राप्य रायल्टी द्वारा तीन लाख रुपये की आमदनी होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत वैज्ञानिकों द्वारा भारतीय भाषा-विज्ञान की गहरी गवेषणा

इ० चेलीशेव

भारत की भाषा-विज्ञान-सम्पदा के अध्ययन की तथा भारतीय साहित्य के क्षेत्र में शोध एवं अनुवाद की सोवियत संघ में दीर्घकालीन परम्पराएँ रही हैं। पिछली शती में प्रो० पेत्रोव, ओल्स्यान्नीकोव-कुलीकोव्स्की, कास्सोविच, वासील्येव तथा मीनायेव ने भारतीय भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में कई ज्ञानवर्द्धक एवं गहरे अनुसन्धान किये।

सोवियत संघ में भारतीय भाषा-विज्ञान को आगे बढ़ाने में अकादमिशियन ओल्देनबुर्ग, अकादमिशियन श्चेरबात्स्की तथा विशेषकर अकादमिशियन बारान्निकोव ने महती भूमिका अदा की है। लेकिन अक्तूबर-क्रान्ति से पूर्व रूसी वैज्ञानिक मुख्यतः संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय साहित्य-सम्बन्धी समस्याओं में अभिरुचि रखते थे। इसके विपरीत सोवियत काल में, और मुख्यतः पिछले कुछ वर्षों में सोवियत संघ के भारत-विद्याविदों के अध्ययन-क्षेत्र का अत्यधिक विस्तार हुआ है।

सोवियत संघ में भारतीय भाषाओं के अध्ययन-केन्द्र मुख्यतः मास्को, लेनिनग्राद और ताशकंत में हैं। वहाँ विश्वविद्यालय और महाविद्यालय हैं जहाँ हिन्दी, उर्दू, बंगला और संस्कृत के विशेषज्ञ प्रशिक्षित किये जाते हैं। हाल में मराठी और पंजाबी भाषाओं के अध्ययन की भी व्यवस्था की गई है। उपर्युक्त नगरों में मुख्यतः भारतीय भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी वैज्ञानिक शोध होता है। इस क्षेत्र में कार्य का मुख्य सोवियत-केन्द्र सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी का प्राच्य विज्ञान संस्थान है जिसका पूरे-का-पूरा विभाग भारत के जनगण की भाषाओं के अध्ययन में तथा भारतीय साहित्य सम्बन्धी समस्याओं की गवेषणा में लगा है। इस समय भारत की आधुनिक भाषाओं जैसे हिन्दी, उर्दू, बंगला, पंजाबी, तमिल, तेलुगु तथा हाल में मराठी और मलयालम में तथा लंका की भाषा सिंहली में व्याकरण, शब्दकोष-विज्ञान, ध्वनिशास्त्र और इतिहास-सम्बन्धी समस्याओं के ऊपर काम हो रहा है। आधुनिक भाषाओं के अध्ययन के साथ-साथ भारत की प्राचीन भाषाओं—संस्कृत और पाली के क्षेत्र में भी कार्य हो रहा है।

सोवियत संघ तथा अन्य देशों में भारतीय भाषाओं के किये गए अध्ययन के विभिन्न स्तर को दृष्टिगत रखते हुए सोवियत संस्थानों में विभिन्न आधार पर शोधकार्य हो रहा है। हिन्दी, उर्दू और बंगला भाषाओं में बृहत व्याकरण और शब्दकोष तैयार किये जा रहे हैं। पन्द्रह भाषाविदों का एक मण्डल जिसमें बर्खुदारोव, लोजोवोई, दिमशित्स, लिपेरोव्स्की, चेर्नीशोव और भमोतोवा के नाम उल्लेखनीय हैं, हिन्दी व्याकरण के ऊपर काम कर रहा है, जब कि बाईकोवा, चेत्रकीना, अलेक्षेयेवा, कापुंश्किन तथा कई अन्य लेखक बंगला व्याकरण सम्बन्धी शोध कर रहे हैं। इन भाषाओं के शब्दकोष विज्ञान तथा व्याकरण-सम्बन्धी समस्याओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जा रहा है। हिन्दी और उर्दू भाषाओं में शब्द-निर्माण के ऊपर एक लेखमाला शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है तथा हिन्दी, उर्दू, बंगला पंजाबी, तमिल और संस्कृत भाषाओं में व्याकरण और शब्दकोष विज्ञान सम्बन्धी समस्याओं के ऊपर एक और लेखमाला प्रकाशनार्थ तैयार की जा चुकी है। दूसरी लेखमाला में संस्कृत काव्य में सामासिक शब्दों के वाग्रचना-शैलीगत व्यापार के ऊपर कोचारगीना का लेख, हिन्दी में विधिक्रिया के ऊपर लिपेरोव्स्की का लेख, पंजाबी भाषा में संयुक्त क्रियाओं के ऊपर तोल्स्ताया का लेख,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा तमिल भाषा में विभिन्न कालों में क्रिया के रूपभेद के ऊपर आन्द्रोवनोव का लेख है। बंगला भाषा में विधेय-विस्तार के ऊपर ई० बाईकोवा के लेखों का संग्रह शीघ्र ही उपलब्ध हो जायगा। सोवियत भाषाविज्ञानविद् उन भाषाओं के व्याकरण एवं लघु, शब्दकोष तैयार करने में लगे हुए हैं जिनका पर्याप्त अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली अन्य पुस्तकों में मराठी भाषा के शब्द-रूपगठन के ऊपर एक मोनोग्राफ है जिसे लेनिनग्राद विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका कातेनीना ने तैयार किया है। वोल्कोवा, एलिजारेन्कोवा, कोचारगीना तथा अन्य सोवियत भाषाविज्ञानविद् संस्कृत और पाली की समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं। भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी गवेषणा में एक नूतन प्रवृत्ति यह है कि द्रविड़-भाषाविज्ञान और सिलोनी भाषा विज्ञान के क्षेत्र में होने वाले शोधकार्य में सक्रियता बढ़ गई है।

भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी शोध के क्षेत्र के विस्तार, महत्त्वपूर्ण समस्याओं के शोध-कार्य में रत विभिन्न शैक्षिक एवं वैज्ञानिक संस्थानों में काम करने वाले विशेषज्ञों के बीच सहयोग, आधारभूत रचनाओं के प्रणयन तथा आधुनिक एवं प्राचीन भाषाओं के क्षेत्र में शोधकार्य के फलस्वरूप ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहन मिलेगा।

सोवियत भारतविद्याविद् बड़े उत्साहपूर्वक भारतीय साहित्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन और शोध कर रहे हैं। वे भारतीय जनगण के आधुनिक साहित्य के विकास की प्रक्रियाओं और नियमितताओं की गवेषणा पर मुख्य रूप से अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। भारतीय जनगण के आधुनिक साहित्य की विकास-सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विशेषाधिकारों के सन्दर्भ में किया जा रहा है जिन्होंने १९वीं शती के उत्तरार्द्ध से लेकर भारतीय संस्कृति के विकास के सामान्य स्वरूप का निर्धारण किया। जिन समस्याओं का अध्ययन किया जा रहा है उनमें मुख्य ये हैं: भारतीय जनगण में राष्ट्रीय चेतना के उदय का साहित्य में प्रतिबिम्बन, राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए देश में राष्ट्र-व्यापी पैमाने पर आन्दोलन का विकास, व्यापक जनसमुदाय में महात्मा गांधी के सिद्धान्तों का प्रसार, भारतीय जनगण के राष्ट्रीय साहित्यों के पूरे विकास-क्रम पर, इन साहित्यों की नूतन शैलियों के ऊपर तथा इन साहित्यों में यथार्थवाद की अभिव्यञ्जना के ऊपर समाज के पुनर्गठन के प्रगतिशील जनवादी सिद्धान्तों का प्रभाव। भारतीय साहित्य के सोवियत-विशेषज्ञ अलग-अलग लेखकों की कृतियों का अध्ययन करने के साथ-साथ भारत के जनगण के राष्ट्रीय साहित्यों की विभिन्न शैलियों के सामान्य विकास-क्रम का अध्ययन कर रहे हैं।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सोवियत भाषा विज्ञानविद् आधुनिक गद्य, पद्य एवं नाट्यशास्त्र की विकास-सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं। बेस्क्रोवनी, बालिन, राबीनोविच, कार्शेन्नीकोव तथा अन्य साहित्य-आचार्य प्रेमचन्द की रचना का अध्ययन और अनुवाद कर रहे हैं। बालिन ने 'उपन्यासकार—प्रेमचन्द' शीर्षक विषय पर एक गवेषणामूलक निबन्ध पेश किया है, बेस्कोव्नी 'प्रेमाश्रम' और 'कर्मभूमि' का अध्ययन एवं अनुवाद कर रहे हैं, कोशेन्निकोव ने 'गोदान' का अनुवाद किया है, गार्वयुशीना भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना का अध्ययन कर रही हैं, प्रोताबेको हिन्दी नाट्यशास्त्र तथा जयशंकर प्रसाद की रचना-समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं तथा इस लेख का लेखक आधुनिक हिन्दी कविता सम्बन्धी समस्याओं का और प्रथमतः सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं का अध्ययन कर रहा है।

बंगला साहित्य के क्षेत्र में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की रचनाओं का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जा रहा है। लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा विज्ञान विभाग के प्रधान नोवीकोव ने बंकिमचन्द्र के ऐतिहासिक उपन्यास के ऊपर गवेषणात्मक निबन्ध लिखा है, तोवस्तिख शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय की रचना का अध्ययन कर रहे हैं, स्नातुक-दानिलचुक रवीन्द्रनाथ की रचना के ऊपर गवेषणात्मक निबन्ध तैयार कर रहे हैं। पोपोवा उर्दू के बड़े कवि इकबाल की रचना का अध्ययन कर रही हैं, वी० बाईकोवा कृष्णचन्द्र की रचना का अनुवाद और अध्ययन कर रही हैं, ग्लेबोव सामान्यतया मध्ययुगीन उर्दू कविताओं की तथा विशेषतया मीर और गालिब की कविताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुप्रसिद्ध लेखकों की
दो नवीन रचनाएँ

१. मेरी पसन्द : ले० श्री गुरुदत्त—२. आदरणीय : ले० श्री आरिगपूडि

१. मेरी पसन्द (नाटक) : हिन्दी-जगत् के सर्वप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री गुरुदत्त का यह प्रथम नाटक है जो प्रकाशित हुआ है। मूल्य २॥)

२. आदरणीय (उपन्यास) : 'खरे-खोटे' के ख्याति-प्राप्त, अन्य कई रचनाओं के रचयिता, दक्षिण भारत के प्रथम हिन्दी उपन्यासकार श्री ए० रमेश चौधरी 'आरिगपूडि' का यह नवीन उपन्यास है। रोचक शैली तथा भाषा की सरलता इसकी विशेषता है। मूल्य ४)

दोनों पुस्तकें २० जून को प्रकाशित हो रही हैं। आर्डर भेजें। **—व्यवस्थापक**

हमारे प्रकाशन

१. विकृत छाया	मू०	४॥)	१२. कला	मू०	५)
२. भावुकता का मूल्य	,,	६)	१३. दासता के नए रूप	,,	६)
३. बहती रेता	,,	५)	१४. पत्रलता	,,	७)
४. विश्वासघात	,,	५॥)	१५. धरती और धन	,,	६)
५. विडम्बना (संस्करण समाप्त)	,,	६)	१६. अन्तिम यात्रा	,,	१)
६. देश की हत्या	,,	५॥)	१७. भूले-भटके	,,	३)
७. वाम मार्ग	,,	७)	१८. खरे-खोटे	,,	५)
८. विलोम गति	,,	५)	१९. अलका (कविता-संग्रह)	,,	२॥।)
९. गुण्ठन	,,	५)	२०. मेरी पसन्द (नाटक)	,,	२॥)
१०. मानव	,,	५)	२१. आदरणीय	,,	४)
११. आवरण	,,	५)			

भारती साहित्य सदन

३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली-१

सूचना :—भावुकता का मूल्य, देश की हत्या तथा गुण्ठन का द्वितीय संस्करण छपकर तैयार है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गवेषणा कर रहे हैं। जोग्राफ द्वारा अनूदित मीर अमन के 'बाग-ओ-बहार' का प्रकाशन अभी हाल में हुआ है। भारतीय जनगण के अन्य राष्ट्रीय साहित्यों में भी शोध-कार्य हो रहा है। उदाहरणार्थ, स्मिर्नोवा आधुनिक तमिल-साहित्य के जनक सुब्रह्मण्यम् भारती के काव्य का अध्ययन और अनुवाद कर रही हैं। पेत्रुनीचेवा प्रगतिशील आन्ध्र कवि श्री श्री की रचनाओं के ऊपर अध्ययनपूर्ण निबन्ध तैयार कर रही है, और तोल्स्ताया विख्यात पंजाबी कवि चात्रिक का अध्ययन कर रही हैं। भारत के प्राचीन काव्य-साहित्य के क्षेत्र में कल्याणोव, एर्मान और रयबी-नोविच कालिदास की रचनाओं के ऊपर अध्ययनपूर्ण निबन्ध प्रस्तुत कर रहे हैं। ये सभी सोवियत वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र में गवेषणात्मक निबन्ध, लेख तथा शोध-पूर्ण प्रबन्ध तैयार कर रहे हैं जिनका शीघ्र ही प्रकाशन होने वाला है। भारतीय साहित्य की अनेक समस्याओं के ऊपर लेखों का एक संग्रह मुद्रणालय में छप रहा है। इस संग्रह में प्रेमचन्द के 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' के ऊपर बालिन का लेख, हिन्दी नाटक के ऊपर पोतावेंको का लेख, आधुनिक बंगला साहित्य की कुछ विशेषताओं के ऊपर नोवीकोवा का लेख, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' तथा अन्य लेखकों की रचनाओं के ऊपर इस लेख के लेखक के निबन्ध हैं। भारतीय साहित्य के क्षेत्र में होने वाले शोध-कार्य के गुणात्मक स्तर को प्रोत्साहित करने और बढ़ाने के उद्देश्य से प्राच्यविद्या संस्थान ने अपने कार्य में सहयोग देने के लिए हाल में भारतीय विशेषज्ञों को आमन्त्रित करना शुरू किया है। इस समय प्रो० रामकुमार वर्मा, और प्रो० नरेन्द्रनाथ राय, डाक्टर शुक्ल, श्रीमती कमलारत्नम् तथा अन्य भारतीय विशेषज्ञ जो मास्को में हैं सोवियत भारतविद्याविदों के कार्य में सक्रिय सहायता कर रहे हैं। मास्को में रहने वाले भारतीय विशेषज्ञों के मैत्रीपूर्ण परामर्श तथा भारत के लेखकों और वैज्ञानिकों के सुझाव जिनके साथ संस्थान नियमित रूप से पत्र-व्यवहार करता है भारतीय भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में सोवियत वैज्ञानिकों के शोधकार्य के सफल विकास में सहायक हैं।

भारतीय जनता के जीवन की ऐतिहासिक तिथियों और स्मरणीय घटनाओं की याद में तथा भारतीय लेखकों की वर्षगाँठों के सम्मान में सोवियत संघ में सभाओं, वैज्ञानिक बैठकों और समारोहों का आयोजन करने की भव्य परम्परा बन गई है। इन घटनाओं के सम्बन्ध में न केवल वार्ताओं और वक्ताओं का आयोजन होता है वरन् समाचार-पत्रों द्वारा तथा रेडियो और टेलीविजन के विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से उनका व्यापक प्रचार किया जाता है। उदाहरणार्थ, संस्थान ने तुलसी जयन्ती, जयशंकर प्रसाद की २०वीं बरसी तथा सुब्रह्मण्यम् भारती-जयन्ती का व्यापक रूप में आयोजन किया।

भारतीय साहित्य को रूसी भाषा में अनुवाद करने की दिशा में भी संस्थान ने बहुत कुछ किया है। कालिदास और शूद्रक के नाटक और काव्य जैसी कालजयी रचनाओं के अध्ययन और अनुवाद के साथ-साथ महाभारत (आदिपर्व) तथा 'भगवद्गीता', 'नल-दमयन्ती', 'सावित्री और सत्यवान्', तुलसीकृत 'रामायण', 'शुक सप्तति', 'वैताल पंचविंशति', 'पंचतन्त्र', 'हितोपदेश', 'जातक कथा', प्राचीन भारतीय साहित्य-सम्बन्धी अन्य रचनाएँ, भारत के अनेक आधुनिक लेखकों की रचनाएँ जो अभी भी जीवित हैं अथवा जिनका देहावसान हुए बहुत दिन नहीं हुए हैं रूसी भाषा में अनूदित हो रही हैं और उनकी करोड़ों प्रतियाँ छप रही हैं। इस प्रकार के लेखकों में टैगोर, प्रेमचन्द, इकबाल, सुदर्शन, निराला, वृन्दावन लाल वर्मा, यशपाल, कृष्णचन्द्र, माणिक बन्दोपाध्याय, प्रेमेन्द्रमित्र, विष्णु प्रभाकर, सुब्रह्मण्यम् भारती, बलाथोल, पोतेकत तथा बहुत से अन्य लेखकों के नाम उल्लेख्य हैं जो अपनी रचनाओं में भारतीय जनता के जीवन का सच्चा और सुस्पष्ट चित्रण करते हैं जिनसे सोवियत जनता को भारतीय संस्कृति की गहरी जानकारी प्राप्त करने में और उसका सच्चा मूल्यांकन करने में मदद मिलती है।

भारतीय भाषा विज्ञान सम्बन्धी समस्त शोधकार्य, तथा सोवियत विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्य संस्थान की चहारदीवारी के अन्दर होने वाले समस्त अनुवाद-कार्य भारत और सोवियत संघ के जनगण की मैत्री को सुदृढ़ बनाने तथा उनके पारस्परिक सद्भाव को बढ़ाने के उदात्त लक्ष्य को समर्पित हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय और पुस्तक-व्यवसाय

एक सुप्रसिद्ध प्रकाशक द्वारा लिखे गए इस लेख में विषय से सम्बन्धित समस्याओं पर गम्भीर विचार किया गया है।

भारत जैसे देश का पुस्तक-व्यवसाय अधिकांश रूप में पुस्तकालयों के सहयोग पर ही चल रहा है। ८० प्रतिशत से भी अधिक पुस्तकें (पाठ्य-पुस्तकों को छोड़कर) पुस्तकालयों द्वारा ही खरीदी जाती हैं, और हिन्दी पुस्तकों की खरीदारी का हाल तो और भी बुरा है। प्रकाशकों के यहाँ से खरीदी जाने वाली पुस्तकें—चाहे वे पुस्तक-विक्रेताओं के द्वारा खरीदी जायँ, चाहे सरकारी विभागों या सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा—प्रायः सारी-की-सारी घूमती-फिरती पुस्तकालयों में ही पहुँच जाती हैं। खरीदकर पुस्तकें पढ़ने और अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय स्थापित करने की आदत भारतीय जनता को नहीं है। इसका एक कारण तो अर्थजन्य है और दूसरा स्वभावजन्य।

जब तक व्यक्तिगत खरीदारों की संख्या में पर्याप्त वृद्धि नहीं होती तब तक पुस्तक-व्यवसाय को पुस्तकालयों की खरीदारी पर ही निर्भर करना होगा। राष्ट्र की बौद्धिक उन्नति में पुस्तक-व्यवसाय तथा पुस्तकालयों, दोनों का महत्त्वपूर्ण हाथ रहता है, अतः जनता तक सुरुचिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य पहुँचाने के लिए इन दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध सहयोगपूर्ण होना चाहिए।

सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न है पुस्तकालयों द्वारा मांगे जाने वाले कमीशन का। इसमें सन्देह नहीं कि एक साथ हजारों रुपये की पुस्तकें खरीदने पर व्यक्तिगत ग्राहक की अपेक्षा पुस्तकालयों को कुछ अधिक सुविधाएँ दी जानी चाहिएँ, लेकिन कुरुचिपूर्ण और सस्ती किस्म की पुस्तकें छापने वाले प्रकाशकों ने कुछ ऐसी रस्म बिगाड़ दी है कि अव्यावसायिक खरीद पर माँगा जानेवाला कमीशन व्यावसायिक कमीशन से भी अधिक होता है। परिणाम यह होता है कि उच्च स्तर की पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशक उनकी माँग पूरी नहीं कर पाते और सस्ती किस्म की कुरुचिपूर्ण पुस्तकों से पुस्तकालयों की अलमारियाँ भरती जा रही हैं। इस सम्बन्ध में यदि किसी उत्तरदायित्वपूर्ण समिति से देश के सभी छोटे-बड़े पुस्तकालयों की जाँच कराई जाय तो जो-जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जायगा वह बड़ा रोचक होगा। असामयिक और रद्दी पुस्तकों से बहुत से पुस्तकालयों की कई-कई अलमारियाँ भरी मिलेंगी और उच्च स्तर की तथा नई पुस्तकों का उनमें नितान्त अभाव होगा जबकि हजारों रुपये की पुस्तकें खरीदने की व्यवस्था पुस्तकालय के कोष में होगी।

इससे बड़े दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है कि घास-भूसे की तरह पुस्तकों की सप्लाई के लिए भी अव्यावसायिक खरीदारी के लिए टेन्डर माँगे जाते हैं। और कुछ लोग ऐसे टेन्डर भरने की कला में इतने माहिर हैं कि अप्रत्याशित रूप से अधिक कमीशन पर पुस्तकों की सप्लाई करके उन्होंने लखपती बनकर अपनी कोठियाँ खड़ी कर ली हैं। उन्हें इस बात की विशेष जानकारी रहती है कि किस टुटपुँजिए प्रकाशक ने कौनसी ऐसी रद्दी पुस्तकें छाप रखी हैं जो कई वर्षों से पड़ी सड़ रही हैं और उन्हें रद्दी के भाव तौलकर अमुक सप्लाई में भिड़ाया जा सकता है, फिर अगर कुछ पुस्तकें घाटा सहकर कम कमीशन पर भी खरीदनी पड़ें तो क्या चिन्ता है!

यह प्रवृत्ति पुस्तक-व्यवसाय की ही नहीं, लोकहित की दृष्टि से भी अत्यन्त अहितकर है। इसका परिणाम यही होगा कि या तो घटिया किस्म की पुस्तकें ही पुस्तकालयों में भर दी जायँगी या फिर प्रकाशकों को यह ढंग अपनाना पड़ेगा कि वे पुस्तकों पर दुगने-चौगुने दाम छापकर मुँह-माँगा कमीशन दें। लेकिन शरारत करने वाले तो विकृत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से-विकृत ढंग अपनाते ही जायेंगे, अगर उन्हें रद्दी पुस्तकें भेड़ने का तनिक भी मौका मिला।

इस सम्बन्ध में पुस्तकालयाध्यक्षों और सरकारी विभागों को गम्भीरतापूर्वक विचार करके कोई ठोस और उपयुक्त निर्णय कर लेना चाहिए। कमीशन की एक वाजिब दर तय हो जानी चाहिए और उत्कृष्ट पुस्तकों की एक सूची किसी उत्तरदायित्वपूर्ण विशेषज्ञों की समिति से तैयार करवाकर वितरित कर देनी चाहिए। फिर प्रति मास उच्च कोटि की नई पुस्तकों की सूची भी नियमित रूप से पुस्तकालयों आदि के लिए प्रकाशित होनी चाहिए। उच्च कोटि की पुस्तकें प्रकाशित करने वाले प्रकाशकों की भी एक सूची पुस्तकालयाध्यक्षों के पास होनी चाहिए जिससे वे उन प्रकाशकों की नई पुस्तकें निश्चिन्त होकर मँगवा सकें।

देश के समस्त छोटे-बड़े पुस्तकालयों की भी एक परिचयात्मक सूची प्रकाशित होनी चाहिए जिसमें नये पुस्तकालयों की सूची समय-समय पर जुड़ती रहनी चाहिए। इस सूची से प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं की नई पुस्तकों की सूचना नियमित रूप से पुस्तकालयों तक पहुँचाते रहने में सुविधा होगी। इस तरह की सूची केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के उद्योग से ही प्रकाशित हो सकती है। राज्य-सरकारों को भी अपने क्षेत्र के पुस्तकालयों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित करने की चेष्टा करनी चाहिए।

कमीशन की दर निश्चित हो जाने पर पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकें स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से ही खरीदी जा सकेंगी, सीधे प्रकाशकों से नहीं। पुस्तकालयों और प्रकाशकों दोनों का हित इस बात में है कि स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं को प्रोत्साहन दिया जाय। पुस्तकालयों को इस बात की सुविधा होगी कि वे प्रत्यक्ष रूप से पुस्तकों की जाँच-पड़ताल करवाकर खरीद सकेंगे तथा बिना किराये-भाड़े के अविलम्ब वांछित पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे और प्रकाशकों को यह लाभ होगा कि पुस्तक-विक्रेताओं के रूप में उन्हें सहज ही सुयोग्य प्रतिनिधि और प्रचारक प्राप्त हो जायेंगे। पुस्तकें बेचने के लिए उन्हें जितना श्रम और धन व्यय करना पड़ता है उसका अधिकांश उत्कृष्ट पुस्तकों के प्रकाशन में लगने लगेगा।

प्रकाशकों को चाहिए कि वे नियमित रूप से अपने नये प्रकाशनों की सूचना स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं और पुस्तकालयाध्यक्षों के पास भेजते रहें। ऐसा करते वक्त उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पुनर्मुद्रित पुस्तकों को नई पुस्तकों की सूची में सम्मिलित करके नहीं भेजना चाहिए। ऐसा करना अनुचित है, क्योंकि पुस्तकालयों में एक पुस्तक की कुछ निश्चित प्रतियाँ ही रखी जाती हैं और उन्हें प्रायः एक साथ ही खरीद लिया जाता है। जो पुस्तक पुस्तकालय में मौजूद है उसे दुबारा खरीदने का कोई तुक नहीं है—लेकिन नई पुस्तकों की सूची में यदि पुनर्मुद्रित पुस्तक को रख दिया जाय तो कभी-कभी ऐसी भूल हो ही जाती है।

प्रकाशकों को यह भी चाहिए कि वे पुस्तकों के दो संस्करण प्रकाशित करें—(१) सामान्य संस्करण, (२) पुस्तकालय-संकरण। सामान्य संस्करण के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तक आकर्षक दिखाई दे, लेकिन यह पुस्तकालय-संस्करण के लिए पुस्तकों का टिकाऊ होना पहली शर्त है। दाम चाहे कुछ अधिक भले ही रखना पड़े लेकिन संस्करण की पुस्तकों का कागज़ और जिल्द ऐसी होनी चाहिए जो टिकाऊ हो और बार-बार के उपयोग से जल्दी खराब न हो। पुस्तकालयों के लिए प्रस्तुत किये जाने वाले संस्करण में कुछ और भी खूबियाँ ज़रूरी हैं। जिल्द और आवरण के पुश्ते पर कम-से-कम पुस्तक और लेखक का नाम तथा मूल्य अवश्य अंकित रहे जिससे पुस्तकालय की अलमारियों में लगी हुई पुस्तकों में से वांछित पुस्तक निकालने या आलमारी में से निकालकर बिना उलटे-पुलटे पुस्तकों की सूची तैयार करने में कठिनाई न हो। इसके अतिरिक्त पुस्तक में इस बात की भी पूरी सूचना मुद्रित होनी चाहिए कि इसका पहला तथा अन्य संस्करण कब और कहाँ से प्रकाशित हुए तथा प्रत्येक संस्करण की कितनी प्रतियाँ मुद्रित करवाई गई थीं। यह जानकारी जिज्ञासु-पाठकों तथा अनुसन्धान-कर्ताओं के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होती है।

इस प्रकार एक-दूसरे की सुविधाओं तथा कठिनाइयों को ध्यान में रखकर पारस्परिक सहयोग से कार्य किया जाय तो इससे पुस्तकालयों, व प्रकाशकों की उन्नति हो सकती है और जनता का वांछित सेवाकार्य सम्पन्न किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखकीय मञ्च

कानपुर से महिलोपयोगी पत्रिका **आरसी** की सम्पादिका श्रीमती लीला प्रकाश लिखती हैं कि वे कढ़ाई, बुनाई, सिलाई व पाक पर सिरीज में कम दाम की उपयोगी पुस्तकें निकालना चाहती हैं। जिन प्रकाशकों की रुचि ऐसी सिरीज़ को प्रकाशित करने की हो, वे उनसे ११३-१३६ स्वरूप नगर, कानपुर के पते पर पत्र-व्यवहार करें, और उनसे इस सिरीज की पूर्ण रूपरेखा प्राप्त करें।

* * *

श्री राजेन्द्र किशोर धरहरा कोठी, नया टोला, पटना से लिखते हैं कि उनके पास नौ कहानियों का संग्रह "संख्या का निर्णय" तैयार है जिसे एक अच्छे उत्साही प्रकाशक की प्रतीक्षा है।

* * *

श्री प्रिन्स सतीश 'प्रेमी' पठानकोट से सूचना देते हैं कि उनके पास बालोपयोगी पुस्तक 'चुहिया का ब्याह' प्रकाशनार्थ तैयार है। इच्छुक सज्जन इस पते पर लिखें—मार्फत श्री प्रेमनाथ शाही, मोहल्ला अचारजियाँ, पठानकोट।

* * *

श्री रामसिंह विशारद, वाराणसी से सूचना देते हैं कि उनके पास मौलिक लेखों के दो संग्रह प्रकाशनार्थ तैयार हैं जो प्रकाशक छापना चाहें निम्न पते पर लिखें—६५/२२ बड़ी पियरी, वाराणसी।

* * *

श्री राष्ट्र भाषा विद्यालय, वाराणसी के प्रधानाचार्य के पास विभिन्न विषयों की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनार्थ प्रस्तुत हैं। प्रकाशक उल्लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री चाँद मोहम्मद बी० कॉम० 'विशारद', २/१४ तेजा चौक, ब्यावर सूचना देते हैं कि उनके पास तीन विदेशी भाषाओं से अनूदित पुस्तकें, एक उर्दू शायरी की सम्पादित पुस्तक, एक उर्दू की कहानियाँ (संकलन) और तीन रूसी भाषा से अनूदित बाल साहित्य की पुस्तकें प्रकाशनार्थ तैयार हैं। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री विमल बोस एम० ए०, ५८ देहली दरवाजा, आगरा सूचित करते हैं कि उनके पास बंगाल की दस श्रेष्ठ आधुनिक कहानियों का अनुवाद प्रकाशनार्थ तैयार है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

आज की सबसे ज्वलंत समस्या का विश्लेषण

राष्ट्र-योजना और परिवार-योजना

ले० भँवरमल सिंघी

प्राक्कथन :

डॉ० जे० सी० घोष,

सदस्य, योजना-आयोग, भारत सरकार

पृष्ठ संख्या—१००, डबल क्राउन १/१६ मूल्य—१)

परिवार-नियोजन समिति

३९१, अपर चित्तपुर रोड,

कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

खम्मा अन्नदाता : श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' का नवीनतम उपन्यास है। इसमें लेखक ने राजाओं, महाराजाओं के जीवन के उस पक्ष का चित्रण किया है, जिसे जनता से आज तक ओझल रखा गया है। पिता के समान पूजे जाने वाले राजाओं का आन्तरिक जीवन और वास्तविक जीवन क्या है, यह इस उपन्यास को पढ़कर भलीभांति प्रकट हो जाता है। 'खम्मा अन्नदाता' के चरित्र-चित्रण और कथा-प्रवाह में जो स्वाभाविकता है, वह बहुत कम उपन्यासों में दृष्टिगत होती है। क्राउन साइज के २२७ पृष्ठ का यह उपन्यास **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क, दिल्ली** से प्रकाशित हुआ है और वहीं से चार रुपये में मिल सकता है।

* * *

टेढ़ी रेखाएँ : श्री श्रीराम शर्मा 'राम' का नया उपन्यास है। इसमें उन व्यक्तियों की पोल खोली गई है जो पैसा कमाकर नारी की विवशता के साथ खिलवाड़ करते हैं। ये सामाजिक वातावरण को तो दूषित करते ही हैं, साथ ही इससे राष्ट्र-धर्म की भावना को ठेस भी पहुँचती है। इसमें जिस निर्धन, किन्तु पराश्रित बालिका का चित्र अंकित किया गया है, वह हमारे समाज का नंगा चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है। मनुष्य की दुर्दान्तता, भेड़िया मनोवृत्ति का सही चित्रण लेखक ने इसमें किया है। इस उपन्यास का प्रकाशन **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई सड़क दिल्ली**, द्वारा हुआ है और यह वहीं से चार रुपये में प्राप्य है। क्राउन साइज का सजिल्द उपन्यास २१६ पृष्ठ का है।

* * *

अग्नि : श्रीमती अमृता प्रीतम द्वारा लिखित उपन्यास है। इसका प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली** ने किया है। इस उपन्यास में लेखिका ने एक सर्वथा नवीन शैली में एक कलाकार लड़की की आन्तरिक उलझनों का चित्रण किया है। इससे जहाँ पाठकों को नवीन प्रेरणा प्राप्त होगी, वहाँ नवीन भारत की विधायिका नारी का मुक्ति-मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। क्राउन साइज के १६६ पृष्ठ का यह सुमुद्रित सजिल्द उपन्यास प्रकाशक से तीन रुपये में प्राप्त किया जा सकता है।

* * *

कविता

उर्दू के शायर और उनकी शायरी : उर्दू के काव्य-साहित्य का जिन्होंने रसास्वादन किया है वे भलीभाँति जानते हैं कि उर्दू की कविता में कितनी सरसता और सजीवता तथा गागर में सागर भर देने की शक्ति है। साथ ही उसमें सामाजिक जीवन के प्रवाह के साथ मेल खाने वाली गतिशीलता भी पर्याप्तरूपेण विद्यमान है।

आज जब हम इस साहित्य के लगभग विगत बीस-पच्चीस वर्षों के इतिहास के पन्नों को पलटकर देखते हैं तो हम इसके विकास की विविधता एवं उसकी असाधारण प्रगति पर आश्चर्यान्वित हुए बिना रह ही नहीं सकते।

ऐसे आज के समृद्ध एवं प्रगतिशील उर्दू काव्य-साहित्य के उत्तमांशों को 'आज के उर्दू शायर और उनकी शायरी' के रूप में हिन्दी पाठकों के समक्ष सुलभ कर सम्पादक एवं प्रकाशक महोदय ने हिन्दी की जो सेवा की है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। आज की उर्दू कविता का यह प्रतिनिधि संकलन अपने ढंग का सम्भवतः पहला प्रयास है। इसमें सम्पादक महोदय ने प्रत्येक कवि की जीवनी एवं उसके काव्य की विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय देकर इसे और अधिक उपयोगी बना दिया है।

पुस्तक की छपाई और गेटअप दोनों ही बहुत सुन्दर हैं। प्रकाशक हैं **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली;** मूल्य ८); पृष्ठ संख्या डिमाई आकार में ३७६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों और कालिजों के लिए उपयोगी पाठ्य पुस्तकें

राजनीति शास्त्र

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

बिहार, पटना, राजस्थान, नागपुर आदि यूनिवर्सिटियों के बी० ए० के कोर्स को दृष्टि में रखकर १९५८ के चौथे संस्करण को पूर्णतया संशोधित व परिवर्द्धित किया गया है।

पृष्ठ संख्या ६००, डिमाई साइज़, मूल्य ११ रु०।

राजनीति शास्त्र (प्रथम भाग)

आगरा, गोरखपुर आदि यूनिवर्सिटियों के बी० ए० पार्ट १ के नये कोर्स के अनुसार यह नया संस्करण तैयार किया गया है। मूल्य ७ रु०

राजनीति शास्त्र (द्वितीय भाग)

आगरा, गोरखपुर आदि यूनिवर्सिटियों के बी० ए० पार्ट २ के नये कोर्स के अनुसार। मूल्य ५ रु०

विदेशी राज्यों की शासन-विधि

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

ग्रेट ब्रिटेन, अमरीका, रूस, स्विट्ज़रलैण्ड और फ्रांस के संविधानों का सरल व विशद रूप से विवेचन बी० ए० के कोर्स को पूर्णतया कवर करता है।

मूल्य ७ रु०।

भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन और नया संविधान

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

आगरा, राजस्थान, गोरखपुर आदि यूनिवर्सिटियों के बी० ए० कोर्स के अनुसार। मूल्य ७ रु० २५ नये पैसे।

भारत का नया संविधान

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

भारत के संविधान का विशद रूप से विवेचन। मूल्य ५ रु०।

भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

विविध यूनिवर्सिटियों के बी० ए० के कोर्स के अनुसार। मूल्य ७ रु०।

भारतीय अर्थशास्त्र

लेखक—कालिकाप्रसाद भटनागर, और एस० सी० गुप्त

भारतीय अर्थशास्त्र पर यह अत्यन्त प्रामाणिक व अपटुडेट ग्रन्थ है, जिसे विविध यूनिवर्सिटियों के बी० ए० के कोर्स के अनुसार लिखा गया है। मूल्य ८ रु० ५० नये पैसे।

मुद्रा, बैंकिंग और विदेशी विनिमय

लेखक—कालिकाप्रसाद भटनागर, एस० सी० गुप्त और तिलकनारायण हजेला

विविध यूनिवर्सिटियों के बी० ए० के कोर्स के अनुसार। मूल्य ७ रु० ५० नये पैसे।

भारत का प्राचीन इतिहास

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

प्रारम्भ से १२०० ईस्वी तक का भारत का विशद रूप से लिखा गया इतिहास। मूल्य १० रु०।

यूरोप का आधुनिक इतिहास (१७८९—१९५५)

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

नया संस्करण, अत्यन्त मनोरंजक व सुपाठ्य भाषा में लिखा हुआ यूरोप का विस्तृत इतिहास। मूल्य १५ रु०

यूरोप का आधुनिक इतिहास (भाग १)
१७८९ से १८७१ तक। मूल्य ६॥)

यूरोप का आधुनिक इतिहास (भाग २)
१८७१ से १९३९ तक। मूल्य ६॥)

यूरोप का आधुनिक इतिहास (भाग ३)
१९३९ से १९५५ तक। मूल्य ३)

विविध यूनिवर्सिटियों में बी० ए० के लिए यूरोप के इतिहास का जो कोर्स नियत है, वह पूर्णतया इन ग्रन्थों में आ गया है।

एशिया का आधुनिक इतिहास

लेखक—सत्यकेतु विद्यालंकार डी० लिट्० (पेरिस)

चीन, जापान, कोरिया, इण्डोचाइना, इन्डोनेशिया, मलाया, थाईलैण्ड, बरमा और तिब्बत का आधुनिक इतिहास। मूल्य ६॥)

आचार्य चाणक्य (ऐतिहासिक उपन्यास)

मूल्य ४ रु०।

पुस्तक-विक्रेताओं को विशेष सुविधा दी जाती है—कमीशन-दर आदि बहुत लाभप्रद हैं।

सरस्वती सदन, मसूरी (उत्तर प्रदेश) और सरस्वती सदन, ११८ एम, कनाट सर्कस, न्यू देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविताएँ : सुश्री कीर्ति चौधरी की कविताओं का नव प्रकाशित संग्रह है। इसमें उनकी अब तक की कुल ४८ कविताएँ संग्रहीत हैं। हिन्दी के नये कवियों में ('नयी कविता' लिखने वाले कवियों में) उनका विशिष्ट स्थान है। 'नयी कविता' के सम्बन्ध में सामान्य पाठकों को जो दुरूहता और विरसता की शिकायत रहती है वह कीर्तिजी की कविताओं के लिए लागू नहीं होती। सहज-सरल भावों को सहज-सरल शैली में व्यक्त कर देने की अपूर्व क्षमता उनमें है। इस संग्रह की कविताएँ पढ़कर पाठकों को वर्षा की प्रथम फुहार की-सी सुखद अनुभूति मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। सफाई छपाई सुन्दर तथा रूपसज्जा मोहक है। **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, बम्बई, इलाहबाद, पटना, मद्रास** इसके प्रकाशक हैं और मूल्य है ३ रु० ५० न० पै०।

*　　*　　*

चांद से नीचे : श्री रामावतार 'चेतन' की १९५४ से १९५७ तक की कविताओं का नया संग्रह है। इसमें कुल ७८ कविताएँ संकलित हैं। चुटीले स्थिति-चित्रों तथा भाव-चित्रों के प्रणयन में श्री चेतन पटु हैं। तीखा व्यंग्य उनका मुख्य अस्त्र है। इस संग्रह की जिन कविताओं में बौद्धिकता का अंश अधिक हो गया है वे विरस तथा गद्यात्मक हो गई हैं और ऐसी कविताएँ कम नहीं हैं। साज-सज्जा प्रशंसनीय तथा सफाई-छपाई काफी सुथरी है। इसका प्रकाशन हुआ है **हिन्दी भवन, जालन्धर, इलाहाबाद** से और मूल्य है ३)।

आरोग्य-मन्दिर प्रकाशन

१.	रोगों की नयी चिकित्सा : ले० लूई कूने	२-०-०
२.	काश्मीर में पन्द्रह दिन : ले० विट्ठलदास मोदी	१-०-०
३.	बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग : स० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
४.	सर्दी जुकाम खाँसी : डॉ० रैसमस अलसाकर, एम० डी०	०-१२-०
५.	उपवास से लाभ : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
६.	जीने की कला : ले० विट्ठलदास मोदी	१-४-०
७.	प्राकृतिक जीवन की ओर : ले० ऐडोल्फ जस्ट	२-८-०
८.	उठो! : ले० स्वामी कृष्णानन्द	१-०-०
९.	रोगों की सरल चिकित्सा : ले० विट्ठलदास मोदी	३-०-०
१०.	स्वास्थ्य कैसे पाया? : स० विट्ठलदास मोदी	१-८-०
११.	आदर्श आहार : ले० डॉ० ऐस० सी० दास	१-०-०
१२.	योगासन : ले० आत्मानन्द	२-०-०

●

मिलने का पता :

व्यवस्थापक : "आरोग्य"

पो० आरोग्य-मन्दिर, गोरखपुर

*　　*　　*

नकेन के प्रपद्य : में नलिन विलोचन शर्मा, केसरीकुमार, और नरेश के प्रपद्य (प्रपद्य-द्वादश सूत्री तथा पसपशा संवलित) प्रस्तुत हैं। प्रयोगवाद के बाद हिन्दी साहित्य में वादों की जो लहर चल पड़ी है प्रस्तुत पुस्तक उसीका परिणाम है। जिस वाक्य को साहित्य में आज 'प्रयोगवाद' के नाम से अभिहित किया जाता है, उसे बिहार में 'नकेन-वाद' की संज्ञा दी गई है। इस पुस्तक के अनुसार 'प्रयोग-वाद' के सर्वप्रथम सूत्रधार नलिन विलोचन शर्मा हैं, जहाँ हिन्दी में प्रायः सभी लोग अज्ञेय को इस धारा की कविता का संवाहक मानते हैं। इस पुस्तक की 'पसपशा' के प्रारम्भिक शब्द द्रष्टव्य हैं। "...हिन्दी कविता में 'प्रयोग-वाद' का वास्तविक आरम्भ १९३६-३८ में लिखी गई नलिन विलोचनशर्मा की कविताओं से होता है।" सारांशतः इस पुस्तक का रूप विधान, साज-सज्जा, विषय-सामग्री सम्पादकीय वक्तव्य आदि सभी 'प्रपद्यवाद' की 'प्रवृत्ति' का ढिंढोरा पीटते-से लगते हैं। डिमाई साइज के १५० पृष्ठ की यह पुस्तक छपी भी 'प्रपद्यवाद' की 'टेकनीक' से है और इसका प्रकाशन किया है **मोतीलाल बनारसीदास पटना** ने और वहीं से पाँच रुपये में मिल सकती है।

*　　*　　*

मेरा रूप तुम्हारा दर्पण : नवयुवक कवि श्री बालस्वरूप 'राही' की कविताओं, गजलों और रुबाइयों का संग्रह है। इधर थोड़े-से दिनों में जिन तरुण कवियों ने लोकप्रियता प्राप्त की है उनमें श्री राही का स्थान अन्यतम है। संग्रह की भूमिका हरिवंशराय 'बच्चन' ने लिखी है। प्रायः सभी रचनाओं की भाषा सरल, शैली सुबोध और भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदयस्पर्शी हैं। डिमाई साइज के ११२ पृष्ठ की यह पुस्तक **फ्रैंक ब्रादर्स दिल्ली** द्वारा प्रकाशित हुई है और वहीं से ढाई रुपये में मिलती है।

* * *

कहानी

बावरी : श्री सत्यपाल आनन्द की सात नवीनतम कहानियों का संग्रह है। सभी कहानियों में जिन्दगी के अपने शरीर के स्पर्श की ऊष्मा है; उसके अपने होठों की आवाज़ और उसके अपने साँसों की महक है। क्राउन साइज़ के १७६ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **साहित्य संगम, लुधियाना** की ओर से प्रकाशित हुई है और वहीं से २ रुपये ५० नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

कृषि-यन्त्र-शास्त्र : में श्री ब्रह्मदेव गुप्त ने कृषि के आधुनिकतम यन्त्रों का परिचय बड़ी ही सरल और रोचक भाषा में दिया है। यन्त्रों की वास्तविक बनावट का ज्ञान कराने के लिए पुस्तक में चित्रों का बाहुल्य भी रखा गया है। क्राउन साइज़ के ९८ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली** की ओर से प्रकाशित हुई है और वहीं से दो रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

असिधारा : में श्री विराज द्वारा लिखित राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करने वाली कथाओं का संग्रह है। लेखक ने इसके तीन खण्ड किये हैं। पहले खण्ड में समाविष्ट कथाओं का आधार इतिहास, दूसरे का आधार भक्तों द्वारा रचित साहित्य और तीसरे की पृष्ठभूमि नितान्त काल्पनिक है। पाठकों का मनोरञ्जन करने के साथ-साथ उनमें यशस्वी बलिदान और गौरवपूर्ण जीवन का गुणगान करने की ओर भी लेखक का ध्यान बराबर रहा है। क्राउन साइज़ के १६० पृष्ठ की यह पुस्तक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से तीन रुपये में प्राप्य है।

* * *

तीन नये प्रकाशन

विश्वविख्यात इतैलियन कथाकार एल्बर्टो मोराविया के अमर उपन्यास 'वोमन ऑफ़ रोम' का सफल रूपान्तर, जिसमें एक अनिन्द्य सुन्दरी रमणी की करुण कथा अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत की गई है। मूल्य ६)

सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा हास्य-व्यंग्य लेखक श्री राजेन्द्रलाल हाँडा की अत्यन्त रोचक कहानियों तथा ललित निबन्धों का संग्रह। मूल्य ३)

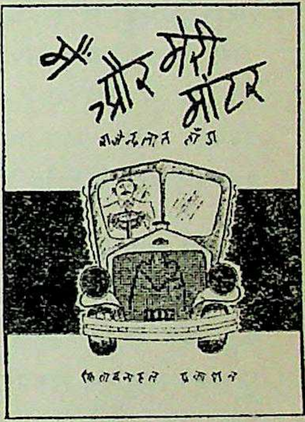

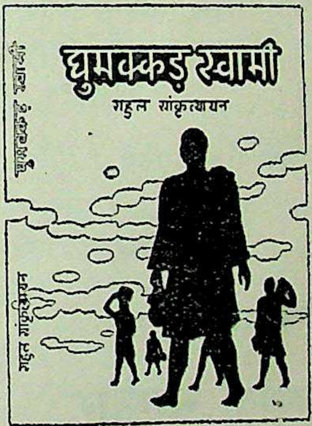

राहुलजी की एकदम नई कृति। उपन्यास से भी अधिक रोचक तथा सत्य होते हुए भी कल्पनाप्रसूत अभियान कथाओं से भी अधिक रोमांचक एक पर्यटन-कथा।

किताब महल
इलाहाबाद, दिल्ली, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं।)

(१) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश'। इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है। मूल्य २॥)

(२) वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका—लेखक तिवारी और राय। इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है। मूल्य ३) मात्र

(३) निबन्ध-भारती—लेखक प्रो० 'सिद्धेश।' हाईस्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। आधुनिक विषयों पर निबन्ध। मूल्य ३)

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए०। कालेज के छात्रों के लिए। मूल्य ४)

(५) निबन्धालोक—लेखक प्रो० 'कमलेश'। मौलिक साहित्यिक निबन्ध। मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

आलोचना, निबन्ध

प्रसाद की कविताएँ : कवि प्रसाद के सम्पूर्ण कृतित्व पर, उनके काव्य और उनके युग की पृष्ठभूमि पर और उनकी प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कविता पर, यह ग्रन्थ प्रकाश ही नहीं डालता, उन्हें पाठक के इतने निकट ला देता है, इतनी सजीवता और सार्थकता प्रदान कर देता है कि पाठक के लिए कवि के साथ तादात्म्य स्थापित करना सरल ही नहीं सहज और अनिवार्य हो जाता है। प्रसाद के विद्यार्थियों के लिए अन्य अनेक पुस्तकें भी हैं, पर श्री सुधाकर पाण्डेय की इस विद्वत्तापूर्ण कृति का अपना विशिष्ट स्थान है। विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य साहित्य-प्रेमियों के लिए भी इसमें जानने-समझने के लिए बहुत कुछ है। **आराधना प्रकाशन, वाराणसी** का यह प्रकाशन राजकमल एवं कल्याणदास ब्रदर्स, चौक वाराणसी से प्राप्त है। मूल्य सात रुपये।

* * *

पूर्व-भारतेन्दु नाटक साहित्य : प्रस्तुत ग्रन्थ डॉ० सोमनाथ गुप्त का हिन्दी नाट्य साहित्य की पूर्व सम्पत्ति-अन्वेषण की दिशा में एक सफल प्रयास है। इसमें कुल दो अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में नाटक क्या है, इसकी उत्पत्ति भारत में और भारतोत्तर देशों में कैसे हुई है, इस पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरा अध्याय ही इस ग्रन्थ की अपनी विशेषता है। पूर्व-भारतेन्दु नाटकों में कुल नौ नाटकों का परिचय दिया गया है, जिसमें 'हनुमन्नाटक', 'समयसार नाटक', 'प्रबोध चन्द्रोदय', 'नहुष' और 'इन्दर सभा' आदि का पूर्ण चित्र हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है।

इसके अतिरिक्त पूर्व-भारतेन्दु नाटकों का पाठ्यभाग भी इस ग्रन्थ में दिया गया है, जिससे निःसन्देह इस पुस्तक में आकर्षण पैदा हुआ है। इस दिशा में खोज करने वाले पाठकों तथा विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक मूल्यवान् सिद्ध होगी। पुस्तक का मूल्य पाँच रुपये है। पृष्ठ : १८५, डिमाई साइज़ में तथा प्रकाशक **हिन्दी भवन, इलाहाबाद तथा जालन्धर** हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय सरकार, विभिन्न राज्यों तथा संस्थाओं द्वारा

हमारे पुरस्कृत प्रकाशन

उपन्यास

इन्सान	यज्ञदत्त शर्मा	४.५०
जल-समाधि	गोविन्दवल्लभ पंत	४.००
पर्णा	,,	४.००
डूबते मस्तूल	नरेश मेहता	४.५०
युगपुरुष राम (सचित्र)	अक्षय कुमार जैन	५.००

नाटक

विषपान	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	२.००
स्वप्न-भंग	,,	२.००
उद्धार	,,	२.००
शपथ	,,	२.५०
समर्पण	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	२.००
यशस्वी भोज	देवराज 'दिनेश'	२.००
वितस्ता की लहरें	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
नये हाथ	विनोद रस्तोगी	२.००
अपूर्व बंगाल	भा० वि० वरेरकर	१.५०
भूमिकन्या सीता	,,	१.५०
कला के लिए	,,	१.५०
कोरी करामात	,,	२.००

एकांकी

आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित	२.२५
भगवान् मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०

कविता

दर्द दिया है	'नीरज'	४.५०
रूप दर्शन (सचित्र)	हरिकृष्ण 'प्रेमी'	६.००
बलिपथ के गीत	जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'	४.००
गीत-गोविन्द	विनयमोहन शर्मा	६.००
रावण (महाकाव्य)	हरदयालुसिंह वर्मा	६.००
दमयन्ती (महाकाव्य)	ताराचन्द हारीत	८.००
नारी (महाकाव्य)	अतुलकृष्ण गोस्वामी	१०.००
चन्देरी का जौहर (खण्ड-काव्य)	आनन्द मिश्र	२.००

शिकार

शिवालक की घाटियों में (सचित्र)	श्रीनिधि	५.००
वनराज के राज में (सचित्र)	विराज एम० ए०	४.००

मनोरंजन

सचित्र गृह-विनोद	अरुण एम० ए०	८.००
मैंने कहा (सचित्र)	गोपालप्रसाद व्यास	५.००

विज्ञान

विज्ञान और सभ्यता	रामचन्द्र तिवारी	५.००
सरल रेडियो विज्ञान	रमेशचन्द्र विजय	५.००
चन्दामामा का देश	सन्तोष नौटियाल	४.००
आदमी का जन्म	मन्मथनाथ गुप्त	१.२५

लोक-साहित्य

रूसी लोक-साहित्य	वीर राजेन्द्रऋषि	४.००
विन्ध्यभूमि की लोक-कथाएँ	श्रीचन्द्र जैन	१.२५
आन्ध्र की लोक-कथाएँ	के० राजशेष गिरि	१.५०
राजस्थान की लोक-कथाएँ	पुरुषोत्तम मेनारिया	१.२५

भ्रमण

नेपाल की कहानी	काशीप्रसाद	८.००

गृहोपयोगी

आपका मुन्ना	सावित्रीदेवी वर्मा	१३.५०
पारिवारिक समस्याएँ	,,	७.५०

विविध

अध्ययन और आस्वाद	गुलाबराय	७.५०
मन की बातें	,,	३.५०
रेडियो नाटक	हरिश्चन्द्र खन्ना	६.५०
आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान	ईश्वरचन्द्र शर्मा	५.००
हिन्दी कविता में युगान्तर	डॉ० सुधीन्द्र	८.००
मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियाँ	डॉ० सावित्री सिन्हा	८.००
साहित्यानुशीलन	शिवदानसिंह चौहान	६.००
सूफ़ी मत और हिन्दी साहित्य	डॉ० विमलकुमार जैन	८.००
साहित्य विवेचन	सुमन-मल्लिक	७.००
प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास	डॉ० रांगेय राघव	१२.००
भूगोल के भौतिक आधार	रामस्वरूप वशिष्ठ	६.००
हिन्दी काव्यालंकार-सूत्र	आचार्य विश्वेश्वर	१२.००
हिन्दी वक्रोक्तिजीवितम्	,,	१६.००

आत्माराम एण्ड सन्स, काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपभ्रंश-व्याकरण : आचार्य क्षेमेन्द्र की सुप्रसिद्ध कृति का श्री शालिग्राम उपाध्याय द्वारा प्रस्तुत किया गया हिन्दी रूपान्तर है। विद्वान् अनुवादक ने अपभ्रंश-व्याकरण के नियमों से सम्बन्धित मूल लेखक के संस्कृत सूत्रों की सरल और बोधगम्य व्याख्या प्रस्तुत करके एक सराहनीय कार्य किया है। अपभ्रंश हिन्दी की जननी है, अतः प्रस्तुत पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर हिन्दी भाषा में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, इसमें सन्देह नहीं। भाषा परिषद्, वाराणसी की ओर से **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, बम्बई, पटना, मद्रास** द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का मूल्य है दो रुपया।

* * *

वृन्दावन लाल वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व नामक पुस्तक डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' की नवीनतम रचना है। इसमें लेखक के जीवन और व्यक्तित्व, ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, कहानियाँ, ऐतिहासिक नाटक, सामाजिक नाटक, एकांकी, अन्य रचनाएँ, भाषा, शैली और शिल्प, तथा 'वर्माजी की देन' शीर्षक दस अध्यायों में वर्माजी के जीवन और उनकी समस्त कृतियों पर प्रामाणिक प्रकाश डाला है। पुस्तक की प्रामाणिकता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि इस पर वर्माजी ने स्वयं एक भूमिका लिखी है। उनका कथन है—"डॉ० कमलेश ने मेरे और मेरी कृतियों के जो चित्र खींचे हैं, वे मुझे बहुत अच्छे लगे। कुछ और लोगों ने भी खींचे हैं, परन्तु इतने निकट से किसी ने नहीं खींचे। फिल्मों की भाषा में जिन्हें 'क्लोज-अप' कहते हैं, ये तो वे हैं।" २७२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, नई सड़क, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से चार रुपये में मिल सकती है।

* * *

राजनीति

आधुनिक राजनीतिक संविधान : हिन्दी में जिन अनेक विषयों पर अधिकारी विद्वानों के द्वारा लिखे प्रामाणिक ग्रन्थों की आवश्यकता है, उनमें आधुनिक युग के विविध राष्ट्रीय संविधानों के परिचयात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन का विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत ग्रन्थ सर्वश्री गुरुमुख निहालसिंह, प्रभातकुमार मजूमदार एवं गोपाल दास भार्गव द्वारा प्रणीत है। अतः इसकी प्रामाणिकता स्वयंसिद्ध है। ग्रन्थ में भारत, इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत संघ के ही नहीं, कई अन्य देशों की राजनीतिक व्यवस्था का भी विस्तृत अध्ययन है; और अन्त में अनेक आवश्यक पारिभाषिक शब्दों की सूची भी दे दी गई है। विद्यार्थियों के काम का तो यह ग्रन्थ है ही, पत्रकारों और अन्य ऐसे सभी व्यक्तियों के लिए यह उपयोगी है जो राजनीतिक समस्याओं को समझने और उन पर सोचने और अपना मत स्थिर करने के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। **मैकमिलन** के इस प्रकाशन का मूल्य दस रुपये है।

* * *

व्याकरण

राष्ट्रभाषा का प्रथम व्याकरण : श्री किशोरीदास वाजपेयी द्वारा लिखित हिन्दी व्याकरण की मौलिक पुस्तक है। हिन्दी के पाणिनि श्री वाजपेयीजी ने इस पुस्तक द्वारा साहित्य का बड़ा उपकार किया है। प्रारम्भ में 'हिन्दी की अपनी विशेषता' शीर्षक से लेखक ने हिन्दी की उत्पत्ति अपभ्रंश-विशेष से और उसकी उत्पत्ति प्राकृत-विशेष से बतलाकर व्याकरण-सम्बन्धी अनेक महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला है। इसकी भूमिका में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने वाजपेयीजी के कृतित्व की बड़ी प्रशंसा की है। क्राउन साइज के २३० पृष्ठ की यह पुस्तक **जनवाणी प्रकाशन, कलकत्ता** ने प्रकाशित की है और वहीं से चार रुपये में मिलती है।

* * *

जीवनी

जननायक : में श्री फतहचन्द्र शर्मा 'आराधक' ने भारत के २४ राष्ट्रीय नेताओं, समाज-सुधारकों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, क्रान्तिकारियों एवं महान् महिलाओं की जीव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियाँ प्रस्तुत की हैं। पुस्तक की भूमिका पत्रकार-प्रवर श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने लिखी है। चतुर्वेदीजी ने भूमिका में यह ठीक ही लिखा है कि—"पुस्तक को सर्वथा व्यापक दृष्टिकोण से लिखा गया है और किसी भी प्रकार की दलगत या साम्प्रदायिक भावना उसमें नहीं आने पाई है। राष्ट्रीय उन्नति में योग देने वाले सभी वर्गों के नेताओं के जीवन पर दृष्टि डाली गई है। पुस्तक की भाषा सरल और प्रवाहयुक्त है।" क्राउन साइज़ के १७४ पृष्ठ की सुमुद्रित पुस्तक का प्रकाशन **साधना प्रकाशन गृह, नई सड़क, दिल्ली** ने किया है और वहीं से ढाई रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

विविध

गरीब और अमीर पुस्तकें में श्री रामनारायण उपाध्याय के पन्द्रह व्यक्तिपरक निबन्ध तथा आठ रूपक संकलित हैं। ये सभी रचनाएँ उनकी शैलीपरक विशेषता की द्योतक हैं। कहानी के माध्यम से लेखक ने बड़ी गम्भीर-से-गम्भीर बात को ऐसे कह दिया है, मानो वह हमारे में रच-पच गई है। भाषा सरल और भाव उदात्त हैं। क्राउन साइज़ के ६८ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **भारतीय ज्ञान-पीठ, काशी** ने प्रकाशित की है और वहीं से एक रुपये में मिलती है।

* * *

जीवन दर्शन : महान् दार्शनिक लेखक खलील जिब्रान की विश्वविख्यात कृति 'दि प्रॉफेट' का सफल हिन्दी रूपान्तर है। इसमें जिब्रान ने जीवन और जगत्, व्यक्ति तथा समाज से सम्बन्धित अनेक समस्याओं की मार्मिक व्याख्या प्रस्तुत की है। पुस्तक प्रत्येक व्यक्ति के लिए संग्रहणीय है। इतना सफल अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए श्री सत्यकाम विद्यालंकार बधाई के पात्र हैं। सफाई, छपाई तथा रूप-सज्जा आदि साफ-सुथरी तथा सुरुचिपूर्ण है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली** से और मूल्य है १ रु० ५० न० पै०।

* * *

गांधी जी क्या चाहते थे ? : में श्री निर्मलकुमार वसु ने गांधी जी क्या चाहते थे; रचनात्मक कार्य और उसकी रक्षा, रचनात्मक कार्य का मूल उद्देश्य, गांधीवाद की परीक्षा, सत्याग्रह का मूल तत्त्व, सत्याग्रह-साधना, और मंगल-मार्ग से क्रान्ति-साधना आदि सात अध्यायों में गांधीजी की मूल मनोभावनाओं के सम्बन्ध में रोचक प्रकाश डाला है। क्राउन साइज के ८५ पृष्ठ की यह पुस्तक अ० भा० सर्व सेवा संघ प्रकाशन काशी से प्रकाशित हुई है और आठ आने में प्राप्य है।

* * *

कार्यालय पद्धति निर्देशिका : में आचार्य रामचन्द्रसिंह सागर और प्रेमलाल कनौजिया ने आज के युग की कठिनाइयों पर विचार करके कार्यालयों में हिन्दी का भली भाँति प्रचलन कराने के उद्देश्य से इस पुस्तक का निर्माण किया है। सब सरकारी और गैर-सरकारी कार्यालयों के लिए यह सर्वथा उपादेय है। क्राउन साइज के २८६ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन अनिल प्रकाशन केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा हुआ है और वहीं से चार रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

परम्परा : जोधपुर से प्रकाशित होने वाली इस वैज्ञानिक पत्रिका का पाँचवाँ अंक **जेठवे रा सोरठा** के नाम से प्रकाशित हुआ है। इसमें राजस्थानी जन-साहित्य की एक प्रसिद्ध प्रेमगाथा, जिसमें ऊजली और मेह-जेठवा के बीच प्रेम की मार्मिक कहानी कही गई है, के साथ उसका कई दृष्टियों से विवेचन भी दिया गया है। १५वीं शती की इस प्रेम-कहानी के सोरठों का एक स्थान पर संग्रह इससे पहले सुलभ नहीं था और ये राजस्थानी एवं गुजराती दोनों भाषाओं में पाठान्तरों से पाये जाते हैं।

परम्परा के सम्पादकों द्वारा यह तथा अन्य ऐसे ही खोजपूर्ण विशेषांक प्रस्तुत करने का प्रयास स्तुत्य मनोरम है। मूल्य ३ रुपये मात्र। प्रकाशक **राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।**

* * *

दशकुमार चरित : महाकवि दण्डी के अमर संस्कृत उपन्यास का यह तीसरा हिन्दी रूपान्तर (दो अनुवाद इससे पूर्व अन्य प्रकाशकों के यहां से प्रकाशित हो चुके हैं) डॉ०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित हो गये

५ वर्ष के परिश्रम के बाद

शेरो-शाइरी और शेरो-सुखन के ख्याति-प्राप्त लेखक श्री गोयलीयजी के दो नवीन ग्रन्थ

शाइरी के नये दौर

शाइरे-इन्क़िलाब 'जोश' मलीहाबादी की बग़ावत, इन्क़िलाब, मज़हब, अन्धविश्वास, देश-द्रोह आदि पर आग उगलती और मानवता, प्रकृति, सौन्दर्य, प्रेम आदि पर आत्म-विभोर कर देने वाली नज़्में और रूबाईयात, जोश का परिचय एवं उनकी शाइरी पर विवेचन।

पृष्ठ ३३६ मूल्य ३ रु०

शाइरी के नये मोड़

१९४६ से मार्च १९५८ तक की नवीन शाइरी की गति-विधि का अध्ययन। भारत-विभाजन, स्वराज्य-प्राप्ति, राष्ट्र-पिता की शहादत, नरमेध-यज्ञ, जनता-राज, देश-प्रेम, प्रेरणात्मक, नवीन चेतना, बज्मेअदब परिच्छेदों में इस युग के सर्वश्रेष्ठ शाइरों का कलाम।

पृष्ठ २७२ मूल्य ३ रु०

मुद्रण, कवर, जिल्द, गेट-अप सभी ज्ञानपीठ की परम्परा के अनुकूल मनमोहक-सुरुचिपूर्ण

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत : १९५८ के श्रेष्ठ ग्रन्थ

१. **कुछ मोती कुछ सीप** — श्री अयोध्याप्रसाद गोयलीय — २.५० रुपये
(सूक्ति रूप में छोटी-छोटी कहानियां)

२. **पचपन का फेर** — श्रीमती विमला लूथरा — ३.०० रुपये
(१५ नवीन एकांकी नाटक)

३. **संस्कारों की राह** — श्री राधाकृष्ण प्रसाद — २.५० रुपये
(सामाजिक घटना-प्रधान उपन्यास)

४. **माटी हो गई सोना** — श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — २.०० रुपये
(बल और बलिदान की जीवन-चेतना देने वाले १७ अमर अक्षर-चित्र)

५. **बाजे पायलिया के घुंघरू** — श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर — ४.०० रुपये
(लोकोपयोगी ३८ निबन्धों का संग्रह)

६. **संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन** — श्री भोलाशंकर व्यास — ६.०० रुपये
(आधुनिक भाषा विज्ञान की दृष्टि से संस्कृत भाषा का गम्भीर अध्ययन)

भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांगेय राघव ने प्रस्तुत किया है, सुबोध और सुगम भाषा में। प्रारम्भ में अनुवादक की १२-पृष्ठ की पांडित्यपूर्ण भूमिका है और उन्होंने इस अनुवाद के पहले के अनुवादों की भूलें भी इसमें दिखला दी हैं और न इस अनुवाद में, जैसा कि अनुवादक महोदय ने कहा है, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी द्वारा 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में प्रयुक्त शैली का उपयोग किया है क्योंकि वह "हिन्दी के लिए बड़ी ही कृत्रिम शैली-सी लगती है।"

पृष्ठसंख्या २३१, क्राऊन १६-पेजी आकार, मूल्य ३ रुपये मात्र।

* * *

नाटक

लाल कनेर : रवीन्द्रनाथ के प्रख्यात नाटक 'रक्त करबी' का आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी-कृत हिन्दी रूपान्तर। 'रक्त-करबी' बंगाल में ही नहीं, देश के अनेक भागों में प्रसिद्धि और आदर पा चुका है—बंगाल की सुपरिचित नाट्य-मंडली 'बहुरूपी' के सफल अभिनयों द्वारा। पर इसका साहित्यिक सौष्ठव और विचार-गाम्भीर्य सहृदय पाठक की उतनी ही अपेक्षा करता है जितनी अपेक्षा इसके उत्कृष्ट नाट्य-शिल्प को रसज्ञ दर्शक की है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा प्रस्तुत यह सुन्दर अनुवाद **राजकमल** का प्रकाशन है। मूल्य दो रुपये मात्र।

* * *

डाक्टर : श्री विष्णु प्रभाकर का **राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली** द्वारा प्रकाशित एक मनोवैज्ञानिक नाटक है। मनोवैज्ञानिक नाट्य-कृतियों के सृजन में श्री विष्णु प्रभाकर को विशेष सफलता मिली है। प्रस्तुत रचना में भावना और कर्त्तव्य का संघर्ष अपनी तरह का अनूठा है। डॉ० अनीला के रूप में लेखक ने हिन्दी रंगमंच को एक अमर पात्र प्रदान किया है। नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यदि इसे रंगमंच पर उतारा जाय तो दर्शक आरम्भ से अन्त तक विरसता का अनुभव नहीं कर सकते। अभिनेय एकांकियों की हिन्दी में बहुत कमी है और यह नाटक आंशिक रूप में उस कमी को दूर करेगा, इसमें सन्देह नहीं। सुन्दर तथा सुरुचिपूर्ण रूपसज्जा तथा साफ़-सुथरी छपाई। मूल्य २-५०

* * *

ममता : हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' का नव प्रकाशित नाटक है। प्रेमी जी प्रायः अपने ऐतिहासिक नाट्य कृतियों के लिए ही प्रसिद्ध रहे हैं, लेकिन इधर उन्होंने 'छाया' और 'बन्धन' दो सामाजिक नाटक लिख चुकने के बाद यह तीसरा सामाजिक नाटक प्रस्तुत किया है। कथावस्तु की बुनावट और नाट्य-शिल्प सम्बन्धी बारीकियों का इसमें पूरा ध्यान रखा गया है। प्रेम तथा मातृत्व की संश्लिष्ट समस्याओं को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करने वाला यह नाटक रंगमंच पर भी बड़ी सफलता से उतारा जा सकता है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली से** और मूल्य है २-५०।

* * *

'चेखव के तीन नाटक' : में श्री राजेन्द्र यादव ने प्रख्यात रूसी साहित्यकार एण्टन पाव्लोविच चेखव के 'हंसिनी', 'चरी का बगीचा' और 'तीन बहनें' शीर्षक तीन सर्वश्रेष्ठ नाटकों का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। इनकी भाषा सरल और शैली अत्यन्त रोचक है। आरम्भ में लेखक ने 'चेखव : जीवन-दर्शन' नाम से उसके जीवन और कला पर उपयोगी प्रकाश डाला है। क्राउन साइज के ३१६ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन **भारतीय ज्ञान पीठ काशी** के द्वारा हुआ है और यह वहीं से चार रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

प्रौढ़ शिक्षा

मेरा देश है यह : में श्री सन्तराम 'वत्स्य' ने नाम, सीमाएँ, मेरा देश निराला है, झगड़े की जगह, एकता के लिए जरूरी बातें, नस्ल, धर्म, भाषा, भौगोलिक स्थिति, संस्कृति, राज्यों की नई हदबन्दी, हम क्या करें, कर्तव्य और अधिकार तथा देश-भक्ति की भावना आदि शीर्षकों के अन्तर्गत भारत की विभिन्न विशेषताओं का वर्णन करके उसके सम्बन्ध में अत्यन्त उपयोगी जानकारी प्रस्तुत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए हमारे अनुपम ग्रन्थ

आलोचना

रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय : डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह १५.००
हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य : गुरुदेव प्रसाद वर्मा २.५०
विद्यापति : शिवप्रसाद सिंह ५.००
मधुमालती (मंझन कृत) : डॉ० शिवगोपाल मिश्र ८.००
समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द : डॉ० महेन्द्र भटनागर ५.००
हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य : गुरुदेव प्रसाद वर्मा २.५०
मानस : बालकांड के स्रोत : श्रीशकुमार ५.००
गोस्वामी तुलसीदास और रामकथा : सत्यदेव चतुर्वेदी ३.७५
हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास : डॉ० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (डॉ० किशोरीलाल गुप्त द्वारा सम्पादित) ६.००
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा : त्रिभुवन सिंह ४.००
कबीर और जायसी का मूल्यांकन : पुरुषोत्तमचन्द्र बाजपेयी २.२५
प्रसाद के नाटक : परमेश्वरी लाल गुप्त ४.५०
रस-साहित्य और समीक्षाएँ : 'हरिऔध' ४.००
कहानी का रचना-विधान : डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा ५.००
हास्य की रूपरेखा : डॉ० एस० पी० खत्री ६.००
भारतीय प्रेमाख्यान काव्य : डॉ० हरिकान्त श्रीवास्तव १०.००
हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : त्रिभुवन सिंह ६.००
आधुनिक साहित्य और कला : डॉ० महेन्द्र भटनागर २.५०
भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि : किशोरीलाल गुप्त १०.००
सूर के सौ कूट : चुन्नीलाल 'शेष' ५.००
हिन्दी महाकाव्य : स्वरूप-विकास : डॉ० शम्भूनाथ सिंह १२.००
श्रीराधा का क्रम-विकास : डॉ० शशिभूषण दासगुप्त ८.००
डॉ० इकबाल और उनकी शायरी : प्रो० हीरालाल चोपड़ा ३.५०
फ़ारसी साहित्य की रूपरेखा : डॉ० हिकमत ५.००
हिन्दी लिटरेचर (अंग्रेजी) : डॉ० रामअवध द्विवेदी ५.००
रत्नाकर और उनका काव्य : उषा जायसवाल ५.००
छायावाद के गौरव-चिह्न : प्रो० क्षेम ६.००

निबन्ध साहित्य

बौद्ध-कलाकृतियाँ : कुमारी विद्यावती मालविका ३.००
इनसे : आचार्य ललिताप्रसाद सुकुल २.५०
आधान : शांतिप्रिय द्विवेदी २.५०
साकल्य : शान्तिप्रिय द्विवेदी ४.००
स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य : डॉ० रामविलास शर्मा ४.००
कला क्या है ? : ताल्सताय ०.६७
साहित्यधारा : प्रकाशचन्द्र गुप्त ४.५०
अतीत से वर्तमान (प्रथम खंड) : राहुल सांकृत्यायन ३.५०
स्वदेश और साहित्य : अनु० डॉ० महादेव साहा ०.६७
भारतीय संस्कृति (वैदिक धारा) : डॉ० मंगलदेव 'शास्त्री' ७.००

पुस्तकालय-विज्ञान साहित्य

भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास : द्वारकाप्रसाद शास्त्री ५.००

उपन्यास

टूटती हुई जंजीरें : डॉ० सत्यनारायण शर्मा ३.२५
आनन्द भवन : निहालचन्द वर्मा ३.००
जादू का महल : ,, ,, ३.००
मोती महल : ,, ,, ६.००
सोने का महल : ,, ,, ८.००
उल्का : रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' ४.५०
वनमाला : सरस्वती सरन 'कैफ' ३.५०
सूर्यग्रास : सुशील जाना ४.००
इन्दुमती : सेठ गोविन्ददास १५.००

कहानी-संग्रह

भूख : डॉ० कंचनलता सब्बरवाल २.२५
अनदेखे चित्र, अनबोले चेहरे : मोहनलाल गुप्त ३.००

उपयोगी बाल-साहित्य

हाथी दादा : बालबन्धु ०.६७
माँ की सहायता : विमला लूथरा ०.६७
शावक कहानियाँ : शारदा मिश्र ०.६७
बच्चों की सरकार : मोहनलाल गुप्त १.००
अंग्रेजों का देश : देवकी पाण्डेय ०.६७
बम्बई से टिलबरी तक : ,, ,, ०.६७

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० ७०—ज्ञानवापी-वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। प्रौढ़ों और बच्चों दोनों के ही लिए यह सचित्र पुस्तक एक ज्ञान-कोष का काम देने वाली सिद्ध होगी। ४८ पृष्ठ की यह पुस्तक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहाँ से एक रुपये में मिल सकती है।

* * *

तपेदिक से बचिए : श्री सन्तराम 'वत्स्य' की नवीनतम रचना है। इसमें लेखक ने तपेदिक रोग के लक्षण और कारण, रोगी के कर्तव्य, जनता के कर्तव्य, इलाज तथा रोग पर विजय आदि शीर्षकों के अन्तर्गत संवादों के द्वारा कहानी के रूप में तपेदिक से बचने के उपाय बताते है। डिमाई साइज़ के ४० पृष्ठ की यह सचित्र पुस्तक, इसके प्रकाशक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** से ८५ नये पैसों में मिलती है।

* * *

'कहानी की कहानी' : में श्री सन्तराम 'वत्स्य' मे कथा-कहानियों की आदि जननी 'बृहत्कथा' की कहानी अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत की है। यत्र-तत्र दिये गए चित्रों से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है। डिमाई साइज के २८ पृष्ठों की यह पुस्तक **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और उसी से ६५ नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

पैसा : नामक इस कृति में श्री विराज ने पैसा क्या है, कहाँ से आता है, कहाँ जाता है, क्या कर सकता है, क्या नहीं कर सकता आदि बातों का अत्यन्त रोचक ढंग से वर्णन किया है। पुस्तक की उपादेयता इसमें दिये गए चित्रों से और भी बढ़ गई है। प्रौढ़ों और बच्चों को अर्थ-शास्त्र की शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखी गई यह पुस्तक सर्वथा संग्राह्य है। क्राउन साइज़ के ७२ पृष्ठ की यह पुस्तिका **नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और एक रुपये में मिल सकती है।

* * *

चित्र-ज्ञान का सारांश : में इसके लेखक श्री जमादार रामकँवार ने मैप रीडिंग की थर्ड, सैकण्ड और फर्स्ट क्लास की परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए पर्याप्त उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है। इसमें उन सब विषयों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है जो मैप रीडिंग के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपादेय हैं। इसका प्रकाशन **आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली** द्वारा हुआ है। डिमाई साइज़ के ९६ पृष्ठ की यह पुस्तक प्रकाशक से ढाई रुपये में प्राप्त की जा सकती है।

* * *

इन्सान कभी नहीं हारा : में श्रीमती सावित्री देवी वर्मा ने १. 'अवकाश और गृहोद्योग' २. 'अन्धविश्वास और कुरीतियाँ' ३. 'पढ़-लिखकर गाँव में नवयुवक क्या करें ?' ४. 'शराब पीने से पारिवारिक सुख का नाश' और ५. 'दहेज की कुप्रथा' शीर्षक से ग्राम्य-जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। पुस्तक की भाषा सरल और शैली अत्यन्त रोचक कहानी के रूप में है। **आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली** की ओर से प्रकाशित समाज शिक्षा माला की यह पहली पुस्तक है, कापी साइज़ के ३२ पृष्ठ की यह सचित्र पुस्तक प्रकाशक से एक रुपये में मिलती है।

* * *

नीम हकीम : भी उक्त प्रकाशक की ओर से इसी माला के अन्तर्गत प्रकाशित हुई है और इसकी लेखिका भी श्रीमती वर्मा हैं। इसमें लेखिका ने १. बीमारी और इलाज, २. परिवार नियोजन, ३. नासमझ माँ-बाप, ४. स्वास्थ्य और भोजन तथा ५. सफाई और सेवा के सम्बन्ध में उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक ग्रामोपयोगी जानकारी प्रस्तुत की है। कापी साइज के ४० पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य एक रुपया है।

* * *

सुबह का भूला : श्री श्रीकृष्ण का नाटक है। इसका निर्माण लेखक ने देश की सामाजिक कुरीतियों, अन्ध-विश्वासों और संकुचित विचारों से मुक्त करके उसे नवीन दिशा पर अग्रसर करने के पावन उद्देश्य से प्रेरित होकर लिखा है। पंचवर्षीय योजना की सफलता भी लेखक को अभीष्ट है। प्रौढ़ों और ग्रामीणों के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। कापी साइज़ के ४० पृष्ठ में मुद्रित यह पुस्तक भी **आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली** ने प्रकाशित की है और वहीं से एक रुपये में प्राप्य है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—**समस्या नारी**, श्री पृथ्वीनाथ शर्मा, एकांकी संग्रह
—**देश-देश के बच्चे**, श्री जे० डी० वैश्य, बेसिक शिक्षा
—**साहसी बालक**, श्री जे० डी० वैश्य, बेसिक शिक्षा
—**सज़ा से छुटकारा कैसे पायें**, श्री जे० डी० वैश्य, बेसिक शिक्षा

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—**माया जाल**, पु० मु०, श्री गुरुदत्त
—**अफ़ग़ानिस्तान**, श्री शर्मा तथा माथुर

गोयल एण्ड कं०, दिल्ली

—**व्यापार रत्न**, श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली

—**उषा कटिंग कला**, श्री उषा रानी
—**उषा न्यू टेलरिंग फैशन बुक**, श्री उषा रानी
—**प्लम्बिंग गाइड**, श्री कालीचरण गुप्त
—**फ़रनीचर रिपेयरिंग**, श्री रतन प्रकाश 'शील'
—**वर्कशाप प्रैक्टिस**, श्री कृष्णानन्द शर्मा

बम्बई प्रकाशन प्राइवेट लि०, बम्बई

—**चालाक खरगोश भाग १**, श्री कृष्णचन्द्र
—**मध्य मार्ग**, बालज़क, अनु० श्री विष्णु शर्मा
—**भारतीय लोक-कथाएँ भाग १**, गुजरात, श्री परदेशी
—**भारतीय लोक-कथाएँ भाग २**, महाराष्ट्र, श्री नायक

भारती भण्डार, इलाहाबाद

—**चन्द्रगुप्त मौर्य**, पु० मु०, श्री जयशंकर प्रसाद
—**निर्वासित**, पु० मु०, श्री इलाचन्द्र जोशी
—**विश्व की कहानी**, डॉ० स्व० एस० पी० खत्री
—**प्रेत और छाया**, पु० मु०, इलाचन्द्र जोशी

भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी

—**हरियाणा लोकमंच की कहानियाँ**, श्री राजाराम शास्त्री
—**बना रहे बनारस**, श्री विश्वनाथ मुखर्जी
—**बारह एकांकी**, श्री विष्णु प्रभाकर

मोहनी प्रकाशन, देहरादून

—**गढ़वाल के कण्पा गीत**, डॉ० गोविन्द चातक
—**सपना मुस्कराया**, डॉ० गोविन्द चातक, बाल साहित्य
—**तूफान के बाद**, श्री राजेन्द्र कुमार, उपन्यास

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—**दूध गाछ**, देवेन्द्र सत्यार्थी, उपन्यास
—**रोड़े और पत्थर**, डॉ० देवराज, उपन्यास
—**प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियाँ**, डॉ० राधाकमल मुकर्जी
—**हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण**, डॉ भोलानाथ तिवारी

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—**मन के बन्धन**, जॉन गार्ल्सवर्दी, अनु० डॉ० रांगेयराघव
—**सुकवि समीक्षा**, श्री विजयेन्द्र स्नातक तथा डॉ० दशरथ ओझा
—**निर्माण पथ**, पु० मु०, श्री यज्ञदत्त शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—यथार्थ और कल्पना, पु० मु०, श्री विराज
—उलटा वृक्ष, पु० मु०, श्री कृष्णचन्द्र
—कौटिल्य अर्थशास्त्र, पु० मु०, रूपान्तरकार प्रो० इन्द्र
—पराजय, पु० मु०, श्री कृष्णचन्द्र
—अपनी छाया, पु० मु०, आस्कर वाइल्ड, अनु० श्री राजकुमार

रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा

—विद्यापति समीक्षा, श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव
—उद्धवशतक समीक्षा, श्री रामरजपाल द्विवेदी व श्री भुवनेश्वरीचरण सक्सेना
—हमारे काव्यकार, श्री व्यथित हृदय
—भारतवर्ष का आर्थिक भूगोल, श्री एल० एल० कुलश्रेष्ठ

विक्रेता प्रकाशन संघ, दिल्ली

—इत्वर, श्री यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
—समुद्र और आदमी, ए० हैमिंग्वे
—गांव की गली, एण्टन चेखव

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

—बिहारी सतसई, श्री देवेन्द्र शर्मा
—भ्रमर गीत सार विवेचन, प्रो० विश्वम्भर उपाध्याय
—सुमित्रानन्दन पन्त, श्री राजनाथ शर्मा, आलोचनात्मक
—चन्द्रगुप्त, डॉ० शम्भुनाथ पाण्डेय, आलोचनात्मक

सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली

—जन नायक, श्री फतहचन्द्र शर्मा 'आराधक'
—वृन्दावनलाल वर्मा और उनकी साहित्य-साधना, डॉ० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'
—गल्पद्वादशी, डॉ० योगध्यान आहूजा
—संघर्षमय जीवन, श्री हरिश्चन्द्र

हिन्दी ग्रन्थरत्नाकर प्रा० लि०, बम्बई

—साहित्य विचार, डॉ० हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी प्रचारक कार्यालय, वाराणसी

—मृत्यु की चीना, श्री कृष्णचन्द्र भिक्खु, कहानी-संग्रह
—अतृप्त, साहित्याचार्य मग, उपन्यास
—शंकराचार्य, श्री रामबालक शास्त्री
—संघर्ष और प्रकाश, श्री डी० पी० पंसारी

हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली

—कबीर एक विवेचन, डॉ० सरनाम सिंह

(पृष्ठ ३८० का शेष)

की प्रति तैयार करवाकर यह देख लेना चाहिए कि छप जाने के बाद वह कैसी दिखाई देगी। यह नमूने की प्रति प्रकाशक तथा मुद्रक की सेवा वैसे ही करती है जैसे मानचित्र मकान बनाने वालों की करता है।

लागत और मूल्य

यदि कोई पुस्तक इस तरह सर्वांग सुन्दर रूप में प्रस्तुत की जाय तो इसमें सन्देह नहीं कि उसकी लागत बहुत अधिक होगी और यदि उसकी एक या दो हजार प्रतियाँ ही छापी जायँ तो पर्याप्त लाभांश नहीं प्राप्त किया जा सकता। हाँ, अगर कोई प्रकाशक इस प्रकार की पुस्तकें सैकड़ों की संख्या में और कई-कई हजार प्रतियाँ प्रकाशित करे तो परता पड़ सकता है। लेकिन लेखक चाहे जितनी ही उत्कृष्ट पाण्डुलिपि तैयार करके दे पुस्तक तब तक अच्छी नहीं बन सकती जब तक उसका रूप-रंग ठिकाने का न हो।

जनता में यदि ऐसी पुस्तकों के खरीदने की विशेष रुचि बढ़े तो कम मूल्य में उत्कृष्ट पुस्तकें प्रस्तुत कर सकना कठिन नहीं रह जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मई मास के प्रकाशन

अर्थशास्त्र

जी० पी० गुप्ता, **राजस्व के सिद्धान्त–भारतीय वित्त व्यवस्था**, पु० मु०, ३४७, डि०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ५·५०
पी० एल० गोलवरकर, **मुद्रा विनिमय तथा अधिकोषण**, पु० मु०, ७२४, डि०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ७·५०

आलोचना

जयकिशन प्रसाद, **केशवदास**, २००, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा २·५०
फूलचन्द जैन सारंग, **प्रबन्ध प्रबोध**, ३१२, डि०, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा ३·५०
भारत भूषण सरोज, **चन्द्रगुप्त समीक्षा**, ८२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली १·२५
भुवनेश्वरी चरण सक्सेना, **त्रिवेणी अवगाहन**, २३८, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ३·००
भोलानाथ तिवारी, डॉ०, **कवि प्रसाद**, १६६, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ४·००
भोलानाथ तिवारी, डॉ०, **हिन्दी नीति काव्य**, ४२४, डि०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १०·००
मनमोहन गौतम, **सरल भाषा विज्ञान**, ४५४, डि०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ५·७५
विरागी व अन्य, **हिन्दी व्याकरण व अपठित**, १६८, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा १·५०
विरागी व अन्य, **हिन्दी सार**, २७३, क्रा०, रामप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २·५०
श्यामसुन्दर लाल दीक्षित, डॉ०, **कृष्ण काव्य में भ्रमर गीत**, ४३६, डि०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १०·००
संसार चन्द्र, **सटक सीताराम**, १६०, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली २·५०
हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियां, संकलन, पु० मु०, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २·००
हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियां, संकलन, पु० मु०, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली २·००

इण्डस्ट्रियल—टेकनिकल

कालीचरन गुप्त, **औद्योगिक नुसखे**, ३२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ०·५०
कालीचरन गुप्त, **छोटे-छोटे उद्योग-धन्धे**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ०·५०
कालीचरन गुप्त, **ठण्डी क्रिया से साबुन बनाना**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ०·५०
कालीचरन गुप्त, **डाक-व्यापार पद्धति**, ३२, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ०·५०
कालीचरन गुप्त, **लिखने की स्याही बनाने के सिद्धान्त**, ३६, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ०·५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालीचरन गुप्त, **हस्तनिर्मित कागज**, २८, क्रा०, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ० ५०

उपन्यास

ए० हमीद, अनु० श्यामू संन्यासी, **झील और कंवल**, ३६०, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई ७ ००

चतुरसेन शास्त्री, **उदयास्त**, २२२, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ४ ००

दिगम्बर झा, **सौदामिनी**, २४०, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना ४ ००

बलदेव दत्त शर्मा, **पठान का हृदय**, १७२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली २ ७५

रुद्रदेव, **मुस्कान**, ११२, क्रा०, पुष्प प्रकाशन, कलकत्ता २ ००

शरत्चन्द्र, **गृह दाह**, २८२, क्रा०, श्री गांधी ग्रन्थागार, वाराणसी ४ ५०

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, **परिणीता**, पु० मु०, ११२, क्रा०, अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल, पटना २ ००

कविता—खण्डकाव्य—शायरी

अयोध्याप्रसाद गोयलीय, **शायरी के नये दौर**, ३३६, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ३ ००

अयोध्याप्रसाद गोयलीय, **शायरी के नये मोड़**, २५२, क्रा०, भारतीय ज्ञानपीठ, वाराणसी ३ ००

'अनिल', अनु० प्रभाकर माचवे, **भग्न मूर्ति**, ८४, क्रा०, साहित्य अकादमी की ओर से राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई १ ००

कीर्ति चौधरी, **कविताएँ**, ९५, डि०, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३ ५०

गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश, **तारक वध**, ६५०, ड० डि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद १० ००

प्रकाश पण्डित, सम्पा०, **आज के उर्दू शायर और उनकी शायरी**, ३७६, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ८ ००

बुद्धमल जी, **मन्थन**, ७२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २ ००

भारत भूषण अग्रवाल, **ओ अप्रस्तुत मन**, १२०, ड० डि० भारती भण्डार, इलाहाबाद ३ ००

रामकुमार वर्मा, डॉ०, **एकलव्य**, ३२० ड० डि०, भारती भण्डार, इलाहाबाद ७ ००

सन्तबख्श शास्त्री, **गीता प्रबोध**, १३२, ड० क्रा०, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी २ ००

कहानी

अरुण, **हास-परिहास**, १६८, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००

आनन्द प्रकाश जैन, **आटे के सिपाही**, १२०, क्रा०, प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ २.००

नाटक

कुदसिया ज़ैदी, **जानहार**, ११२, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

गोविन्दवल्लभ पन्त, **सुजाता**, १०४, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

मोहन राकेश, डॉ०, **आषाढ़ का एक दिन**, १२०, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.००

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु० हजारीप्रसाद द्विवेदी, **लाल कनेर**, १०८, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २.००

लक्ष्मीनारायण मिश्र, **मृत्युञ्जय**, १९१, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००

विष्णु प्रभाकर, **डॉक्टर**, १३१, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०

हरिकृष्ण प्रेमी, **ममता**, ११६, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली २.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्मिला कुमारी, **सुन्दर कहानियाँ**, ५०, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली ०.७५
एस० पी० खत्री, डॉ०, **इक्का तांगा मोटर**, ३४, ड० क्रा०, भारती भण्डार, इलाहाबाद १.००
कृष्णचन्द्र, **मौत की मौत**, ३२, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई ०.९०
कृष्णचन्द्र, **सयाना मूरख**, ३२, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई ०.९०
कृष्णचन्द्र, **सोने की सन्दूकची**, ४८, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई १.५०
श्रीकान्त व्यास, अनु०, **जादू नगरी**, १०२, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
श्रीकान्त व्यास, अनु०, **राबिनहुड**, १०२, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
श्रीकान्त व्यास, अनु०, **वीर सिपाही**, १०२, डि०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
महेन्द्र भटनागर, डॉ०, **बच्चों के रूपक**, क्रा०, साहित्य प्रकाशन मन्दिर, लश्कर ०.७५
मित्तल भाई, **चतुराई की कहानियाँ**, ४०, डि०, जनता साहित्य सदन, आगरा ०.७५
मोहन, **अमर ज्योति**, ४८, क्रा०, बम्बई प्रकाशन प्रा० लि०, बम्बई १.२५
रघुवीरशरण बंसल, शैलेन्द्रकुमार पाठक, **स्वाधीनता संग्राम की कहानी**, ४२, डि०, सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली १.००
स्वर्णजीत सिंह, **मनोवैज्ञानिक कहानियाँ**, ४२, डि०, सर्वोदय प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली १.००
सर्वदानन्द वर्मा, **अकबर-बीरबल विनोद**, पु० मु०, ४०, भारती भण्डार, इलाहाबाद १.००

मनोविज्ञान

हंसराज भाटिया, **सरल मनोविज्ञान**, पु० मु०, १२२, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ४.००

विविध

आनन्द स्वामी, **आनन्द भागवत कथा**, ८०, क्रा०, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ०.६२
खलील जिब्रान, अनु० माई दयाल जैन, **जीवन दर्शन**, १००, क्रा०, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली १.५०
गोपालप्रसाद व्यास, **कुछ सच : कुछ झूठ**, ६४, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४.००
महात्मा गांधी, **महिलाओं से**, पु० मु०, २५६, क्रा०, श्री गांधी ग्रन्थागार, वाराणसी ४.५०
मोहनकृष्ण दर, **मनोरम काश्मीर**, १९२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००
राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, डॉ०, **श्री ब्रजगोपालाचार्य**, २००, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ३.००
विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, **दुबेजी की डायरी**, २२४, क्रा०, विनोद पुस्तक मन्दिर, वाराणसी ३.००
श्रीकृष्ण-मनमोहन सरल, **दैनिक गृहोपयोगी विज्ञान**, १९२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ४.५०
स्वामी ब्रह्म मुनि, **वृहदारण्यक उपनिषद् कथा**, २५०, क्रा०, गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ३.००

सांस्कृतिक इतिहास

राधाकुमुद मुकर्जी, डॉ०, **हिन्दू सभ्यता**, पु० मु०, ३४४, डि०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ७.५०
शिवदत्त ज्ञानी, **भारतीय संस्कृति**, पु० मु०, ३६६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ५.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

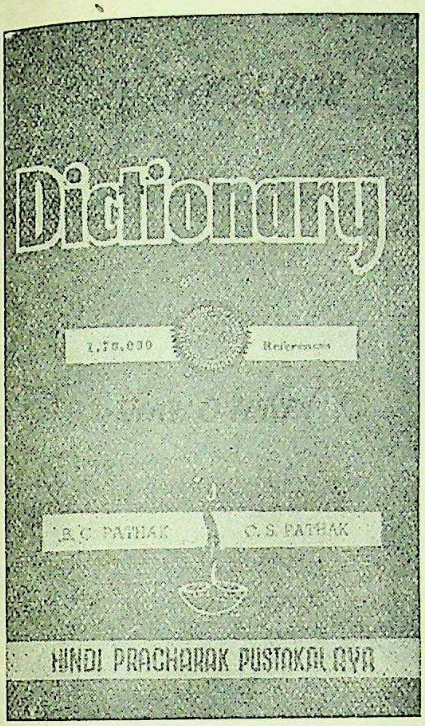

हिन्दी जगत् को

'प्रचारक' की महान् देन

जिसकी तैयारी में दस वर्ष का समय लगा है

आशेएिटक सीनियर डिक्शनरी

(अंग्रेजी से हिन्दी)

•

लेखक

श्री भालचन्द्र पाठक तथा श्री चन्द्रशेखर पाठक

डिमाई साईज़ के १८७२ पृष्ठ, २३४ फार्म, १७०,००० रिफरेन्सेज़, १५०० चित्र, ग्लेज़ कागज़ पर मोनो वर्णों में मुद्रित, परिशिष्ट में अधुनातन शब्दों का चयन आदि डिक्शनरी की विशेषताएँ हैं। प्रत्येक घर, पुस्तकालय, ऑफ़िस, कॉलेज, स्कूल के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा, यह कहने की आवश्यकता नहीं है।

मूल्य चौदह रुपये मात्र

निकटस्थ पुस्तक-विक्रेताओं से लें या सीधा हमें लिखें :

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉ० ७०, ज्ञानवापी, वाराणसी-१

कलकत्ता आफिस—१६५/१ महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. D.—594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टेकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टेकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार
के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनैतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टेकिनकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूची-पत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ PHONE : 20030

श्रीदेवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष ५ जुलाई, १९५८ अंक ११

प्रकाशन समाचार

वार्षिक रु० ३.०० एक प्रति ३१ नये पैसे

प्रति मास नियमित रूप से हिन्दी प्रकाशनों की सूचना पुस्तक विक्रेताओं और पुस्तकालयों तक पहुंचाने वाला मासिक

इस मास के नये प्रकाशन

फ्रायड

महान मनोविज्ञानवेत्ता सिगमंड फ्रायड की अमर कृति

मनोविश्लेषण

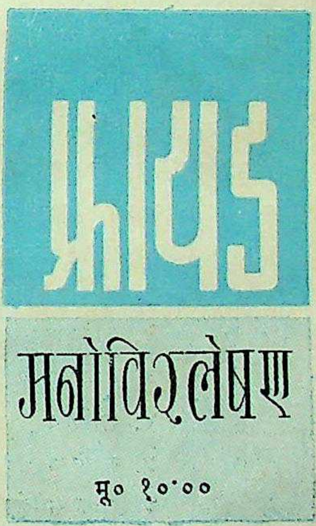

'ए जनरल इंट्रोडक्शन टु साइकोनेलसिस' का पूर्ण और प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद

रहस्यमयी

हेनरी राइडर हैगर्ड के अमर उपन्यास 'शी' का अनुवाद

अनुवादक—रामनाथ 'सुमन'

मूल्य—पाँच रुपये

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य कोश

के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण घोषणा

हिन्दी-साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुशीलन में प्रत्येक विद्यार्थी, अध्यापक, अनुसन्धानकर्ता और पाठक को एक ऐसे ग्रन्थ की आवश्यकता का अनुभव निरन्तर होता है, जिसकी सहायता से हिन्दी में प्रयुक्त अनेकानेक प्राचीन और नवीन साहित्यिक, पारिभाषिक शब्दों का प्रामाणिक अर्थ, साहित्य की गतिविधि को संचालित एवं प्रभावित करने वाले वादों और प्रवृत्तियों का ऐतिहासिक और शास्त्रीय परिचय, साहित्यिक भाषा और बोलियों का भाषा-वैज्ञानिक विवेचन तथा शिष्ट और लोक-साहित्य के विभिन्न अंगों की उपयोगी जानकारी प्राप्त हो सके। सभी उन्नत साहित्यों में इस प्रकार के दर्जनों छोटे-बड़े विश्व कोश हैं, जो भाषा और साहित्य के सभी श्रेणी के अध्येताओं और पाठकों के लिए उपयोगी ज्ञानभण्डार तात्कालिक रूप से उपलब्ध करते हैं। हिन्दी के इसी भारी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी साहित्य कोश की आयोजना हमने पिछले वर्ष प्रस्तुत की थी, जो अब पूर्ण हो चुकी है। आशा है कि १५ अगस्त सन् १९५८ तक कोश प्रकाशित हो जायगा।

इस हिन्दी साहित्य कोश को वैज्ञानिक रूप देने के लिए प्रयत्न किया गया है कि उसमें दी गई सामग्री साहित्य के सामयिक वाद-विवादों का परिचय देते हुए भी उनसे अप्रभावित रह कर शुद्ध बौद्धिक स्तर पर यथासम्भव तटस्थ रूप में उपस्थित की जाय तथा उसकी प्रामाणिकता यथासम्भव सर्वमान्य और स्थायित्वपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस कोश-रचना के लिए एक सम्पादक-मण्डल संघटित किया गया था, जिसने हिन्दी के अस्सी से अधिक विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर लेख और टिप्पणियां लिखवाकर उन्हें कोशबद्ध किया है। उक्त सम्पादक-मण्डल के सदस्य हैं—डा० धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान) डा० ब्रजेश्वर वर्मा, डा० धर्मवीर भारती, रामस्वरूप चतुर्वेदी तथा डा० रघुवंश (संयोजक)। प्रस्तुत साहित्य कोश में निम्नलिखित विषयों में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द संकलित किये गए हैं—

१. प्राचीन साहित्यशास्त्र—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द आदि
२. पाश्चात्य साहित्यशास्त्र
३. साहित्य के विविध रूप
४. साहित्य में प्रयुक्त दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
५. साहित्य के विविध वाद तथा प्रवृत्तियाँ—प्राचीन और आधुनिक
६. लोक साहित्य
७. हिन्दी भाषा, उसकी जनपदीय बोलियाँ, प्राचीन तथा आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं तथा सम्बद्ध आर्य-भाषाओं का परिचयात्मक विवरण।

कोश की सामग्री प्रस्तुत करने वाले लेखकों के नाम कोश में यथास्थान दिये गए हैं। इस महत्वपूर्ण आयोजन में हिन्दी के सभी मान्य तथा प्रतिष्ठित लेखकों का सहयोग प्राप्त हुआ।

हमारे अन्य कोश

बृहत् हिन्दी कोश	२५)	ज्ञान शब्द कोश	१५)
पारिभाषिक शब्द कोश	४)	बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश	(प्रेस में)

प्रकाशक : ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन समाचार

: वर्ष ५ :
: अंक ११ :

सम्पादक : ओं प्रकाश, डायरेक्टर इंचार्ज, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

हिन्दी का प्रकाशन इधर पिछले दस वर्षों में तीव्रता से बढ़ा है। लेकिन इन प्रकाशनों को पाठकों तक पहुँचाने वाली कड़ी—पुस्तक-विक्रेता—मजबूत नहीं हुई है। पुस्तक-विक्रेताओं को अपनी पूँजी और श्रम से उचित लाभ नहीं मिल रहा है। बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने पुस्तक-विक्रेताओं के इस स्वार्थ को अपना स्वार्थ समझ लिया था और उसी दिन से मानो वहाँ के पुस्तक व्यवसाय ने बेहतरी की ओर मजबूत और तेज कदम बढ़ाने शुरू किये। इंगलैण्ड के प्रकाशकों ने वहाँ के पुस्तक-विक्रेताओं को मजबूर किया कि वे छपे हुए दामों से कम दामों पर पुस्तकें नहीं बेचें और जो लाभांश प्रकाशक उन तक पहुँचाना चाहते हैं उसे अवश्य प्राप्त करें। पुस्तक-विक्रेताओं की इस प्रकार आर्थिक परिस्थिति सुधरने के साथ ही जगह-जगह पुस्तकों की दुकानें खुलने लगीं और नई पूँजी भी इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हुई।

हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के इस पहलू पर हम कई बार रोशनी डाल चुके हैं कि हिन्दी पुस्तकों की खरीदारी आज मुख्यतः उन पुस्तकालयों पर निर्भर है, जिन्हें देश की स्वतन्त्रता के बाद भरपूर सरकारी समर्थन मिलने लगा है। अन्य प्रगतिशील और सुशिक्षित देशों में ऐसा नहीं है। उदाहरण के लिए इंगलैण्ड में पुस्तकों की खरीद का लगभग दसवाँ अंश ही पुस्तकालयों के हिस्से आता है। अन्य देशों में ही नहीं, देश की कुछ अन्य भाषाओं के क्षेत्र में भी पुस्तकों की खरीद अधिकांशतः पाठकों द्वारा होती है और इसी तथ्य को पुस्तक-व्यवसाय की नींव को मजबूत करने वाला कह सकते हैं। हिन्दी-साहित्य जगत् में परिस्थिति इसके विपरीत है। अच्छे साहित्य की पाठकों द्वारा खुदरा खरीद प्रायः नगण्य है। स्पष्ट है कि पुस्तकालयों द्वारा खरीद के ढीला पड़ने पर हिन्दी-प्रकाशन-व्यवसाय के कदम लड़खड़ाने लगेंगे।

जिस हिसाब से और जिस परिमाण में आज पुस्तकालयों और सरकारी विभागों द्वारा पुस्तकें खरीदी जाती हैं, वह स्तर अधिक वर्षों तक टिका नहीं रह सकता। आज की व्यापारिक तेजी बहुत दिन नहीं रहेगी। आवश्यकता यह थी कि इस बीच पाठकों को अधिकाधिक सीधी बिक्री को और उस बिक्री के माध्यम—पुस्तक-विक्रेताओं की स्थिति को—हिन्दी के प्रकाशक मिलजुल कर पुख्ता और देरपा बनाने का प्रबन्ध कर लेते। खेद है कि वर्षों के प्रयत्नों के बावजूद भी ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जा सका है और केवल सामयिक लाभ उठाने में हम प्रकाशक इतना व्यस्त रहे हैं कि भविष्य के खतरे को भाँप नहीं सके, न उसके प्रतिकार के उपायों पर सामूहिक ध्यान ही दे सके हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि दिल्ली के कुछ प्रकाशक प्रकाशित मूल्य पर पुस्तकें बेचने पर पुस्तक-विक्रेताओं को विवश करने के लिए और उन्हें इस प्रकार अपनी मेहनत और पैसे से उचित लाभ उठाने के लिए कदम उठाने की सोच रहे हैं। हिन्दी के ये प्रकाशक अपने सामयिक हितों की अपेक्षा अपने स्थायी हितों को पहचानने की क्षमता रखते हैं, यह कदम इस बात का प्रमाण होगा। यदि देश के दस प्रमुख प्रकाशक भी मिलकर इस बात का दृढ़ निश्चय कर सकें, कि वे किसी ऐसे पुस्तक-विक्रेता को अपनी पुस्तकें नहीं बेचेंगे, जो उन्हें निश्चित कमीशनों का उल्लंघन न करने का आश्वासन नहीं देगा तो हिन्दी-पुस्तक-व्यवसाय की धारा को अविकल रूप से बहने का सुअवसर मिल सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो सुप्रसिद्ध लेखकों की
दो नवीन रचनाएँ

आदरणीय
(उपन्यास)
मू० ४)

मेरी पसन्द
(नाटक)
मू० २॥)

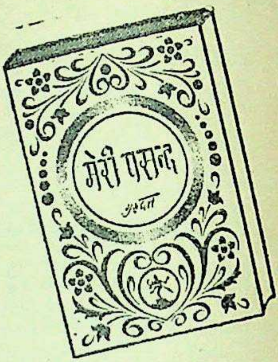

ले० श्री ए० रमेश चौधरी
आरिगपूडि

ले० श्री गुरुदत्त

दोनों रचनाएँ छपकर तैयार हैं।

हमारे प्रकाशन

श्री आरिगपूडि साहित्य

१. भूले-भटके	(उपन्यास)	३)
२. खरे-खोटे	,,	५)
३. आदरणीय	,,	४)

श्रीमती शांति सिंहल

४. अलका	(कविता-संग्रह)	२॥।)

श्री गुरुदत्त साहित्य

५. मेरी पसन्द	(नाटक)	२॥)
६. धरती और धन	(उपन्यास)	६)
७. पत्रलता	,,	७)
८. दासता के नए रूप	,,	६)
९. कला	,,	५)
१०. आवरण	(उपन्यास)	५)
११. मानव	,,	५)
१२. गुण्ठन	,,	५)
१३. विलोम गति	,,	५)
१४. वाम मार्ग	,,	७)
१५. देश की हत्या	,,	५॥)
१६. विडम्बना	,,	६)
१७. विश्वासघात	,,	५॥)
१८. बहती रेता	,,	५)
१९. भावुकता का मूल्य	,,	६)
२०. विकृत छाया	,,	४॥)
२१. अन्तिम यात्रा	,,	१)

भारती साहित्य सदन
३०/९० कनॉट सरकस, नई दिल्ली–१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम्बर सन् १९५७

सुखमार्ग

मासिक पत्र

वार्षिक मू० १)   एक अङ्क =)

सम्पादक

वैद्य श्यामलाल 'सुहृद' एच० एल० एम० एस०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बैठे कमाइये ।

धन व नाम पैदा करें

बहुत से लोग चिकित्सा कराने का भारी खर्चा न सहकर अपनी परिचित दुकान से पेटेन्ट औषधि खरीदना अधिक पसंद करते हैं इसलिये हम आपको सम्मति देते हैं कि यदि आपकी पंसारी, बुकसेलरी, बिसाँती, जनरलमर्चेन्ट पान आदि कोई भी दुकान है तो आप हमारी प्रसिद्ध औषधियों की एजेंसी भी ले लीजिये। और हमारा भेजा अपना नाम लिखा साइनबोर्ड दुकान या बैठक पर लगाइये। उसे देखकर लोग आपसे औषधियाँ खरीदने लगेंगे। और हम औषधियों के साथ आपका नाम छपे हैंडबिल, सूची-पत्र भीतों पर लगाने के पोस्टर कैलेन्डर आदि भेजते रहेंगे, जिन के बाँटने से औषधियाँ आसानी से बिक जाती हैं।

पंचाग व एजेंसी के नियम मुफ्त मंगाइये।

पता—यू० पी० केमीकल वर्क्स नं० २० अलीगढ़।

'अनुभूत-योगमाला'

आज ३३ वर्ष से आयुर्वेद सेवा करने में संलग्न है; वैद्यों से लेकर गृहस्थों तक के लिये उपयोगी है। नमूना मुफ्त मँगाकर देखें। वार्षिक मूल्य ४)

अनुभूत योगमाला कार्यालय

बरालोकपुर-इटावा यू० पी०

यदि आप को

कोई ऐसा छिपा हुआ रोग है जिसे आप शरम के कारण किसी से कह नहीं सकते, तो हमें लिखिये, और साथ में उत्तर केलिये =) का टिकट भेजिये। हम आप को ऐसी सम्मति देंगे कि आप का रोग घर बैठे ठीक हो जायगा।

पता—यू० पी० कैमीकल वर्क्स,
२० अलीगढ़।

लाखों रुपये का काम

मनुष्य अपनी बुद्धि द्वारा कामों को बनाता और बिगाड़ता है। जिनकी बुद्धि ठीक नहीं वह काम बिगाड़ लेते हैं। 'मेधावी' बुद्धि को सुधारती है, ज्ञान तन्तुओं को ताकत देती है। जल में मिलाकर पीने का स्वादिष्ट पेय है। मू० १) पाँच शीशी की कीमत ५) महसूल १।) रु० २) रु० पेशगी भेजने वालों को पंचाङ्ग और कलैंडर तथा बुद्धि वर्धक पुस्तक भी मुफ्त देते हैं।

पता:-यू०पी० केमीकल वर्क्स, २० मोहनगेट, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखमार्ग

शारीरिक, आत्मिक, मानसिक तथा वैज्ञानिक आदि विषयों का

मासिक पत्र

'सुखमार्ग' के अनुसरण बिन जीवन सफल किसका रहा।
सुन्दर सरल 'सुखमार्ग' यह सुखमार्ग को दर्शा रहा॥

वर्ष ३४	अलीगढ़, नवम्बर सन् १९५७	अङ्क ११

सूर्य और चन्द्र

स्वस्ति पन्था मनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सङ्गमे महि।

हे पारब्रह्म परमेश्वर! आपके परम भक्त सेवक सूर्य और चन्द्र आप से प्रकाश लेकर संसार का अन्धकार दूर करते हैं, और जड़ी बूटी फल, फूल तथा अन्नादिक उत्पन्न कराने में सहायक होते हैं। हे कृपालु, ऐसी कृपा कीजिये कि हम भी उनका अनुकरण करते हुये ज्ञान प्राप्त करें और सुख शान्ति की वृद्धि कर सकें। बस यही आपसे प्रार्थना है।

(स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी आर्ष गुरुकुल एटा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाड़ों का खानपान

(ले॰ कविराज डा॰ पन्नालाल वार्ष्णेय, एस. एस-सी. ए., अलीगढ़)

अगहन, पौष, माह के महिनों में सूर्य्य का प्रभाव कम होने से सर्दी अधिक पड़ने लगती है, और रात बड़ी होने के कारण रात्रि का किया हुआ भोजन शीघ्र पच जाता है जिस से प्रातः काल ही भूख लगने लगती है। इस लिये कोई लड्डू पाक आदि ताक़तवर चीज़ खाना चाहिये। बाहरी शीत पड़ने से भीतरी गर्म्मी शरीर से नहीं निकल सकती, इस प्रकार भीतर ही तेज रहने से जठराग्नि भी बड़ी प्रबल रहती है, भारी पदार्थ भी हज़म हो जाते हैं।

जाड़ों में मीठे, खट्टे, नमकीन, चिकने भारी और बल कारी भोजन करना, घी, दूध, का पीना, गरम जल का प्रयोग, तेल की मालिश, कुश्ती, अग्नि का तापना गन्ने का चूसना, नवीन अन्न खाना, गजक, रेवड़ी, केशर, कस्तूरी, छुहारे, गोला, चिरोंजी, पिस्ता, अखरोट, बादाम आदि मेवाओं का खाना, गरम स्थान में रहना, ऊन और रुई के देशी वस्त्रों का धारण करना अच्छा है।

इस ऋतु में अहित और देरी से भोजन करना, दिन में सोना पुराना अन्न खाना, शीतल जल का उपयोग करना, खुले नंगे पैर डोलना, ठंडी वस्तुओं का अधिक सेवन, सफेद और विदेशी पतले वस्त्रों का धारण करना अच्छा नहीं है।

इस ऋतु में आग्नेय दिशा का वायु चलता है, जोकि मधुर रस उत्पन्न करने वाला होता है। स्वभाव में ठंडा और घाव सूजन वाले रोगियों को अच्छा नहीं।

जो हरड़ का सेवन करते हों वह इस ऋतु में सोंठ के साथ करें।

इस ऋतु में सिद्धि मकरध्वज, असगन्धचूर्ण, द्राक्षासव शिलाजीत, रस. च्यवनप्राश, कान्तीसार वंगभस्म, पाक, मोदक, ओवलटीन आदि बलकारी औषधियाँ खानी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पवृक्ष की खोज

वैद्यरत्न कविराज प्रतापसिंह रसायनाचार्य

भारत के पौराणिक साहित्य में कल्पवृक्ष स्वर्ग की एक महत्वपूर्ण देन है। सब देवता उसकी छाया में जाकर मनोकामना पूर्ण करते थे। उसी वृक्ष की शाखा का भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमती रुक्मणीजी पटरानी के मनो-विनोदार्थ स्वर्ग से लाकर रोपण किया था। किन्तु यह रोपण किस स्थल पर हुआ और किस तरह से हुआ—इसकी कोई प्रामाणिक कथा नहीं मिलती।

अभी अपनी राजस्थान की यात्रा में मुझे डायरेक्टर, आयुर्वेद विभाग से ज्ञात हुआ कि अजमेर से १६ मील दूर 'मंगलीयावास' नामक ग्राम के समीप दो वृक्ष हैं, जिनकी राजस्थान के लोग कल्पवृक्ष के नाम से पूजा करते हैं। सावन मास में वहां इस काम के लिये एक बड़ा मेला लगता है और कार्तिक मास में विशेषकर स्त्रियां वहां एकत्रित होकर पूजा, मनोकामना पूर्ति के लिए प्रार्थना एवं व्रतोपवास करती हैं। और वहां के लोगों में यह विश्वास है कि जो सच्चे हृदय से प्रार्थना करता है उसकी मनोरथ-सिद्धि अवश्य होती है। मैंने इसकी जांच करने के लिए श्री उदय सिंह जी राव एम० ए० को लिखा और श्री स्वामी कृष्णानन्दजी महाराज को भी। उनके पत्रों से यह सिद्ध है कि ये दोनों वृक्ष कल्पवृक्ष के नाम से पूजे जाते हैं। एक वृक्ष में पत्ते बड़े और दूसरे में छोटे होते हैं। बड़ेपत्ते वाले वृक्ष को नर कहते हैं। इसका तना ३४ फीट से अधिक मोटा और ऊंचाई ७० फीट से भी ऊंची होती है। जिसका पुष्प कमल के जैसा होता है। मेरे पास जो नमूना आया है वह मुकुलित पुष्प जैसा है। और इसके पत्ते सदासुहागन के पौधे के पत्ते जैसे होते हैं। पत्तों में समानान्तर रेखायें होती हैं और रंग गहरा हरा होता है। पत्ता बड़ा सुदृढ़ होता है। वहां के लोगों का विश्वास है कि इसमें १२ साल के बाद एक बार एक ही फल आता है। फल का आकार बैंगन से कुछ बड़ा होता है। उसके रङ्ग का पता न लग सका। एक सज्जन इसके लिये छः मास से उपासना कर रहे हैं। सम्भव है कि किसी समय फल आ जाये तो उन्हें उसकी प्राप्ति हो जाय। स्थानीय वैद्यों का मत है कि यह औषध में भी काम आता है। किन्तु किस औषध में काम आता हैं इसका ज्ञान उनको नहीं है। अतः मैं राजस्थान के वैद्यों को विशेषकर वनस्पति-शास्त्र-तत्वज्ञों से प्रार्थना करता हूँ कि वे इन दोनों वृक्षों की जाँचकर पता लगावें कि ये वनस्पति-शास्त्र की किस जाति के वृक्ष हैं। और क्या भारत में ये दो ही वृक्ष हैं या इस जाति के वृक्ष अन्यत्र भी उपलब्ध हैं। वहां के लोग जांच करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिन्दी ! जय नागरी !

[रचि० आशाकांत बी० आचार्य]

पढ़ हिन्दी लिख नागरी,
हिन्दी ! हस हस बोल,
बढ़ हिन्दी ! जग जान ले।
क्या हिन्दी का मोल ॥
भरती जन-मन-गागरी,
हरती जन-मन-क्लेश,
जय हिन्दी ! जय नागरी।
जय ! जय ! भारत देश ॥

"वीरो उठो"

[रचि०—ज्वाला प्रसाद शर्मा, आगरा]

उठो जागो, उठो जागो, ये उठने ही की बारी है।
जगत जागृति सूरज ने, किरण अपनी पसारी है ॥
कमल खिलने लगे हर देश में निज गौरव के।
लगे हर एक उन्नति में, सुगन्धी जिनको प्यारी है ॥
अंधेरी देख कर जिनको, कि अनुभव रात करते हो।
विदेशी वायु मंडल की, घटा घनघोर कारी है ॥
ये खंडित देश हो चुका है, आज टुक ध्यान से देखो।
उठे सब देश आगेसे तुम्हें, क्यों नींद प्यारी है ॥
कहाँ वो धारु रजपूती, कि सब, भयभीत हो करके।
कहा करते थे भारत की वीरता, मुझ को प्यारी है ॥
कहाँ वो कर्ण, भीष्म, द्रोण, अर्जुन बाण बलधारी।
कहाँ संतान तुम उनकी, कि जिनको जान प्यारी है ॥
अरे धिक्कार है। धिक्कार !! कुछ तो करके दिखलाओ।
जग विश्व भरना है ... ने ... प्यारी है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंबी आयु होने का मार्ग

[एलक्जेन्डर केल्तसेव]

सोवियत युक्रेन के खारकोव प्रदेश में रूसी संघ के वोरोनेज, कुर्स्क और आर्केजल्स प्रदेशों में खास तौर पर सौ वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या अत्यधिक है। इन क्षेत्रों में सौ साल से अधिक उम्र के लगभग ६ हजार स्त्री-पुरुषों के नाम अङ्कित किये जा चुके हैं।

अत: ऐसा प्रतीत होता है कि सौ मानव-जीवन की सीमा कदापि नहीं है। उनके बाद डेढ़ सौ वर्ष और या उससे भी ज्यादा समय तक जीवित रहना सर्वथा सम्भव है।

तो फिर कोई अपने जीवन को इतने दीर्घकाल तक कैसे कायम रख सकता है? इतनी बड़ी उम्र में अपने को किस प्रकार हृष्ट-पुष्ट तथा काम करने योग्य रखा जा सकता है?

डाक्टरों ने अलग-अलग नुस्खे बताये हैं। उदाहरणार्थ कुछ ने आधा पेट भोजन की सिफारिश की है, तो दूसरों ने इस बात पर जोर दिया है कि सब कुछ निरामिष भोजन पर निर्भर करता है। उनके अलावा ऐसे भी लोग हैं, जिन्होंने चमत्कार-पूर्ण जड़ी-बूटियों के प्रयोग का परामर्श दिया है। फिर भी दीर्घायु का वास्तविक स्रोत औषधि अथवा निरामिष भोजन नहीं है, उसका स्रोत संनिष्कर्ष और लसी (एलिक्जिर और सेरम) भी नहीं है और न सोडियम स्नान या गिनसेंग की जड़ ही है। इसका उत्तर पाने के लिए हमें वृद्धजनों के अनुभवों का ही पता लगाना होगा।

उनके अनुभव सबको बताये जाने चाहिए और उनसे इस बात की खोज करने में बड़ी मदद मिलेगी कि करोड़ों लोगों का जीवन-काल किस तरह बढ़ाया जा सकता है।

विज्ञान के सम्मानित कार्य कर्मी प्राध्यापक सर्कीज़ोव—सेराजिनी का, जो कई वर्षों से दीर्घायु की समस्या का अध्ययन कर रहे हैं, कहना है।

सोवियत विज्ञान दैहिक वृद्धावस्था (यानी प्राकृतिक वृद्धावस्था) और व्याधिकीय वृद्धावस्था में (अर्थात् समय से पूर्व आने वाली वृद्धावस्था, जिसके लिए बहुधा मनुष्य स्वयं ही दोषी होता है) सूक्ष्मता से भेद करता है। यह सुविदित है कि जीवांगों के मुख्य कार्य प्रत्यक्षत: केन्द्रीय स्नायु-तंत्र की स्थिति और प्रथमत: मस्तिष्क वाह्यक पर निर्भर करते हैं। हमारे जीवांगों में होने वाली संश्लिष्ट और प्रमुख प्रक्रियाओं में मस्तिष्क-वाह्यक (कोरटेक्स) सक्रिय भाग लेता है और उन्हींमें आयु-प्रसार की प्रक्रिया निहित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तो इस बात में तनिक भी सन्देह बाकी नहीं रहा कि अतिरिक्त चार-वृद्धि, धमनियों में कठोरता और कैंसर प्रभृति अच्छे स्वास्थ्य के शत्रु केन्द्रीय स्नायु-तंत्र में अविरल और दीर्घकालीन गड़बड़ी के कारण पनपते हैं। यह भी अब मालूम हो चुका है कि मद्यसार और निकोटिन, जो हमारे स्नायु-यंत्र तथा रक्त-धमनियों के लिए छद्मरूपी विष हैं, वह जीवांगों को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं।

समय से पहले की वृद्धावस्था

समय से पहले आने वाली वृद्धावस्था को किस तरह रोका जाए, यह पूछे जाने पर प्राध्यापक सर्कीजीव—सेराजिनी ने बताया कि सबसे पहले तथा सर्वप्रथम उन बातों का प्रभाव कम करना आवश्यक है, जो व्याधिकीय वृद्धावस्था को तेजी से लाते हैं। फिर भी जीवांग की यौवन की शक्ति बनाये रखने के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात 'काम' है। अनेक लोगों की घातक गलती यह है कि वे विश्वास करते हैं कि वृद्धि व्यक्ति को कम [illegible] करना चाहिए और काम उसके जीवांगों के लिए हानि-प्रद होता है।

आयु बढ़ाने में काम निर्णायक भूमिका अदा करता है। यह सुविदित है कि सुव्यवस्थित काम के बल पर व्यक्ति महान् रूसी शरीर-विज्ञान-शास्त्री अकादमिशियन पावलोव के शब्दों में अपने जीवन-काल में एक निश्चित गति अथवा "ढर्रा" बना लेता है।

खाली बैठने का प्रभाव

इवान पेत्रोविच पावलोव कहा करते थे— "एक क्लर्क अपना काम करते हुए जो बहुत ज्यादा कठिन नहीं होता, ७० वर्ष की उम्र तक ठीक चलता रहता है, परन्तु ज्योंही वह अवकाश ग्रहण करता है और फलतः अपने नित्य-प्रति का ढर्रा छोड़ देता है, जीवांग काम करने में असमर्थ हो जाते हैं और वह शीघ्र मर जाता है।

वृद्धावस्था में पूरी तरह हर तरह का काम छोड़ देने वाले प्रत्येक के साथ आम तौर पर यही होता है। हमें कई ऐसे मामलों का पता है, जिनमें अपेक्षाकृत स्फूर्तिवान, प्रसन्न-चित्त तथा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति पेन्शन पर अवकाश-ग्रहण करते ही सहसा निर्बल होगये हैं और बीमार पड़ गये। यही कारण है कि अवकाश ग्रहण करने के बाद व्यक्ति को कदापि काम-काज करना पूरी तरह नहीं छोड़ देना चाहिए। उसे कुछ हलके काम या बागवानी जैसे कोई शौकिया कार्य, यहाँ तक कि व्यायाम भी करना चाहिए, परन्तु किसी भी दशा में जीवांगों को गत्यात्मकता के जीवनदायी प्रभाव से वंचित नहीं करना चाहिए।

अतएव दीर्घायु की प्रमुख पूर्व-आवश्यकताओं में से एक काम है. यह हजारों वृद्ध लोगों के जीवन से सिद्ध हो चुका है। काम ने मनुष्य की सृष्टि की है, वह हमारे जीवन से अविभाज्य है और वृद्धावस्था के लिए हमारा सहारा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशी-औषधि-निर्माता सम्मेलन

देशी-औषधि-निर्माता संघ का पहला अधिवेशन दिल्ली में ही गत १५-१६ अगस्त को हुआ था, जिसमें विभिन्न प्रदेशों के देशी औषध-निर्माताओं ने सम्मिलित होकर संगठन के मौलिक उद्देश्यों को स्वीकार कर यह निश्चय कर लिया था कि निर्माताओं का अखिल भारतीय संघ बनाया जाय और सरकारी प्रतिबन्धों के निवारणार्थ संघ के द्वारा ही कार्यवाही की जावे।

संघ का दूसरा अधिवेशन दिल्ली में जोगीबाड़ा स्थित मारवाड़ी धर्मशाला में वैद्यनाथ भवन के संचालक वैद्य श्री रामनारायण शर्मा की अध्यक्षता में अभी गत २६-२७ अक्टूबर को उत्साह-पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ है। इस अधिवेशन में उत्तर प्रदेश, बंगाल बिहार, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, मध्य-प्रदेश इत्यादि प्रदेशों के प्रमुख देशी-औषधि-निर्माताओं ने भाग लिया। केन्द्रीय सरकार के देशी औषध-परामर्शदाता कविराज श्री प्रतापसिंह जी भी अधिवेशन में सम्मिलित हुए। यद्यपि दीपावली और व्यापारिक वर्षारम्भ के कारण कई निर्मातागण इस सम्मेलन में स्वयं भाग नहीं ले सके, तथापि उनके सन्देश और विचार जो अधिवेशन में प्रस्तुत किये गए वे निश्चय ही बहुत उत्साहवर्द्धक थे। दिल्ली के हमदर्द दवाखाना और राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड सन्स जैसे बड़े निर्माताओं का संघ के कार्यों में सक्रिय भाग लेना उत्साह-जनक है। इसी प्रकार कालेड़ा कृष्णगोपाल (अजमेर) के श्रीकृष्णगोपाल आयुर्वेद भवन के संचालक ने पूर्व ही अपना प्रवेश शुल्क और मासिक शुल्क भेजकर संघ की सदस्यता स्वीकार करते हुए संगठन के लिए बड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। पिछले अधिवेशन में प्रायः तीस निर्माता-संस्थानों का सहयोग संघ को प्राप्त हुआ था। इस अधिवेशन में उनके अतिरिक्त काशी हिन्दू विश्वविद्यालय फार्मेसी वाराणसी, श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रा० लि० अमृतसर, कुँअर आयुर्वेदिक फार्मेसी कानपुर, मुल्तानी आयुर्वेदिक फार्मेसी नयी दिल्ली प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रा० लि० अमृतसर, सुखदाता फार्मेसी दिल्ली, इत्यादि संस्थानों का नया सहयोग पाकर सम्मेलन का कार्य अधिक सार्थकता के साथ हुआ।

सम्मेलन में संघका विधान स्वीकृत किया गया और देशी औषधियों की प्रगति में बाधा डालने वाली राजकीय गतिविधियों का विरोध करने एवम् देशी औषधि व्यवसाय क्षेत्र की उन्नति करने के विषय में विभिन्न कार्यक्रम निर्धारित किये गये। इस कार्य में श्रीरामनारायण जी शर्मा विशेष धन्यवाद के पात्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संन्यास क्या है ?

[विनोबा भावे]

एक और सवाल पूछा है—"क्या वानप्रस्थ और संन्यास हमारे लिए राष्ट्र के लिए ठीक हैं ? हमारा देश पुराना है, परन्तु राष्ट्र नया है। हमको तो शूर, श्रीमान हिम्मतवान, बहादुर लोग चाहिये अनासक्त, मृदु, दरिद्री लोग नहीं।"

बहुत दुःख की बात है कि अपने यहीं के सर्वोत्तम शब्दों की पहचान अपने यहाँ के लोगों को नहीं है अगर सन्यास का अर्थ दारिद्र्य होता तो हिन्दुस्तान सन्यासी है, ऐसा कहा जाता। यह ध्यान में रखिये, संन्यासियों का ... इन्द्रियों पर संयम रखोगे, तभी ... हिम्मत वाले बनोगे। ... रहोगे तो मृदु बनोगे। फिर आप से पुरुषार्थ नहीं बनेगा। संन्यास का अर्थ निर्वीर्यता नहीं है। संन्यास याने परम वीर्यता। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी संन्यास का अंकुश रखना चाहिये। कुछ समय गृहस्थ जीवन बिताने के बाद सब वासनाओं से मुक्त हुए बिना महा पुरुष पैदा नहीं होंगे। इस विषय पर आपको ठीक चिंतन करना होगा। इसके लिए आपको महात्मा गांधी का चरित्र, लोकमान्य तिलक चरित्र, अरविंद घोष का चरित्र, स्वामी विवेकानन्द का चरित्र पढ़ना चाहिए। इससे आपके ध्यान में आएगा कि जिन्होंने अपने पर संन्यास की भी कोशिश की थी, वे ही राष्ट्रनेता बने। आज आप के नेता पंडित जवाहरलाल नेहरू, वह संन्यासी नहीं तो क्या है। कभी उन को भोग-वासना में आपने देखा है ? १६-१६ घन्टे काम करते हैं कभी बीमार पड़े, यह सुना ही नहीं, निरंतर सेवा में लगे हैं। देश में और परदेश में भी घूमते रहते हैं। वह तो एक वानप्रस्थ हैं। उनके जैसा दूसरा वानप्रस्थ हमने देखा नहीं।

वानप्रस्थ माने कौन ? जो घूमता रहता है वही वानप्रस्थ है क्या ? वानप्रस्थ वह है जो अपने पर अंकुश रखता है और जिस ने अपने गृहस्थाश्रम का संक्षेप किया है और सामाजिक गृहस्थाश्रम उठाया है। वह विषय-वासना से मुक्त होगा। लोकमान्य तिलक महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू इस प्रकार के वानप्रस्थ हैं। अगर वे विषयासक्त गृहस्थ होते तो उन से पुरुषार्थ नहीं बनता।

हम यह नहीं चाहते कि देश बलहीन और दरिद्री बने। संन्यास की दीक्षा अगर किसी ने दी है तो वह उपनिषदों ने दी है। उन्होंने क्या कहा—"बलं वाव विज्ञानाद् भयः।" विज्ञान से बल श्रेष्ठ है। "नायं आत्मा बलहीनेन लभ्यः।" बलहीन को आत्मा नहीं मिलती। क्या उपनिषद् दुर्बल, निर्वीर्य प्रजा चाहते हैं ? वे बलवान, तेजस्वी, वीर्यवान और साध्वी प्रजा चाहते हैं, और देश को भी समृद्ध चाहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संन्यास और शेष मुनि की कथा

[कुँ० महावीर सिंह अनिल प्रतिनिधी श्रीराजा महेन्द्र प्रताप एम. पी.]

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृहीभवेद् गृही भूत्वा बनी भवेद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत् ।

अर्थ—मनुष्यों को चाहिये कि ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति करके गृहस्थ होवें गृहस्थी के पश्चात् बनी— वानप्रस्थ होवें । और फिर संन्यास ग्रहण करें ।

आयु के चौथे भाग ७५ वर्ष के लगभग मोहादि आवरण छोड़कर संन्यासी हो जावे, और विरक्त होकर परोपकारार्थ विचरता हुआ सन्यास में अर्थात् मोक्ष में मन को लगावे । विरक्ती स्वभाव ब्रह्मचर्य से भी संन्यासी हो सकते हैं ।

लेकिन ब्रह्मचर्य का पालन प्रत्येक दशा में आवश्यक है देखा जाता है कि बचपन से ही बहुतों का मन संसारिक बन्धनोंसे इतना विमुख हो जाता है कि वे अपनी प्रकृति एक दम (संसार) के मोह जाल से साधुओंकी संगति में रहना ही उत्तम समझने लगते हैं । जो बचपन से इस ओर झुक जाता है, वह वास्तविक एक सिद्ध सन्यासी कहा जा सकता है और वह निर्विरोध मुक्ति को प्राप्त होता है यदि उसे अपने समय में किन्ही कपट युक्त प्रपंचों से कहीं पाला न पड़े । वेदों में ऐसी श्रेणी के सन्यास को ही विशेष महत्व प्रदान किया गया है ।

देखिये सुनःशेष मुनि के माता पिता बहुत लोभी थे ।

राजा हरिश्चन्द्र को जलोदर रोग होने पर उसे राजा के अनुचरों को वेच दिया गया तथा उसका पिता गायों के लोभ में पड़कर उसका वध करने को भी तत्पर होगया था ।

इस पर सुनः शेष की तपस्या से प्रसन्न होकर वरुण ने राजा का रोग दूर किया । पिता प्रसन्न होकर बोला कि पुत्र तूने तपस्या से कुल को पवित्र किया अब घर चलकर आनन्द करो । ऋषि कुमार बोला कि आप जैसे लोभी पिता के पास मैं नही रहूंगा । और महर्षि विश्वामित्र की शरण में रहूंगा महर्षि जी ने उसकी बात स्वीकार कर ली । यह वास्तव में प्रथम श्रेणी का सन्यास है ।

वेदों में सन्यास ग्रहण करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है परन्तु किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध सन्यासी बनाने की आज्ञा नही यह एक नैतिक अपराध है ।

नोट—वेदों में संन्यास सम्बन्धी अन्य सज्जन भी लेख भेजें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले प्रश्नों के उत्तर

उत्तर नं० २४-२५ चन्द्रप्रभा बटी एक मास खाने से प्रमेह को लाभ होगा। जिससे मूत्र जलन के साथ नहीं आवेगा। स्वप्न दोष के लिये वीर्यपुष्टी या मकरध्वज अथवा च्यवनप्रास सेवन करें जोकि यू. पी. कैमीकल वर्कस २० मोहन गेट अलीगढ़ से प्राप्त की जा सकती हैं। विचार शुद्ध रखिये तथा गर्म वस्तु जैसे मिर्च, गुड़, तेल, खटाई गर्म मसाला उर्द की दाल आदि न खायें।

पालग का साग, लौकी, तोरई, टमाटर, पत्तेदार तरकारियाँ व साग तथा मूली का प्रयोग हितकर है।

कुँ० महावीर सिंह "अनिल" प्रतिनिधि श्रीराजा महेन्द्र प्रताप जी एम०पी०

उ० नं० २६—जाड़ों के खान पान इसी अङ्क में देखें।

आपके प्रश्न

२७—यज्ञोपवीत-जनेऊ धारण करने से क्या होता है। ग्रा०नं० १६३२

२८—शरीर मोटा करने को क्या खावें। ग्रा० नं० २४२

२९—आँखों की रोशनी किस तरह बढ़ सकती है। ग्रा० नं० १२८

३०—बीड़ी तम्बाकू पीने से क्या क्या हानि है। ग्रा० नं० २६२

चलो चलो पंजाब चलो।

देश का बच्चा २ होगा—
हिन्दी भाषा पर बलिदान
नहीं सहेंगे नहीं सहेंगे—
हिंदी भाषा का अपमान
भाषा से प्रतिबन्ध हटाने—
चलो चलो पंजाब चलो
स्वाभिमान से सीना ताने—
चलो चलो पंजाब चलो
ऋषियों की जयकार बुलाने—
चलो चलो पंजाब चलो
गुरुओं का सम्मान बढ़ाने—
चलो चलो पंजाब चलो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ की बात

बहुत से छोटे बड़े शहरों, कस्बों मंडियों और बस्तियों में 'सुखमार्ग' बेचने के लिये एजेन्ट बन चुके हैं और वे काफी तादाद में 'सुखमार्ग' बेचकर, स्वार्थ और परमार्थ दोनों को सिद्धि कर रहे हैं। फिर भी हमें कुछ ऐसे देशभक्त एजेन्ट की आवश्यकता है, जैसे जो उन स्थानों में जहाँ कोई एजेन्ट नहीं है 'सुखमार्ग' की एजेन्सी लेकर अपने स्वार्थ के साथ ही देश का भी कुछ उपकार साधन कर सकते हैं, नियम बड़े सरल है। कमीशन भरपूर मिलता है। पत्र व्यवहार कीजिये।

पता—सुखमार्ग कार्यालय कैमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़।

नया कलैंडर

नीचे के पते पर ५ पते भेजकर मुफ्त मंगाइये—

यू० पी० केमीकल वर्क्स, २० अलीगढ़।

भारत सरकार से "रजिस्टर्ड"

सफेद दाग का शत्रु

इस रामबाण दवा से स्त्री पुरुष और बालकों के शरीर पर के सफेद दाग ऐसे निकल जाते हैं की वह कहाँ थे इसका पता भी नहीं लगता, हजारोंने अनुभव कर प्रशंसा पत्र भेजे हैं दवा का मूल्य ५ रु०। डा० व्य० १।) रु० अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखें।

पता– वैद्य के० आर० बोरकर [सु] मु. पो. *मंगरूलपीर जि० अकोला (विदर्भ)*

'पंचायत' मासिक

'पंचायत' हर माह कहानी कविता, प्रश्नोत्तर एवं सामयिक निबन्ध प्रस्तुत करती है।

आप पढ़िए, दोस्तों को पढ़ाइये।

वार्षिक शुल्क २।।) नमूना मुफ्त

पता—

युगान्तर प्रेस, मोतीहारी [चम्पारन]

मिंक

वैज्ञानिक, नवीन प्रणाली द्वारा तैयार की हुई हम अपनी 'मिंक' फाउन्टेन पेन इङ्क अपने विद्यार्थियों को भेंट करते हैं। ऐजेन्टों को पूरा कमीशन देते हैं।

मूल्य सात आने

निर्माण कर्त्ता:—

दि मीनीमेक्स कमर्शियल कारपोरेशन एलाइड केमीकल्स, ब्रान्च ७७, फैक्ट्री एरिया, फजलगंज, कानपुर। नं० ४०

हमारे यहाँ बिकती है।

पेटेन्ट दवायें और गीता प्रेस की पुस्तकें। महाशय मोहनलाल मोहनगेट, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SUKHMARG

Regd. No. A 220.

सुखमार्ग

हिन्दी में सब से सस्ता

वार्षिक मूल्य १)

सर्व विषय सम्पन्न, अपूर्व सामाजिक मासिक पत्र

स्वास्थ्य और सुख प्राप्ति को १) रु० भेजकर सालभर तक पढ़ें

पता— सुखमार्ग कार्यालय, केमीकल प्रेस मोहनगेट २०, अलीगढ़।

नोट—पाँच ग्राहक बनाने वालों को पत्र मुफ्त में पहुँचा ~~करेगा।~~ पुस्तकालय

सेवा में,

श्री आचार्य— गुरुकुल कांगड़ी

कांगड़ी हरिद्वार

मुद्रक एवं प्रकाशक श्यामलाल 'सुहृद' केमीकल प्रेस, मोहनगेट, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश-विदेश से

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी ने पाठक-वर्ग की पढ़ने की रुचियों और पढ़ने के दौरान की आदतों का विशेष अध्ययन करने की योजना बनाई है, जिस पर २२ हज़ार रुपये का व्यय होगा। लाइब्रेरी का उपयोग करने वाले दो सौ नियमित पाठकों का अगले सप्ताहों में रिकार्ड रखा जायगा कि वे क्या-क्या किताबें पढ़ने के लिए ले जाते हैं। लाइब्रेरी में आकर पढ़ने वाले लोगों के शारीरिक व्यवहार का निरीक्षण भी किया जायगा।

* * *

२५ से ३० सितम्बर, ५८ तक फ्रेंकफर्ट, जर्मनी, में पुस्तकों की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी आयोजित हो रही है।

* * *

इंगलैण्ड के पुस्तक-विक्रेता संघ ने एक प्रस्ताव द्वारा कई प्रकाशकों की सीधी पाठकों को पुस्तकें बेचने की प्रवृत्ति की निन्दा की है और कहा है कि यह "तरीका परचून वितरण को पुख्ता करने और उसकी संवृद्धि करने का कतई नहीं है जिस पर अन्ततः सब प्रकाशकों को निर्भर रहना पड़ता है।"

* * *

१९५७ में इंग्लैण्ड में प्रकाशित पुस्तकों का ३७·४ प्रतिशत भाग देश से निर्यात किया गया। प्रकाशित पुस्तकों का कुल मूल्य ४८ करोड़ रुपये से अधिक था।

* * *

भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल ने अब तक विभिन्न विषयों के १८, ८१८ वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्दों को स्वीकृति दी है। अस्थायी रूप से ४० विषयों के अब तक १ लाख १० हज़ार शब्दों का निर्माण हो चुका है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में तीन लाख शब्दों को स्वीकृति देने का लक्ष्य है लेकिन प्रयत्न किया जा रहा कि एक वर्ष पूर्व ही यह कार्य समाप्त हो जाय।

* * *

केन्द्रीय वैज्ञानिक अनुसन्धान और संस्कृति-विषयक मन्त्रालय की ओर से सितम्बर, ५८ के मास से एक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होगा जिसमें देश की सांस्कृतिक समस्याओं तथा गतिविधियों का उल्लेख रहा करेगा यह पत्रिका अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में प्रकाशित की जायगी। सांस्कृतिक विषयों के अतिरिक्त वैज्ञानिक प्रगति का भी संक्षिप्त विवरण रहेगा।

लेखकीय मंच

श्री मुनीन्द्र नारायणसिंह, पीर मुहानी, पटना-३ सूचित करते हैं कि उन्हें अपने एक गद्य-गीत संग्रह, दो कविता-संग्रह और एक उपन्यास के लिए किसी अच्छे प्रकाशक की आवश्यकता है। इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

* * *

श्री प्रेमचन्द्र, साहित्यिक मित्र मण्डल, मुज़फ्फ़र नगर के पास एक खण्डकाव्य और एक 'कुरु जनपद की लोक-गाथाओं' का संग्रह प्रकाशनार्थ प्रस्तुत है। प्रकाशन के इच्छुक प्रकाशक पत्र-व्यवहार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो-प्रणाली द्वारा

पुस्तकों का मुद्रण

ले० सुरेन्द्रपालसिंह

अब तक भारत में किसी बड़े पैमाने पर छपाई में फोटो-प्रणाली का प्रयोग नहीं हुआ है। इस लेख में आकर्षक मुद्रण के लिए इस प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है।

मुद्रण-कला के आविष्कार से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार में जैसा महत्त्वपूर्ण योग मिला है वह अपने-आपमें ही अत्यन्त आश्चर्यजनक है। प्रस्तर-पटों और काठ के ठप्पों के बाद जब धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रचलन आरम्भ हुआ तो मुद्रण-कला के विकास का द्वार पूर्ण रूप से उन्मुक्त हो गया। आज विश्व के लगभग समस्त सभ्य देशों में धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि की छपाई के लिए व्यापक रूप से होता है। लेकिन मुद्रण-कला के विशेषज्ञों को इतने से ही संतोष नहीं हुआ, उनके सामने अनेक समस्याएँ विद्यमान रही हैं और उनके समाधान का प्रयास भी निरन्तर होता रहा है। मुद्रण के क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या जो आज भी किसी-न-किसी रूप में विद्यमान है वह है धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों को वांछित क्रम में संयोजित करने की। इस सम्बन्ध में सामान्य प्रणाली जो आज भी व्यापक रूप से काम में लाई जाती है वह है 'हाथ से' इन 'मुद्रणाक्षरों' को संयोजित करने की! इस ढंग से काम करने में एक तो मानव-श्रम तथा समय अधिक लगता है दूसरे शिथिल ढंग से संयोजित होने के कारण छपाई के समय आपस में रगड़ और धक्के खाने से कुछ मुद्रणाक्षर टूट जाते हैं या छिटक-कर निकल जाते हैं जिससे मुद्रित की जाने वाली सामग्री अशुद्ध छप जाती है। इसके अतिरिक्त इस प्रकार सुमुद्रणा-क्षरों का उपयोग काफ़ी खर्चीला भी है क्योंकि वे जल्दी ही घिसकर खराब हो जाते हैं।

धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों का प्रयोग ५०० वर्षों से भी अधिक से होता आ रहा है लेकिन इतनी लम्बी अवधि में इसके संयोजन की विधि में केवल दो ही महत्त्वपूर्ण सुधार हुए हैं। पहला है 'पटल प्रणाली' (Stereotype Process) द्वारा मुद्रण की विधि का विकास। इस विधि में संयोजित मुद्रणाक्षर के पृष्ठों की छाप लेकर धातु का एक पतला पटल तैयार कर लिया जाता है और उसीसे छपाई की जाती है। एक पटल जब घिस जाता है तो इसी तरह दूसरा पटल तैयार कर लिया जाता है। इस विधि के दो महत्त्व-पूर्ण लाभ हैं। एक तो धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों में घिसावट केवल नाम-मात्र को ही होती है, दूसरे एक बार मुद्रणाक्षरों को शुद्ध क्रम में संयोजित कर लिया जाय तो फिर मुद्रण के समय अशुद्धि होने का खतरा नहीं रह जाता। घिसे हुए पटल गलाकर उसी धातु से फिर नये पटल तैयार कर लिये जाते हैं। इस प्रकार मुद्रण कम खर्चीला भी हो जाता है और कम त्रुटिपूर्ण भी। इस विधि का आविष्कार विलियम गेड नामक एडिनबर्ग के एक सुनार ने अठारहवीं शताब्दी के लगभग मध्य में किया, और लार्डस्टैनहॉप के सद्प्रयासों से उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में यह सफलता-पूर्वक व्यावसायिक उपयोग में आने लगी।

इस सम्बन्ध में दूसरी महत्त्वपूर्ण विधि का विकास १८८० ई० में हुआ, जब मुद्रणाक्षरों को संयोजित करने के यन्त्र का आविष्कार हुआ। इस विधि में टाइपराइटर की तरह के एक बड़े की-बोर्ड (Key-board) वाले यन्त्र से एक विशेष प्रकार के कागज पर अक्षरों को वांछित-क्रम में अलग-अलग या एक साथ मिले हुए रूप में ('Mono-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल विज्ञान माला

जगपति चतुर्वेदी

- स्तनपोषी जन्तु २)
- जन्तु बिल कैसे बनाते हैं २)
- जन्तुओं का गृहनिर्माण २)
- शिकारी पक्षी २)
- जलचर पक्षी २)
- उथले जल के पक्षी २)
- वन-उपवन के पक्षी २)
- विलुप्त जन्तु (प्रेस में) २)
- ज्वालामुखी २)
- जीने के लिए २)
- बिजली की लीला २)
- वनस्पति की कहानी २)
- समुद्री जीव-जन्तु (प्रेस में) २)
- भूगर्भ विज्ञान (प्रेस में) २)
- वैज्ञानिक आविष्कार (१) २)
- वैज्ञानिक आविष्कार (२) २)
- पेन्सिलीन की कहानी २)
- कोयले की कहानी २)
- परमाणु के चमत्कार २)
- तत्वों की खोज में (प्रेस में) २)
- विलुप्त वनस्पति (प्रेस में) २)
- कीटाणुओं की कहानी २)
- शल्य-विज्ञान की कहानी २)
- आविष्कारकों की कहानी २)
- अद्भुत जन्तु २)
- चींटी-चींटों की कहानी २)
- मकड़ी-मकड़ों की कहानी २)

प्रौढ़ोपयोगी-किशोरोपयोगी
अपनी तरह की
अनूठी पुस्तकमाला
पुरस्कृत तथा बहुप्रशंसित
सुगम, रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक
उत्कृष्ट पुस्तकें

- वन-वाटिका के पक्षी २)
- विलक्षण जन्तु २)
- हिंसक पशु २)
- खुर वाले जानवर २)
- संसार के सरीसृप ४)
- कीट-पतंगों का संसार ४)
- जीव-जन्तुओं की बुद्धि ४)
- संसार के सर्प ४)
- सृष्टि का इतिहास ४)
- मछलियों की दुनिया ४)
- जन्तुओं की जन्म-कहानी ४)

अन्य लेखकों द्वारा लिखित

- धरती का राजा २)
- पशु जीवन का मानवीय रूप २)
- घड़ी की कहानी २)
- चन्द्रलोक की यात्रा २।।)
- राकेश की मंगल-यात्रा २)
- धरती माता २)
- विज्ञान प्रवेशिका ३।।)
- आकाश की झांकी १)
- सामान्य ज्ञान परिचय १।।)
- नवीन सामान्य ज्ञान १।।।)
- रंग-बिरंगी मछलियाँ १)
- विचित्र जन्तु १)
- सूर्य की कहानी ।।।)
- मंगल और अन्य ग्रह १।।)
- चांद की यात्रा और राकेट ।।।)

किताब महल

जीरो रोड, इलाहाबाद • फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली • हार्नबी रोड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश बोर्ड, मध्य भारत बोर्ड तथा

उत्तर प्रदेश बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१. मधुपर्क : श्री नरोत्तमदास स्वामी २।।)
२. कथा कुसुमाञ्जलि : डॉ० गुलाब राय २)
~~३. संस्कृत बोध कलिका : डॉ० सत्यव्रतसिंह~~ ।=)

English

४. Winning of Damyanti : Edwin Arnold Ed. By Prof. B.B.L. Gupta -/12/-

गणित

५. प्रारम्भिक स्थिति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ५)
६. प्रारम्भिक गति विज्ञान : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा ४)
७. नियामक ज्यामिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३)
८. समतल त्रिकोणमिति : डॉ० एम० रे० शर्मा व चतुर्वेदी ३।।)

हाई स्कूल

हिन्दी

९. गद्य प्रभा : डॉ० गुलाब राय १।।)
१०. विद्यार्थी जीवन : डॉ० गुलाब राय १।।)
११. संस्कृत बोध मंजरी : डॉ० सत्यव्रत सिंह ।=)

नागरिक शास्त्र

१२. नागरिक विज्ञान तथा भारतीय शासन : डॉ० आशीर्वादीलाल तथा सालिगराम २।।)

गणित

१३. आधुनिक हाई स्कूल ज्यामिति : प्रो० आनन्द स्वरूप सिन्हा २।)

विज्ञान

१४. रसायन परिचय : श्री नन्दलाल श्रीवास्तव व श्री रामकृष्ण श्रीवास्तव ३।)

मध्य भारत बोर्ड

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

१५. गद्य सरोज : श्री कृष्णाचन्द्र शुक्ल २।)
१६. इण्टर काव्य संग्रह : श्री सी० डब्ल्यू० डेविड २।)
१७. अन्तरप्रान्तीय भारती : श्री भालचन्द्र जोशी व श्री मोतीलाल गुप्ता १।)

संस्कृत

१८. काव्योन्मेष : श्री आर० डी० लड्डू ३)
१९. बाण चरित सार : श्री आर० डी० लड्डू २।।)

English

२०. Intermediate Prose : Jagdish Prasad M. A. 2/-/-
२१. Life and Adventure : Dr. S. Murari Sinha M. A. 1/8/-

Mathematics

२२. An Introduction to Calculus : Narain Singh 3/-/-

हाई स्कूल

हिन्दी

२३. काव्य कलाधर : श्री रायकृष्णदास १।।।)
२४. निबन्ध पारिजात : श्री भारतभूषण त्यागी व डॉ० गुलाब राय एम० ए० २।।।)

संस्कृत

२५. कर्णाविदानम् : डॉ० सत्यव्रत सिंह ।।।)
२६. काव्य किरणावलि : श्री आर० डी० लड्डू १।।)

गया प्रसाद

आगरा बाँके विलास — आगरा हास्पिटल रोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत पुस्तकें

English

२७. **Simple English Poems :**
Bharat Bhushan Tyagi -/12/-

नागरिक शास्त्र

२८. सरल नागरिक शास्त्र : प्रो० इन्दु मेहता २)

विज्ञान

२९. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।)

३०. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र :
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

भूगोल

३१. संसार का नवीन भूगोल : पी० सी० बनर्जी ४।)

३२. भारतवर्ष का भूगोल : पी० सी० अग्रवाल ३)

राजस्थान विश्वविद्यालय

उच्च कक्षाओं के निमित्त

हिन्दी

३३. हिन्दी काव्य में छायावाद :
श्री दीनानाथ 'शरण' ५)

३४. हिन्दी साहित्य में निबन्ध : प्रो० ब्रह्मदत्त शर्मा २।)

भूगोल

३५. संसार का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
श्री सी० बी० मैमोरिया १५)

३६. भारत का आर्थिक और वाणिज्य भूगोल :
डॉ० तुलसीराम शर्मा व डॉ० रघुराजसिंह ६)

इण्टरमीडियेट

हिन्दी

३७. हिन्दी निबन्ध विहार : श्री माधो प्रसाद व्यास व श्री अक्षय चन्द्र शर्मा २)

English

३८. **Simple Short Stories (For Ajmer Board)** : P. C. Agrawal 1/8/-

३९. **An Approach to General English** : Sri L. Chaturvedi 2/8/-

हाई स्कूल

हिन्दी

४०. निबन्ध पारिजात (अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत)
श्री भारतभूषण त्यागी,
श्री गुलाब राय, एम० ए० २।।)

English

४१. **High School Prose Selection :**
B. S. Paul 1/-/-

४२. **Progressive Gen. English :**
L. Chaturvedi 2/8/-

भूगोल

४३. संसार का नवीन भूगोल (नवीन संस्करण, अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी बनर्जी ४।)

४४. भारतवर्ष का भूगोल (नवीन संस्करण, अजमेर बोर्ड से भी स्वीकृत) :
पी० सी० अग्रवाल ३)

४५. व्यावहारिक भूगोल : श्री रामचन्द्र २।)

इतिहास

४६. भारतवर्ष का सरल इतिहास :
श्री जे० सी० तालुकेदार २।)

४७. भारतवर्ष का इतिहास :
डॉ० बी० एन० मेहता (प्रेस में) ४)

विज्ञान

४८. प्रारम्भिक भौतिक शास्त्र :
श्री जी० आर० जैन ३।)

४९. प्रारम्भिक रसायन शास्त्र
डॉ० बा० वि० भागवत ३)

वाणिज्य

५०. माडर्न हाईस्कूल बुक कीपिंग :
श्री आर० पी० सिंघल ३)

ए राड स न्स,

कानपुर
४०।७८ परेड

जैपुर
चौड़ा रास्ता

ग्वालियर
पाटनकर बाजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

type' or 'Linotype') टंकित कर दिया जाता है जिससे काग़ज़ में छोटे-छोटे बहुत से सूराख बन जाते हैं। फिर उस टंकित काग़ज़ को एक दूसरे यन्त्र में लगा दिया जाता है और फिर यन्त्र को चलाने पर वांछित क्रम में धातु (सीसा) के मुद्रणाक्षरों की पंक्ति-की पंक्ति निकलती चली जाती है।

इन दोनों विधियों के विकास के बावजूद भी यह आवश्यकता शेष ही रह गई कि धातु के मुद्रणाक्षर ढाले जायँ। लेकिन अभी हाल ही में मुद्रण की एक नई प्रणाली का विकास यूरोप में हुआ है जिसने धातुनिर्मित मुद्रणाक्षरों के उपयोग की आवश्यकता को बिलकुल समाप्त कर दिया है। इस ढंग से क्रमश: अमरीका, फ्रांस और इंगलैण्ड में कुछ पुस्तकें छापी भी गई हैं। इस नई विधि का नाम है 'अक्षर संयोजन की फोटो-प्रणाली', जिसमें धातु के अक्षर नहीं ढालने पड़ते। मुद्रण के क्षेत्र में निश्चित रूप से यह क्रान्तिकारी आविष्कार है। इस ढंग से छपाई करने के लिए दो तरह की मशीनों का आविष्कार हुआ।

पहली है लुमि टाइप (Lumitype) मशीन जिसका आविष्कार १९४४ ई० में फ्रांस के दो इन्जीनियरों हिगोनेट (M.M.Higonnet) और मेराउड (Moyroud) ने किया और उन्होंने अपना यह आविष्कार 'ग्रैफ़िक आर्ट्स रिसर्च फाउण्डेशन, कैम्ब्रिज' को बेच दिया। उस संस्था ने इसे विकसित करके १९४९ में 'फ़ोटन' नाम दिया। यह मशीन प्रकाश के माध्यम से पहले अक्षरों को फ़िल्म पर अंकित करती है, जो लगातार घूमते हुए चक्र में से होकर गुज़रती रहती है। इस चक्र पर १६ आकार के ९०-९० तरह के प्रत्येक अक्षर बने होते हैं। बारह ताल (Lens) लगे हुए एक यन्त्र से यह सम्भव है कि १९२ भिन्न-भिन्न प्रकार के तथा (५ से लेकर २८ प्वांइट तक) १७,२८० आकार के मुद्रणाक्षर अंकित किये जा सकते हैं। फ़िल्म पर इस मशीन द्वारा एक सैकण्ड में आठ प्रकार के अक्षर अंकित हो सकते हैं।

फ़ोटन मशीन से सबसे पहली पुस्तक जो छापी गई वह है १९५३ में अमरीका की राइन हार्ट एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क द्वारा मुद्रित कराई गई पुस्तक 'वन्डरफुल वर्ल्ड आफ़ इन्सेक्ट्स'। यद्यपि इस पुस्तक का ऐतिहासिक महत्त्व है लेकिन छपाई या मुद्रणाक्षरों की दृष्टि से इसमें कोई विशेषता नहीं है। इसके मुकाबिले में लुमिटाइप (Lumitype) मशीन से फ्रांस में छपी पुस्तक नितान्त भिन्न है। यह एक नाटक-पुस्तक है जिसमें इस मशीन के लिए विशेष रूप से योजित एक सुन्दर मुद्रणाक्षर के साथ-साथ रंगमंच-संकेतों को अधिक स्पष्ट बनाने के लिए एक ही पंक्ति में कई-कई तरह के मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त मुद्रित पृष्ठों की छपाई भी बहुत साफ़ है क्योंकि इसके लिए ताँबे तथा क्रोमियम की तह चढ़ाये गए एक विशेष प्रकार के लीथो-मुद्रण-पटल का उपयोग भी किया गया था।

फ़ोटन मशीन से पहली पुस्तक छपने के एक वर्ष पूर्व फिलेडेल्फिया में इसी तरह की 'फ़ोटो सेटर' नामक एक मशीन से 'ए हैण्ड बुक आफ़ बेसिक माइक्रोटेक्नीक' नामक पुस्तक छप चुकी थी। इस मशीन का निर्माण 'इन्टरटाइप कार्पोरेशन' नामक एक संस्था ने किया है और १९४९ से लेकर अब तक इस तरह की लगभग २०० मशीनें संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लगाई जा चुकी हैं। इसकी साधारण किस्म वाला यन्त्र 'इन्टरटाइप लाइन-कास्टिंग मशीन' का सीधा-सादा रूपान्तर-मात्र है, जो १९१३ ई० में बनी थी। इसमें मुद्रणाक्षर पट (Matrix) की जगह फ़ोटो पट (Photomat) लगा दिया जाता है जिस पर

भूल सुधार

"प्रकाशन समाचार" के जून '५८ के अंक में पृष्ठ ३८५ पर छपे विज्ञापन में "बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य" की पुरस्कृत राशि १००) को पाठक कृपया १०००) पढ़ें।

रणधीर सिनहा की रचनाएँ

कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, रिपोर्ताज, निबन्ध, डायरी, आत्मालाप, संस्मरण, व्यंग-चित्र तथा लघु कथाएँ आदि कुल २३ रचनाओं का अनुपम संग्रह।

मूल्य २ रुपये ५० नये पैसे

प्रकाशक—श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र उभर आते हैं। फ़ोटोसेटर मशीन में चार कोष (Magazines) और बारह ताल (Lenses) लगाकर ३२ प्रकार के तथा विभिन्न आकार के (४ प्वाइंट से लेकर ३६ प्वाइंट तक के) मुद्रणाक्षरों का उपयोग किया जा सकता है।

इंग्लैण्ड, अमरीका तथा फ्रान्स में जितनी पुस्तकें इन मशीनों से छपी हैं उनमें इनकी पूरी क्षमताओं का तो क्या, थोड़ी-बहुत का भी उपयोग नहीं किया गया है। आगे चलकर आकर्षक छपाई के लिए ये मशीनें वरदान सिद्ध होंगी, इसमें सन्देह नहीं। किसी उपन्यास या नाटक के मुद्रण में इन मशीनों के विभिन्न मुद्रणाक्षरों का कमाल नहीं दिखाया जा सकता। इनका उपयोग तो कोई कुशल मुद्रक, संश्लिष्ट सूचियों, तालिकाओं, विज्ञापनों तथा शब्दकोषों आदि के मुद्रण में ही कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन मशीनों की क्षमताओं का सम्यक् उपयोग उन्हीं चीजों की छपाई में किया जा सकता है जिनमें विभिन्न आकार-प्रकार के मुद्रणाक्षरों के उपयोग की गुञ्जाइश हो। यदि इन नई मशनों से छपाई की लागत में कुछ कमी करना अभीष्ट हो तो लेखकों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे टाइप की हुई पाण्डुलिपियों को अन्तिम रूप से तैयार करके दें। इन मशीनों के उपयोग में बड़ी ही सतर्कता तथा सूझ-बूझ से काम लेने की आवश्यकता है।

धीरे-धीरे पाश्चात्य देशों में इनका प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। आशा है शीघ्र ही भारत के भी कुछ विशेष नगरों में इन मशीनों द्वारा छपाई सम्भव हो सकेगी।

हमारा नवीन प्रकाशन

सटक सीताराम

लेखक—प्रो० संसारचन्द्र एम० ए०

लेखक के व्यंग्य-निबन्धों का संकलन। प्रत्येक पृष्ठ पर आप व्यंग्य की अपूर्व अभिव्यञ्जना से प्रभावित हुए बिना न रहेंगे। हिन्दी साहित्य के इस उपेक्षित अंग की श्रीवृद्धि कर लेखक ने महान् कार्य किया है।

मूल्य ३)

गुरुदत्त के दो उपन्यास पुनर्मुद्रित

मायाजाल मूल्य ५)
उमड़ती घटाएँ मूल्य ६)

गुरुदत्त द्वारा रचित हमारा अन्य उपन्यास-साहित्य

सहस्रबाहु ६)
लुढ़कते पत्थर ५।।)
नगर परिमोहन ५।।)

गुरुदत्त का सम्पूर्ण साहित्य हमारे यहाँ से प्राप्त करें।

हमारे प्रकाशनों का नया सूचीपत्र छप गया है, मंगवाएँ—

ओरिएण्टल बुक डिपो,

नई सड़क, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशकीय मञ्च

मध्यप्रदेश में राष्ट्रीयकृत पुस्तकें पुस्तक-विक्रेताओं को सरकार से १० प्रतिशत कमीशन तथा फ्री डिलिवरी की सुविधा से प्राप्त हो सकेंगी। पुस्तकों का कुल मूल्य कमीशन काटकर सरकारी कोषागार में पहले जमा कराना होगा। पुस्तकों के आर्डर अधीक्षक, पाठ्य-पुस्तक, मध्यप्रदेश, भोपाल, उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, ग्वालियर, एवं उप-अधीक्षक, गवर्नमेण्ट रिजनल प्रेस, इन्दौर को भेजा जा सकता है।

* * *

मई ५८ के अन्तिम सप्ताह में मद्रास में मद्रास राज्य की ४८वीं एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस का वार्षिक जलसा हुआ। साउथ इण्डियन टीचर्स यूनियन के अध्यक्ष श्री टी० पी० श्रीनिवासवर्धन एम० एल० सी० अध्यक्ष थे। एक प्रस्ताव द्वारा इस सम्मेलन ने मद्रास सरकार की पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की नीति की भर्त्सना की।

* * *

भारत सरकार के उद्योग और वाणिज्य मन्त्रालय ने घोषणा की है कि पाठ्य पुस्तकों अथवा सामान्य पुस्तकों का प्रकाशन करने वाले प्रकाशकों को अपने उपयोग के लिए नेपा मिल्ज़ का कागज़ बिना आबकारी टैक्स के मिल सकेगा।

* * *

बिहार विधान सभा की एस्टिमेट कमेटी विचार-विमर्श के बाद इस नतीजे पर पहुँची है कि बिहार की टेक्स्टबुक एण्ड एजुकेशन लिटरेचर कमेटी की सक्रियताएँ उन उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर पा रहीं जिनके लिए इस कमेटी का आयोजन किया गया था।

* * *

जामिया मिलिया, दिल्ली को "ज्ञान सरोवर" के प्रथम भाग के दूसरे संस्करण के सम्बन्ध में भारत सरकार के शिक्षा-मन्त्रालय ने २९,७१३ रुपये प्रदान किये।

* * *

बालोपयोगी पुस्तकों की वार्षिक प्रतियोगिताओं में भेजी गई पुस्तकों के चुनाव में सहायता देने के लिए केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने एक चिल्ड्रेन्स लिटरेचर कमेटी की स्थापना की है।

* * *

यदि आप अब तक
प्रकाशन समाचार
के ग्राहक नहीं हैं
तो आज ही ३) तीन रुपये मनीआर्डर से भेजकर एक वर्ष के लिए ग्राहक बनें।
पोस्टल आर्डर स्वीकार नहीं किये जाते।
प्रबन्ध विभाग
प्रकाशन समाचार
राजकमल प्रकाशन प्रा० लि०
८ फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली

राजस्थान में प्रकाशकों व पुस्तक-विक्रेताओं की हड़ताल

राजस्थान के प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेताओं ने बोर्ड ऑफ नैशनलाइज़ेशन ऑफ टैक्स्ट बुक्स के इस निर्णय के विरुद्ध अनिश्चित समय के लिए हड़ताल की घोषणा की है कि भविष्य में बोर्ड द्वारा प्रकाशित पुस्तकें हैडमास्टरों व डिप्टी इंस्पैक्टर ऑफ स्कूल्स के माध्यम से ही बेची जायँगी, न कि पुस्तक-विक्रेताओं के माध्यम से। यह निर्णय राज्य के सभी पुस्तक-विक्रेताओं की एक सभा में ३ जुलाई, १९५८ को जयपुर में किया गया। सभा में राज्य सरकार के निर्णय को पुस्तक-व्यवसाय पर भारी प्रहार कहा गया।

जोधपुर के पुस्तक-विक्रेताओं का एक प्रतिनिधि-मण्डल शिक्षा-विभाग के सेक्रेटरी से मिला और उनसे अनुरोध किया गया कि पुस्तकों का वितरण विक्रेताओं के माध्यम से ही होना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक-परिचय

उपन्यास

बुढ़िया की गाय, : भारत के विश्वविख्यात कथाकार श्री मुल्कराज आनन्द का नवप्रकाशित उपन्यास है। लेखक ने होशियारपुर तथा उसके आसपास के दो पहाड़ी गाँवों को कथा का। घटना-क्षेत्र बनाया है और घटना-काल है १९४७ के बाद का। लेखक ने अपने इस उपन्यास में स्पष्ट रूप से यह दिखाने की कोशिश की है कि आज भी पहाड़ी इलाकों की हालत कुछ बहुत सुधरी हुई नहीं है। कर्ज और गरीबी के बोझ से दबे हुए इन्सानों की जिन्दगी पशुओं से भी गई बीती है जहाँ पेट के लिए आबरू बेचना पाप नहीं समझा जाता और जहाँ एक बूढ़ी माँ के सामने अपने पेट के सहारे 'गाय' और इज्जत की प्रतीक विवाहित 'बेटी' में से किसी एक को बेचने का प्रश्न उपस्थित हो तो वह किसी साठ साल के बूढ़े और नपुंसक सेठ के हाथ अपनी 'बेटी' को ही बेच देना पसन्द करेगी। उसमें माँ की ममता है लेकिन गरीबी और भुखमरी की आग ने उसे चेतनाहत बना दिया है। वर्णन की स्वाभाविकता तो है ही, कथा-प्रसंगों की बुनावट तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी यह कृति अत्यन्त उत्कृष्ट बन पड़ी है, पंछी, गौरी, केसरो, लक्ष्मी, अमरू, रफीक चाचा आदि कुछ ऐसे पात्र हैं जो मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। हिन्दी कथा-साहित्य को यह उपन्यास एक महत्त्वपूर्ण देन है, इसमें सन्देह नहीं। इसका प्रकाशन हुआ है, **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से और मूल्य है ५·५० न० पै०।

* * *

टेढ़ी लकीर : उर्दू की प्रसिद्ध प्रगतिशील लेखिका इस्मत चुग़ताई के उपन्यास का रूपान्तर। उपन्यास की नायिका एक मुस्लिम घराने की शिक्षित नवयुवती है जिसे जीवन के कटुतम अनुभवों ने प्रताड़ित किया है। नायिका का सम्बन्ध कालेज में शिक्षा पाने के दिनों में प्रगतिशील आन्दोलन से हुआ और इस नाते उपन्यास में लेखिका का उस आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण भी स्पष्ट हुआ है जो काफ़ी रोचक है। भाषा हिन्दी न होकर नागरी लिपि में उर्दू ही है जो उर्दू न जानने वालों के लिए सुबोध नहीं है। प्रकाशक हैं अदबी पब्लिशर्स, बम्बई। क्राऊन आकार के ४६४ पृष्ठ। अजिल्द।

* * *

कहानी

'रश्मियाँ : श्री प्रमोदकुमार की २१ लघु-कथाएँ और गद्य-गीत संकलित हैं, प्रायः सभी कृतियाँ भाव-प्रधान हैं। भाषा, शैली तथा शिल्प के नये प्रयोग श्री प्रमोदकुमार ने इनमें प्रस्तुत किये हैं। कहानी में जितनी कल्पना की आवश्यकता होती है, उतनी इनमें नहीं है। यथार्थ की अनुभूति ने उनकी कल्पना को जो निखार दिया है, वह अद्भुत है। डिमाई साइज़ के ९२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक **आदित्य प्रकाशन, गया** ने प्रकाशित की है और वहीं से २ रुपये ७५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

'अभ्यास' : में श्री प्रमोदकुमार की 'रश्मियाँ' के बाद लिखी हुई १४ कहानियों का संग्रह है। इनमें उनकी कुछ पुरानी कहानियाँ भी हैं। इस संग्रह पर 'अभिमत' देते हुए आचार्य शिवपूजन सहाय ने यह ठीक ही लिखा है कि "लेखक के हृदय और मस्तिष्क में अपने देश और समाज के कल्याण के लिए बड़े उत्सुक भाव एवं अनन्त कल्पनाएँ हैं, जिन्हें वह बड़े कौशल के साथ अपनी वाणी और लेखनी द्वारा व्यक्त कर देता है।" क्राउन साइज़ १५२ पृष्ठ की यह सजिल्द पुस्तक भी आदित्य प्रकाशन, गया ने ही प्रकाशित की है और ३ रुपये २५ नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

लाल कनेर

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की अमर नाट्य रचना जिसमें आज की सांघातिक जड़वादी सभ्यता के विरुद्ध मानवी नन्दिनी द्वारा कवि ने मर्मस्पर्शी सन्देश दिया है। मूल बंगला से अनुवादक हैं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी। मूल्य २.०० मात्र

दूध-गाछ

देवेन्द्र सत्यार्थी का नया उपन्यास। पृष्ठभूमि में संगीत की मधुर झंकार आदि से अन्त तक पाठक का मन मोहने में समर्थ है। लय और गति इस उपन्यास की अपनी विशेषताएँ हैं। भाषा प्रवाहयुक्त; प्रत्येक शब्द सार्थक। मूल्य ६.०० मात्र

हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण

डॉ० भोलानाथ तिवारी द्वारा लिखी यह पुस्तक हिन्दी के एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है। निश्चय ही अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार से इस व्याकरण से पर्याप्त सहायता मिलेगी, हालांकि यह पुस्तक हिन्दी भाषी विद्यार्थियों के लिए भी कम उपयोगी सिद्ध न होगी। मूल्य ३.५० मात्र

कविताएँ

कीर्ति चौधरी की १९५३ और १९५७ के बीच लिखी गई भाव-गहन कविताएँ। मूल्य ३.५० मात्र

प्राचीन भारतीय वि विभूतिय

विद्वान् इतिहासज्ञ ... मुकर्जी ... पुस्तक का हिन्दी ... पुस्तक ... विशिष्ट विभूतियों ... गौतम बु... और हर्ष की जीवन... करते हुए ... व्यवस्था का अपूर्व ... या गया है ... गौरवपूर्ण विचारधा... करनेवा... के लिए यह पुस्तक ... होगी।

रोड़े और पत्थर

डॉ० देवराज का नव उपन्यास। ... एक आदर्शवादी नवयुवक ... सुविधा जुटाने के ... मकान' ... तदनन्तर परिस्थि... ता करने ... इस दौरान में अवि..., सामा... इस मनोवैज्ञानिक ... तन्तु है ... में एक नया प्रयोग ...

कवि प्रसाद

प्रसाद के काव्य-पक्ष ... लानाथ ... चनात्मक अध्ययन। ... पर अब ... विद्यार्थियोपयोगी पु... या भिन्न ...

राजकमल प्रकाशन प्र...

दिल्ली : इलाहाबाद : बम्बई

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतीय वि विभूतियाँ

तिहासज्ञ कुद मुकर्जी द्वारा लिखित अंग्रेजी का हिन्दी इस पुस्तक में भारत की पाँच विभूतियों- गौतम बुद्ध, अशोक, समुद्रगुप्त की जीवन करते हुए तत्कालीन सामाजिक का अपूर्व किया गया है। प्राचीन भारत की विचारधा न करनेवाले किसी भी विद्यार्थी यह पुस्तक होगी। मूल्य ३.५० मात्र

पत्थर

राज का नव उपन्यास। जीवन-संघर्ष में रत दर्शवादी नवयुवक का पठन-पाठन की जुटाने के मकान' बनाने की लालसा; परिस्थिति झौता करने की मजबूरी, और न में अविरल, सामाजिक-आर्थिक अनुभव वैज्ञानिक सूक्ष्म तन्तु हैं। उपन्यास-साहित्य या प्रयोग मूल्य २.२५ मात्र

काव्य-पक्ष भोलानाथ तिवारी द्वारा आलो- अध्ययन पर अब तक लिखी गई अन्य योगी पुस्तक से भिन्न। मूल्य ४.०० मात्र

पुनर्मुद्रण

१.	हिन्दू सभ्यता : डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी। अनुवादक, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, संशोधित द्वितीय संस्करण	७.५०
२.	भारतीय संस्कृति : प्रो० शिवदत्त ज्ञानी	५.५०
३.	हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला	२.००
४.	हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ : मूल्यांकन माला	२.००
५.	सरल मनोविज्ञान : प्रो० हंसराज भाटिया	४.००

कुछ आगामी प्रकाशन

१. मध्यकालीन हिन्दी गद्य : प्राचीन गद्य का आलोचनात्मक अध्ययन : हरिमोहन श्रीवास्तव।
२. अजन्ता के चित्रकूट : प्रौढ़ोपयोगी : रायकृष्णदास, राय आनन्द कृष्ण।
३. लोक-परलोक : उपन्यास : उदयशंकर भट्ट
४. अकेले कण्ठ की पुकार : कविता : अजितकुमार
५. जानने की बातें : बाल-प्रौढ़ोपयोगी संदर्भ ग्रन्थ : देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय (दस भागों का सेट)
६. आधी रात का सूरज : कहानी-संग्रह : शमशेरसिंह नरूला

…श प्राइवेट लिमिटेड

…द बम्बई : पटना : मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आटे के सिपाही' : में श्री आनन्दप्रकाश जैन की 'देवताओं की चिता', 'कवि का पाप', 'प्रणय की भीख', 'अन्तिम नग', 'बन्धक पुत्र' और 'आटे के सिपाही' शीर्षक छः ऐतिहासिक कहानियाँ सम्मिलित हैं। आनन्दप्रकाश जैन ऐतिहासिक कथाकार के रूप में अच्छी ख्याति अर्जित कर चुके हैं। इन कहानियों में भी उनका यही रूप उभरकर सामने आया है। 'देवताओं की चिता' उनका लघु उपन्यास है। इसका प्रकाशन प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ ने किया है। क्राउन साइज के १५६ पृष्ठ की यह पुस्तक २ रुपये २५ नये पैसे में मिल सकती है।

* * *

कविता

'कणिका' : श्री शंकरलाल माहेश्वरी के नवीनतम गीतों का संकलन है। प्रायः सभी गीतों में उनकी अनुभूति झाँकती-सी लगती है। भाषा, भाव और कल्पना की त्रिवेणी इन सभी गीतों की विशेषता है। गेयात्मकता के तत्त्व भी इन गीतों में प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। डिमाई साइज़ के ८८ पृष्ठों की इस सजिल्द पुस्तक का प्रकाशन जुही कुंज, कलकत्ता ने किया है और २ रुपये ५० नये पैसे में प्राप्य है।

* * *

गीत में कैसे लिखूँ : तरुण-कवि श्री जगदीश शर्मा के ५४ भावाकुल गीतों का संग्रह है। सजिल्द पुस्तक की पृष्ठ-संख्या क्राऊन आकार में १११, मूल्य दो रुपये पचास नये पैसे, प्रकाशक **ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा**।

* * *

तात्या टोपे : १८५७ के जगत् विख्यात अमर-सेनानी के जीवन पर आधारित एक ओजपूर्ण महाकाव्य है। इसके ३१ सर्गों में श्री लक्ष्मीनारायण कुशवाहा एम० ए० ने तात्या टोपे के जन्मकाल से लेकर उनके जीवन की प्रायः समस्त महत्त्वपूर्ण घटना-प्रसंगों का अत्यन्त रोमांचक तथा सजीव वर्णन किया है। बीच-बीच में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई नाना साहब आदि की जीवन-घटनाएँ तथा १८५७ की क्रान्ति के विविध प्रसंग भी आ गए हैं। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह महाकाव्य सराहनीय है, छपाई का स्तर कुछ और ऊँचा होता तो अच्छा होता। इसका प्रकाशन हुआ है **केशव प्रकाशन, केशव मन्दिर, काशीपुर (नैनीताल) उ० प्र०** से और मूल्य है ५)।

* * *

सेतु बन्ध : प्राकृत भाषा के अमर रचनाकार, महाकवि प्रवर सेन की विख्यात कृति है। इसके काव्य-सौष्ठव तथा शिल्प-सौन्दर्य को देखकर ही अनेक आलोचकों तथा विद्वानों को इस भ्रामक धारणा पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ा कि यह महाकाव्य कविकुलगुरु महाकवि कालिदास की रचना है जबकि कालिदास वास्तव में इस ग्रन्थ के लिपिक का नाम था। इस महाकाव्य में बालिवध-से लेकर रावण-वध के बाद तक की राम कथा का वर्णन है, बीच में सेतु बाँधने के प्रसंग को अधिक विस्तार दे देने के कारण ही इसका नामकरण सेतुबन्ध हुआ, वैसे इसका 'रावण-वध', 'रामसेतु' तथा 'दशमुख वध' के नाम से भी उल्लेख किया जाता है। इस अनुपम महाकाव्य का सफल हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करके डॉ० रघुवंश ने वास्तव में एक सराहनीय कार्य किया है। अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि कवि की कल्पना, तथा काव्य-चित्रों को बिना खण्डित भाषान्तरित कर दिया जाय। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का प्रकाशन राजकमल अमर साहित्य पुस्तकमाला के अन्तर्गत **राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** से हुआ है और मूल्य है ४·५० न० पै०।

* * *

चक्रवाल : दिनकरजी की उत्कृष्ट कविताओं का प्रतिनिधि संकलन है। 'रेणुका' से लेकर 'नील कुसुम' तक उनकी प्रत्येक काव्य-पुस्तक से चुनी हुई कुछ सौ कविताएँ इसमें संकलित हैं। आरम्भ में दी गई लगभग अस्सी पृष्ठों की भूमिका में रीतियुग से लेकर प्रयोगवाद तक हिन्दी की समस्त काव्य-प्रवृत्तियों का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रकाशन **उदयाचल, पटना–४** से हुआ है और मूल्य है १०) रु०। सफ़ाई-छपाई सभी कुछ सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सुरुचिपूर्ण है।

* * *

भग्न मूर्ति : मराठी के विख्यात कवि आत्माराम रावजी देशपांडे 'अनिल' की बहुप्रशंसित काव्य-कृति का डॉ० प्रभाकर माचवे द्वारा प्रस्तुत किया गया सफल हिन्दी रूपान्तर है। भग्न मूर्ति एक बिलकुल नये ढंग का खण्ड-काव्य है जो कथात्मक न होकर विश्लेषणात्मक है। एक खण्डित मूर्ति पर विचार करते-करते कवि साँची, अजन्ता, वेरूल, मथुरा म्यूज़ियम और वहाँ से हमारी सम्पूर्ण संस्कृति के ह्रास की बृहद् और विशद कारण-मीमांसा तक पहुँचकर यह मौलिक निष्कर्ष निकालता है कि "रक्षण-तन्त्र की उपेक्षा के कारण हमारी संस्कृति आज ऐसी खण्डहरनुमा हालत में है। बृहदाकार काफ़ी नहीं है, उसके साथ-साथ बौद्धिक विकास भी अत्यन्त आवश्यक है।" इस प्रकार यह छोटा-सा काव्य हमारे इतिहास, कला, दर्शन और समूची जीवन-पद्धति पर एक नया भाष्य है। अनुवादक ने अत्यन्त सतर्कता बरतते हुए इस बात का प्रशंसनीय प्रयास किया कि मूल के शब्द तथा शैली की विशेषताओं का निर्वाह हो। **साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली** की ओर से **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि०, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना, मद्रास** ने इसे प्रकाशित किया है और मूल्य है १) रु० मात्र।

* * *

उदयाचल, पटना—४ ने इधर दिनकरजी की सभी नई और पुरानी कृतियों के नये संस्करण प्रकाशित किये हैं। 'प्रकाशन समाचार' में समीक्षार्थ दिनकरजी की नई-पुरानी आठ काव्य-कृतियाँ प्राप्त हुई हैं। **'नील कुसुम'** उनकी नई कविताओं का बहुप्रशंसित संग्रह है जिसे वर्ष की सर्वश्रेष्ठ काव्य-कृति मानकर बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने पुरस्कृत भी किया है। इस दर्शनीय, पठनीय तथा संग्रहणीय पुस्तक का मूल्य है ३) रु०। इससे भी नई काव्यकृति है **'सीपी और शंख'**। इसमें कुल पचास कविताएँ संग्रहीत हैं जो भाव, भाषा, शैली तथा छन्द-विधान आदि सभी दृष्टियों से विश्व की आधुनिक काव्य-चेतना से अनुप्राणित तथा बौद्धिक-रस से परिपूर्ण हैं। **नये सुभाषित** अपनी तरह की एक निराली ही रचना है। सैकड़ों विषयों के विस्तार

हमारे अनमोल हिन्दी प्रकाशन

(हमारी पुस्तकों को देखकर लोग कह उठते हैं कि ये हिन्दी में अपने विषय की बेजोड़ और अद्वितीय हैं।)

(१) हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार—लेखक सिंहासन राय 'सिद्धेश'। इसमें हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों की प्रामाणिक जीवनी, उनकी साहित्य-सेवा और भाषा-शैली का सुन्दर वर्णन है। मूल्य २॥)

(२) वादविवाद और व्याख्यान प्रवेशिका—लेखक तिवारी और राय। इसमें हाईस्कूलों और कॉलेजों में होने वाले वादविवाद (पक्ष और विपक्ष) और व्याख्यान-विषयों का ओजपूर्ण आकर्षक शैली में वर्णन है। मूल्य ३) मात्र

(३) निबन्ध-भारती—लेखक प्रो० 'सिद्धेश।' हाईस्कूलों और हायर सेकण्ड्री स्कूलों की उच्च कक्षाओं के छात्रों के लिए हिन्दी निबन्ध की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक। आधुनिक विषयों पर निबन्ध। मूल्य ३)

(४) आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध—लेखक प्रोफेसर रूपनारायण उपाध्याय एम० ए०। कालेज के छात्रों के लिए। मूल्य ४)

(५) निबन्धालोक—लेखक प्रो० 'कमलेश'। मौलिक साहित्यिक निबन्ध। मूल्य ३)

प्राप्ति-स्थान

आदर्श पुस्तक भण्डार

५८, अपर चितपुर रोड, कलकत्ता-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को समेटने वाले ये लगभग दो सौ पद इतने चुटीले और सारगर्भित हैं कि पढ़कर कवि की निराली सूझ-बूझ पर चमत्कृत रह जाना पड़ता है। मूल्य है २) रु०। व्यंग्य-काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण दिनकरजी ने **नीम के पत्ते** में प्रस्तुत किया है। इस संग्रह की कविताओं में ऐसा तीखा और लक्ष्यवेधी व्यंग्य प्रस्तुत किया है जिसका वार अचूक है। यही कारण है कि काया में लघु होते हुए भी आत्मा की गुरुता ने इसे इतना लोकप्रिय बना दिया है। मूल्य १) रु० मात्र है। **इतिहास के आँसू** दिनकरजी की सबसे अधिक लोकप्रिय तथा भावना-प्रधान कविताओं का संग्रह है। भारत के अतीत का ऐसा मार्मिक चित्र कवि ने प्रस्तुत किया है कि पढ़कर मन मसोसने लगता है। मूल्य है ३) रु०। ऐसी ही काव्य-कृति है **दिल्ली** जिसमें कवि ने अपनी चार लम्बी कविताओं में दिल्ली का अतीत और वर्तमान साकार कर दिया है—उस दिल्ली का जो युगों से महलों और खण्डहरों की महानगरी रही है, जो बस-बसकर उजड़ी है और उजड़-उजड़कर फिर बसी है, जिसने भारत के भाग्य के जाने कितने चढ़ाव-उतार देखे ही नहीं स्वयं भी अनुभव किये हैं। मूल्य है मात्र रु० १)। तीन लम्बी कविताओं का संग्रह है **बापू** जो गांधी के जीवन पर आधारित एक मार्मिक खण्डकाव्य-सा बन गया है। अपनी ओर से श्रद्धामिश्रित करुणापूर्ण अनुभूतियों की इन तीन अंजलियों के माध्यम से कवि ने बापू के प्रति अपने हृदय में संचित उद्गारों को व्यक्त करने का सफल प्रयास-मात्र किया है। मूल्य है १.५० न० पै०। उपर्युक्त काव्य-कृतियों में से अधिकांश अपेक्षाकृत नई ही हैं केवल **रेणुका** ही एक पुरानी रचना है। यह दिनकरजी की कविताओं का प्रथम कविता-संग्रह है। दिनकरजी को ख्याति के शिखर पर पहुँचाने में इन कविताओं का बहुत बड़ा हाथ है। यौवन के उद्दाम उल्लास एवं उत्साह से प्रेरित होकर लिखी गई इन कविताओं में भारत के अतीत की गौरवपूर्ण झाँकी, वर्तमान की आकुल वेदना तथा अकुण्ठित संघर्ष एवं भविष्य के उज्ज्वल स्वप्न अंकित हैं। मूल्य है ३) रु०।

इन सभी पुस्तकों की सफ़ाई-छपाई सुन्दर है तथा मुखचित्र आदि सुरुचि पूर्ण एवं आकर्षक हैं। व्यक्तिगत पाठकों तथा पुस्तकालयों के लिए ये काव्य-कृतियाँ संग्रहणीय हैं।

* * *

आलोचना, निबन्ध

'कविप्रसाद': डॉक्टर भोलानाथ तिवारी की नवीनतम समीक्षा-कृति है। इसमें विद्वान् लेखक ने प्रारम्भ में कवि प्रसाद के काव्य की पृष्ठभूमि देकर उनके जीवन पर भी उपयोगी प्रकाश डाला है। इसकी 'प्रारम्भिक कविताएँ और मान्यताएँ', 'चित्राधार', कानन कुसुम', 'प्रेम पथिक', 'करुणालय', 'महाराणा का महत्त्व', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' तथा 'कामायनी' आदि अध्यायों में तिवारीजी ने उनके काव्य तथा उसकी विशेषताओं पर विशद प्रकाश डाला है। अन्त में 'छायावाद', 'रहस्यवाद', 'नियतिवाद', 'गीति-काव्य', 'प्रकृति चित्रण', 'भाषा और कलाकार' तथा 'छन्द' आदि अध्यायों में उनके काव्यवादों का विवेचन करके उनकी भाषा तथा छन्द-सम्बन्धी मान्यताओं का मार्मिक निरूपण किया है। डिमाई साइज़ के १६६ पृष्ठ की यह पुस्तक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली ने प्रकाशित की है और वहीं से चार रुपये में प्राप्य है।

* * *

संस्कृत और उसका साहित्य,: भारतीय साहित्य परिचय नामक पुस्तकमाला की सद्यःप्रकाशित पुस्तक है। इसके विद्वान् लेखक डॉ० शान्तिकुमार नानूराम व्यास ने इस नन्हे से ग्रन्थ में संस्कृत भाषा की उत्पत्ति और विकास पर विचार करते हुए उसके वैदिक साहित्य, इतिहास-पुराण, महाकाव्य, लघु-काव्य, नाटक, गद्य साहित्य, शास्त्रीय साहित्य, जैन और बौद्ध साहित्य आदि संस्कृत-वाङ्मय की लगभग समस्त शाखाओं का एक सरल, रोचक, सुगठित और सोदाहरण विश्लेषण उपस्थित किया है। उपसंहार में आधुनिक संस्कृत-साहित्य के कतिपय ग्रन्थों और ग्रन्थ-कारों पर भी यत्किंचित् प्रकाश डाल दिया गया है। इस प्रकार सामान्य पाठकों तथा विश्वविद्यालय के प्रारम्भिक छात्रों को समस्त संस्कृत साहित्य का विशद सिंहावलोकन कराने और उन्हें उसके विस्तृत अध्ययन की ओर प्रेरित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय के लिए अनुपम प्रकाशन

इसी मास के प्रकाशन

उपन्यास

सूखे पेड़, सब्ज़ पत्ते : गुलशन नन्दा ४।।)

आँचल में दूध आँखों में पानी : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ४।।।)

ग़ज़ाला : शौकत थानवी ३।।)

काव्य

उर्दू की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें : सं० नूरनबी अब्बासी २।।)

विज्ञान

चन्द्रलोक (सचित्र) : बसन्तकुमार चटर्जी २।।)

आगामी मास के आकर्षण

जीवन-दर्शन

आपका व्यक्तित्व : आनन्द कुमार ४।।)

उपन्यास

तन के उजले मन के काले : जमनादास 'अख़्तर' ४)

नसीम : शौकत थानवी ३।।)

कहानियाँ

दो गज़ ज़मीन : टालस्टाय ३)

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

काव्य—

दीवाने ग़ालिब (उर्दू काव्य) : सं० मुग़नी अमरोहवी नूरनबी अब्बासी ६)

राजनीतिक व ऐतिहासिक—

मेवाड़ : टॉड ३।।।)

बाचा खान : फ़ारिग बुख़ारी ६)

नेहरू विश्व-शांन्ति की खोज में : ओमप्रकाश गुप्ता ४।।)

आध्यात्मिक—

जीना सीखो : देसराज व गन्धर्व ३)

नाटक—

जब पर्दा उठा : हास्य एकांकी : प्रकाश पण्डित ४।)

मेरे नाटक : रवीन्द्रनाथ टैगोर ३।।)

डाकघर : रवीन्द्रनाथ टैगोर ।।=)

कहानियाँ—

उड़ानें : कृष्णचन्द्र ३।।)

एक ख़त एक ख़ुशबू : कृष्णचन्द्र ३।)

सीमान्त : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।।)

आँचल और आँसू : शिक्षा रानी निगम ३।।)

पागल : ख़लील जिब्रान १।।)

लायसेंस : मिन्टो ३।।)

उपन्यास—

एक नदी दो पाट : गुलशन नन्दा ४।)

पत्थर के होंठ : गुलशन नन्दा ३।।।)

बादल छँट गए : कृष्णचन्द्र ३)

ललिताङ्गी : यादवचन्द्र जैन ३।।।)

इन्शा अल्लाह : शौकत थानवी ३)

कुतिया : शौकत थानवी ४)

कार्टून : शौकत थानवी ४।)

चार सौ बीस : शौकत थानवी ३।)

साँच को आँच : शौकत थानवी ३।।।)

मिट्टी का कलंक : यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र ३)

तूलिका : सोमर सेट मॉम ५।)

धरती की बेटी : कमल शुक्ल ३।।)

राख की परतें : कमल शुक्ल ३।)

एक ही पतवार : शिवव्रतलाल वर्मन ३।)

शाही लकड़हारा : शिवव्रतलाल वर्मन ३।।)

प्रेम पुजारिन : पं० सुदर्शन २।)

कौन किसी का ? : रवीन्द्रनाथ टैगोर २।)

समाज का अत्याचार : शरत् चन्द्र चटर्जी २।।।)

काश्मीर की बेटी : जमनादास 'अख़्तर' २।।।)

आग : जमनादास 'अख़्तर' २।।)

आँसू : जमनादास 'अख़्तर' ३।)

बुर्दा फरोश : जमनादास 'अख़्तर' २।)

क्रान्तिकारी रमणी : अनु० तीर्थराम ४।।)

शैतान पुजारी : अनु० तीर्थराम २।।)

विज्ञान—

वैज्ञानिक चाँद : बसन्तकुमार चटर्जी १।।)

विज्ञान का चमत्कार : देसराज व गन्धर्व ।।=)

विज्ञान के मनोरंजन : श्री शरण ।।=)

कालिदास साहित्य—(अनु० श्री शरण)

रघुवंश, मेघदूत, विक्रमोर्वशी, कुमारसम्भव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, नलोदय

मूल्य प्रत्येक का १।)

व्यापारियों और लायब्रेरियों को विशेष सुविधा, बड़े सूचीपत्र और विवरण के लिए लिखिये।

नारायण दत्त सहगल एण्ड सन्ज़, दरीबा कलां, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक पुस्तकालय में संग्रह करने योग्य पुस्तकें

कोश

बृहत् हिन्दी कोश	सम्पादक कालिकाप्रसाद : लेदर क्लाथ राजवल्लभ सहाय जिल्द मू०	२५.००
	मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव चमड़े की जिल्द	३२.००
ज्ञान शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	१५.००
पारिभाषिक शब्दकोश	सम्पा० मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव	४.००

राजनीतिक पुस्तकें

भारतीय राजनीति—विक्टोरिया से नेहरू तक	रामगोपाल एम० ए०	११.००
राष्ट्रीयता और समाजवाद	आचार्य नरेन्द्रदेव	११.००
अन्तर्राष्ट्रीय विधान	डॉ० सम्पूर्णानन्द	११.००
चीन कल और आज	के० एम० पणिक्कर	५.००
राजनीतशास्त्र	प्राणनाथ विद्यालंकार	४.५०
जपान की राजनीतिक प्रगति	अनु० लक्ष्मणनारायण गर्दे	५.५०
चीन और भारत	अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	१.५०

धर्म और दर्शन

सूफ़ीमत साधना और साहित्य	रामपूजन तिवारी	११.००
विश्व के धर्म प्रवर्तक	रघुनाथसिंह एम० पी०	६.५०
वैज्ञानिक अद्वैतवाद	स्व० रामदास गौड़ एम० ए०	२.२५
चिद्विलास	डॉ० सम्पूर्णानन्द	५.००
दर्शन का प्रयोजन	डॉ० भगवानदास	३.५०
नीतिशास्त्र	सुश्री शान्ति जोशी	८.००

पत्रकारिता

पत्र और पत्रकार	माननीय पं० कमलापति त्रिपाठी तथा पुरुषोत्तमदास टण्डन 'पत्रकार'	६.५०
भारतीय पत्रकार कला	सम्पादक रौलेण्ड ई० वूलसले	६.५०
समाचारपत्रों का इतिहास	पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी	६.५०
आधुनिक पत्रकार कला	रा० र० खाडिलकर	४.००

मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान	हंसराज भाटिया	४.५०

भ्रमण

हालैण्ड में पचीस दिन	रा० र० खाडिलकर	३.००
आर्यावर्त	रघुनाथसिंह एम० पी०	३.००

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास	एक इतिहास प्रेमी	८.००
पश्चिमी यूरोप प्रथम भाग	अनुवादक छविनाथ पाण्डेय एम० ए० एल-एल० बी०	४.५०
गांधी हत्याकाण्ड	सम्पादक विहंगम	५.००
आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफ़सरों का मुक़दमा	३५० पृष्ठों की ऐतिहासिक पुस्तक	२.००

संस्मरण

जेल के वे दिन	विजयालक्ष्मी पंडित	२.५०
कुछ स्मरणीय मुक़दमे	श्री कैलाशनाथ काटजू	८.००
मेरे बचपन की कहानी	श्रीमती नयनतारा सहगल	६.००

साहित्य

वक्रोक्ति और अभिव्यंजना	रामनरेश वर्मा एम० ए०	४.५०
गीतिकाव्य	प्रो० रामखेलावन एम० ए०	५.५०
तुलसीदास और उनका युग	डॉ० राजपति दीक्षित	८.००
सामयिकी	शान्तिप्रिय द्विवेदी	४.००
धरातल	शान्तिप्रिय द्विवेदी	२.७५
कल्पलता	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	२.५०

कथा साहित्य

उलूकतन्त्र	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.००
शव साधन	बलदेवप्रसाद मिश्र	२.५०
तूफ़ान	सर्वश्रेष्ठ कहानी-लेखकों की कहानियों का संग्रह	२.५०

उपन्यास

पुनर्जीवन	महात्मा टालस्टाय	६.५०
कर्त्तव्याघात	देवनारायण द्विवेदी	४.५०
नूतन ब्रह्मचारी	स्वर्गीय पं० बालकृष्ण भट्ट	०.६३
देशभक्त और देशद्रोही		२.५०
बयालीस	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	४.५०
गेंजी की कहानी	मुरासाकी शिकाबू	४.५०

आदर्श जीवन चरित्र

सरदार पृथ्वीसिंह	राहुल सांकृत्यायन	४.००

विज्ञान

विज्ञान की प्रगति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	३.५०
विज्ञान के चमत्कार	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
परमाणु शक्ति	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	२.७५
घरेलू बिजली	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	४.००
सरल विज्ञान	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	१.०६

ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में यह पुस्तक पूर्ण समर्थ है। इसका प्रकाशन हुआ है **राजकमल प्रकाशन (प्रा०) लि० दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई, पटना तथा मद्रास** से और मूल्य है रु० २ २५।

* * *

पालि व्याकरण : भिक्षु धर्मरक्षित द्वारा विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लिखा गया पालि भाषा का व्याकरण। पालि का पठन-पाठन देश के अनेक विद्यालयों में आज हो रहा है और इसका कोई सरल व्याकरण फ़िलहाल सुलभ नहीं था।

क्राऊन आकार की १८७ पृष्ठों की इस पुस्तक का प्रकाशन **ज्ञान मण्डल लि०, वाराणसी** ने किया है, मूल्य दो रुपया पच्चीस नये पैसे है।

* * *

रेती के फूल : दिनकरजी के लोकप्रिय निबन्धों का संग्रह है। इसमें कुल पन्द्रह निबन्ध हैं जिनमें से कुछ व्यक्तिगत निबन्ध हैं, कुछ उद्बोधनात्मक और अधिकांश विचार-प्रधान हैं। जीवन और जगत्; धर्म और विज्ञान; कला और संस्कृति; व्यक्ति और राष्ट्र आदि विभिन्न विषयों पर इन निबन्धों में मूल्यवान विचार मिल जायँगे। तरुण पाठकों के लिए पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० २.७५ न० पै०।

* * *

देश-विदेश में दिनकरजी द्वारा इधर हाल की देश तथा विदेश के विभिन्न प्रदेशों की यात्राओं के संस्मरण संकलित हैं। यह संस्मरणात्मक यात्रा-वर्णन जितना रोचक है उतना ही ज्ञानवर्द्धक तथा प्रेरणाप्रद भी है। पुस्तक पढ़कर लगता है जैसे हम कोई 'डाक्युमेन्ट्री फिल्म' देख रहे हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है २) रु०।

* * *

बालोपयोगी

श्री एस० एल० प्रकाशन, दिल्ली ने बालोपयोगी अनेक छोटी-छोटी कई रंगों में छपी हुई पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इधर ७ नई पुस्तकें छपी हैं जिनका नाम है : (१) **मोहन की चिट्ठी**, (२) **मुन्ने का सपना**, (३) **चोर**, (४) **डॉक्टर तोताराम**, (५) **सावधान**, (६) **टिट्टू बिट्टू** तथा (७) **कुतुब मीनार**। इन सातों पुस्तकों में शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक कहानियाँ हैं। प्रत्येक का मूल्य १५ नये पैसे है।

* * *

हमारा देश में श्री मन्मथनाथ गुप्त ने भारत-विषयक लगभग समस्त जानकारी संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत कर दी है। भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रादेशिक राज्य, प्रशासनिक ढांचा, शासन-व्यवस्था, स्वायत्त शासन की संस्थाएँ, सेना, वैदेशिक सम्बन्ध तथा पंचवर्षीय योजनाओं आदि के सम्बन्ध में ऐसी जानकारी प्रस्तुत की गई है जो रोचक तथा ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ प्रेरणाप्रद भी है। भाषा सरल तथा शैली सुगम होने के कारण कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए इसकी उपयोगिता स्वतः सिद्ध है। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है रु० १.५० न० पै०।

* * *

राजनीति, इतिहास

उदयाचल, पटना–४ से इधर दिनकरजी की दो नई कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं। एक तो है **राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता** और दूसरी है **हमारी सांस्कृतिक एकता**। पहली पुस्तक में दिनकरजी के कुछ लेखों तथा भाषणों का संग्रह है। भाषा की समस्या ने भारत में उग्र रूप धारण कर लिया है जिसके कारण कुछ लोगों का विचार है कि देश की एकता के लिए भी खतरा उत्पन्न हो गया है। दिनकरजी ने अपने इन भाषणों तथा लेखों में इस जटिल समस्या का विश्लेषण बड़े संयत ढंग से प्रस्तुत किया है। राष्ट्रीय समस्याओं में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। मूल्य है ३) रु०। दूसरी पुस्तक में दिनकरजी ने यह दिखाया है कि भारतीय समाज में भाषा, धर्म, जाति आदि के जो

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे दो अनमोल नवीन प्रकाशन

शान्ति निकेतन—गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सजिल्द ६.००

जीवन की समस्याओं पर गुरुदेव के औपनिषदिक बंगला प्रवचनों का प्रथम हिन्दी अनुवाद।

"......यह प्रकाशन खरा सोना है।......यह सामग्री उपनिषदों का मथा हुआ मक्खन है और मेरा विचार है कि हिन्दी का प्रत्येक पाठक इसकी सराहना किये बिना न रहेगा। अवश्य ही इसकी गणना इस वर्ष के श्रेष्ठ प्रकाशनों में की जायगी।"

—वासुदेव शरण अग्रवाल

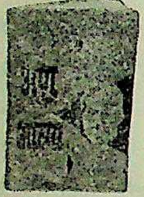

अणु और आत्मा—डॉ० जे० सी० ट्रस्ट, सजिल्द ४.००

विज्ञान तथा आत्मा का अद्भुत मेल। अणु-आभा-विज्ञान पश्चिम के विज्ञान तथा पूर्व के अध्यात्मवाद का सुन्दर समन्वय है। यूरोप तथा अमरीका में एक छोर से दूसरे छोर तथा धार्मिक क्रान्ति फैला देने वाली प्रथम पुस्तक।

"......जेम्स एलन और ओरिजन स्वेट मार्डन की प्रसिद्ध पुस्तकों के पश्चात् डॉ० ट्रस्ट की यह अपने विषय की अच्छी पुस्तक है, जिसे आरम्भ करने के पश्चात् छोड़ने को मन नहीं चाहता। डॉ० ट्रस्ट अपने काम के लिये अमरीका में प्रसिद्ध थीं। वह संसार के बहुत-से देशों में भी घूमीं तथा मानसिक रोगियों को अणु-आभा-विज्ञान द्वारा निरोग किया।...पुस्तक की छपाई, कागज, आवरण तथा गेट-अप आदि सब सराहनीय हैं। यह अपने विषय की अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है। सुख, सफलता, शान्ति तथा निरोगता के इच्छुक हर शिक्षित स्त्री-पुरुष तथा देश के धर्म-प्रचारकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। प्रकाशक इस पुस्तक को हिन्दी में लाने के लिये बधाई के पात्र हैं।"

—'हिन्दुस्तान', दिल्ली

हमारे कुछ और नये प्रकाशन

उठती दीवारें हिलती नींव : स्कॉट निअरिंग : हेलन निअरिंग	सजिल्द	५.५०
महाकवि अकबर और उनका उर्दू काव्य : उमरावसिंह कारुणिक	,,	३.५०
उसने कहा : खलील जिब्रान	,,	२.००
आत्माएँ बोलती हैं : डी० ओ० राबर्ट्स	,,	३.७५
चिर यौवन : डॉ० जान एच० मानस		१.५०
जीवन-रहस्य : डॉ० जान एच० मानस		१.५०
नृत्य और स्वास्थ्य : डॉ० जान एच० मानस		१.५०
हाजिर जवाबी और विनोद : शिवनाथसिंह शाण्डिल्य		०.८५
धूम्रपान : समस्या और उपाय : डॉ० जान एच० मानस	सजिल्द	३.००
धार्मिक चरित्र (१) : डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल		२.५०
धार्मिक चरित्र (२) : डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल		२.५०
धार्मिक व्याख्या : डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल		२.००
धार्मिक सिद्धान्त : डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल		१.५०
धार्मिक तत्त्व : डॉ० ज्वालाप्रसाद सिंहल		१.५०
ग्राम सुधार : शंकर सहाय वर्मा		०.५०
तारिका : कृष्णचन्द्र मुद्गल		१.२५
सावन का गीत—कविताएँ : शान्तिदेवी सिंहल		१.२५

अन्तर्राष्ट्रीय आधुनिक कविता सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकें :

झुकी पलकें गहरे शोले (ग्रीस साहित्य) • अणु की ओर (अमरीकी साहित्य)

गाते हुए जंगल (आस्ट्रेलियन साहित्य)—डिमाई साइज़ में, प्रत्येक का मूल्य २.००

नारी की कहानी (उपन्यास)—मोपासां • कास्टर ब्रिज का मेयर (उपन्यास)—थामस हार्डी (प्रेस में)

भारती एसोसिएशन पब्लिकेशन्स

हिन्दी में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा साहित्य के प्रकाशक

गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगामी मास के प्रकाशन

आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली

—प्रेमी का उपहार, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनु० दयाल कृष्ण शर्मा

—पढ़ाने की कला, गिलबर्ट हाईट

—समाज मनोविज्ञान, कुमारी पद्मा त्यागी

—अन्तर्ध्वनि, श्री नीरज, कविता-संग्रह

—संघर्ष, श्री नीरज

—दो गीत, श्री नीरज

ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली

—उमड़ती घटाएँ, पु० मु०, श्री गुरुदत्त

—हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास, पु० मु०, प्रो० धर्मचन्द्र सन्त

ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा

—अलसाई आँखें, श्री राजेश दीक्षित

दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली

—कुंवरसिंह, श्री चतुर्भुज, नाटक

बंगीय हिन्दी परिषद्, कलकत्ता

—'नवीन' दर्शन, श्री केशवदेव उपाध्याय, आलोचनात्मक

—सुबह होती है शाम होती है, श्री गंगाधर शुक्ल, प्रहसन

—मेघदूत, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल

—भारतेन्दु के दो नाटक, सम्पा० श्री ललिता प्रसाद सुकुल

भारतीय प्रकाशन मण्डल, वाराणसी

—धरती का स्वर्ग, उपन्यास

—दोस्तों की शायरी, शायरी

लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

—अर्थशास्त्र की सरल रूपरेखा, श्री सत्यदेव

—गृह तथा स्वास्थ्य विज्ञान २ भाग, डॉ० डी० एन० पण्ड्या तथा श्री सुधीरा श्रीवास्तव

—स्कूल स्वास्थ्य विज्ञान, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे

—पाश्चात्य शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास, पु० मु०, डॉ० सरयू प्रसाद चौबे

—माध्यमिक बैंकिंग, प्रो० विजेन्द्र पाल सिंह

राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

—मध्यकालीन हिन्दी गद्य, हरिमोहन श्रीवास्तव

—लोक-परलोक, श्री उदयशंकर भट्ट, उपन्यास

—आधी रात का सूरज, शमशेरसिंह नरूला, कहानी-संग्रह

—अकेले कंठ की पुकार, अजित कुमार, कविता

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली

—परिवर्तन, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव

—निष्फल प्रेम, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव

—भूल भुलैयां, शेक्सपियर, अनु० डॉ० रांगेय राघव

—कोलम्बस, अनु० महावीर अधिकारी

—ज्वालामुखी और भूचाल की कहानी, फ्रेडरिक एच० एफ०, अनु० श्री रमेश वर्मा

—समुद्र की कहानी, फर्डिनेण्ड सी० लेन, अनु० श्री रमेश वर्मा

—रसायन की कहानी, इरा एम०. फ्रीमैन, अनु० श्री रमेश वर्मा

(शेष पृष्ठ ४३४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

११२१५५
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जून मास के प्रकाशन

आलोचना-निबन्ध-व्याकरण-संस्कृति

कान्ति मोहन शर्मा, कुरुक्षेत्र-मीमांसा, २४८, डि०, साहित्य प्रकाशन मण्डल, नई दिल्ली ५.५०
भोलानाथ तिवारी डॉ०, हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण, १६७, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०
रणवीर सिंह, काव्यादर्श, १३८, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ४.००
राधाकुमुद मुकर्जी डॉ०, प्राचीन भारतीय विचार और विभूतियाँ, १७३, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ३.५०
सोमनाथ गुप्त डॉ०, पूर्व भारतेन्दु नाटक साहित्य, १८६, डि०, हिन्दी भवन, जालन्धर ५.००

इतिहास

के० आर० कानूनगो, दारा शिकोह, २०३, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, आगरा ८.००
जी० पी० गूच अनु० पी० एस० माथुर, हमारे युग का इतिहास, डि०, गया प्रसाद एण्ड सन्स, दिल्ली ५.००

उपन्यास

इ० तुर्गनेव, अनु० प्रभुनन्दन गुप्त, जिनैदा, १३२, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा २.५०
गुरुदत्त, मायाजाल, पु० मु०, २१५, क्रा०, ओरिएण्टल बुक डिपो, दिल्ली ५.००
गोविन्द सिंह, तिरस्कृत, १६०, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.५०
जसवन्त सिंह कंवल, पूर्णमासी, २८०, क्रा० साहित्य संगम, लुधियाना ४.००
देवराज डॉ०, रोड़े और पत्थर, १२८, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई २.२५
देवेन्द्र सत्यार्थी, दूध गाछ, ४१६, क्रा०, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई ६.००
बंकिम, अनु० प्रेम अग्रवाल, कृष्णकान्त का वसीयतनामा, १४४, क्रा०, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद २.२५
शिवनारायण श्रीवास्तव, घुआँ, आग और इन्सान, १८४, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली ३.००
शिरीष, मुट्ठी भर फूल, १२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली २.२५
शांता यानवी, अनु० प्रेम अग्रवाल, सपने, ६६, सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०
सुरेश, रोटी, रोज़ी और प्यार, १००, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद १.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

जगदीश शर्मा, गीत मैं कैसे लिखूं, १२०, क्रा०, ऐलोरा पब्लिशिंग हाउस, मथुरा	२.५०
भारत भूषण, सागर के सीप, ११२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.५०
रामनरेश पाठक, ज्वार की साँझ, ९०, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०
शिवशंकर वशिष्ठ्य, गीली आँखें, गीले गीत, ९२, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००
संकलित, आषाढ़ के बादल, १००, क्रा०, नवीन लेखक संघ, आगरा	१.५०
सिद्धनाथ कुमार, टूटा हुआ आदमी, ८०, डि०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	३.००

कहानी

करतार सिंह दुग्गल, अमानिशा, पु० मु०, १६०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	३.००
मण्टो, मेरा नाम राधा है, ३२५, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	५.५०
शौकत थानवी, शादी का इश्तहार, १२०, क्रा०, साहित्य संगम, लुधियाना	२.५०

नाटक

इन्द्रसेन भावुक, परिवार के शत्रु, ११६, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, नई दिल्ली	२.२५
उदयशंकर भट्ट, पार्वती, ९८, क्रा०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.२५
हरिकृष्ण प्रेमी, विदा, १३०, हिन्दी भवन, जालन्धर	१.७५

बाल साहित्य—प्रौढ़ साहित्य

उर्मिला कुमारी, छल का फल, ४८, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.७५
जगपति चतुर्वेदी, भाप का इंजन कैसे बना, ६४, क्रा० हिन्दी भवन, जालन्धर	१.००
ज्ञानेन्द्र कुमार भटनागर, केरल की लोक कथाएँ, ९८, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.५०
जे० डी० वैश्य, साहसी बालक, ४०, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	१.००
पुरुषोत्तम दास गौड़ 'कोमल', धरती के लाल, ११२, क्रा० सुरेन्द्र एण्ड क०, इलाहाबाद	१ ५०
राजबहादुर सिंह, पुराणों की कहानियाँ, १२४, कापी साइज़, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	२.००
सन्त गोकुलचन्द्र, राम जीवन की झांकियाँ, ५८, कापी साइज़, ओरिएण्टल बुकडिपो, दिल्ली	१.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, कांच का महल, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०
सुरेशचन्द्र गुप्त, मनोरंजक कहानियाँ, ३२, क्रा०, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली	०.५०

विविध

एम० एस० अग्रवाल डॉ०, हमारी आँखें, ३००, क्रा०, डॉ० अग्रवाल आई इंस्टीट्यूट, दिल्ली	५.००
एस० आर० शर्मा, आधुनिक भारत का निर्माण, ५०८, डि० लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	८.५०
कृपाराम बम्बवाल, भारतीय प्रशासन, २२२, डि०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली	५.००
योगेन्द्र विज्ञानी, महायोग विज्ञान, ६५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेप	६.००
रणधीर सिनहा की रचनाएँ, १२८, क्रा०, श्रेष्ठ साहित्यागार, पटना	२.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामप्रसाद बिस्मिल, **बिस्मिल की आत्मकथा,** १६०, क्रा०, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली ३.००
स्वामी विष्णु तीर्थ **आत्म शक्ति,** ३५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ४.००
स्वामी विष्णु तीर्थ, **प्राण तत्व,** ८०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.००
स्वामी विष्णु तीर्थ, **वैदिक योगपरिचय,** २५०, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश ३.५०
स्वामी विष्णु तीर्थ, **शक्तिपात,** पु० मु०, ९६, क्रा०, विज्ञान मन्दिर, ऋषिकेश १.००
हरिशंकर शर्मा, **पिंजरा पोल,** १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.५०
हरिशंकर शर्मा, **मन की मौज,** १३२, क्रा०, गयाप्रसाद एण्ड सन्स, आगरा २.५०

शिक्षा-वाणिज्य

बल्दुआ व कटियार, **उच्च लेखा कर्म,** २४८, रायल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा ८.५०
मनमोहन सहगल, **शिक्षा दर्शन,** ३२०, ड० क्रा०, दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली ५.००
शर्मा, जैन एवं पुरोहित, **माध्यमिक बहीखाता एवं लेखा कर्म,** ४८८, ड० क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ८.००
सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **प्रा० शिक्षा मनोविज्ञान,** २६०, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, ३.००
सरयू प्रसाद चौबे डॉ०, **शिक्षा के सिद्धान्त और आधुनिक विकास,** २६४, क्रा०, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा ३.००

(पृष्ठ ४३१ का शेष)

—उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव, अनु० श्री हंसराज रहबर
—मौसम की कहानी, अनु० श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार
—हवाई जहाज़ की कहानी
—सितारों की कहानी

साहित्य सङ्गम, लुधियाना
—पिशाच, श्री सत्यपाल आनन्द, नाटक

सुरेन्द्र एण्ड कं०, इलाहाबाद
—शमा बुझ गई, श्री शंकर दयाल श्रीवास्तव
—नई ज़िन्दगी नई सुबह, श्री सुरेश
—इन्दरा, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल
—सीताराम, बंकिम, अनु०, श्री प्रेम अग्रवाल

112144

(पृष्ठ ४२९ का शेष)

भेद-भाव दिखाई देते हैं वे वास्तव में मौलिक नहीं हैं। इस अनेकता में एकता की भावना किस प्रकार छिपी हुई है इसे सुगम-सरल भाषा-शैली में रोचक ढंग से स्पष्ट करने का सफल प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। सामान्य पाठकों के लिए पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी, सन्देह नहीं। मूल्य इसका भी ३) रुपये ही है।

* * *

गद्यकाव्य तथा बोध-कथाएँ

उजली आग : दिनकरजी की गद्य-कविताओं, बोध-कथाओं तथा लघु-निबन्धों का नवप्रकाशित संग्रह है। इसमें उनकी विभिन्न प्रकार की कुल मिलाकर छोटी-बड़ी ४६ रचनाएँ संग्रहीत हैं। लेखक के गाम्भीर्य, चिन्तन, अनुभूति एवं तत्त्वदर्शन-सामर्थ्य का आभास इन रचनाओं में मिलता है। प्रायः सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्द्धक और शिक्षाप्रद हैं। इसका प्रकाशन हुआ है **उदयाचल, पटना–४** से और मूल्य है ३)।

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशन-समाचार
के
विशेषांक की घोषणा

"**प्रकाशन-समाचार**" का अगस्त १९५८ का अंक विशेषांक होगा जिसमें १९४७ से लेकर मार्च '५८ के अन्त तक के हिन्दी के उन सब प्रकाशनों का सविवरण उल्लेख रहेगा जिन्हें भारत सरकार, राज्यों की सरकारों अथवा सम्मानित साहित्य-संस्थाओं ने पुरस्कृत किया है।

पुस्तकालयों की उपयोगिता की दृष्टि से अन्य विवरण के साथ प्रत्येक पुस्तक का ड्यूयी के सिद्धान्तों के अनुसार क्लासिफिकेशन नम्बर भी दिये जाने की व्यवस्था की जा रही है।

प्रकाशकों से प्रार्थना

प्रकाशकों से इस विज्ञप्ति के माध्यम से आग्रह है कि १९४७ से अब तक उनकी जिन किन्हीं भी पुस्तकों को पुरस्कृत किया गया है, उसकी सूचना लेखक के नाम, पुस्तक के आकार, पृष्ठ संख्या, विषय, पुरस्कार के वर्ष तथा पुरस्कार देने वाली संस्था या सरकार के नाम हमें अविलम्ब इलाहाबाद के पते पर भेजने की कृपा करें।

विज्ञापकों के लिए सुअवसर

"**प्रकाशन-समाचार**" के अब तक पाँच विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं और उन्हें उपयोगिता और महत्त्व की दृष्टि से खूब सराहा गया है। प्रकाशक-बन्धुओं से प्रार्थना है कि इस विशेषांक में अपने विज्ञापनों के लिए स्थान शीघ्र ही सुरक्षित करवा लें।

सम्पादन-कार्यालय :

प्रकाशन-समाचार

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

१५-ए महात्मा गाँधी मार्ग,

इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd.No.D.—594

भारत सरकार द्वारा

शिक्षण संस्थाओं, ग्राम पंचायतों, स्कूल लायब्रेरियों, कम्यूनिटी प्रोजेक्टों, टैकनिकल इन्स्टीट्यूटों, सामाजिक व शासकीय संस्थाओं द्वारा अपनाया जाने वाला उच्चतम साहित्य यहाँ से लीजिए।

देहली में पुस्तकों की बड़ी दुकान

हमारी प्रकाशित टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा अन्य सभी प्रकार के साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त

भारत के प्रायः सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित उत्कृष्ट तथा उपयोगी समीक्षात्मक साहित्य, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवन-चरित्र, आत्म-कथाएँ, ग्रामोपयोगी, महिलोपयोगी, नवयुवकोपयोगी, समाज-शिक्षण, प्रौढ़-साहित्य, मनोविज्ञान, शिक्षा-विज्ञान, इतिहास, राजनीतिक विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, जन्तु-विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-विज्ञान, नीति-विज्ञान, संगीत-विज्ञान, तर्क-शास्त्र, समाज-शास्त्र, धार्मिक तथा अध्यात्म साहित्य और ज्योतिष सम्बन्धी, तिजारती, तिब्बी, डाक्टरी, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, जन्त्र-मन्त्र-तन्त्र, पूजापाठ, बालोपयोगी और स्त्रियोपयोगी तथा साथ-साथ हर प्रकार के उपन्यास, कहानियाँ आदि आकर्षक पुस्तकें आपको हमारे यहाँ सुविधा से मिलेंगी। हिन्दी में हर एक विषय की पुस्तक के लिए हमें लिखें।

हमारे प्रकाशन के बिना आपकी लायब्रेरी निश्चित रूप से अधूरी और आपका साहित्य विशेष रूप से अधूरा है और विशेषकर टैकनिकल, इण्डस्ट्रियल तथा एग्रीकल्चरल साहित्य, जिसकी आज के समय में सबसे अधिक आवश्यकता है, विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। आप अपने संग्रह को पूर्ण और साहित्य-रुचि को पूर्ण करने के लिए अपने शहर के मुख्य पुस्तक-विक्रेता से हमारे निश्चित मूल्य पर हमारे प्रकाशन प्राप्त करें, इसके अतिरिक्त हमें सीधा भी लिख सकते हैं—

हिन्दी की पुस्तकों का वृहद् सूचीपत्र केवल पच्चीस नये पैसे के टिकट डाक खर्च के लिए भेजकर मुफ्त मँगाइये

आवश्यक सूचना—हिन्दी के साथ-साथ हमारे यहाँ उर्दू तथा गुरुमुखी की भी हर प्रकार की पुस्तकें हर समय तैयार मिलती हैं।

लायब्रेरियों तथा पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन

गवर्नमेण्ट आर्डर सप्लायर

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली

PHONE : 20030

लोकल ग्राहकों को फोन द्वारा माल सप्लाई करने का पूरा प्रबन्ध है।

श्री देवराज, मैनेजिंग डाइरेक्टर, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली के लिए
श्री गोपीनाथ सेठ द्वारा नवीन प्रेस, दिल्ली में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar